गांधीजीकी

संक्षिप्त आत्मकथा

संक्षेपकार
मथुरादास त्रिकमजी
अनुवादक
काशिनाथ त्रिवेदी

नवजीवन प्रकाशन मंदिर
अहमदाबाद

प्रकाशकका निवेदन

पाठक-समुदायके प्रकारोंको ध्यानमें रखकर गांधीजीकी 'आत्मकथा' का अमुक दृष्टिसे दोहन अथवा सम्पादन किया जाय, तो अुसका बहुत व्यापक प्रचार हो सकता है। अिस दृष्टिसे विद्यार्थियों और युवकोंको ध्यानमें रखकर स्वर्गीय महादेवभाअी देसाअीने अंग्रेजीमें 'माअी अर्ली लाअिफ' के नामसे 'आत्मकथा' का पूर्वकाण्ड तैयार किया था। गुजरातीमें भी अुसी तरहके और दूसरे प्रकारके सम्पादनोंके लिअे अवकाश है। श्री मथुरादासभाअीका यह प्रयत्न अैसा ही है। अिसके विषयमें अुन्होंने अपनी भूमिकामें लिखा ही है। अैसा प्रतीत होता है कि अुन्होंने अिस पुस्तकको तैयार करते समय जो मुख्य दृष्टि रखी है, वह यही है कि अिसमें गांधीजीने अपने जीवनका विकास किस प्रकार सिद्ध किया, अिस बातका समूचा चित्र आ जाय। अच्छा है, कि यह सारा दोहन मूल शब्दोंमें ही हुआ है। विद्यार्थियों और प्रौढ़ोंके लिअे भी यह अुपयोगी होगा। आशा है, पाठकोंको यह दोहन पसन्द आवेगा।

'संक्षिप्त आत्मकथा' का हिन्दी संस्करण प्रकाशित करते हुअे हमें बड़ा आनंद हो रहा है। आशा है अपने अिस राष्ट्रीय रूपमें यह पुस्तक सारे देशके विद्यार्थियों और नौजवानोंके लिअे अुपयोगी और प्रेरणादायिनी सिद्ध होगी।

१५-१२-'५१

पुस्तकके बारेमें

बापूकी 'आत्मकथा' अेक बड़ा ग्रंथ है। अिस पुस्तकमें अुसका सार तैयार किया है। अैसा करते समय बापूके लेखन-क्रम, भाषा अित्यादिको प्रायः मूलके जैसा ही रखा है। केवल विषयको संक्षिप्त करने और सिलसिला जोड़नेके लिअे कहीं-कहीं नयी भाषाका प्रयोग किया है। अतः सहजरूपसे यह कहा जा सकता है कि अिस 'संक्षिप्त आत्मकथा' का ९९.९९ से भी अधिक भाग मूलका अवतरण ही है।

अिस 'संक्षिप्त आत्मकथा' को नये ढंगसे विभक्त किया है, और कुछ अध्यायोंको अुनके विषयोंके अनुरूप नये नाम दिये हैं। अध्यायोंकी गिनती प्रत्येक खण्डकी अलग-अलग न करके समूची पुस्तककी अेक ही रखी है।

बापूकी 'आत्मकथा' अेक अैसा ग्रंथ है, जो बापूको समझनेमें बहुत सहायक होता है। अिसका संक्षिप्त संस्करण तैयार करनेका यह प्रयास अिस अभिलाषासे किया गया है कि यह विशिष्ट व्यक्तियोंको और खासकर नयी पीढ़ीको बापूका अभ्यास करनेके लिअे प्रेरित करे।

७४, वालकेश्वर रोड,
बम्बअी, १२-३-'४९

मथुरादास त्रिकमजी

प्रस्तावना

मैंने सत्यके जो अनेक प्रयोग किये हैं, 'आत्मकथा' के बहाने मुझे अुनकी कथा लिखनी है। मैं यह मानता हूँ कि जनताके पास मेरे सब प्रयोगोंका समुदाय हो, तो वह लाभदायक हो सकता है, —अथवा यों कहिये कि मुझे अैसा मोह है। राजनीतिक क्षेत्रके मेरे प्रयोगोंको तो अब हिन्दुस्तान जानता है। लेकिन मेरे आध्यात्मिक प्रयोगोंका, जिन्हें अेक मैं ही जान सकता हूँ और जिनमें से राजनीतिक क्षेत्र परकी मेरी शक्ति भी पैदा हुअी है, वर्णन कर जाना मुझे रुचता तो है। जैसे-जैसे मैं अपने भूतकालिक जीवन पर दृष्टि डालता जाता हूँ, वैसे-वैसे मैं अपनी अल्पताको शुद्ध रीतिसे देख सकता हूँ। मुझे जो करना है, जिसके लिये मैं पिछले ३० वर्षोंसे छटपटा रहा हूँ, वह तो आत्मदर्शन है, अीश्वरका साक्षात्कार है, मोक्ष है। मेरी सारी हलचल अिसी दृष्टिसे होती है। मेरा सब लेखन अिसी दृष्टिको लेकर है, और राजनीतिक क्षेत्रमें मेरा पड़ना भी अिसी वस्तुके अधीन है।

शुरूसे ही मेरी यह राय रही है, कि जो अेकके लिये शक्य है वह सबके लिये शक्य है। अिस कारण मेरे प्रयोग खानगी नहीं हुअे, नहीं रहे। हाँ, अैसी कुछ वस्तुअें अवश्य हैं, जिन्हें आत्मा ही जानती है, जो आत्मामें ही समा जाती हैं। लेकिन अैसी वस्तु देना मेरी शक्तिसे परेकी बात है। मेरे प्रयोगोंमें तो आध्यात्मिकका अर्थ नैतिक है; धर्म अर्थात् नीति; आत्माकी दृष्टिसे पाली गअी नीति ही धर्म है। अतअेव जिन वस्तुओंका निर्णय बालक, जवान और बूढ़े करते हैं, और कर सकते हैं, अिस कथामें अुन्हीं वस्तुओंका समावेश होगा। अगर अैसी कथा मैं तटस्थ भावसे, निरभिमान बनकर लिख सकूँ, तो सम्भव है, अुसमें से दूसरे प्रयोगकर्त्ताओंके लिये कुछ सामग्री मिले।

अपने प्रयोगोंके लिअे मैं किसी भी प्रकारकी सम्पूर्णताका दावा करता ही नहीं। मैंने बहुत आत्म-निरीक्षण किया है, अेक-अेक भावको जाँचा-पड़ताला है, अुसका पृथक्करण किया है। लेकिन अुससे अुत्पन्न परिणाम सबके लिअे अंतिम ही हैं, वे सही हैं, अथवा मात्र वे ही सही हैं, अिस प्रकारका कोअी दावा मैं कभी करना नहीं चाहता। मैं तो पग-पग पर जिन चीज़ोंको देखता हूँ, अुन्हें त्याज्य और ग्राह्यके नामसे दो हिस्सोंमें बाँट लेता हूँ, और जिसे ग्राह्य वस्तु समझता हूँ, अुसके अनुसार अपने आचारोंका निर्माण करता हूँ। और जहाँ तक अिस प्रकार निर्मित आचार मुझे, अर्थात् मेरी बुद्धिको और आत्माको सन्तुष्ट रखते हैं, वहाँ तक अुनके शुभ परिणामके विषयमें मुझे अटल विश्वास रखना ही चाहिये।

मैंने अिस प्रयत्नको 'सत्यके प्रयोग' का पहला नाम दिया है। अिसमें सत्यसे भिन्न माने जानेवाले अहिंसा, ब्रह्मचर्य अित्यादि नियमोंके प्रयोग भी शामिल रहेंगे। किन्तु मेरे मन सत्य ही सर्वोपरि है, और अुसमें अनगिनत वस्तुओंका समावेश हो जाता है। यह सत्य स्थूल —वाचिक—सत्य नहीं। यह तो वाचाकी भाँति ही विचारका भी है। यह सत्य मात्र हमारे द्वारा कल्पित सत्य ही नहीं, बल्कि स्वतंत्र, चिरस्थायी सत्य है; अर्थात् परमेश्वर ही है।

परमेश्वरकी परिभाषायें अनगिनत हैं, क्योंकि अुसकी विभूतियाँ भी असंख्य हैं। ये विभूतियाँ मुझे आश्चर्यचकित करती हैं। ये मुझे क्षणभर मुग्ध भी करती हैं। लेकिन मैं पुजारी तो सत्यरूपी परमेश्वरका ही हूँ। वही अेक सत्य है, और दूसरा सब मिथ्या है। यह सत्य मुझे मिला नहीं है, लेकिन मैं अिसका शोधक हूँ। अिसकी शोधके लिअे मैं अपनी प्रिय-से-प्रिय वस्तुका भी त्याग करनेको तैयार हूँ, और मुझे विश्वास है कि अिस शोधरूपी यज्ञमें अपने अिस शरीरको होमनेकी मेरी तैयारी और शक्ति है। लेकिन जब तक मैं अिस सत्यक साक्षात्कार न कर लूँ, तब तक मेरी अन्तरात्मा जिसे सत्य मानतं है, अुस काल्पनिक सत्यको अपना आधार मानकर, अपना दीपस्तम्भ समझकर, अुसके सहारे मैं अपना जीवन बिता रहा हूँ।

यद्यपि यह मार्ग तलवारकी धार पर चलने-जैसा है, फिर भी मुझे तो यह सहल-से-सहल मालूम हुआ है। अिस मार्ग पर चलते हुओ मुझे अपनी भयंकर भूलें भी न-कुछ-सी लगी हैं। क्योंकि वैसी भूलें करके भी, मैं बच गया हूँ, और अपनी समझमें, आगे भी बढ़ा हूँ। दूर-दूरसे विशुद्ध सत्यकी — अीश्वरकी — झाँकी भी कर रहा हूँ। मेरा यह विश्वास दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है, कि अिस दुनियामें अेक सत्य ही है, अुसके सिवाय और कुछ भी नहीं है।

सत्यकी शोधके साधन जितने कठिन हैं, अुतने ही सरल भी हैं। अभिमानीको यह असम्भव लगेगा, और अेक निर्दोष बालकको नितान्त सम्भव। सत्यके शोधकको रजकणसे भी नीचे रहना पड़ता है। समूचा जगत् रजकणको कुचलता है, लेकिन सत्यका पुजारी जब तक अितना अल्प नहीं बनता कि रजकण भी अुसे कुचल सके, तब तक अुसके लिअे स्वतंत्र सत्यकी झाँकी भी दुर्लभ है।

आगे मैं जो अध्याय लिखनेवाला हूँ, यदि पाठकोंको अुनमें अभिमानका भास हो, तो अुन्हें निश्चय ही समझना चाहिये कि मेरी शोधमें त्रुटि है, और मेरी झाँकियाँ मृगजलके समान हैं। मेरे समान अनेकोंका क्षय चाहे हो, पर सत्यकी जय हो। आत्माको नापनेके लिअे सत्यका गज़ कभी छोटा न बने।

कहने योग्य अेक भी बात मैं छिपाअूँगा नहीं। आशा तो यह है, कि मैं पाठकोंको अपने दोषोंका पूरा-पूरा बोध करा सकूँगा। मुझे सत्यके शास्त्रीय प्रयोगोंका वर्णन करना है; मुझे अिस बातकी तिल-भर भी अिच्छा नहीं कि मैं अपने रूपका बखान करूँ — यह बताअूँ कि मैं कितना अच्छा हूँ। जिस मापसे मैं अपनेको मापना चाहता हूँ, अुसके अनुसार तो मैं अवश्य ही यह कहूँगा कि —

> 'मो सम कौन कुटिल खल कामी?
> जिन तनु दियो ताहि बिसरायो
> अैसो निमकहरामी।'

क्योंकि मुझे यह प्रतीति प्रतिक्षण खलती रहती है, कि जिसे मैं सम्पूर्ण विश्वासपूर्वक अपने श्वासोच्छ्वासका स्वामी मानता हूँ, जिसे मैं अपने नमकका देनेवाला मानता हूँ, अुससे मैं अभी भी दूर ही हूँ। अिसके कारणरूप अपने विकारको मैं देख सकता हूँ, किन्तु अुसे अभी भी निकाल नहीं पाता हूँ।

मोहनदास करमचंद गांधी

आश्रम, साबरमती,
मार्गशीर्ष, शुक्ला ११, १९८२

विषय-सूची

३ : देशमें

४ : दक्षिण अफ्रीकामें

५ : देशमें कार्य

६ : दक्षिण अफ्रीकामें दूसरी बार

७ : देशमें निवास

८ : दक्षिण अफ्रीकामें तीसरी बार

९ : देशमें स्थायी निवास

१ : पहले १९ वर्ष

१

जन्म

मेरा जन्म संवत् १९२५ के भादों महीनेकी विदी १२ के दि
अर्थात् सन् १८६९ के अक्तूबर महीनेकी २ री तारीखको, पोरबन्द
अथवा सुदामापुरीमें हुआ।

पिता पोरबन्दरके दीवान थे; बादमें राजकोटके और कु
समय वांकानेरके दीवान रहे। वे कुटुम्बप्रेमी, सत्यप्रिय, शूर, अुदा
किन्तु क्रोधी थे। वे घूसखोरीसे दूर भागते थे, अिसलिअे शुद्ध न्या
करते थे। अुनकी शिक्षा मात्र अनुभवकी थी। जिसे आज ह
गुजरातीकी पाँच किताबका ज्ञान कहते हैं, अुतनी शिक्षा अुन्होंने पा
होगी। तिस पर भी व्यावहारिक ज्ञान अितने अूँचे प्रकारका था f
सूक्ष्मसे सूक्ष्म प्रश्नोंको सुलझानेमें या हजार आदमियोंसे काम लेने
अुन्हें कोअी कठिनाअी न होती थी। धार्मिक शिक्षा नहींके बराब
थी। लेकिन मन्दिरोंमें जाने और कथा आदि सुननेसे जो धर्मज्ञा
असंख्य हिन्दुओंको सहज ही मिलता रहता है, वह अुनमें था। अुन्हों
द्रव्य अेकत्र करनेका लोभ कभी रखा नहीं। अिस कारण ह
भाअियोंके लिअे वे बहुत थोड़ी सम्पत्ति छोड़ गये।

माता साध्वी स्त्री थी। वह बहुत श्रद्धालु थी। पूजापाठ कि
बिना कभी भोजन न करती। मन्दिरमें हमेशा जाती। वह कठिन
कठिन व्रत शुरू करती और अुन्हें निर्विघ्न समाप्त करती। अेकट
दो-तीन अुपवास अुसके निकट मामूली चीज थी। अेक चातुर्मास
अुसने यह व्रत लिया था कि सूर्यनारायणका दर्शन करनेके बाद ि
भोजन करना। अुस चौमासेमें हम बालक बादलोंकी ओर देखा कर

कि कब सूरज दिखाअी पड़े और कब माँ भोजन करे। अैसे दिन याद हैं कि जब हम सूरजको देखते और 'माँ, माँ, सूरज निकला' कहते, और माँ कदम बढ़ाती हुअी आती, अितनेमें सूरज भाग जाता। 'कोअी बात नहीं, आज भाग्यमें भोजन बदा नहीं होगा', कहकर माँ लौट जाती और अपने काममें डूब जाती।

बचपन पोरबन्दरमें ही बीता। मुझे किसी पाठशालामें भरती किया गया था। मुश्किलसे कुछ पहाड़े सीखा था। अुन दिनों लड़कोंके साथ मैं शिक्षकको गालीभर देना सीखा था। और कुछ भी याद नहीं पड़ता। अिससे अनुमान करता हूं कि मेरी बुद्धि मन्द रही होगी।

२

बचपन

जब पिताजी राजकोट गये तब मेरी अुमर कोअी सात सालकी रही होगी। मुझे राजकोटकी गाँवठी शालामें भरती किया गया। वहाँ मेरी गिनती मुश्किलसे ही साधारण छात्रोंमें हुअी होगी। गाँवठी शालासे मुहल्लेकी शालामें और वहाँसे हाअीस्कूलमें। यहाँ तक पहुँचते हुअे मेरा बारहवाँ वर्ष बीत चुका था। अिस अुमर तक मैंने कभी भी शिक्षकोंको ठगा नहीं और न कोअी मित्र ही बनाये। मैं बहुत ही शरमीला लड़का था। पाठशालामें अपने कामसे ही काम रखता था। घण्टी बजते समय पहुँचना और पाठशालाके बन्द होने पर घर भागना। मुझे किसीसे बातें करना अच्छा न लगता था। मनमें यह डर बना रहता था कि 'कहीं कोअी मेरा मज़ाक तो न अुड़ायेगा?'

हाअीस्कूलके पहले ही वर्षमें शिक्षा-विभागके अिन्स्पेक्टर स्कूलका निरीक्षण करने आये थे। अुन्होंने पहली कक्षाके लड़कोंको पाँच शब्द लिखाये। अुनमें से अेक शब्दके हिज्जे मैंने गलत लिखे। शिक्षकने मुझे अपने बूटकी नोक मारकर चेताया; पर मैं क्यों चेतने लगा?

मुझे यह खयाल ही न आ सका, कि शिक्षक मुझे सामनेवाले लड़केकी पट्टी देखकर हिज्जे सुधार लेनेका अिशारा कर रहे हैं। मैंने तो यह माना था कि शिक्षक अिस बातकी निगरानी रख रहे हैं कि हम अेक-दूसरेकी चोरी न करें। शिक्षकने बादमें मुझे मेरी 'मूर्खता' समझाअी; लेकिन मेरे मन पर अुनकी अुस समझाअिशका कोअी असर न हुआ। मैं दूसरे लड़कोंकी कॉपीमें से चोरी करना कभी सीख न सका।

अिस सबके रहते भी मैं शिक्षकके प्रति अपना विनय कभी न चूका। बड़ोंके दोष न देखनेका गुण मुझमें सहज ही था। मैं यह समझ चुका था कि बड़ोंकी आज्ञाका पालन करना चाहिये। वे जो कहें, सो करना; करें अुसके क़ाज़ी खुद न बनना।

साधारणतः पाठशालाकी पुस्तकोंके सिवाय और कुछ पढ़नेका मुझे शौक़ न था। मैं अिसलिअे पाठ पढ़ता था कि पाठ तैयार करने चाहियें, अुलाहना न सहना चाहिये, शिक्षकको धोखा न देना चाहिये। लेकिन मन अलसा जाता और पाठ अक्सर कच्चे रह जाते। किन्तु पिताजी द्वारा खरीदा गया 'श्रवण-पितृभक्ति' नाटक पढ़नेकी अिच्छा मुझे हुअी। अुसे मैं अतिशय रसपूर्वक पढ़ गया। काँचमें चित्र दिखानेवालेसे मैंने वह दृश्य भी देखा, जिसमें श्रवण अपने माता-पिताको काँवड़में बैठाकर ले जाता है। मुझ पर अिन दोनों बातोंकी गहरी छाप पड़ी, और मनमें विचार आने लगे कि 'मुझे भी श्रवणके समान बनना चाहिये'।

अिन्हीं दिनोंमें मैंने 'हरिश्चन्द्र' नाटक देखा। अुसे बार-बार देखनेकी अिच्छा होने लगी। पर यों बार-बार जाने तो देता ही कौन? फिर भी अपने मनमें मैंने अिस नाटकको सैकड़ों बार खेला होगा। मुझे हरिश्चन्द्रके सपने आते। मनमें अेक ही धुन रहती — 'हरिश्चन्द्रकी तरह सत्यवादी सब क्यों नहीं हो सकते?' जैसी विपत्तियाँ हरिश्चन्द्र पर पड़ीं, वैसी विपत्तियोंको सहना और सत्यका पालन करना ही वास्तविक सत्य है। हरिश्चन्द्रका दुःख देखकर और अुसकी याद करके मैं बहुत रोया हूँ।

३

बालविवाह

१३ वर्षकी अुम्रमें पोरबन्दरमें मेरा विवाह हुआ। मेरे मझले भाअीका, मेरे काकाके छोटे लड़केका और मेरा विवाह अेक साथ हुआ। अिन तीनों विवाहोंकी तैयारियाँ कअी महीनोंसे चल रही थीं। हम भाअियोंको तो अिन तैयारियोंसे ही पता चला कि विवाह होनेको है। अुस समय मेरे मनमें तो अितना ही था कि अच्छे-अच्छे कपड़े पहनेंगे, बाजे बजेंगे, अच्छा भोजन मिलेगा और अेक नअी लड़कीके साथ विनोद करनेको मिलेगा — अिससे अधिक और कोअी अभिलाषा न थी। विषय भोगनेकी वृत्ति तो बादमें पैदा हुअी।

ब्याह होने पर दो निर्दोष बालकोंने अनजाने संसारमें प्रवेश किया। हम दोनों अेक-दूसरेसे डरते थे; शरमाते तो थे ही। धीमे-धीमे अेक-दूसरेको पहचानने लगे, बोलने लगे। हम दोनों समान अुम्रके हैं। मैंने पतिकी ठसकसे रहना शुरू किया।

अुन दिनों निबंधोंकी छोटी पुस्तिकायें निकलती थीं। अुनमें से कुछ निबंध मेरे हाथमें आते और मैं अुन्हें पढ़ डालता। यह आदत तो थी ही कि पढ़ने पर जो पसंद न आये, अुसे भूल जाना और जो पसंद आये, अुस पर अमल करना। पढ़ा था कि अेकपत्नीव्रत पालना पतिका धर्म है। हृदयमें यह बात रमी रही। सत्यका शौक तो था ही, अिसलिअे पत्नीके साथ विश्वासघात तो हो ही न सकता था; अिसी कारण यह भी समझमें आ चुका था कि दूसरी स्त्रीके साथ संबंध नहीं रह सकता।

लेकिन मुझे अेकपत्नीव्रत पालना है, तो पत्नीको अेकपतिव्रत पालना चाहिये। अिस विचारके कारण मैं अीर्ष्यालु पति बन गया। 'पालना चाहिये' में से 'पलवाना चाहिये' के विचार पर आ पहुँचा। और अगर पलवाना है, तो मुझे निगरानी रखनी चाहिये। पत्नीकी

पवित्रताके वारेमें शंका करनेका कोअी कारण मेरे पास नहीं था। लेकिन अीर्ष्या कारण देखनेके लिअे ठहरती कहाँ है? फलतः हमारे वीच दुःखद झगड़े होते, और हम वच्चोंके वीच अवोला मामूली चीज वन जाता।

लेकिन मेरी वक्रताका मूल प्रेममें था। मैं अपनी पत्नीको आदर्श स्त्री वनाना चाहता था; और भावना यह थी कि हम दोनों अेक-दूसरेमें ओतप्रोत रहें।

मैं अपनी स्त्रीके प्रति विषयासक्त था। अिस आसक्तिके साथ ही मुझमें कर्त्तव्यपरायणता थी। सवेरा होते ही नित्य कर्म तो करने ही चाहियें। किसीको ठगा जा ही नहीं सकता। अपने अिन विचारोंके कारण मैं अनेक संकटोंसे वचा हूँ। फिर, प्रचलित प्रथाके अनुसार पत्नीको वार-वार मायके जाना होता था; अिससे आसक्ति पर सहज ही अंकुश रहता। विवाहके पहले छः वर्षोंमें, हम टुकड़े-टुकड़े करके कुल तीन सालसे अधिक—अेक साथ नहीं रहे होंगे।

४

हाओीस्कूलमें

व्याहके वाद मेरी पढ़ाअी जारी रही। हाअीस्कूलमें मेरी गिनती वुद्धू छात्रोंमें न होती थी। विद्यार्थीकी पढ़ाअी और आचरणके वारेमें हर साल माता-पिताके पास प्रमाणपत्र भेजे जाते थे। अुनमें कभी आचरण या अभ्यास खराव होनेकी टीका मेरे विषयमें नहीं हुअी। मुझे अपनी होशियारीका कोअी गर्व न था। अिनाम या छात्रवृत्ति मिलने पर मुझे आश्चर्य होता था। लेकिन अपने व्यवहारके वारेमें मैं वहुत आग्रही था। अपने व्यवहारमें त्रुटि पाकर तो मुझे वरवस रुलाअी आ ही जाती थी। मेरे लिअे यह असह्य था कि मेरे हाथों अैसा कोअी काम हो, जिसके लिये शिक्षकोंको मुझे अुलाहना देना पड़े। अेक वार मुझे मार खानी पड़ी थी। मुझे मारका दुःख नहीं था, लेकिन अिस वातका मुझे

बड़ा दुःख था कि मैं दण्डका पात्र समझा गया। मैं बहुत रोया। यह घटना पहली या दूसरी कक्षाकी है।

कसरतसे मुझे अरुचि थी। अूँची कक्षाके विद्यार्थियोंके लिअे कसरत—क्रिकेटके अनिवार्य बननेसे पहले मैं कभी कसरत, क्रिकेट या फुटबॉलमें गया ही न था। न जानेमें मेरा शरमीला स्वभाव भी अेक कारण था।

लेकिन पुस्तकोंमें मैंने खुली हवामें घूमने जानेकी सलाह पढ़ी थी, और वह मुझे अच्छी लगी थी। अिसलिअे हाअीस्कूलकी अूँची कक्षाओंके समयसे मुझे घूमने जानेकी आदत पड़ गअी थी। वह अन्त तक रही। अिसकी वजहसे मेरा शरीर अपेक्षाकृत कसा हुआ बना।

अरुचिका दूसरा कारण था, पिताजीकी सेवा करनेकी तीव्र अिच्छा। स्कूलके बन्द होते ही तुरंत घर पहुँचकर सेवामें लग जाता था। जब कसरत लाज़िमी हो गअी, तो अिस सेवामें विघ्न पड़ा। मैंने प्रार्थना की कि पिताजीकी सेवाके लिअे कसरतसे छुट्टी मिलनी चाहिये; परंतु छुट्टी न मिली। अेक बार आसमानमें बादल छाये हुअे थे, अिस कारण समयका कुछ अन्दाज़ न रहा। कसरतकी जगह पहुँचा, तो देखा कि सब चले गये हैं। दूसरे दिन हेडमास्टरने मुझसे गैरहाज़िर रहनेका कारण पूछा। मैंने तो जो था वही कारण बताया। मास्टरने अुसे सच न माना और सजा दी। मैं झूठा ठहरा! मुझे अतिशय दुःख हुआ। किस तरह सिद्ध करूँ कि 'मैं झूठा नहीं हूँ'? कोअी अुपाय न सूझा। मन ही मन मुसमुसाकर रह गया; रोया। समझा कि सच बोलने और सच करनेवालेको गाफ़िल भी न रहना चाहिये।

कसरतसे मुक्ति तो प्राप्त की ही। हेडमास्टरको पिताजीका पत्र मिला कि स्कूलके समयके बाद वे स्वयं मेरी अुपस्थिति अपनी सेवाके लिअे आवश्यक समझते हैं। बस, अिस पत्रके कारण मुझे मुक्ति मिली।

ब्याहके कारण मेरा अेक साल टूट गया था। दूसरी कक्षामें शिक्षकने मेरे सामने यह सुझाव रखा कि मैं अेक ही सालमें तीसरी और चौथी कक्षाकी तैयारी कर लूँ। लेकिन भूमिति मेरी समझमें न आती थी। अिस कारण मैं अक्सर निराश हो अुठता था। कभी

यह विचार आता कि अेक सालमें दो कक्षाओंकी तैयारी करना छोड़ दूं। लेकिन अैसा करनेसे मेरी लाज जाती, और जिन्होंने मेरी लगन पर विश्वास रखकर मुझे चढ़ानेकी सिफारिश की थी, अुन शिक्षककी भी लाज जाती। अिस डरके कारण मैं किये हुअे विचार पर डटा रहा। प्रयत्न करते-करते भूमितिकी कठिनाअी दूर हो गअी, और फिर तो भूमिति मेरे लिअे अेक सरल और सरस विषय बन गया।

संस्कृतने मुझे भूमितिसे भी अधिक परेशान किया। छठी कक्षामें मैं हारा। यह सुनकर कि फ़ारसी आसान है, मैं अुस ओर ललचाया, और अेक दिन फ़ारसीकी कक्षामें जा बैठा। संस्कृत-शिक्षकको दुःख हुआ। अुन्होंने कहा — 'यह तो सोच कि तू लड़का किसका है। क्या तू अपने धर्मकी भाषा न सीखेगा? तेरी कठिनाअी क्या है, सो मुझे बता।' मैं शरमाया; शिक्षकके प्रेमकी अवगणना न कर सका। मैंने संस्कृत सीखना जारी रखा।

५

दुःखद प्रसंग

हाअीस्कूलमें जिसे मित्रता कहा जा सकता है, अैसे मेरे दो मित्र अलग-अलग वक्तमें थे। अेकका सम्बन्ध लम्बे समय तक न चला। मैंने दूसरेकी सोहबत की, अिस कारण पहलेने मुझे छोड़ दिया। दूसरेकी सोहबत कअी साल तक रही। अिस सोहबतमें मेरी दृष्टि सुधारक की थी। मैं यह देख सकता था कि अुस भाअीमें कुछ दोष थे। लेकिन मैंने अुसमें अपनी निष्ठाका आरोपण किया था। मेरी माताजी, बड़े भाअी और मेरी पत्नी — तीनोंको मेरी यह सोहबत कड़वी लगती थी। मैंने सबको यह कहकर आश्वस्त किया कि 'वह मुझे ग़लत रास्ते नहीं ले जायगा, क्योंकि अुसके साथ मेरा सम्बन्ध केवल अुसे सुधारनेके लिअे ही है।' सबने मुझ पर विश्वास

किया और मुझे मेरी राह जाने दिया। बादमें मैं देख सका कि मेरा अनुमान ठीक न था।

जिन दिनों मैं अिस मित्रके सम्पर्कमें आया, अुन दिनों राजकोटमें 'सुधारक पंथ' का जोर था। अिस मित्रने मुझे यह बताया कि जिन गृहस्थों आदिके बारेमें यह माना जाता है कि वे मांसाहार और मद्यपान नहीं करते हैं, वे छिपे तौर पर यह सब करते हैं। मुझे तो अिससे आश्चर्य हुआ और दुःख भी। परन्तु मित्रने मांसाहारकी प्रशंसा और वकालत अनेक अुदाहरणोंसे सजाकर कअी बार की। अुसके शारीरिक पराक्रम मुझे मुग्ध किया करते। जो शक्ति अपनेमें नहीं होती, अुसे दूसरेमें देखकर मनुष्यको आश्चर्य होता ही है। वही हाल मेरा हुआ। आश्चर्यमें से मोह पैदा हुआ।

फिर, मैं बहुत डरपोक था। चोरके, भूतके, साँप वगैराके डरों घिरा रहता था। ये डर मुझे सताते भी खूब थे। रात कहीं अकेले जानेकी हिम्मत न थी। अन्धेरेमें तो कहीं जाता ही न था; और दीयेके बिना सोना लगभग असम्भव था। मेरे अिस मित्रको मेरी अिन कमज़ोरियोंका पता था। अुसने मुझे यह जँचा दिया कि मांसाहारके प्रतापसे ही वह अिन कमज़ोरियोंसे मुक्त था। मैं पिघला।

मांसाहार शुरू करनेका दिन निश्चित हो गया।

मेरे संस्कार अिसके बिलकुल ही विपरीत थे। गांधी-परिवार वैष्णव सम्प्रदायका था। यह सम्प्रदाय मांसाहारका निरपवाद विरोध और तिरस्कार करनेवाला था। माता-पिता बहुत ही कट्टर माने जाते थे। मैं अुनका परम भक्त था। मैं यह मानता था कि यदि क़हीं अुन्हें मेरे मांसाहारकी बात मालूम हुअी, तो वे तो बिना मौतके तत्काल मर ही जायँगे। मैं जाने-अनजाने सत्यका सेवक तो था ही। अतअेव मैं यह तो नहीं कह सकता कि मांसाहार करनेसे माता-पिताको ठगना होगा, अिस बातका ज्ञान मुझे अुस समय न था।

अैसी स्थितिमें मांसाहार करनेका निश्चय मेरे लिअे बहुत गंभीर और भयंकर वस्तु थी।

लेकिन मुझे तो सुधार करना था। मांसाहारका शौक़ नहीं था। मैं तो बलवान और हिम्मतवाला बनना चाहता था; दूसरोंको अैसा बननेके लिअे न्योतना था; और फिर अंग्रेजोंको हराकर हिन्दुस्तानको स्वतंत्र करना चाहता था। सुधारके अिस जोशमें मैं होश भूल बैठा।

चोरोंकी तरह छिपकर काम करना मुझे अच्छा नहीं मालूम होता था। मैं अुसे शर्मकी बात समझता था। लेकिन अिस समय सुधारका अुत्साह और जीवनमें महत्त्वका फेरफार करनेका आकर्षण भी जोर पर था। मैंने मांसाहार शुरू किया और अेक वर्षमें पाँच-छः बार मांस खाया।

जब-जब अिस प्रकारका खाना खाया जाता, तब-तब घरमें भोजन करनेकी बात जमती ही न थी। जब माँ खानेके लिअे बुलाती, तो 'आज भूख नहीं है', 'हजम नहीं हुआ है' अिस तरहके बहाने बनाने पड़ते थे। जब-जब मुझे यह कहना पड़ता, तब-तब दिलको भारी आघात पहुँचता था। माँके सामने अैसी झूठ! फिर, अगर माता-पिताको मालूम हो जाय कि लड़का मांसाहारी हो गया है, तब तो अुन पर बिजली ही टूट पड़े। अिस तरहके विचार मेरे हृदयको अन्दरसे खोखला बना रहे थे। अिसलिअे मैंने निश्चय किया — 'मांस खाना आवश्यक है; अुसका प्रचार करके हिन्दुस्तानको सुधारेंगे; लेकिन माता-पिताको धोखा देना और झूठ बोलना मांस खानेसे भी बुरा है। अिसलिअे माता-पिताके जीतेजी मांस नहीं खाया जा सकता। अुनकी मृत्युके बाद स्वतंत्र होने पर खुले तौर पर मांस खाना ठीक होगा, और जब तक वह समय न आवे तब तक मांसाहारका त्याग करना अुचित है।' मैंने मित्रको अपना यह निश्चय जता दिया और तबसे मांसाहार जो छूटा सो छूटा ही छूटा। माता-पिता तो अिस बातको कभी जान ही नहीं पाये।

माता-पिताको धोखा न देनेके शुभविचारसे प्रेरित होकर मैंने मांसाहार छोड़ा; लेकिन अुस मित्रकी मित्रता नहीं छोड़ी।

अिसी सोहबतके कारण मैं व्यभिचारमें भी फँस जाता। मित्रने मुझे पाप-घरमें भेजा! मैं वहाँ गया, लेकिन बिना गिरे लौट आया। अीश्वर

जिसे वचाना चाहता है, वह गिरना चाहते हुअे भी पवित्र रह सकता है। अिस तरह वच जानेके लिअे मैंने सदा ही अीश्वरका आभार माना है।

अितना सव होने पर भी मुझे अिस वातका होश न हुआ कि अिस मित्रकी मित्रता अनिष्ट है। अैसा होनेसे पहले मुझे अभी और कड़वे अनुभव लेने ही थे।

पति-पत्नीके नाते हम दोनोंके वीच जो कुछ दुराव पैदा होता और कलह जागता, अुसका अेक कारण यह मित्रता भी थी। मैं जितना प्रेमी अुतना ही वहमी पति था। मेरे वहमको वढ़ानेवाली यह मित्रता थी, क्योंकि मित्रकी सचाअी पर मुझे अविश्वास था ही नहीं। अिस मित्रकी वात मानकर मैंने अपनी धर्मपत्नीको वहुत-कुछ दुःख पहुँचाया है। अिस हिंसाके लिअे मैं अपनेको कभी माफ़ नहीं कर सका हूँ। अिस वहमका पूरा-पूरा नाश तो तभी हुआ जव मुझे अहिंसाका सूक्ष्म ज्ञान हुआ; अर्थात् जव मैं ब्रह्मचर्यकी महिमा समझा और समझा कि पत्नी पतिकी दासी नहीं, वल्कि अुसकी सहचारिणी है।

६

चोरी

अिन दो अनुभवोंसे पहले अपने अेक रिश्तेदारके साथ मुझे वीड़ी पीनेका शौक़ हो गया था। मेरे काकाको वीड़ी पीनेकी आदत थी। अतअेव अुन्हें और दूसरोंको धुआँ निकालते देखकर हमें भी वीड़ी फूँकनेकी अिच्छा हो आअी। गाँठमें पैसे थे नहीं, अिसलिअे काका वीड़ीके जो ठूँठ फेंक दिया करते थे, हमने अुन्हें चुराना शुरू किया।

लेकिन ठूँठ भी हर समय मिल नहीं सकते थे। अिसलिअे नौकरकी गाँठमें जो दो-चार पैसे होते, अुनमें से वीच-वीचमें अेकाध चुरा लेनेकी आदत डाली, और हम वीड़ी खरीदने लगे। किन्तु हमें सन्तोष न हुआ। अपनी पराधीनता हमें खलने लगी। अिस वातका दुःख रहने

लगा कि बड़ोंकी आज्ञाके बिना कुछ हो ही नहीं सकता। हम अुकता अुठे और हमने तो आत्महत्या करनेका निश्चय किया!

हम दोनों जंगलमें गये और धतूरेके बीज ढूंढ़ लाये। शामका समय खोजा। केदारजीके मंदिरकी दीपमालिकामें घी चढ़ाया, दर्शन किये और अेकान्त ढूंढ़ा। लेकिन जहर खानेकी हिम्मत न पड़ी। अगर फौरन ही मौत न आयी तो? मरनेसे लाभ ही क्या? पराधीनताको ही क्यों न सहन किया जाय? फिर भी दो-चार बीज खाये। और अधिक खानेकी हिम्मत ही न हुअी। दोनों मौतसे डरे और तय किया कि रामजीके मंदिरमें जाकर और दर्शन करके शांत हो जाना तथा आत्महत्याकी बातको भूल जाना है।

आत्महत्याके अिस विचारका अेक परिणाम यह हुआ कि हम दोनों जूठी बीड़ी चुराकर पीनेकी और साथ ही नौकरके पैसे चुराकर अुनसे बीड़ी खरीदने और फूंकनेकी आदत भूल ही गये। बड़ेपनमें मुझे बीड़ी पीनेकी कभी अिच्छा ही नहीं हुअी, और मैंने सदा ही यह माना है कि यह आदत जंगली, गन्दी और हानिकारक है।

जिस समय बीड़ीका दोष हुआ, अुस समय मेरी अुमर कोअी बारह-तेरह सालकी रही होगी; शायद अिससे भी कम।

लेकिन अिससे भी अधिक गंभीर चोरीका अेक दूसरा दोष मेरे हाथों हुआ। अुस समय मेरी अुमर पंद्रह सालकी रही होगी। मुझसे बड़े भाअीने कोअी पच्चीस रुपयेका क़र्ज बढ़ा लिया। हम दोनों भाअी अुसे चुकानेके बारेमें सोचा करते थे। मेरे भाअीके हाथमें सोनेका ठोस कड़ा था। अुसमें से अेक तोला सोना काटना कठिन न था।

कड़ा कटा। क़र्ज अदा हुआ। लेकिन मेरे लिये यह बात असह्य हो गयी। आगे कभी चोरी न करनेका मैंने दृढ़ निश्चय किया। मुझे लगा कि पिताजीके सामने यह सब स्वीकार भी कर लेना चाहिये। जीभ तो खुलती न थी। अिस बातका भय भी न था कि पिताजी खुद मुझे मारेंगे। अुन्होंने कभी हममें से किसी भाअीको मारा न था। लेकिन वे स्वयं दुःखी होंगे और शायद सिर पीट लेंगे तो?

मुझे लगा कि अिस जोखिमको अुठाकर भी दोष कबूल करना ही चाहिये, अिसके बिना शुद्धि न होगी।

आखिर मैंने चिट्ठी लिखकर दोष कबूल करने और माफ़ी माँगनेका निश्चय किया। मैंने चिट्ठी लिखी और हाथोंहाथ दी। चिट्ठीमें सारा दोष कबूल किया और सज़ा चाही। बहुत अनुनय-विनयके साथ लिखा कि स्वयं अपने अूपर दुःख न ओढ़ें और प्रतिज्ञा की कि भविष्यमें फिर कभी अैसा दोष न होगा।

मैंने काँपते हाथों पिताजीके हाथमें यह चिट्ठी रखी। मैं अुनकी खटियाके सामने बैठ गया। अुस समय अुन्हें भगन्दरका कष्ट था। अिस कारण वे खटिया पर लेटे थे। अुन्होंने चिट्ठी पढ़ी। आँखसे मोतीकी बूँदें टपकीं। चिट्ठी भीग गअी। अुन्होंने क्षणभरके लिअे आँखें मूँदीं, चिट्ठी फाड़ डाली, और खुद पढ़नेके लिअे जो अुठ बैठे थे, सो फिर लेट गये।

मैं भी रोया; पिताजीके दुःखको समझ सका। मोतीकी अुन बूँदोंके प्रेमबाणने मुझे बींधा; मैं शुद्ध बना।

मेरे लिअे यह अहिंसाका पदार्थ-पाठ था। अुस समय तो मैंने अिसमें पिताके प्रेमके अतिरिक्त और कुछ नहीं देखा, लेकिन आज मैं अिसे शुद्ध अहिंसाके नामसे पहचान सकता हूँ।

अिस प्रकारकी शांत क्षमा पिताजीके स्वभावके प्रतिकूल थी। मैंने सोचा था कि वे क्रोध करेंगे, कटुवचन कहेंगे, और कदाचित् अपना सिर पीट लेंगे। किन्तु अुन्होंने जिस अपार शांतिका परिचय दिया, अुसका कारण शुद्ध भावसे दोषकी स्वीकृति ही थी। मेरी स्वीकृतिसे पिताजी मेरे बारेमें निर्भय बने और अुनका महान् प्रेम वृद्धिगत हुआ।

७

पिताजीकी मृत्यु

मेरी अुमरके १६वें वर्षमें पिताजीका अवसान हुआ। वे लम्बे समय तक रोग-शय्या पर रहे। अिस बीच मैंने अुनकी खूब सेवा की। मेरा काम नर्सका था। खाने-पीनेसे जो समय बचता था, अुसे स्कूलमें अथवा पिताजीकी सेवामें ही बिताता था। जब अुनकी आज्ञा मिलती और अुनकी तबीयतको आराम होता, तब शामको घूमने जाता था। रात हमेशा पैर दबाता और वे अिजाज़त देते तब अथवा अुनके सो जाने पर सोने जाता था। मुझे यह सेवा अतिशय प्रिय थी। मैं विद्यालयकी पढ़ाअी करनेके धर्मको समझता था, और अुससे भी अधिक माता-पिताकी भक्तिके धर्मको समझता था। फिर भी विषय-वासना मुझ पर सवारी कस सकती थी। पिताजीके पैर तो दबाता था, लेकिन साथ ही मन शयन-गृहकी ओर दौड़ा करता था; और जब मुझे सेवासे छुट्टी मिलती थी, तो मैं खुश होता था।

अंतिम रात्रिको मैं बड़ी देर तक पैर दबाता रहा। काकाजीने सो जानेको कहा। किसीको यह खयाल तो था ही नहीं कि यह रात आखिरी रात होगी। मैं सीधा शयन-गृहमें पहुँचा। स्त्री तो बेचारी गहरी नींदमें थी। मैंने अुसे जगाया। पाँच-सात मिनट बीते होंगे, कि अितनेमें मुझे पिताजीके गुजर जानेकी खबर मिली। मैं शरमाया, बहुत दुःखी हुआ और समझा कि यदि मैं विषयान्ध न होता, तो अंतिम घड़ीमें अिस तरहका बिछोह न हुआ होता, और मैं अंतिम क्षण तक पिताजीके पैर दबाता होता। अिस काले दागको मैं आज तक भूल नहीं सका हूँ। माता-पिताके प्रति मेरी भक्तिकी कोअी सीमा नहीं थी। अुसके लिअे मैं सब कुछ छोड़ सकता था। लेकिन अुनकी सेवाके समय भी मेरा मन विषयको छोड़ न सकता था, यह अुस सेवामें रही हुअी अक्षम्य न्यूनता थी। अिसी कारण मैंने अपनेको अेकपत्नीव्रतका पालनेवाला मानते हुअे भी विषयान्ध माना है। अिससे छूटनेमें मुझे बहुत समय लगा, और छूटनेसे पहले अनेक धर्म-संकटोंका सामना करना पड़ा।

८

धर्मकी झाँकी

छः या सात वर्षसे लेकर सोलह वर्षकी अुमर तक मेरी जो पढ़ाअी हुअी, अुसमें मैंने स्कूलमें धर्मकी शिक्षा कहीं भी प्राप्त न की। तिस पर भी वातावरणमें से कुछ न कुछ तो मिलता ही रहा। यहाँ धर्मका अुदार अर्थ करना चाहिये — धर्म अर्थात् आत्मबोध, आत्मज्ञान।

मेरा जन्म वैष्णव सम्प्रदायमें हुआ था, अिसलिअे समय-समय पर 'हवेली' में जाना होता रहता था। लेकिन अुसके प्रति श्रद्धा अुत्पन्न न हुअी। मुझे हवेलीका वैभव अच्छा न लगा। हवेलीमें चलनेवाली अनीतिकी बातें सुनता रहता था। अुसके कारण अुसके प्रति मन अुदास हो गया था। वहाँसे मुझे कुछ भी न मिला।

लेकिन जो चीज हवेलीसे न मिली, वह मुझे अपनी दाअीसे मिली। मैं भूत-प्रेत आदिसे डरा करता था। रंभाने मुझे समझाया कि अिसकी औषधि रामनाम है। भूत-प्रेतके भयसे बचनेके लिअे मैंने बचपनमें रामनामका जप शुरू किया। वह अधिक समय तक नहीं टिका। लेकिन बचपनमें जो बीज बोया गया था, वह नष्ट नहीं हुआ। आज रामनाम मेरे लिअे अमोघ शक्ति है।

अिन्हीं दिनोंमें मेरे काकाके अेक लड़केने मुझे रामरक्षाका पाठ सिखानेका प्रबन्ध किया, और मैंने सवेरे स्नानके बाद अुसे हमेशा पढ़ जानेका नियम रखा। जब तक पोरबन्दरमें रहा तब तक तो यह नियम निभा। राजकोटके वातावरणमें यह टिक न सका। वैसे, अिस क्रियाके विषयमें मुझे कोअी खास श्रद्धा नहीं थी।

लेकिन जिस चीजने मेरे मन पर गहरी छाप डाली थी, वह थी रामायणका पारायण। पिताजीकी बीमारीका कुछ समय पोरबन्दरमें बीता था। वहाँ वे रोज रातको रामजीके मंदिरमें रामायण सुना करते थे। सुनानेवाले रामचन्द्रजीके अेक परम भक्त, लाधा महाराज थे। वे दोहा, चौपाअी गाते और अर्थ समझाते। स्वयं अुसके रसमें लीन

हो जाते और श्रोता जनोंको भी लीन कर देते। अुन दिनों मेरी अुमर तो तेरह सालकी रही होगी, किन्तु मुझे अुनके पाठमें खूब रस आता था। यह रामायण-श्रवण रामायण विषयक मेरे अत्यन्त प्रेमकी नींव है। आज मैं तुलसीदासकी रामायणको भक्तिमार्गका सर्वोत्तम ग्रन्थ मानता हूँ।

कुछ महीनों बाद हम राजकोट आये। वहाँ अिस प्रकारके पाठकी व्यवस्था न थी। हाँ, अेकादशीके दिन भागवत पढ़ी जाती थी। मैं अुसमें कभी-कभी जा बैठता था। लेकिन भट्टजी रस अुत्पन्न नहीं कर पाये। आज मैं यह देख सकता हूँ कि भागवत अैसा ग्रन्थ है, जिसे पढ़कर धर्मरस अुत्पन्न किया जा सकता है। मैंने तो अुसे गुजरातीमें अतिशय रसपूर्वक पढ़ा है।

राजकोटमें अनायास ही मुझे सब सम्प्रदायोंके प्रति समान भाव रखनेकी तालीम मिली। वहाँ मैं हिन्दूधर्मके प्रत्येक सम्प्रदायके प्रति आदरभाव रखना सीखा। क्योंकि माता-पिता हवेलीमें जाते, शिवालयमें जाते, और राममंदिरमें भी जाते तथा साथमें हम भाअियोंको ले जाते अथवा भेजा करते थे।

अिसके साथ ही पिताजीके पास जैन धर्माचार्योंमें से कोअी न कोअी हमेशा आते रहते। वे पिताजीके साथ धर्मकी और व्यवहारकी बातें करते। अिनके अलावा, पिताजीके मुसलमान और पारसी मित्र थे। वे अपने-अपने धर्मकी बातें करते और पिताजी अुनकी बातोंको सम्मानपूर्वक और प्रायः रसपूर्वक सुना करते। चूँकि मैं पिताजीकी परिचर्यामें रहता था, अिसलिअे अैसे वार्तालापोंके समय प्रायः वहीं अुपस्थित रहता था। अिस सारे वातावरणका मुझ पर यह प्रभाव पड़ा कि मुझमें सब धर्मोंके प्रति समान भाव पैदा हो गया।

अिस प्रकार यद्यपि दूसरे धर्मोंके प्रति मनमें समभाव अुत्पन्न हो गया था, तो भी यह नहीं कहा जा सकता कि मुझमें अीश्वरके प्रति आस्था थी। अिन्हीं दिनों मेरे पिताजीके पुस्तक-संग्रहमें से मुझे मनुस्मृतिका भाषांतर देखनेको मिला। अुसमें संसारकी अुत्पत्ति आदिके विषयमें बातें पढ़ीं। अुन पर मेरी श्रद्धा नहीं जमी। अुलटे, कुछ

नास्तिकता पैदा हुअी। मैंने अपने दूसरे काकाके लड़केके सामने अपनी शंकायें रखीं। किन्तु वे मेरा समाधान न कर सके। मनुस्मृतिके खाद्याखाद्य प्रकरणमें और दूसरे प्रकरणोंमें भी मैंने प्रचलित प्रथाका विरोध पाया। और, अुन दिनों मनुस्मृति पढ़कर मैं अहिंसा तो बिलकुल न सीखा।

लेकिन अेक बातने मनमें जड़ जमा ली — यह संसार नीति पर टिका हुआ है। नीति-मात्रका समावेश सत्यमें हुआ है। सत्यकी तो शोध ही करनी रही। यों दिनोंदिन सत्यकी महिमा मेरी दृष्टिके सामने बढ़ती गअी। सत्यकी व्याख्या विस्तृत होती गअी, और अभी भी होती ही रहती है।

साथ ही, नीतिका अेक छप्पय भी हृदयमें बस गया। अुपकारका बदला अपकार नहीं अुपकार ही हो सकता है, यह वस्तु जीवनका सूत्र बन गअी। अुसने मुझ पर साम्राज्य चलाना शुरू किया। अपकारीका भला चाहना और करना मेरे अनुरागका विषय बन गया। मैंने अुसके अनगिनत प्रयोग किये। वह चमत्कारी छप्पय यों है:

पाणी आपने पाय, भलुं भोजन तो दीजे;
आवी नमावे शीश, दंडवत कोडे कीजे.
आपण घासे दाम, काम महोरोनुं करीअे;
आप अुगारे प्राण, ते तणा दुःखमां मरीअे.
गुण केडे तो गुण दश गणो, मन, वाचा कर्मे करी;
अवगुण केडे जे गुण करे, ते जगमां जीत्यो सही.

(अर्थ :— जो हमें पानी पिलावे, अुसे हम भोजन करावें। जो हमारे सामने शीश झुकावे, अुसे हम अुमंगसे दण्डवत् प्रणाम करें। जो हमारे लिअे अेक पैसा भी खर्चे, अुसके लिअे हम गिन्नियोंका काम कर दें। जो हमारे प्राण बचावे, अुसके दुःखको दूर करनेमें हम अपने प्राण तक न्यौछावर कर दें। अुपकार करनेवालेके प्रति तो मन, वाणी और कर्मसे दस गुना अुपकार करना ही चाहिये। लेकिन जगमें सच्चा और सार्थक जीना अुसीका है, जो अपकार करनेवालेके प्रति भी अुपकार करता है।)

९

विलायतकी तैयारी

सन् १८८७ में मैट्रिक्युलेशनकी परीक्षा पास की। घरके बड़ोंकी अिच्छा थी कि पास होने पर मैं कॉलेजमें भरती होअूँ और आगे पढ़ूँ। भावनगरका खर्च कम था, अिसलिअे भावनगरके शामळदास कॉलेजमें जानेका निश्चय हुआ। वहाँ मुझे कुछ आता न था, सब कठिन मालूम होता था, अध्यापकोंके व्याख्यानोंमें न तो रस आता था, न कुछ समझ ही पड़ता था। पहली टर्म (सत्र) पूरी करके घर आया।

मावजी दवे परिवारके पुराने मित्र और सलाहकार तथा विद्वान् और व्यवहारकुशल ब्राह्मण थे। अिन छुट्टियोंके दिनोंमें वे घर आये। माताजी और बड़े भाअीके साथ बातचीत करते हुअे अुन्होंने मेरी पढ़ाअीके बारेमें पूछताछ की और आग्रहपूर्वक सलाह दी कि अगर कबा गांधीकी गादी सँभालनी है, तो आपको अिसे बैरिस्टर बननेके लिअे विलायत भेजना चाहिये। मुझे तो भाता था और मैंने बता दिया। बड़े भाअी सोचमें पड़ गये — पैसेका क्या होगा? और मेरे जैसे नवयुवकको अितनी दूर कैसे भेजा जाय! माताजीको कुछ सूझ न पड़ा। अुन्होंने काकाकी सलाह लेनेको कहा।

पोरबन्दरके अेडमिनिस्ट्रेटर गांधी परिवारके लिअे अच्छी राय रखते थे। बड़े भाअीने सोचा, अुनकी मारफ़त राज्यकी ओरसे थोड़ी-बहुत मदद मिल सके, तो ली जाय। मुझे अुनका यह विचार अच्छा लगा। मैं डरपोक था, लेकिन अिस बार मेरा डर भाग गया। मैं पोरबन्दर जानेको तैयार हुआ। काकाने कहा — "मैं तुझे विलायत जानेकी — समुद्र लाँघनेकी — अिजाजत क्योंकर दूँ? लेकिन मैं बाधक नहीं बनूँगा। सच्ची अिजाजत तो तेरी माँकी है। यदि वह तुझे अिजाजत दे, तो तू बेखटके जाना। यह कहना कि मैं तुझे रोकूँगा नहीं। मेरे आशीर्वाद तो तुझे हैं ही।"

फिर मैं अेडमिनिस्ट्रेटरसे मिला। अुसने थोड़ेमें वात खुटा दी —"तू वी० अे० हो जा, वादमें मुझसे मिलना। अभी कोअी मदद नहीं दी जायगी।"

मैं राजकोट लौटा। जोशीजीने (दवेने) सलाह दी कि क़र्ज़ लेकर भी मुझे विलायत भेजा जाय। मैंने सुझाया कि मेरी स्त्रीके हिस्सेके जेवर वेच डाले जायँ। अुनसे दो-तीन हजार रुपयोंसे अधिक रकम मिलनेवाली न थी। भाअीने वीड़ा अुठाया कि वे, जैसे भी वनेगा, रुपयोंका प्रवंध करेंगे।

माताने सब तरहकी पूछताछ शुरू की। किसीने कहा— नौजवान विलायत जाकर विगड़ जाते हैं; किसीने कहा—वे वहाँ मांसाहार करने लगते हैं; कोअी वोला—वहाँ बिना शरावके काम ही नहीं चलता। माताने ये सारी वातें मुझसे कहीं। मैंने कहा— "लेकिन क्या तू मुझ पर विश्वास न करेगी? मैं तूझे धोखा न दूँगा। शपथ खाकर कहता हूँ कि मैं अिन चीजोंसे वचूँगा।"

माता वोली—"मैं तुझ पर विश्वास करती हूँ। लेकिन दूर देशमें क्या हो? मेरी तो अक़्ल काम नहीं करती। मैं वेचरजी स्वामीसे पूछूँगी।" वे भी परिवारके सलाहकार थे। अुन्होंने मदद की; मुझसे तीन प्रतिज्ञायें लिवाअीं, और मैंने मांस, मदिरा तथा स्त्री-सेवनसे दूर रहनेकी प्रतिज्ञा ली। माताने आज्ञा दे दी।

गुरुजनोंके आशीर्वाद लेकर मैं विलायत जानेके लिअे बड़े भाअीके साथ वम्वअी पहुँचा। भाअीने मित्रोंसे सुना कि चौमासेमें समुद्र तूफानी हो जाता है। अुन्होंने अिसका जोखिम अुठाकर तुरंत भेजनेसे अिनकार किया। मैं अनुकूल समयकी राह देखता वम्वअीमें रुक गया; भाअी राजकोट लौट गये।

अिस वीच जातमें खलवली मची। जात वुलाअी गअी। मुझे जातकी 'वाड़ी' में हाज़िर रहनेका फ़रमान मिला। मैं गया। मुझमें अेकाअेक हिम्मत आ गअी। हाज़िर रहनेमें न संकोच हुआ, न डर लगा। जातके सेठ और मेरे वीच सवाल-जवाव हुअे। मैंने कहा— "विलायत जानेका अपना निश्चय मैं वदल नहीं सकता। मेरे

पिताजीके मित्र और सलाहकार, जो विद्वान् ब्राह्मण हैं, मानते हैं कि मेरे विलायत जानेमें कोअी दोष नहीं है। मुझे अपनी माताजीकी और भाअीकी आज्ञा भी मिल चुकी है।"

सेठने कहा—"लेकिन क्या तू जातका हुक्म नहीं मानेगा?"

मैंने जवाब दिया—"मैं लाचार हूँ। मुझे लगता है कि अिसमें जातको बीचमें न पड़ना चाहिये।"

अिस अुत्तरसे सेठको रोष हो आया। मुझे दो-चार सुना दी। मैं शान्तभावसे बैठा रहा। सेठने हुक्म दिया—"अिस लड़केको आजसे जात बाहर माना जायगा।"

मुझ पर अिस ठहरावका कोअी असर न हुआ; बड़े भाअी भी दृढ़ रहे। और सन् १८८८ के सितम्बर महीनेकी ४ तारीखको मैंने बम्बअीका बन्दरगाह छोड़ा।

२ : विलायतमें

१०

शुरूके महीने

स्टीमरमें ही मेरी कसौटी शुरू हो गअी। अंग्रेजीमें व
मुझे आदत ही न थी। मुसाफ़िर अंग्रेज थे। अुनके साथ
करना आता न था। काँटे-चम्मचसे खाना मैं जानता न था
पूछनेकी हिम्मत न होती थी कि कौनसी चीज विना मांस
है। अिसलिअे मैं खानेकी मेज पर तो कभी गया ही नहीं। व
जो मिठाअी वगैरा लेकर चला था, मुख्यतः अुसीसे काम
अपनी भीरुता छोड़ न सका।

अेक अंग्रेजने मुझसे वातचीत करना शुरू किया। मांस न
मेरे आग्रहकी वात सुनकर वे हँसे और वोले कि अिग्लैण्डमें तो
सरदी पड़ती है कि मांसके विना चल ही नहीं सकता।

किन्तु मैंने कहा — "मैं अपनी माताजीके साथ वचन
गया हूँ, अिसलिअे मैं अिसे ले नहीं सकता। अगर अिसके विना
ही न होगा, तो मैं वापस हिन्दुस्तान चला जाअूँगा, लेकिन मां
हरगिज़ न खाअूँगा।"

सुख-दुःखके साथ यात्रा पूरी करके मैं साअुथेम्प्टन वन्दरगाह
फ़ेद फलालैनका कोट-पतलून पहने अुतरा और अेक होटलमें ग
क्टर प्राणजीवन महेता वहाँ मुझसे मिलने आये। अुन्होंने प्रेम
नोद किया और युरोपके रीति-रिवाजोंकी अनेकानेक वातें
झाअीं।

होटल महँगा था। मैं अेक-दो दिन वहाँ रहा और फिर अेक कोठ
मिलने पर अुसमें जा वसा। मैं वहुत ही परेशान हो अुठा।

याद बहुत आने लगी। माँका प्रेम मूर्तिमंत होने लगा। रात पड़ती और मैं रोना शुरू कर देता। अजब लोग थे, अजब रहन-सहन थी, घर भी अजब थे। खाने-पीनेका परहेज़ था ही, और खाने योग्य पदार्थ रूखे और रसहीन लगते थे। मेरी हालत सरोतेके बीच सुपारी-जैसी हो गअी। विलायतमें अच्छा लगता नहीं था, और वापस देश जाना जँचता न था। जब विलायत पहुँच गया हूँ, तो आग्रह यही था कि तीन साल पूरे कर ही लूं।

डॉक्टर महेता मेरी कोठड़ीमें मुझसे मिलने आये। अुन्हें वह जगह पसंद न पड़ी। अुन्होंने मुझे अेक मित्रके घरमें ठहराया। मित्रने अंग्रेजी रीति-रिवाज सिखाये और अंग्रेजीमें कुछ बात करनेकी आदत भी अुन्होंने डाली।

मेरे भोजनका प्रश्न बहुत बड़ा प्रश्न बन गया। बिना नमक और मसालेकी साग-तरकारी रुचती न थी। सुबह तो ओटमीलका दलिया बनता था, अतः अुससे पेट थोड़ा भर जाता था, पर दोपहर और शामको मैं सदा भूखा रहता था। मित्र मुझे रोज मांसाहारके लिअे समझाते। मैं प्रतिज्ञाका सहारा लेकर चुप हो जाता। मित्र अेक दिन बहुत खीझे और बोले — "निरक्षर माँके सामने यहाँकी परिस्थिति जाने बिना की गअी प्रतिज्ञाका मूल्य ही क्या है? अैसी प्रतिज्ञा, प्रतिज्ञा ही नहीं।"

लेकिन मैं टससे मस न हुआ।

मित्र रोज दलील करते। लेकिन मेरे पास तो छत्तीस रोगोंको मिटानेवाला अेक ही नन्ना था। मित्र जितना ही मुझे समझाते, मेरी दृढ़ता अुतनी ही बढ़ती। रोज अीश्वरसे रक्षाकी याचना करता और मुझे रक्षा मिलती। मैं जानता न था कि अीश्वर कौन है। लेकिन रम्भा द्वारा दी गअी श्रद्धा अपना काम कर रही थी।

अेक दिन मित्रने मेरे सामने बेंथमका ग्रंथ पढ़ना शुरू किया। अुन्होंने अुसका विवेचन किया। मैंने अुत्तर दिया — "मैं अैसी सूक्ष्म बात नहीं समझता। मैं कबूल करता हूँ कि मांस खाना चाहिये। लेकिन

अपनी प्रतिज्ञाके बन्धनको मैं तोड़ नहीं सकता। अिसके बारेमें मैं कोअी दलील नहीं कर सकता। मैं आपके प्रेमको समझता हूँ। आपका हेतु समझता हूँ। लेकिन लाचार हूँ। प्रतिज्ञा टूट नहीं सकती।"

अिसके बाद मित्रने दलील करना छोड़ दिया।

मैं मित्रके घर अेक महीना रहा। डॉक्टर महेताने अब मुझे अेक परिवारमें रखा।

यहाँ मुझे मांसाहारकी चर्चामें न पड़ना पड़ा। लेकिन जो खानेको मिलता, सो सब फीका लगता। मैं शरमाता और भूखा रहता। अभी मेरी पढ़ाअी तो शुरू हुअी न थी। मैं मुश्किलसे समाचार-पत्र पढ़ने लगा था। हिन्दुस्तानमें तो मैंने कभी समाचार-पत्र पढ़े नहीं थे।

मैंने भ्रमण शुरू किया। मुझे निरामिष अन्नाहार देनेवाला भोजनगृह खोजना था। मैं रोज दस-बारह मील चलता। अिस तरह भटकते हुअे अेक दिन मैं फेरिंग्डन स्ट्रीट पहुँचा और वहाँ 'वेजिटेरियन रेस्टोरां'का नाम पढ़ा। जो आनन्द बालकको मनपसंद चीजके मिलनेसे होता है, वही मुझे हुआ। अन्दर दाखिल होनेसे पहले ही मैंने काँचकी खिड़कीमें सॉल्टकृत 'अन्नाहारकी हिमायत' नामक पुस्तक देखी। अेक शिलिंग देकर पुस्तक खरीदी और खाने बैठा। विलायत आनेके बाद अुस दिन पहली बार भरपेट खानेको मिला। अीश्वरने मेरी भूख बुझायी। सॉल्टकी पुस्तक पढ़ी। मुझ पर अुसकी अच्छी छाप पड़ी। जिस दिन मैंने यह पुस्तक पढ़ी, अुस दिनसे मैं स्वेच्छापूर्वक अर्थात् विचारपूर्वक अन्नाहारमें मानने लगा। माताके निकट की गअी प्रतिज्ञा अब मुझे विशेष आनन्द देनेवाली बनी; और स्वयं अन्नाहारी रहकर दूसरोंको वैसा बनानेका लोभ जागा।

११

'सभ्य' पोशाकमें

अन्नाहार पर मेरी श्रद्धा दिन-दिन बढ़ने लगी। सॉल्टकी पुस्तकने आहारके विषयमें अधिक पढ़नेकी मेरी जिज्ञासाको तीव्र बनाया। जितनी पुस्तकें मुझे मिलीं, मैंने खरीद लीं और पढ़ डालीं। अिस वाचनका परिणाम यह हुआ कि मेरे जीवनमें आहारके प्रयोगोंको महत्त्वका स्थान मिल गया।

अिस बीच अुन मित्रकी मेरे संबंधकी चिन्ता मिटी न थी। अुन्होंने प्रेमवश यह माना कि अगर मैंने मांसाहार न किया, तो मैं कमजोर हो जाअूँगा, यही नहीं, बल्कि मैं 'बुद्धू' भी बनूँगा। अुन्होंने मुझे सुधारनेका अेक अन्तिम प्रयत्न किया — मुझे नाटक दिखाने ले जानेका न्योता दिया। नाटकमें जानेसे पहले मुझे अुनके साथ भोजनगृहमें भोजन करना था। शुरूमें ही 'सूप' आया। मैं परेशान हुआ। परोसनेवालेको पास बुलाया। मित्र समझ गये और चिढ़कर बोले: 'अगर तुझे अब भी यही किचकिच करनी हो, तो जाकर किसी छोटे भोजनगृहमें भोजन कर ले और बाहर मेरी राह देख।' अिस प्रस्तावसे मुझे खुशी हुअी। मैं अुठा और अेक दूसरे भोजनालयको तलाशना शुरू किया। पास ही में अेक अन्नाहार देनेवाला भोजनालय था, लेकिन वह बन्द हो चुका था। मैं भूखा रहा। हम नाटक देखने गये। मित्रने अुस घटनाके बारेमें अेक भी शब्द मुँहसे न निकाला।

हमारे बीच यह अन्तिम मित्र-युद्ध था। हमारा संबंध न तो टूटा, और न कड़ुवा बना। मैं अुनके समस्त प्रयासोंकी जड़में रहे हुअे प्रेमको ताड़ सका था, अिस कारण विचार और आचारकी भिन्नता रहते हुअे भी अुनके प्रति मेरा आदर बढ़ा।

लेकिन मुझे लगा कि मुझको अुनका डर दूर करना चाहिये। मैंने निश्चय किया कि मैं जंगली नहीं रहूँगा, सभ्य पुरुषके लक्षण लूँगा,

और दूसरे प्रकारोंसे समाजमें मिलने-जुलने योग्य वनकर अन्नाहार विषयक अपनी विचित्रताको ढँक लूँगा।

मैंने 'सभ्यता' सीखनेके लिअे अपनी हैसियतसे वाहरका और छिछला रास्ता अपनाया।

मैंने 'आर्मी और नेवी' स्टोरमें कपड़े वनवाये। जहाँ शौक़ीन लोगोंके कपड़े सिलते थे, वहाँ १० पौंड पर वत्ती रखकर शामकी पोशाक सिलवाअी। भोले और वादशाही दिलवाले वड़े भाअीकी मारफ़त खास सोनेकी अेक चेन, जो दोनों जेवोंमें लटक सके, मँगवाअी और वह मिल भी गअी। टाअी वाँवनेकी कला हस्तगत की। वड़े आअीनेके सामने खड़े रहकर ठीकसे टाअी वाँवनेमें और वालोंमें पट्टी डालकर माँग निकालनेमें हर रोज दस मिनटकी वरवादी तो होती ही थी। टोपी पहनते और अुतारते समय हाथ माँग सँभालनेके लिअे सिर पर वरवस पहुँच ही जाते थे। साथ ही, जव समाजमें वैठे होते तव माँग पर हाथ रखकर वालोंको ठिकाने रखनेकी अेक निराली और सभ्य क्रिया चलती ही रहती।

लेकिन यह अितनी टीमटाम ही काफी न थी। सभ्यताके दूसरे कुछ वाह्य गुण भी जान लिये थे और अुनका विकास करना था। सभ्य पुरुषको नाचना आना चाहिये। अुसे फ्रेंच ठीक-ठीक जानना चाहिये। साथ ही, सभ्य पुरुषको लच्छेदार भाषण करना भी आना चाहिये। मैंने नाचना सीख लेनेका निश्चय किया। अेक कक्षामें भरती हो गया। अेक सत्रके कोअी तीन पौंड जमा कर दिये। लगभग तीन हफ़्तोंमें कोअी छः पाठ लिये होंगे। पैर वरावर तालसे पड़ते न थे। सोचा, वायोलिन वजाना सीख लूँ। अिससे सुर और तालका अंदाज़ वैठ सकेगा। तीन पौंड वायोलिन खरीदनेमें स्वाहा किये और अुसकी शिक्षा पर भी कुछ खर्च किया। भाषण करना सीखनेके लिअे अेक तीसरे शिक्षकका घर देखा। अुसे भी अेक गिनी तो देनी ही पड़ी। वेलकी 'स्टैण्डर्ड अेलोक्यूशनिस्ट' खरीदी।

अिन वेलसाहवने मेरे कानमें घंटी वजाअी; मैं जागा।

मुझे कहाँ अिंग्लैण्डमें सारी ज़िन्दगी वितानी है ? मैं लच्छेदार भापण करना सीख कर क्या करूँगा ? नाचना सीखकर मैं सभ्य कैसे वनूँगा ? वायोलिन तो देशमें भी सीखा जा सकता है। मैं तो विद्यार्थी हूँ। मुझे विद्याध्ययन वढ़ाना चाहिये। मुझे अपने धंधेसे संवंध रखनेवाली तैयारी करनी चाहिये। अपने सद्व्यवहारसे सभ्य माना जाअूँ तो ठीक ही है, अन्यथा मुझे यह लोभ छोड़ना चाहिये। मैंने अिस आशयके अुद्गारोंवाला अेक पत्र अपने भापण-शिक्षकके नाम भेज दिया। नाच-शिक्षिकाको भी अैसा ही अेक पत्र लिखा। वायोलिन-शिक्षिकाके घर वायोलिन लेकर पहुँचा। मैंने अुसे अनुमति दी कि वह जितने भी दाम आयें अुतने लेकर अुसे वेच डाले।

सभ्य वननेकी यह सनक कोअी तीन महीने रही होगी। पोशाककी टीमटाम वर्षों तक टिकी। लेकिन मैं विद्यार्थी वना।

१२

फेरफार

नाच आदिके मेरे प्रयोगोंका समय स्वैराचारका समय न था। अुसमें कुछ समझदारी थी। अपनी मूर्छाके अिस कालमें भी मैं अमुक हद तक सावधान था। पाअी-पाअीका हिसाव रखता था। खर्चका अंदाज था। मैंने यह निश्चय किया कि हर महीने १५ पौंडसे अधिक न खर्चूंगा। वसमें जानेके अथवा डाकके खर्चको भी मैं हमेशा लिख लिया करता था। और सोनेसे पहले हमेशा जमा-खर्चका मेल वैठा लिया करता था। यह आदत अन्त तक वनी रही।

अव मैंने अपना खर्च आधा कर डालनेका विचार किया। अव तक मैं परिवारोंमें रहता था। अिसके वदले मैंने यह तय किया कि अपना ही अेक कमरा लेकर अुसमें रहना ठीक होगा। साथ ही, यह भी तय किया कि कामके अनुसार तथा अनुभव प्राप्त करनेकी दृष्टिसे अलग-अलग मुहल्लोंमें घर वदलते रहना है। घर अैसी जगहोंमें पसंद

किये कि जहाँसे कामके स्थान तक आधे घंटेमें पैदल जाया जा सके और गाड़ीभाड़ा बचे। अिसके कारण काम पर जाते समय ही टहलनेकी व्यवस्था हो गअी। और अिस व्यवस्थाकी बदौलत मैं हमेशा आठ-दस मील तो सहज ही घूम लेता था। मुख्यतः अपनी अिस आदतके कारण ही मैं विलायतमें क्वचित् ही बीमार पड़ा हूँगा। शरीर भलीभाँति कस गया। परिवारके साथ रहना छोड़कर दो कमरे किरायेसे ले लिये, अेक सोनेके लिअे और अेक बैठनेके लिअे। अिस तरह आधा खर्च बचा।

बैरिस्टरकी परीक्षाके लिअे बहुत पढ़ना ज़रूरी न था। मेरी कच्ची अंग्रेजी मुझे दुःख देती थी। अेक मित्रने कहा: 'तू लंदनकी मैट्रिक्युलेशन परीक्षा पास कर ले। अुसके लिअे तुझे मेहनत करनी होगी, पर तेरा साधारण ज्ञान बढ़ जायगा। खर्चमें थोड़ी भी वृद्धि न होगी।' मैं यह जानकर चौंका कि लेटिन और दूसरी भाषा अनिवार्य है। मित्रने मुझे समझाया। मैंने लेटिन सीखने और ली हुअी फ्रेंचको पूरा करनेका विचार किया। अिस प्रकार सभ्य बनते-बनते मैं तो अेक अत्यन्त अुद्यमी विद्यार्थी बन गया। परीक्षामें बैठा, लेटिनमें नापास हुआ, दुःखी हो गया, लेकिन हारा नहीं। लेटिनमें रस आने लगा था।

दुबारा परीक्षा देनेकी तैयारीके साथ ही रहन-सहनमें अधिक सादगी लानेके प्रयत्न शुरू किये। मुझे लगा कि अभी मेरे परिवारकी गरीबीसे मेल खानेवाला सादा जीवन मेरा बना नहीं है। भाअीकी तंगदस्ती और अुनकी अुदारताके विचारने मुझे आकुल-व्याकुल बना दिया। मैं देखता था कि लोग मुझसे अधिक सादगीके साथ रह लेते हैं। मैं अैसे अनेकानेक गरीब विद्यार्थियोंके संपर्कमें आया था। सादी रहन-सहन पर लिखी गअी पुस्तकें भी मैंने पढ़ी थीं। मैंने अपने दो कमरे अुठा दिये। प्रति सप्ताह आठ शिलिंग पर अेक कोठड़ी किराये पर ली। अेक अँगीठी खरीदी और सुबहका भोजन हाथसे बनाना शुरू किया। दोपहरको बाहर खा लेता और शामको फिर घरमें कोको तैयार करके अुसे रोटीके साथ लेता था। अिस प्रकार मैं रोज अेक शिलिंगसे

लेकर सवा शिलिंगके अंदर अपने भोजनकी व्यवस्था करना सीखा। मेरा यह समय अधिकसे अधिक पढ़ाओीका समय था। जीवनमें सादगी आ जानेसे समय अधिक बचा। दूसरी बार परीक्षामें बैठा और पास हुआ।

लेकिन सादगीके कारण जीवन रसहीन न बना। अुलटे, अिन फेरफारोंकी वजहसे मेरी अंदर और बाहरकी स्थितिमें अेकता पैदा हुअी; अपने परिवारकी स्थितिके साथ मेरी रहन-सहनका मेल बैठा; जीवन अधिक सारगर्भ बना; मेरे आत्मानन्दका पार न रहा।

१३

आहारके प्रयोग

जैसे-जैसे मैं जीवनमें गहरा पैठता गया, वैसे-वैसे बाहरके और अन्तरके आचारमें फेरफार करनेकी ज़रूरत मालूम होती गयी। जिस गतिसे रहन-सहन और खर्चमें फेरफार हुअे, अुसी गतिसे अथवा अुससे भी अधिक वेगसे मैंने अपने आहारमें फेरफार करना शुरू किया। अन्नाहार पर लिखी गअी अंग्रेजी पुस्तकोंमें लेखकोंने बहुत सूक्ष्म विचार किया था। अुन्होंने अुसमें अन्नाहारकी छानबीन धार्मिक, वैज्ञानिक, व्यावहारिक और वैद्यक दृष्टिसे की थी। मुझ पर अिन चारों दृष्टियोंका असर पड़ा और अन्नाहार देनेवाले भोजनालयोंमें मैं अिन चार प्रकारकी दृष्टियोंवाले लोगोंके साथ मिलने-जुलने लगा। विलायतमें अिस विषयसे संबंध रखनेवाला अेक मण्डल था और अुसका अपना अेक साप्ताहिक पत्र भी था। मैं साप्ताहिकका ग्राहक और मण्डलका सदस्य बना। कुछ ही समयमें मुझे अुसकी कमेटीमें स्थान दिया गया। वहाँ मेरा परिचय अैसे लोगोंसे हुआ, जो अन्नाहारियोंमें स्तंभ रूप माने जाते थे। मैं प्रयोगोंमें अुलझ गया।

घरसे जो मिठाअी और मसाले वगैरा मँगाये थे, अुनका अुपयोग बन्द किया, और मेरे मनने दूसरा रास्ता पकड़ा। मसालोंका शौक़ मन्दा

पड़ गया और जो भाजी रिचमण्डमें बिना मसालेकी होनेके कारण फीकी लगती थी, वह अब केवल अुबाली हुअी स्वादिष्ट लगने लगी। अैसे अनेक अनुभवोंने मुझे सिखाया कि स्वादका सच्चा स्थान जीभ नहीं, बल्कि मन है।

अुन दिनों अेक पन्थ अैसा भी था, जो चाय-कॉफीको हानिकारक मानता और कोकोका समर्थन करता था। अब तक मैं यह समझ चुका था कि केवल शरीर-व्यापारके लिअे आवश्यक पदार्थ ही लेना अुचित है; अिसलिअे मैंने चाय-कॉफीका मुख्यतः त्याग किया और अुनकी जगह कोको लेने लगा।

भोजनालयमें दो विभाग थे। अेकमें जितनी चीजें खाओ अुतने पैसे देनेकी व्यवस्था थी। वहाँ अेक बारके भोजन पर अेक शिलिंगसे दो शिलिंग तक खर्च होता था। दूसरे विभागमें छः पेनीमें तीन पदार्थ और रोटीका अेक टुकड़ा मिलता था। जिन दिनों मैंने बहुत किफ़ायत शुरू की, अुन दिनों मैं अक्सर अिस छः पेनीवाले विभागमें ही जाता था।

अिन प्रयोगोंके अन्तर्गत अुपप्रयोग तो बहुतेरे हुअे। अुनमें अण्डे खानेका भी अेक प्रयोग हुआ। स्टार्चरहित आहारका समर्थन करनेवालेने अण्डोंकी बहुत स्तुति की थी और यह सिद्ध किया था कि अण्डे मांस नहीं हैं। यह तो निश्चित ही था कि अण्डोंके सेवनसे किसी प्राणधारी जीवको दुःख नहीं पहुँचता था। अिस दलीलके फेरमें पड़कर मैंने माँके साथ की हुअी प्रतिज्ञाके रहते हुअे भी अण्डे खाये, लेकिन मेरी यह मूर्छा क्षणिक थी। प्रतिज्ञाका नया अर्थ करनेका अधिकार मुझे न था। अर्थ तो प्रतिज्ञा करानेवालेका ही माना जाना चाहिये। मांस न खानेकी प्रतिज्ञा करानेवाली माताको अण्डोंका तो खयाल तक न था। अतअेव ज्यों ही मुझे प्रतिज्ञाके रहस्यका भान हुआ, मैंने अण्डे लेना छोड़ दिया और वह प्रयोग भी छोड़ दिया।

मैंने अण्डोंका त्याग किया। मेरे लिअे यह कठिन हो गया, क्योंकि बारीकीसे पूछताछ करने पर पता चला कि अन्नाहारके भोजनालयोंमें भी अण्डोंवाली अनेक चीजें बनती थीं। अिस कारण

परोसनेवालेसे पूछना ज़रूरी होता था। अिस प्रकार अिसके कारण मैं अेक जंजालसे छूटा, क्योंकि थोड़ी और बिलकुल सादी चीजें ही ले सकता था। दूसरी ओर थोड़ा आघात भी पहुँचा, क्योंकि जीभसे लगी हुअी अनेक वस्तुओंका त्याग करना पड़ा। लेकिन यह आघात क्षणिक था। प्रतिज्ञा-पालनका स्वच्छ, सूक्ष्म और स्थायी स्वाद मुझे अुस क्षणिक स्वादकी तुलनामें अधिक प्रिय मालूम हुआ।

१४

शरमीलापन

अन्नाहारी मंडलकी कार्यकारिणी समितिमें मैं चुन तो लिया गया, और मैं समितिकी हर बैठकमें हाज़िर भी रहने लगा। लेकिन बोलनेके लिअे जीभ खुलती ही न थी। लम्बे समय तक यही स्थिति रही। अिस बीच समितिमें अेक गंभीर विषय निकला। अुन दिनों वहाँ कृत्रिम अुपायों द्वारा सन्तानोत्पत्तिको नियंत्रित करनेका आन्दोलन चल रहा था। डॉक्टर अेलिन्सन समितिमें थे, वे अिन अुपायोंके हिमायती थे और मज़दूरोंमें अिनका प्रचार करते थे। मुझे ये विचार भयंकर मालूम हुअे। लेकिन जब डॉक्टर अेलिन्सनको समितिसे हटानेका प्रस्ताव सामने आया, तो मुझे अुसमें शुद्ध अन्याय प्रतीत हुआ। क्योंकि मंडलका हेतु केवल अन्नाहारका प्रचार करना था, दूसरी नीतिका नहीं।

किन्तु समितिमें बोलनेकी हिम्मत मुझमें न थी। मैंने अपने विचारोंको लिखकर सभापतिके सामने रखनेका निश्चय किया। लिखे हुअे विचारोंको पढ़ जानेकी भी मेरी हिम्मत न पड़ी। सभापतिने अुसे दूसरे सदस्यसे पढ़वा लिया। डॉक्टर अेलिन्सनका पक्ष हार गया। लेकिन मेरा अपना विश्वास था कि अुनका पक्ष सच्चा था, अिसलिअे मुझे सम्पूर्ण सन्तोष रहा।

पहले तो मुझे यह सब बहुत अटपटा और कठिन मालूम हुआ। कुछ सूझता न था कि क्या बातें की जायँ। लेकिन बादमें मैं तैयार होने लगा। अुस स्त्रीके साथ बातचीत करना भी अच्छा लगने लगा।

अब मैं क्या करूँ? मैंने सोचा — "यदि मैंने अिस भद्र महिलासे अपने विवाहकी बात कह दी होती, तो कितना अच्छा होता? क्या अुस दशामें वह मुझ-जैसेसे विवाह करनेकी अिच्छा रखती? अब भी देर नहीं हुअी है। यदि मैं सत्य कह दूँगा, तो अधिक संकटसे बच जाअूँगा।"

यह सोचकर मैंने अुसे अेक पत्र लिखा। अुसमें अपने विचार अिस प्रकार प्रकट किये —

> "मैं आपके प्रेमके योग्य नहीं हूँ। जब मैं आपके घर आने लगा, तभी मुझे यह कह देना चाहिये था कि मैं तो विवाहित हूँ। आपसे यह बात छिपानेका मुझे अब बहुत दुःख होता है। किन्तु आज अीश्वरने मुझे सत्य कहनेकी हिम्मत दी है, अिससे मुझे आनंद हो रहा है। आप मुझे माफ़ करेंगी? जिन बहनके साथ आपने मेरा परिचय कराया है, अुनके साथ मैंने किसी प्रकारकी अनुचित छूट नहीं ली है। मुझे अिस बातका पूरा भान है कि मैं अैसी छूट ले ही नहीं सकता। लेकिन स्वभावतः आपकी अिच्छा तो यही देखनेकी हो सकती है कि किसीके साथ मेरा सम्बन्ध क़ायम हो जाय। आपके मनमें यह चीज़ और आगे न बढ़े, अिस विचारसे भी मुझे आपके सामने सत्य प्रगट कर देना चाहिये।
>
> "यदि अिस पत्रके मिलने पर आप मुझे अपने यहाँ आनेके लिअे नालायक़ मानेंगी, तो मुझे अुसका ज़रा भी बुरा मालूम न होगा। यदि आप मेरा त्याग न करेंगी, तो अुससे मुझे खुशी होगी।"

लगभग लौटती डाकसे मुझे अुस विधवा मित्रका जवाब मिला। अुसने लिखा था —

> "आपका खुले दिलसे लिखा पत्र मिला। हम दोनों खुश हुअीं और खूब हँसीं, लेकिन मेरा न्योता क़ायम है।

अगले रविवारको हम आपकी राह अवश्य देखेंगी। हमारी मित्रता तो जैसी थी वैसी ही वनी रहेगी।"

अिस प्रकार मुझमें असत्यका जो ज़हर घुस गया था, अुसे मैंने ाहर निकाला और फिर तो कहीं भी अपने विवाह आदिकी वातें रनेमें मैं झिझकता न था।

१६

धार्मिक परिचय

विलायतमें रहते हुअे कोअी अेक साल वीता होगा कि अितनेमें दो थियॉसोफिस्ट मित्रोंसे पहचान हुअी। अुन्होंने मुझसे गीताजीकी वात की। वे अेडविन ऑर्नल्डका गीताजीका अनुवाद पढ़ते थे। लेकिन अुन्होंने तो मुझे अपने साथ संस्कृतमें गीता पढ़नेके लिअे निमंत्रित किया। मैं शर्मिन्दा हुआ। क्योंकि मैंने तो गीता संस्कृत या प्राकृतमें पढ़ी ही न थी। मैंने मित्रोंसे यह हक़ीक़त कही, और अुनके साथ गीता पढ़ना शुरू किया।

'ध्यायतो विषयान्पुंस:' से शुरू होनेवाले दूसरे अध्यायके दो श्लोकोंका मेरे मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। मुझे अुस समय यह भास हुआ कि भगवद्गीता अमूल्य ग्रन्थ है। धीरे-धीरे मेरी यह मान्यता वढ़ती गअी, और आज तत्त्वज्ञानके लिअे मैं अुसे सर्वोत्तम ग्रन्थ मानता हूँ। अपनी निराशाकी घड़ियोंमें अिस ग्रन्थने मेरी अमूल्य सहायता की है।

अिन्हीं भाअियोंने मुझे ऑर्नल्डका 'बुद्धचरित' पढ़नेके लिअे कहा। अुसे मैंने भगवद्गीतासे भी अधिक रसपूर्वक पढ़ा।

अुन्होंने मुझे मैडम ब्लैवेट्स्कीके और श्रीमती वेसेण्टके दर्शन कराये। मुझे सोसायटीमें भरती होनेके लिअे भी कहा। मैंने विनयपूर्वक अिनकार किया और कहा—"मेरा धर्मज्ञान नहींके वरावर है, अिसलिअे मैं किसी भी पंथमें सम्मिलित नहीं होना चाहता।" अुनके कहनेसे मैंने मैडम ब्लैवेट्स्कीकी पुस्तक 'की टु थियॉसोफी'

पढ़ी। अुसे पढ़नेके बाद हिन्दूधर्मकी पुस्तकें पढ़नेकी अिच्छा हुआी, और पादरियोंके मुँहसे सुनी हुआी यह राय कि हिन्दूधर्म वहमोंसे ही भरा है, दिलसे निकल गअी।

अिन्हीं दिनों मुझे मैञ्चेस्टरके अेक भले ख्रिस्ती मिले। अुन्होंने मेरे साथ ख्रिस्ती धर्मकी चर्चा चलाअी। मुझे बाअिबल पढ़नेकी सलाह दी, और बाअिबल खरीद कर ला दी। मैंने अुसे शुरू किया, लेकिन मैं 'पुराना करार' पढ़ ही न सका।

जब 'नये करार' पर आया, तो अुसका अेक अलग ही प्रभाव पड़ा। । अीशुके गिरि-प्रवचनका प्रभाव बहुत अच्छा पड़ा। वह दिलमें बस गया। बुद्धिने अुसकी तुलना गीताजीके साथ की। मुझे अुसमें यह पढ़कर अपार आनन्द हुआ कि "जो तुझसे कुरता माँगे, अुसे तू अँगरखा देना", "जो तेरे दाहिने गाल पर तमाचा मारे, तू अुसके सामने बायाँ गाल करना।" मुझे शामल भट्टका छप्पय याद आ गया। मेरे बालमनने गीता, आॅर्नल्डकृत 'बुद्धचरित' और अीशुके वचनोंका अेकीकरण किया। मेरे मनको यह बात जँच गअी कि त्यागमें धर्म है।

अिस वाचनसे दूसरे धर्माचार्योंकी जीवनी पढ़नेकी अिच्छा हुआी। किसी मित्रने मुझे कार्लाअिलकी 'विभूतियाँ और विभूति-पूजा' पुस्तक पढ़नेकी सलाह दी। अुसमें से मैंने पैग़म्बर सम्बन्धी भाग पढ़ा, और मुझे अुनकी महत्ताका, वीरताका और तपश्चर्याका ख़याल आया।

अिसके बाद मैं परीक्षाकी पुस्तकोंके सिवाय अन्य कुछ पढ़नेकी फ़ुरसत न पा सका। लेकिन मेरे मनने यह गाँठ बाँध ली कि मुझे धर्मग्रन्थ पढ़ने चाहियें, और सब मुख्य धर्मोंका योग्य परिचय प्राप्त कर लेना चाहिये।

नास्तिकताके बारेमें भी कुछ जाने बिना काम कैसे चलता? मैंने ब्रेडलॉकी पुस्तक पढ़ी। लेकिन मुझ पर अुसकी कुछ भी छाप न पड़ी। मैं नास्तिकता-रूपी सहारेके रेगिस्तानको लाँघ गया। अुन दिनों श्रीमती बेसेण्टकी कीर्ति खूब ही फैली हुआी थी। वे नास्तिक न रहकर आस्तिक हो गअी हैं, अिस चीज़ने भी मुझे नास्तिकवादके प्रति अुदासीन बनाया।

१७

निर्बलके बल राम

सन् १८९० में पोर्टस्मथमें अन्नाहारियोंका सम्मेलन था। अुसमें मुझे और अेक हिन्दुस्तानी मित्रको निमंत्रित किया गया था। हम दोनों वहाँ पहुँचे। हम दोनोंको अेक महिलाके घर ठहराया गया था। पोर्टस्मथ-जैसे खलासियोंके बन्दरगाहमें यात्रियोंके लिये निवासकी खोज करने पर यह कहना कठिन हो जाता है कि कौनसे घर अच्छे हैं और कौनसे बुरे।

हम रात सभासे घर लौटे। भोजन करके ताश खेलने बैठे। विलायतके अच्छे घरोंमें भी अिस प्रकार मेहमानोंके साथ गृहिणी ताश खेलने बैठती है। ताश खेलते समय निर्दोष विनोद सब कोअी करते हैं। यहाँ बीभत्स विनोद शुरू हुआ। मैं भी अुसमें सम्मिलित हुआ। वाणीमें से कृतिमें जानेकी तैयारी ही थी, लेकिन मेरे भले साथीके मनमें राम बसे। अुन्होंने कहा — "अरे, तुझमें यह कलजुग कैसा! तेरा यह काम नहीं। तू यहाँसे भाग जा।"

मैं शरमाया। सावधान हुआ। मन ही मन अुन मित्रका अुपकार माना। माताके सामने ली हुअी प्रतिज्ञा याद आअी। मैं भागा; थरथर काँपता हुआ अपनी कोठरीमें पहुँचा। छाती धड़क रही थी। क़ातिलके हाथसे बच निकलने पर किसी शिकारकी जो हालत होती है, वही मेरी हुअी।

परस्त्रीको देखकर विकारवश होने और अुसके साथ खेल खेलनेकी अिच्छा होनेका यह पहला प्रसंग था। अुस रात मुझे नींद नहीं आअी। अनेक प्रकारके विचारोंने मुझ पर धावा बोल दिया। मैंने बहुत सावधान होकर चलनेका निश्चय किया। घर न छोड़ा; लेकिन दूसरे ही दिन सम्मेलनके समाप्त होने पर पोर्टस्मथ छोड़ दिया। अुस समय मैं यह बिलकुल नहीं जानता था कि धर्म क्या है, अीश्वर

क्या है, और वह हममें किस प्रकार काम करता है। अुन दिनों तो लौकिक ढंग पर मैं अितना ही समझा था कि अीश्वरने मुझे बचा लिया। 'अीश्वरने बचा लिया', वाक्यका अर्थ आज मैं बहुत समझने लगा हूँ। लेकिन साथ ही यह भी जानता हूँ कि अिस वाक्यकी पूरी क़ीमत मैं अभी कूत नहीं सका हूँ।

१८
बैरिस्टर तो बने, किन्तु आगे क्या ?

बैरिस्टर बननेके लिअे दो बातें आवश्यक थीं। अेक टर्म पूरी करनेकी, अर्थात् सत्र सम्हालनेकी, और दूसरी, क़ानूनकी परीक्षा देनेकी। सत्र सम्हालनेका अर्थ था, दावतें खाना। और, दावतें खानेका मतलब यह न था कि खाना खाना ही चाहिये, बल्कि ज़रूरत अिस बातकी थी कि नियत समय पर हाज़िर रहें और खाना ख़तम होनेके समय तक वहाँ बैठें। खानेमें अच्छे-अच्छे पदार्थ होते और पीनेके लिअे अच्छे दर्ज़ेकी शराब होती।

शराब मेरे कामकी थी नहीं। चार जनोंके बीच शराबकी दो बोतलें मिलतीं, अिसलिअे अनेक चौकड़ियोंमें मेरी माँग रहा करती।

अिस खान-पानसे बैरिस्टरीमें क्या वृद्धि हो सकती है, सो मैं न तब समझ सका, न बादमें।

क़ानूनकी पढ़ाअी आसान थी। परीक्षाकी पुस्तकें नियत थीं। लेकिन अुन्हें तो क्वचित् ही कोअी पढ़ता था। रोमन लॉ पर और अिंग्लैंडके क़ानून पर छोटी-छोटी टिप्पणियाँ लिखी हुअी मिलती थीं। अुन्हें पढ़कर पास होनेवाले मैंने देखे थे। लेकिन मुझे लगा कि मुझको मूल पुस्तकें पढ़ ही लेनी चाहियें। न पढ़नेमें मुझे विश्वासघात मालूम हुआ। अिसलिअे मैंने तो मूल पुस्तकोंकी ख़रीदी पर ख़ासा ख़र्च किया।

परीक्षायें पास कीं। सन् १८९१ की १० जूनको मैं वैरिस्टर कहलाया। ११वीं जूनको अिंग्लैंडके हाओीकोर्टमें ढाओी शिलिंग देकर अपना नाम दर्ज कराया; १२ जूनको हिन्दुस्तानके लिअे लौट पड़ा।

लेकिन मेरी निराशा और डरका पार न था। वैरिस्टर कहलाना आसान मालूम हुआ। लेकिन वैरिस्टरी करना कठिन लगा। क़ानून तो पढ़े, लेकिन वकालत करना न सीखा। क़ानूनमें मैंने कुछ धार्मिक सिद्धान्त पढ़े, जो मुझे अच्छे लगे, लेकिन मेरी समझमें यह न वैठा कि अपने धन्धेमें अुनका अुपयोग किस प्रकार हो सकेगा।

फिर पढ़े हुअे क़ानूनोंमें हिन्दुस्तानके क़ानूनका तो नाम तक न था। मुझे वकीलके नाते अपनी आजीविका प्राप्त करनेकी शक्ति-सम्पादन करनेके वारेमें भी बड़ी शंका मालूम होने लगी।

मैंने अपने अेक-दो मित्रोंके सामने ये कठिनाअियाँ रखीं। अुन्होंने सुझाया कि मैं दादाभाअीकी सलाह लूँ। मैं अुनसे मिला, लेकिन अुनके सामने अपनी कठिनाअियाँ रखनेकी मेरी हिम्मत न हुअी। मैं मि० फ्रेडरिक पिकटसे मिला। अुन्होंने कहा — "फ़ीरोज़शाह अथवा वदरुद्दीन तो अेक-दो ही होते हैं। तुम यह निश्चित समझो कि साधारण प्रामाणिकता और लगनसे मनुष्य वकालतका धन्धा आरामके साथ कर सकता है।" अिन दो चीज़ोंकी पूँजी मेरे पास पर्याप्त मात्रामें थी। अिसलिअे अपने दिलकी गहराअीमें मुझे थोड़ी आशा वँधी।

अिस प्रकार निराशाके बीच तनिक-सी आशाका जामन लेकर मैं थरथराते पैरों 'आसाम' स्टीमरसे वम्वअीके वन्दरगाह पर अुतरा।

१९

रायचन्दभाओी

बम्बओीकी खाड़ीमें समुद्र तूफ़ानी था, और अदनसे ही अुसकी यह स्थिति थी। सब बीमार थे, अकेला मैं मौज कर रहा था। तूफ़ान देखनेके लिअे डेक पर रहता और वहाँ भीगता भी था।

बाहरका यह तूफ़ान मेरे निकट तो अन्दरके तूफ़ानकी निशानी-जैसा ही था। लेकिन जिस तरह बाहरी तूफ़ानके बीच मैं शांत रह सका था, अन्दरके तूफ़ानके बारेमें भी वही बात नहीं कही जा सकती। जातिका प्रश्न तो था ही। धन्धेकी चिन्ता थी। तिस पर मैं सुधारक ठहरा; अिसलिअे मनमें कुछ सुधार सोच रखे थे, अुनकी भी चिन्ता थी। दूसरी अेक चिन्ता अनसोची पैदा हो गअी।

मैं माँके दर्शनोंके लिअे अधीर हो रहा था। जब हम किनारे पहुँचे, तो मेरे बड़े भाअी वहाँ मौजूद ही थे। डॉक्टर महेताका आग्रह था कि मैं अुनके घर अुतरूँ, अिसलिअे मुझे वहीं ले गये।

माताके स्वर्गवासके विषयमें मैं कुछ भी न जानता था। घर पहुँचने पर मुझे यह ख़बर सुनाअी गअी और स्नान कराया गया। पिताकी मृत्युसे मुझे जो चोट पहुँची थी, अुसकी तुलनामें अिस मृत्युके समाचारसे मुझे कहीं अधिक चोट पहुँची। मेरे मनकी अनेक मुरादें बरबाद हो गअीं। लेकिन अिस मौतके समाचार सुनकर मैं फूटफूटकर रोया नहीं। आँसुओंको प्रायः रोक पाया था। और, मैंने अिस तरह बरतना शुरू कर दिया, मानो माताकी मृत्यु हुअी ही नहीं।

डॉक्टर महेताके भाअी रेवाशंकर जगजीवनके साथ तो जन्मकी मित्रता गँठ गअी। कवि रायचन्द डॉक्टरके बड़े भाअीके जमाअी थे,

और रेवांशंकर जगजीवनकी पेढ़ीके भागीदार और कार्यकर्त्ता थे। अुस समय अुनकी अुमर २५ सालसे अधिक न थी; फिर भी वे चारित्र्यवान और ज्ञानी थे। वे शतावधानी माने जाते थे। मुझे अिस शक्तिकी अीर्ष्या हुअी, किन्तु मैं अुस पर मुग्ध न हुआ। मैं तो मुग्ध हुआ अुनके व्यापक शास्त्रज्ञान पर, अुनके शुद्ध चारित्र्य पर, और आत्मदर्शनकी अुनकी ज़बरदस्त लगन पर।

वे स्वयं हज़ारोंका व्यापार करते, हीरा-मोतीकी परख करते, और व्यापारकी अुलझनें सुलझाते। लेकिन ये बातें अुनका अपना विषय न थीं। अुनका विषय था, आत्माकी पहचान। मैंने अुन्हें कभी मूर्छित स्थितिमें नहीं देखा। जब कभी मैं अुनकी दुकान पर पहुँचता, वे मुझसे धर्मचर्चाके सिवाय और कोअी चर्चा ही न करते। यद्यपि अुस समय मुझे अपनी दिशाका ज्ञान न था, और न यही कहा जा सकता था कि मुझे साधारणतः धर्मचर्चामें रस था, तो भी रायचन्द भाअीकी धर्मचर्चामें मुझे रसका अनुभव होता था। अुनके अनेक वचन मेरे दिलमें सीधे अुतर जाते थे। मेरे मनमें अुनकी बुद्धिके लिअे आदर था। अुनकी प्रामाणिकताका भी मैं अुतना ही आदर करता था। अपने आध्यात्मिक संकटमें मैं अुनका सहारा लेता था।

रायचन्दभाअीके प्रति अितना आदर रखते हुअे भी मैं अपने धर्मगुरुके रूपमें अुन्हें अपने हृदयमें स्थान न दे सका। मेरी खोज आज भी जारी है।

मेरे जीवन पर गहरी छाप डालनेवाले आधुनिक मनुष्य तीन हैं: रायचन्दभाअीने अपने जीवंत सम्पर्कसे, टॉल्स्टॉयने 'स्वर्ग तेरे हृदयमें है' नामक अपनी पुस्तकसे, और रस्किनने 'अन टु धिस लास्ट'—'सर्वोदय' नामक पुस्तकसे मुझे चकित किया।

२०

संसार-प्रवेश

जातिका झगड़ा खड़ा ही था। दो 'तड़ें' पड़ गअी थीं। अेक पक्षने मुझे तुरन्त जातमें ले लिया। दूसरा पक्ष न लेने पर डटा रहा। जातमें लेनेवाले पक्षको सन्तुष्ट करनेके लिअे राजकोट ले जानेसे पहले भाअी मुझे नासिक ले गये। वहाँ गंगास्नान कराया, और राजकोट पहुँचने पर जात जिमाअी।

अिस काममें मुझे कोअी दिलचस्पी न रही। बड़े भाअीका प्रेम मेरे लिअे अगाध था, अुनके प्रति मेरी भक्ति भी अुतनी ही थी; अिसलिअे अुनकी अिच्छाको आदेशरूप समझकर मैं यंत्रकी तरह, बिना समझे, अुनकी अिच्छाके अनुकूल होता रहा।

जिस 'तड़' से मैं जात बाहर रहा, अुसमें प्रवेश करनेका प्रयत्न मैंने कभी न किया। जातिके बहिष्कार-विषयक क़ायदेका मैं पूरा आदर करता था। अपने सास-ससुरके घर या अपनी बहनके घर पानी तक न पीता था। वे छिपे तौर पर पिलानेको तैयार होते, परंतु जो बात खुलेमें न की जा सके, अुसे छिपकर करनेके लिअे मेरा मन तैयार ही न होता था।

स्त्रीके साथ मेरा संबंध अभी तक मैं जैसा चाहता था, वैसा बन न सका था। विलायत हो आने पर भी मैं अपने द्वेषी स्वभावको छोड़ न सका। हर बातमें मेरी हुज्जत और मेरा वहम जारी रहा। अेक समय तो अैसा आया कि मैंने अुसे मायके ही भेज दिया, और अत्यन्त कष्ट पहुँचानेके बाद फिर साथमें रखना क़बूल किया।

मुझे बच्चोंकी शिक्षाके बारेमें भी सुधार करने थे। बड़े भाअीके बच्चे थे और मेरे भी अेक लड़का था। खयाल यह था कि मैं अुन्हें अपने साथ रखूं। कुछ हद तक मैं अिसमें सफल भी हो सका। बच्चोंका

साथ मुझे बहुत अच्छा लगा और अुनके साथ विनोद करनेकी आदत आज तक बनी हुअी है।

यह तो स्पष्ट था कि खान-पानमें भी सुधार करना चाहिये। घरमें चाय-कॉफीको स्थान मिल चुका था। मैं अपने सुधार लेकर आया। ओटमील पॉरिज (दलिया) दाखिल हुआ, चाय-कॉफीके बदले कोको चला। लेकिन परिवर्तन नामका ही था। चाय-कॉफीमें कोकोकी बढ़ती-मात्र हुअी थी। घरमें बूट और मोजोंका प्रवेश हो ही चुका था। मैंने कोट-पतलूनसे घरको पुनीत किया!

यों ख़र्च तो बढ़ा, लेकिन अुसे लाता कहाँसे?

मित्रोंने सलाह यह दी कि मुझे थोड़े समयके लिअे बम्बअी जाकर हाअीकोर्टका अनुभव लेना चाहिये। मैं बम्बअीके लिअे रवाना हुआ।

घर बसाया। रसोअिया रखा। लेकिन मेरे लिअे चार-पाँच महीनेसे अधिक बंबअी रहना संभव ही न हुआ, क्योंकि ख़र्च बढ़ता जाता था, और आमदनी कुछ न थी।

अिस प्रकार मैंने संसारमें प्रवेश किया। बैरिस्टरी मुझे अखरने लगी। दिखावा ढेरका, काम पाअीका। अपनी ज़िम्मेदारीका ख़याल मुझे दबोचने लगा।

२१

पहला मुक़दमा

बम्बअीमें अेक ओर क़ानूनकी पढ़ाअी शुरू हुअी, दूसरी ओर आहारके प्रयोग चले, तीसरी तरफ़से भाअीने मेरे लिअे मुक़दमे खोजनेका अुद्योग शुरू किया।

हर महीने ख़र्च बढ़ता था। बाहर बैरिस्टरीकी तख़्ती लगाना और घरमें बैरिस्टरीके लिअे तैयारी करना! मेरा मन अिन दोनोंका मेल किसी तरह मिला न पाया। अिसलिअे मैं व्याकुल चित्तसे पढ़ाअी करता रहा।

अितनेमें तक़दीरसे ममीबाअीका केस मुझे मिला। स्मॉल कॉज़ कोर्टमें जाना था। लेकिन दलालको कमीशन देनेका सवाल अुठा। मैं अेकसे दो न हुआ। कमीशन बिलकुल न दिया। फिर भी केस तो मिला। केस आसान था। मुझे 'ब्रीफ' के रु० ३० मिले।

मैं अदालतमें खड़ा तो हुआ, लेकिन पैर काँप रहे थे और सिर चकरा रहा था। सवाल पूछना सूझता न था।

मैं बैठ गया। दलालसे कहा—"मुझसे यह केस न चल सकेगा, पटेलके पास जाओ। मुझे दी हुअी फीस वापस ले लो।"

मैं भागा; शरमाया। निश्चय किया कि जब तक पूरी हिम्मत न आवे, केस न लूँगा, और फिर दक्षिण अफ्रीका जाने तक कोर्टमें गया ही नहीं।

लेकिन दूसरा अेक केस अर्ज़ी तैयार करनेका था। मैंने अर्ज़ी तैयार की। मित्रमंडलीको पढ़कर सुनाअी। वह अर्ज़ी पास हुअी और मुझे तनिक विश्वास हुआ कि मैं अर्ज़ी लिखने जितनी योग्यता तो बढ़ा ही लूँगा।

किन्तु मेरा अुद्योग बढ़ता गया। मुफ़्तमें अर्जियाँ लिखनेका धन्धा करूँ, तो अर्ज़ियाँ लिखनेका काम तो मिलेगा, लेकिन अुससे कहीं बच्चे झुनझुना खेल पायेंगे?

मैंने सोचा कि मैं शिक्षकका काम तो कर सकता हूँ। अखबारमें विज्ञापन देखकर अर्ज़ी भेजी, लेकिन चूँकि मैं बी० अे० न था, अिसलिअे मुझे वह काम न मिला!

मैं लाचार हो गया। मेरे हाथ ढीले पड़ गये। बड़े भाअीको चिन्ता हुअी। हम दोनोंने सोचा कि बम्बअीमें और अधिक समय बिताना निरर्थक है। कुल क़रीब छः महीने रहनेके बाद बम्बअीका घर अुठा दिया।

जब तक बम्बअीमें था, मैं वहाँ हर रोज़ हाअीकोर्ट जाता रहा। लेकिन यह नहीं कह सकता कि वहाँ कुछ सीखा।

घर गिरगाँवमें था, फिर भी मैं क्वचित् ही गाड़ीभाड़ा ख़रचता था। अक्सर नियमित रूपसे पैदल ही जाता था। अिसमें पूरे ४५

मिनट लगते थे, और वापस घर आनेके समय भी विला नागा पैदल ही आता था। जब मैं कमाने लगा तब भी अिस प्रकार पैदल ऑफिस जानेकी आदत मैंने अन्त तक क़ायम रखी।

२२

पहला आघात

वम्वअीसे निराश होकर राजकोट पहुँचा। अलग ऑफिस खोला। गाड़ी किसी तरह चली। अर्ज़ियाँ लिखनेका काम मिलने लगा, और हर महीने औसत तीन सौ रुपयेकी आमदनी होने लगी।

अिस प्रकार यद्यपि मेरी आर्थिक गाड़ी चल निकली थी, तो भी जीवनका पहला आघात अिन्हीं दिनों पहुँचा। मैंने कानसे सुन रखा था कि व्रिटिश अधिकारी कैसा होता है; अव मुझे वह अपनी आँखों देखनेको मिला।

अुस समयके पोलिटिकल अेजण्टको मेरे भाअीके वारेमें भ्रम हो गया था। अिन अधिकारीसे मैं विलायतमें मिला था। यह कहा जा सकता है कि वहाँ अुन्होंने अच्छी मित्रता निभाअी थी। भाअीने सोचा कि अिस परिचयसे लाभ अुठाकर मैं पोलिटिकल अेजण्टको दो शब्द कहूँ और अुन पर कोअी वुरा असर पड़ा हो, तो अुसे मिटानेका प्रयत्न करूँ। मुझे यह वात ज़रा भी न जँची। लेकिन भाअीका मुलाहज़ा तोड़ न सका। अपनी अिच्छाके विरुद्ध मैं गया।

मैं मिला और पुरानी पहचान वताअी। लेकिन मैंने तुरन्त ही देखा कि विलायतमें और काठियावाड़में भेद था। अपनी कुर्सी पर वैठे हुअे अफसरमें और छुट्टी पर गये हुअे अफसरमें भी भेद था। अधिकारीने पहचान क़वूल की। लेकिन पहचानके साथ ही वे अधिक अैंठ गये। मैंने अपनी वात शुरू की। साहव अधीर हुअे; अुठे — 'अव आपको जाना चाहिये।'

मैंने कहा — 'लेकिन मेरी बात तो पूरी सुन लीजिये।'

साहब बहुत नाराज़ हुअे — 'चपरासी, अिसको दरवाज़ा बताओ।'

चपरासी दौड़ा आया। मैं तो अभी कुछ बड़बड़ा ही रहा था। चपरासीने मुझे हाथ लगाया और मुझको दरवाज़ेके बाहर निकाल दिया।

साहब गये, चपरासी गया। मैं चला, अकुलाया, खीझा। मैंने तुरन्त चिट्ठी घसीटी; भेजी। थोड़ी ही देरमें साहबका सवार जवाब दे गया — 'आपको जो कार्रवाअी करनी हो, सो करनेके लिअे आप स्वतंत्र हैं।'

भाअीसे चर्चा की। वे दु:खी हुअे। वकील-मित्रोंसे बात की। मुझे केस रखना आता ही कहाँ था? अुस समय सर फ़ीरोज़शाह महेता राजकोटमें थे। अुनकी सलाह पुछवाअी। सलाह मिली कि चिट्ठी फाड़ डालो और अपमानको पी जाओ।

मुझे यह नसीहत ज़हरकी तरह कड़वी लगी। लेकिन अिस कड़वी घूँटको गलेके नीचे अुतारनेके सिवाय और कोअी चारा न था। मैं अिस अपमानको भूल तो सका ही नहीं, लेकिन मैंने अिसका सदुपयोग किया — 'फिर कभी अपनेको अैसी स्थितिमें नहीं डालूँगा, अिस तरह किसीकी सिफ़ारिश नहीं करूँगा।' अिस नियमको मैंने कभी नहीं तोड़ा। अिस आघातने मेरे जीवनकी दिशा बदल दी।

२३

दक्षिण अफ्रीकाकी तैयारी

मेरा अधिकतर काम तो अिस अधिकारीकी अदालतमें रहता था। खुशामद मुझसे हो नहीं सकती थी। मैं अुसे अनुचित रीतिसे रिझाना नहीं चाहता था। अुसके नाम शिकायतकी धमकी भेजकर मैं शिकायत न करूँ और अुसे कुछ भी न लिखूँ, यह भी मुझे अच्छा न लगा।

अिस बीच मुझको काठियावाड़की खटपटका भी थोड़ा अनुभव हुआ। यह वातावरण मुझे जहर-सा लगा। मुझे बराबर अिस बातकी चिन्ता रहने लगी कि मैं अपनी स्वतंत्रता किस तरह बचा सकूँगा। मैं अुदासीन बना; अकुलाया।

अिस बीच भाअीके पास पोरबन्दरकी अेक मेमण पेढ़ीका सन्देशा आया — 'हमारा व्यापार दक्षिण अफ्रीकामें है। हमारी पेढ़ी बड़ी है। हमारा अेक बड़ा केस बहुत समयसे चल रहा है। अगर आपके भाअीको भेजें, तो वह हमारी मदद करे और अुसे भी कुछ मदद मिल जाय। वह हमारा केस हमारे वकीलको समझा सकेगा।'

भाअीने मुझसे अिसकी चर्चा की। मैं अिस सबका अर्थ न समझ सका। लेकिन मैं ललचाया।

मेरे भाअीने मुझे दादा अब्दुल्लाके भागीदार स्व० सेठ अब्दुल-करीम जवेरीसे मिला दिया। हमारे बीच बातचीत हुअी। करीम सेठने कहा — 'अेक सालसे अधिक आपकी जरूरत नहीं पड़ेगी। आपको जाने-आनेका फर्स्ट क्लासका किराया और रहने-खानेके खर्चके अलावा १०५ पौंड देंगे।'

अिसे वकालत नहीं कह सकते। यह तो नौकरी थी। लेकिन मुझे तो जैसे-तैसे हिन्दुस्तान छोड़ना था। मैंने सेठ अब्दुलकरीमका प्रस्ताव स्वीकार किया और दक्षिण अफ्रीका जानेके लिअे तैयार हुआ।

२४

नाताल पहुँचा

वियोगका जो दु:ख विलायत जाते समय हुआ था, दक्षिण अफ्रीका जाते समय वैसा दु:ख नहीं हुआ। अिस बार केवल पत्नीके साथका वियोग दु:खदायी था। विलायतसे लौटनेके बाद अेक दूसरे बालककी प्राप्ति हुअी थी। हमारे आपसके प्रेममें अभी विषय तो विद्यमान था ही, फिर भी अुसमें निर्मलता आने लगी थी। मेरे विलायतसे लौटनेके बाद हम बहुत कम साथमें रहे थे।

मुझे दादा अब्दुल्लाके बम्बअीवाले अेजण्टकी मारफ़त टिकट खरीदवाना था, लेकिन स्टीमरमें कैबिन खाली न थी। मैंने डेकमें जानेसे अिनकार किया। अेजण्टकी अनुमति लेकर स्वयं मैंने टिकट प्राप्त करनेका प्रयत्न किया। मैं स्टीमरके बड़े अधिकारीसे मिला। अुसकी कैबिनमें अेक हिंडोला खाली रहता है, सो वह मुझे देनेको तैयार हो गया। मैं खुश हुआ। सेठसे चर्चा की और टिकट खरीदवाया। यों सन् १८९३ के अप्रैल महीनेमें मैं अुमंगभरा दिल लेकर अपनी तक़दीर आज़मानेके लिअे दक्षिण अफ्रीकाको रवाना हुआ।

लामू और मोम्बासा होकर हम जंज़ीबार पहुँचे। जंज़ीबारमें बहुत ही रुकना था — आठ या दस दिन। यहाँ नअी स्टीमर बदलनी होती थी।

कप्तानके प्रेमका कोअी पार न था। अिस प्रेमने मेरे लिअे अुल्टा रूप धारण किया। अुसने मुझे अपने साथ सैर पर चलनेका न्योता दिया। साथमें अेक अंग्रेज़ मित्रको भी न्योता था। हम तीनों कप्तानके मछुअे पर सवार हुअे। मैं अिस सैरका मतलब बिलकुल न समझा था।

हम हब्शी औरतोंके अहातेमें पहुँचे। हरअेक अेक-अेक कमरेमें बन्द हो गया। लेकिन मैं तो शरमका मारा कमरेमें बन्द होकर बैठा ही रहा। कप्तानने मुझे पुकारा। मैं तो जिस तरह अन्दर घुसा था, अुसी तरह बाहर निकल आया। मैंने ीश्वरका आभार माना कि अुस बहनको देखकर मेरे मनमें रंचमात्र भी विकार पैदा न हुआ। मुझे अपनी अिस दुर्बलता पर तिरस्कार पैदा हुआ कि मैं कोठरीमें बन्द होनेसे ही अिनकार करनेकी हिम्मत न दिखा सका।

अपने जीवनमें अिस प्रकारकी मेरी यह तीसरी कसौटी थी। मेरा बचना मेरे पुरुषार्थकी बदौलत न था। यदि मैंने कोठरीमें बन्द होनेसे साफ़ अिनकार किया होता, तो वह मेरा पुरुषार्थ माना जाता। अपनी रक्षाके लिअे मुझे तो अेक ीश्वरका ही आभार मानना है। लेकिन अिस क़िस्सेके कारण ीश्वरके प्रति मेरी आस्था बढ़ी, और मैं झूठी शरम छोड़नेकी थोड़ी हिम्मत भी बटोर सका।

जंज़ीबारसे मोज़ाम्बिक और वहाँसे मअी महीनेके क़रीब मैं आख़िर नाताल पहुँचा।

२५

अनुभवोंकी वानगी

डरबन नातालका बन्दरगाह कहा जाता है। अब्दुल्ला सेठ मुझे लिवाने आये थे। स्टीमर डॉकमें पहुँची और नातालके लोग स्टीमर पर अपने मित्रोंको लेने आये, तभी मैं समझ गया कि यहाँ हिन्दुस्तानीकी बहुत अिज़्ज़त नहीं होती।

मुझे घर ले गये। अब्दुल्ला सेठने अपने कमरेके पड़ोसवाला कमरा मुझे दिया। वे मुझे न समझते थे, मैं अुन्हें न समझता था। अपने भाअी द्वारा भेजे गये काग़ज़-पत्र अुन्होंने पढ़े और अधिक घबराये। अुनको अैसा प्रतीत हुआ मानो भाअीने अुनके घर सफ़ेद हाथी

बाँध दिया है। मेरी साहवी ठाठवाली रहन-सहन अुन्हें खर्चीली मालूम हुअी। अुस समय मेरे लिअे वहाँ कोअी खास काम न था।

अब्दुल्ला सेठ पढ़े-लिखे वहुत कम थे, लेकिन अुनका अनुभव-ज्ञान प्रचुर था। वुद्धि अुनकी तीव्र थी। अंग्रेज़ीका ज्ञान केवल वातचीत करने जितना रोज़के अभ्याससे प्राप्त कर लिया था। हिन्दुस्तानियोंमें अुनकी वड़ी अिज़्ज़त थी। अुनका स्वभाव वहमी था।

अुन्हें अिस्लामका अभिमान था। वे तत्त्वज्ञानकी बातोंका शौक़ रखते थे। अुनके सहवाससे मुझे अिस्लामका व्यावहारिक ज्ञान ठीक-ठीक मिला। जवसे हम अेक-दूसरेको पहचानने लगे, अुसके बादसे वे मेरे साथ वहुत धर्मचर्चा किया करते थे।

दूसरे या तीसरे दिन वे मुझे डरबनकी अदालत दिखाने ले गये। वहाँ कुछ जान-पहचान कराअी। अदालतमें मुझे अपने वकीलके पास वैठाया। मजिस्ट्रेट मेरी ओर देखता रहा। अुसने मुझसे पगड़ी अुतारनेको कहा। मैंने अुतारनेसे अिनकार किया और अदालत छोड़ी।

मेरे भाग्यमें तो यहाँ भी लड़ाअी ही लिखी थी।

अब्दुल्ला सेठने मुझे पगड़ी अुतरवानेका भेद समझाया। जिसने मुसलमानी पोशाक पहनी हो, वह अपनी मुसलमानी पगड़ी पहन सकता है। दूसरे हिन्दुस्तानियोंको अदालतमें दाखिल होते ही अपनी पगड़ी अुतारनी चाहिये।

अिन दो-तीन दिनमें ही मैंने यह देखा कि हिन्दुस्तानी अपने-अपने तंग दायरे बनाकर वैठ गये हैं। अेक भाग मुसलमान व्यापारियोंका था; वे अपनेको 'अरब' कहते थे। दूसरा भाग हिन्दू अथवा पारसी मेहताओंका था। हिन्दू मेहता अधरमें लटकते थे। अुनमें से कोअी 'अरब' में मिल जाते। पारसी अपना परिचय परशियनके नामसे देते। अेक चौथा और बड़ा वर्ग तामिल, तेलगू और अुत्तरी हिन्दुस्तानके गिरमिटियों और गिरमिट-मुक्त हिन्दुस्तानियोंका था। अंग्रेज़ अिन गिरमिटियोंको कुलीके नामसे पहचानते थे, और चूँकि अिनकी संख्या वड़ी थी, अिसलिअे दूसरे हिन्दुस्तानियोंको भी कुली ही कहते थे। कुलीके वदले 'सामी' भी कहते थे।

अिस कारण मैं 'कुली वैरिस्टर' ही कहलाया। व्यापारी, कुली व्यापारी कहलाते।

अिस स्थितिमें पगड़ी पहननेका प्रश्न अेक वड़ा प्रश्न वन गया। पगड़ी अुतारनेका मतलव था, अपमान सहन करना। मैंने यह भी सोचा कि मैं हिन्दुस्तानी पगड़ीको छुट्टी दे दूँ और अंग्रेज़ी टोप पहन लूँ, जिससे अुसे अुतारनेमें अपमान मालूम न हो और मैं झगड़ेसे वच जाअूँ।

अव्दुल्ला सेठको यह सूचना जँची नहीं। अुन्होंने कहा: "अगर आप अिस समय अैसा कोअी फेरफार करेंगे, तो अुसका अनर्थ होगा। जो दूसरे लोग देशकी ही पगड़ी पहनना चाहते होंगे, अुनकी हालत नाज़ुक वन जायगी। फिर, आपको तो अपने देशकी पगड़ी ही शोभा दे सकती है। अगर आप अंग्रेज़ी टोपी पहनेंगे, तो आपकी गिनती 'वेटर' में होगी।"

अिन वाक्योंमें लौकिक समझदारी थी, देशाभिमान था, और थोड़ी संकीर्णता थी।

कुल मिलाकर अव्दुल्ला सेठकी दलील मुझे जँची। मैंने पगड़ीके क़िस्सेको लेकर अपने और पगड़ीके वचावमें अखवारोंके लिअे अेक पत्र लिखा। अखवारोंमें मेरी पगड़ीकी खूव चर्चा चली, और तीन-चार दिनके अन्दर ही अनायास दक्षिण अफ्रीकामें मेरा विज्ञापन हो गया।

मेरी पगड़ी तो लगभग अखीर तक रही।

८

२६

प्रिटोरिया जाते हुअे

डरबनमें अभी मैं जान-पहचान बढ़ा ही रहा था कि अितनेमें पेढ़ीके वकीलकी ओरसे पत्र आया कि केसके लिअे तैयारी की जानी चाहिये। और या तो अब्दुल्ला सेठको स्वयं प्रिटोरिया जाना चाहिये या किसीको वहाँ भेजना चाहिये।

सेठने मुझसे जानेके बारेमें पूछा। मैंने कहा: 'मुझे केस समझायें तो मैं बताअूँ।' अुन्होंने अपने मुनीमोंको केस समझानेमें लगाया।

मैंने देखा कि अिस केसका आधार बहीखातों पर है। जमा-खर्चके हिसाबको जाननेवाला ही केस समझ और समझा सकता है। मुनीम जमा-अुधारकी बातें करते और मैं घबराता। मुझे पता न था कि पी० नोट क्या चीज़ है। मैंने मुनीमके सामने अपना अज्ञान प्रगट किया और मुझे अुससे मालूम हुआ कि पी० नोटका मतलब प्रॉमिसरी नोटसे है। मैंने जमा-खर्चके हिसाबकी किताब खरीदी और अुसे पढ़ गया। थोड़ा आत्मविश्वास पैदा हुआ। मामला कुछ समझमें आया। मैं प्रिटोरिया जानेके लिअे तैयार हुआ।

सेठने कहा: 'मैं अपने वकीलको लिखूंगा। वह आपके ठहरनेका प्रबन्ध कर देंगे। प्रिटोरियामें मेरे मेमण दोस्त हैं; लेकिन आपका अुनके यहाँ ठहरना ठीक न होगा। आपके नाम मेरे खानगी पत्र वग़ैरा पहुँचेंगे। यदि अुनमें से कोअी अिन सबको पढ़ ले, तो हमारे केसको नुक़सान पहुँचे। अुनके साथ जितना कम सम्बन्ध हो अुतना ही अच्छा।'

मैंने कहा: 'आपके वकील मुझे जहाँ ठहरायेंगे, मैं वहीं ठहरूँगा। अथवा कोअी अलग घर ढूँढ़ लूंगा। आप निश्चिन्त रहें। आपकी अेक भी खानगी बात प्रकट न होगी। लेकिन मैं मिलता-जुलता सब किसीसे

रहूँगा। मुझे तो प्रतिपक्षीके साथ भी मित्रता साधनी है। अगर मुझसे बन पड़ा तो मैं कोशिश यह करूँगा कि यह मामला घर बैठे सुलझ जाय। आखिर तैयब सेठ भी तो आपके सगे ही हैं?'

अब्दुल्ला सेठ कुछ चौंके। लेकिन जिस दिन यह चर्चा हुअी, अुस दिन मुझे डरबन पहुँचे कोअी छः-सात दिन हो चुके थे। हम अेक-दूसरेको जानने और समझने लगे थे। मैं अब सफ़ेद हाथी लगभग नहीं रहा था। अुन्होंने कहा —

'हाँ, ... आ. . . . आ. . . .। अगर समझौता हो जाय, तो अुसके जैसी अच्छी कोअी बात नहीं। लेकिन तैयब सेठ झट समझने-वाले जीव नहीं हैं। अिसलिअे जो भी कुछ करें, होशियारीसे करें।'

मैं बोला: 'आप अिसकी बिलकुल फ़िक्र न करें। मुझे केसकी चर्चा तैयब सेठसे या किसीसे करनेकी जरूरत ही नहीं। मैं तो यही कहूँगा कि दोनों घर बैठे केस सुलझा लो, ताकि वकीलोंके घर भरने न पड़ें।'

सातवें या आठवें दिन मैं डरबनसे रवाना हुआ। मेरे लिअे पहले दर्जेका टिकट खरीदा गया।

नातालकी राजधानी मैरित्सबर्गमें ट्रेन क़रीब ९ बजे पहुँची। अेक मुसाफ़िर आया। अुसने मेरी ओर देखा। मुझे अपनेसे भिन्न रंगवाला पाकर वह परेशान हुआ। बाहर निकला। अेक-दो अफ़सरोंको लेकर आया। किसीने मुझसे कुछ कहा नहीं। आखिर अेक अफ़सर आया। अुसने मुझे आखिरी डब्बेमें जानेको कहा। हमारे बीच सवाल-जवाब हुअे; लेकिन मैंने स्वयं अुतरनेसे अिनकार कर दिया। सिपाही आया। अुसने हाथ पकड़ा और मुझे धक्का मारकर नीचे अुतारा। मेरा सामान अुतार दिया। मैंने दूसरे डब्बेमें जानेसे अिनकार किया। ट्रेन रवाना हो गअी। मैं वेटिंग रूममें बैठा। अपना हथझोला साथमें रखा, बाक़ी सामानको मैंने हाथ न लगाया।

अुन दिनों सर्दीका मौसम था। अूँचाअीवाले प्रदेशमें दक्षिण अफ्रीकाका जाड़ा बहुत सख्त होता है। मुझे ज़ोरोंकी सर्दी मालूम हुअी।

मेरा ओवरकोट मेरे सामानमें था, लेकिन सामान माँगनेकी हिम्मत न पड़ी। कहीं फिर अपमान हो जाय तो? जाड़ेसे काँपता रहा।

मैंने अपने धर्मका विचार किया — 'या तो मुझे अपने अधिकारोंके लिअे लड़ना चाहिये अथवा लौट जाना चाहिये; अन्यथा जो भी अपमान हो, सो सहन करके प्रिटोरिया पहुँचना चाहिये और अिस केसको निपटाकर वापस देश जाना चाहिये। केसको लटकता छोड़कर भागना तो नामर्दी मानी जायगी। मुझे जो दुःख अुठाना पड़ा, सो तो अूपर-अूपरका दर्द था, और वह गहरे पैठे हुअे अेक महारोगका लक्षण था। अिस महारोगका नाम था, रंगद्वेष। यदि अिस गहरे रोगको मिटानेकी शक्ति हो, तो अुस शक्तिका अुपयोग करना चाहिये और अगर अिस प्रयत्नमें दुःख अुठाने पड़ें, तो अुठाने चाहियें।' अिस प्रकारका निश्चय करके मैंने यह तय किया कि दूसरी ट्रेनमें, जैसे भी बने, आगे जाना ही चाहिये।

सवेरे-सवेरे मैंने जनरल मैनेजरके नाम अेक लम्बा शिकायती तार भेजा। दादा अब्दुल्लाको भी सूचित किया। वे जनरल मैनेजरसे मिले और अुसने मुझे बिना रोकटोकके मेरे मुक़ाम तक पहुँचानेके लिअे स्टेशन मास्टरको कहा। सेठकी सूचना पाकर व्यापारी मुझे स्टेशन पर मिलने आये। अुन्होंने मेरे सामने अपने अूपर आनेवाली मुसीबतोंका बयान किया। सारा दिन अिसी तरहकी बातें सुननेमें बीता। रात पड़ी। ट्रेन आअी। मेरे लिअे जगह तैयार ही थी। ट्रेन मुझे चार्ल्स-टाअुनकी ओर ले चली।

२७

और अधिक संकट

ट्रेन सवेरे चार्ल्सटाअुन पहुँची। अुन दिनों चार्ल्सटाअुनसे जोहानिसवर्ग पहुँचनेके लिअे ट्रेन न थी, वल्कि घोड़ोंकी शिकरम थी। मुसाफ़िर सव शिकरमके अन्दर ही वैठते। लेकिन मैं तो 'कुली' माना जाता था। अपरिचित-सा लगता था; अिसलिअे शिकरमवालेकी नीयत यह थी कि मुझे गोरे मुसाफ़िरोंके पास वैठाना न पड़े तो अच्छा। शिकरमके वाहर अर्थात् कोचवानके दायें वाँयें दो वैठकें थीं। अुनमें से अेक वैठक पर शिकरम-कंपनीका अेक अधिकारी गोरा वैठता था। वह अन्दर वैठा और मुझे कोचवानकी वग़लमें वैठाया। मैं समझ गया कि यह कोरमकोर अन्याय है, अपमान है। लेकिन मैंने अिस अपमानको पी जाना अुचित समझा। मन ही मन वेचैन तो वहुत ही रहा।

कोअी तीन वजे शिकरम पारडीकोप पहुँची। अव अुस अधिकारी गोरेने चाहा कि वह मेरी जगह पर वैठे। अुसने मुझे पैर रखनेके पटिये पर वैठनेको कहा। मैं अिस अपमानको सहनेमें असमर्थ था। अिसलिअे मैंने अुससे डरते-डरते कहा — 'मैं अन्दर जानेको तैयार हूँ। लेकिन आपके पैरके पास वैठनेको तैयार नहीं।'

मेरे अितना कहते ही मुझ पर तमाचोंकी झड़ी वरस गअी और अुसने मेरी वाँह पकड़कर मुझे नीचे घसीटना शुरू किया। मैंने वैठकके पासके सीखचोंको भूतकी तरह कचकचाकर पकड़े रखा और निश्चय किया कि हाथ चाहे टूट जायँ मगर सीखचोंको न छोड़ूँगा। वह गोरा अधिकारी मुझे गालियाँ दे रहा था, खींच रहा था, और मार भी रहा था, मगर मैं चुप था। मुसाफ़िरोंमें से कुछको दया आअी और अुनमें से कुछ यह कह अुठे — 'अिस वेचारेको वहाँ वैठने दे। अिसे नाहक़ मार मत; अिसकी वात सच है। अगर वहाँ नहीं वैठने देता है, तो अिसे यहाँ हमारे पास अन्दर वैठने दे।' सुनकर

वह खिसियाया; फलतः अुसने मुझे मारना बन्द कर दिया; मेरी बाँह छोड़ दी; अूपरसे दो-चार ज़्यादा गालियाँ दीं, और दूसरी तरफ़ अेक हॉटेण्टॉट नौकर बैठा था, अुसे अपने पैरोंके पास बैठाकर वह ख़ुद बाहर बैठा। शिकरम रवाना हुअी। मेरी छाती तो अभी धड़क ही रही थी। मुझे शक था कि मैं जीतेजी मुकाम पर भी पहुँचूँगा या नहीं। वह गोरा मेरी ओर आँखें निकाल कर देखता ही रहता था। वह मुझे अँगुली दिखाता और बड़बड़ाया करता। मैं तो चुप ही रहा, और प्रभुसे प्रार्थना करता रहा कि वह मेरी मदद करे।

रात पड़ी। स्टैण्डर्टन पहुँचे। कुछ हिन्दुस्तानियोंके चेहरे देखे। मुझे शांति मालूम हुअी। वे मुझे अीसा सेठकी दुकान पर ले जानेके लिअे आये थे। दुकान पर पहुँचनेके बाद मैंने सबको अपने पर जो बीती थी, अुसका क़िस्सा सुनाया। अुन्होंने भी अपने कड़वे अनुभवोंका वर्णन करके मुझे आश्वासन दिया। मैंने शिकरम-कंपनीके अेजण्टको पत्र लिखा। अुसने मुझे सूचित किया कि मुझको दूसरे मुसाफ़िरोंकी बराबरीमें ही जगह मिलेगी। सवेरे अीसा सेठके लोग मुझे शिकरम पर ले गये। वहाँ मुझे योग्य जगह मिली। बिना किसी परेशानीके मैं अुस रात जोहानिसबर्ग पहुँचा।

मुझे महम्मद कासिम कमरुद्दीनकी दुकानका आदमी लेने आया था। लेकिन न मैंने अुसे देखा, न वह आदमी मुझे पहचान सका। मैंने अेक होटलमें ठहरनेका प्रयत्न किया, लेकिन मैनेजरने मुझे नहीं ठहराया। मैं कमरुद्दीनकी दुकान पर गया। वहाँ देखा कि अब्दुलगनी सेठ मेरी राह ही देख रहे थे। अुन्होंने मेरा स्वागत किया। मैंने अुनसे होटलकी बात कही। वे खिलखिलाकर हँस पड़े। बोले — 'हमें यहाँ कोअी होटलमें ठहरने भी देता है?' अुन्होंने ट्रान्सवालमें पड़नेवाले दुःखोंका अितिहास कह सुनाया।

आम तौर पर यहाँ हमारे लोगोंको पहले या दूसरे दर्जेका टिकट देते ही नहीं थे। लेकिन मैंने तो पहले दर्जेमें ही जानेका विचार किया। टिकटके लिअे मैंने स्टेशन मास्टरको चिट्ठी लिखी और अुसका जवाब पानेके लिअे मैं फ्रॉककोट, नेकटाअी आदि लगाकर स्टेशन पहुँचा।

स्टेशन-मास्टर ट्रान्सवालर न था, वल्कि हॉलैण्डर था। अुसने मुझे वस्तुस्थिति समझाअी और टिकट दिया। अब्दुलगनी सेठ मुझे विदा करने आये थे। यह कौतुक देखकर वे खुश हुअे। अुन्हें आश्चर्य हुआ। लेकिन अुन्होंने मुझे होशियार किया — 'आप सही-सलामत प्रिटोरिया पहुँच जायें, तो भर पायें। गार्ड आपको पहले दर्जेमें आरामसे बैठने न देगा।'

मैं तो पहले दर्जेके डब्बेमें जाकर बैठा। ट्रेन रवाना हुअी। जर्मिस्टन पहुँचने पर गार्ड टिकट देखने निकला। मुझे देखकर ही वह चिढ़ गया। अँगुलीसे अिशारा करके कहा — 'तीसरे दर्जेमें जा।'

अिस डब्बेमें अेक ही अंग्रेज़ मुसाफ़िर था। अुसने गार्डको आड़े हाथों लिया — 'देखते नहीं हो कि अिसके पास पहले दर्जेका टिकट है? मुझे अिसके बैठनेसे थोड़ी भी अड़चन नहीं है।' और मुझसे कहा — 'आप अपने आरामसे बैठे रहिये।'

गार्ड बड़बड़ाया और चल दिया।

रातके क़रीब आठ बजे ट्रेन प्रिटोरिया पहुँची।

२८

प्रिटोरियामें

प्रिटोरिया स्टेशन पर दादा अब्दुल्लाके वकीलका कोअी आदमी मुझे लिवाने आया न था। मैं परेशान हुआ। मुझे अंदेशा था कि होटलमें कोअी ठहरायेगा नहीं। स्टेशनके खाली होने तक मैं वहीं ठहरा रहा। मैंने टिकट कलेक्टरसे पूछना शुरू किया। अुसने विनयपूर्वक अुत्तर दिये। किन्तु वह मेरी बहुत अधिक मदद कर सकनेकी स्थितिमें न था। पास ही अेक अमेरिकन हब्शी सज्जन खड़े थे। अुन्होंने मुझसे बातचीत शुरू की। वे मुझे अमेरिकन मालिकके अेक छोटे होटलमें ले गये। मालिक मुझे अेक रातके लिअे ठहरानेको राज़ी हुआ, लेकिन अुसने शर्त यह की कि मुझे अपने कमरेमें ही खाना होगा, ताकि अुसके गोरे ग्राहक अुसे छोड़ न जायँ। मैंने शर्त क़बूल की। मुझे कमरा दिया गया।

कुछ देर बाद मालिक मेरे पास आया। अुसने कहा — 'मैंने अपने ग्राहकोंसे आपके बारेमें बात करके पूछताछ की है। अुन्हें कोअी आपत्ति न होगी, यदि आप भोजनगृहमें जीमें। साथ ही, आप जितने समय तक यहाँ रहना चाहें, रहें। अुन्हें अिसमें भी कोअी अड़चन नहीं। अिसलिअे अब आप चाहें, तो मेरे भोजनगृहमें पधारें, और जब तक आपकी अिच्छा हो तब तक यहाँ रहें।'

मैं भोजनालयके कमरेमें गया। निश्चिन्त भावसे भोजन किया।

दूसरे दिन सुबह वकीलके घर गया। अुनका नाम था, अे० डब्ल्यू० बेकर। अुनसे मिला। वे मुझसे प्रेमपूर्वक मिले और मेरे बारेमें थोड़ी हक़ीक़त पूछी, जो मैंने अुन्हें कही। केसके बारेमें बातचीत करते हुअे कहा — 'केस लम्बा और अुलझन भरा है, अिसलिअे आपसे तो मैं अुतना ही काम ले सकूँगा, जितनेसे मुझे आवश्यक हक़ीक़त वग़ैरा जाननेको मिल सके। लेकिन अब अपने मुवक्किलके साथ पत्र-व्यवहार करना मेरे लिअे आसान हो जायगा।'

मेरे लिअे रहनेका प्रबन्ध करनेकी दृष्टिसे वे मुझे अेक भटियारेकी स्त्रीके घर ले गये; स्त्रीने मुझे ठहराना क़बूल किया।

मि० बेकर वकील और धर्माग्रही पादरी थे। अपनी पहली ही मुलाक़ातमें अुन्होंने धर्म-सम्बन्धी मेरी मनोदशा जान ली। मैंने अुनसे कह दिया — 'मैं जन्मसे हिन्दू हूँ। मुझे हिन्दूधर्मका बहुत ज्ञान नहीं है। दूसरे धर्मोंका ज्ञान भी कम ही है। मैं कहाँ हूँ, क्या मानता हूँ, मुझे क्या मानना चाहिये, सो सब मैं जानता नहीं। मैं अपने धर्मका गहराअीसे निरीक्षण करना चाहता हूँ। यथाशक्ति दूसरे धर्मोंका अभ्यास करनेका मेरा अिरादा है।'

यह सब सुनकर मि० बेकर खुश हुअे। अुनके अपने कुछ साथी थे। वे हमेशा अेक बजे कुछ मिनटोंके लिअे अिकट्ठा होते थे और आत्माकी शांति अेवं प्रकाश (ज्ञानके अुदय) के लिअे प्रार्थना करते थे। अुन्होंने मुझे अुसमें सम्मिलित होनेको कहा। मैंने क़बूल किया कि जहाँ तक बनेगा, आता रहूँगा।

हम बिखरे। होटलका बिल चुकाया। मैं नये घरमें गया। घरकी मालकिन भली स्त्री थी। अिस परिवारके साथ तुरत हिलमिल जानेमें मुझे देर न लगी।

शाम हुआी। व्यालू किया। और फिर तो मैं अपने कमरेमें जाकर विचारोंमें ग़र्क़ हो गया। मैंने देखा कि मेरे लिअे तुरत कोअी काम नहीं है। अब्दुल्ला सेठको खबर भेजी। मि० बेकरकी मित्रताका क्या अर्थ हो सकता है? ख्रिस्तीधर्मके अभ्यासमें मुझे कहाँ तक बढ़ना चाहिये? हिन्दूधर्मका साहित्य कहाँसे प्राप्त करना चाहिये? अुसे जाने बिना मैं ख्रिस्तीधर्मके स्वरूपको क्योंकर जान सकता था? अेक ही निर्णय कर सका — मुझे जो अभ्यास सहज भावसे करना पड़े, सो मैं निष्पक्षपातपूर्वक करूँ, और अीश्वर जिस समय जो सुझा दे, मि० बेकरके समुदायको अुस समय वही जवाब दूँ। जब तक मैं अपने धर्मको पूरी तरह समझ न सकूँ, तब तक मुझे दूसरा धर्म अपनानेका विचार नहीं करना चाहिये। अिस प्रकार सोचते-सोचते मैं निद्रावश हुआ।

२९

ख्रिस्तियोंका सम्पर्क

दूसरे दिन अेक बजे मैं मि० बेकरके प्रार्थना-समाजमें गया। वहाँ मि० कोट्स आदिसे जान-पहचान हुअी। सबने घुटनोंके बल बैठकर प्रार्थना की। मैंने भी अुनका अनुकरण किया। प्रार्थनामें जिसकी जो अिच्छा हो, सो वह अीश्वरसे माँगे। अिस प्रार्थनामें भजन-कीर्तन नहीं होता था। सबके लिअे यह समय दोपहरके भोजनका था, अिसलिअे अिस प्रकार प्रार्थना करके सब अपने-अपने भोजनके लिअे जाते। प्रार्थनामें पाँच मिनटसे ज़्यादा समय लगता ही न था।

मि० कोट्स शुद्ध मनके अेक कट्टर नौजवान क्वेकर थे। अुनके साथ मेरा गाढ़ परिचय हो गया। हम प्रायः टहलनेको भी जाने लगे। वे मुझे दूसरे ख्रिस्तियोंके घर ले जाते।

कोट्सने मुझे पुस्तकोंसे लाद दिया। ज्यों-ज्यों वह मुझे पहचानते जाते, त्यों-त्यों जो पुस्तक अुन्हें जँचती, वे मुझे पढ़नेके लिअे देते। मैंने भी केवल श्रद्धावश अुन-अुन पुस्तकोंको पढ़ना स्वीकार किया। हम अिन पुस्तकोंकी चर्चा भी करते।

कोट्सकी ममताका पार न था। अुन्होंने मेरे गलेमें वैष्णवी कण्ठी देखी। अिसे अुन्होंने अेक वहम समझा और वे कण्ठी देखकर दुःखी हुअे — 'तुम-जैसेको यह वहम शोभा नहीं देता, लाओ अिसे तोड़ डालूँ।'

'यह कण्ठी टूट नहीं सकती; माताजीकी प्रसादी है।'

'लेकिन क्या तुम अिसे मानते हो?'

'मैं अिसका गूढ़ार्थ नहीं जानता। मैं नहीं समझता कि अिसे न पहननेसे मेरा कोअी अनिष्ट होगा। लेकिन जो माला माताजीने मुझे प्रेमपूर्वक पहनाअी है, जिसे पहनानेमें अुन्होंने मेरा श्रेय समझा है, अुसे मैं विना कारण त्यागूँगा नहीं। समय पाकर वह जीर्ण होगी और टूट जायगी, तो दूसरी प्राप्त करके पहननेका लोभ मुझे न होगा। लेकिन यह कण्ठी टूट नहीं सकती।'

कोट्स मेरी दलीलकी क़द्र न कर सके, क्योंकि अुन्हें तो मेरे धर्मके प्रति ही अनास्था थी। वे तो मुझे अज्ञान कूपमें से अुवारनेकी आशा रखते थे। अुन्होंने जिस तरह मुझे पुस्तकोंसे परिचित कराया, अुसी तरह जिन्हें वे धर्माग्रही ख्रिस्ती मानते थे, अुनसे भी मेरा परिचय कराया।

३०

हिन्दुस्तानियोंसे परिचय

नातालमें जो स्थान दादा अब्दुल्लाका था, प्रिटोरियामें वही स्थान सेठ तैयब हाजी खान महम्मदका था। पहले ही हफ्तेमें मैंने अुनसे परिचय कर लिया। मैंने अुन्हें अपना यह विचार बताया कि मैं प्रिटोरियाके प्रत्येक हिन्दुस्तानीसे मिलना चाहता हूँ। मैंने हिन्दुस्तानियोंकी स्थितिका अध्ययन करनेकी अपनी अिच्छा प्रकट की, और अिस सारे काममें अुनकी मदद चाही। अुन्होंने खुशी-खुशी मदद देना क़बूल किया।

हिन्दुस्तानियोंकी सभा जुड़ी। कहा जा सकता है कि अुसमें मैंने अपने जीवनका पहला भाषण किया। मैं सत्यके विषयमें बोलना चाहता था। व्यापारियोंके मुँहसे मैं सुना करता था कि व्यापारमें सत्य नहीं चलता। अुन दिनों मैं अिस बातको मानता न था। आज भी नहीं मानता। अपने भाषणमें मैंने अिस विचारका डटकर विरोध किया, और व्यापारियोंको अुनकी दोहरी ज़िम्मेदारियोंका भान कराया। परदेशमें आनेसे अुनकी ज़िम्मेदारी देशमें रहनेके मुक़ाबले बढ़ गअी थीं, क्योंकि मुट्ठीभर हिन्दुस्तानियोंकी रहन-सहन परसे करोड़ों हिन्दुस्तानियोंका माप निकलता था।

मुझे सभाके परिणामसे सन्तोष हुआ। हर महीने अथवा हर हफ्ते अैसी सभा करनेका निश्चय किया। न्यूनाधिक नियमित रूपसे यह सभा होती, और अुसमें विचारोंका आदान-प्रदान हुआ करता। यों मैं प्रिटोरियामें ट्रान्सवालके और फ्रीस्टेटके हिन्दुस्तानियोंकी आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्थितिका गहरा अध्ययन कर सका।

३१

कुलीगिरीका अनुभव

ऑरेंज फ्रीस्टेटमें तो अेक क़ानून पास करके सन् १८८८ में या अुससे पहले हिन्दुस्तानियोंके सभी हक़ छीन लिये गये थे। ट्रान्सवालमें १८८५ में कड़ा क़ानून बना। अेक क़ानून अैसा भी बना था कि हिन्दुस्तानी आदमी 'फुटपाथ' पर अधिकारपूर्वक चल नहीं सकता; रातके नौ बजे बाद बिना परवानेके बाहर नहीं निकल सकता।

मैं मि० कोट्सके साथ अक्सर रात घूमने निकलता। घर लौटते समय दस भी बज जाते। अिस कारण वे या अुनके कोअी मित्र मुझे स्थानीय सरकारी वकील डॉ० क्राअुज़ेके पास ले गये। अुन्हें यह बात असह्य प्रतीत हुअी कि मेरे लिअे परवाना लेना लाज़िमी है। अुन्होंने मुझे परवाना देनेके बदले अपनी तरफ़से अेक पत्र दिया। अुसका आशय यह था कि मैं चाहे जिस समय, चाहे जहाँ जाअूँ, पुलिसको चाहिये कि वह अिसमें मेरे लिअे कोअी बाधा न डाले। मैं अिस पत्रको हमेशा अपने साथ रखकर घूमता-फिरता था। कभी अुसका अुपयोग करना नहीं पड़ा। लेकिन अिसे तो मात्र अेक संयोग ही समझना चाहिये।

डॉ० क्राअुज़ेने मुझे अपने घर आनेके लिअे आमंत्रित किया। हमारे बीच मित्रता स्थापित हुअी। अुनके ज़रिये मेरा परिचय अुनके विशेष प्रसिद्ध भाअीसे हुआ। वे जोहानिसबर्गमें पब्लिक प्रॉसीक्यूटर नियुक्त हुअे थे। बादमें ये संबंध मेरे लिअे सार्वजनिक रीतिसे अुपयोगी हो पाये थे, और अिनके कारण मेरे कुछ सार्वजनिक काम सरल हो सके थे।

फुटपाथ पर चलनेका प्रश्न मेरे लिअे तनिक गम्भीर परिणामवाला सिद्ध हुआ। मैं हमेशा प्रेसीडेण्ट स्ट्रीटके रास्ते अेक खुले मैदानमें जाता था। अिस मुहल्लेमें प्रेसीडेण्ट क्रूगरका घर था। अुसके सामने अेक

सिपाही पहरा देता रहता। मैं प्रायः हमेशा अिस सिपाहीके बहुत नज़दीक से गुज़रा करता था। लेकिन सिपाहीने मुझसे कभी कुछ न कहा। सिपाही समय-समय पर बदलते रहते थे। अेक बार अेक सिपाहीने बिना चेतावनीके, फुटपाथ परसे अुतर जानेको कहे बिना ही, मुझे धक्का मारा, लात मारी, और नीचे अुतार दिया। मैं तो गहरे विचारमें डूब गया। मेरे अुससे लात मारनेका कारण पूछनेसे पहले ही, कोट्सने, जो अुधरसे गुज़र रहे थे, मुझे पुकार कर कहा—

'गांधी, मैंने सब कुछ देखा है। यदि तुझे केस चलाना हो, तो मैं गवाही दूँगा।'

मैंने कहा—'मैं तो यह नियम ही बना चुका हूँ कि मुझ पर जो कुछ बीते, अुसके लिअे मैं अदालतकी सीढ़ी कभी न चढ़ूँगा। अतअेव मुझे केस चलाना नहीं है।'

कोट्सने अुस सिपाहीसे डच भाषामें बातचीत की। सिपाहीने मुझसे माफ़ी माँगी। मैं तो अुसे माफ़ कर ही चुका था।

लेकिन अुसके बाद मैंने अुस गलीसे जाना छोड़ दिया।

अिस घटनाने भारतवासियोंके प्रति मेरी भावनाको अधिक तीव्र बना दिया। मैंने देखा कि स्वाभिमानकी रक्षा करनेकी अिच्छा रखनेवाले भारतीयके लिअे दक्षिण अफ्रीका योग्य देश नहीं है। मेरा मन अधिकाधिक यही सोचनेमें लगने लगा कि अिस हालतको किस प्रकार बदला जा सकता है। लेकिन अभी मेरा मुख्य धर्म तो दादा अब्दुल्लाके केसको सँभालनेका ही था।

३२
मुक़दमेकी तैयारी

प्रिटोरियामें मुझे जो अेक वर्ष मिला, वह मेरे जीवनमें अमूल्य था। सार्वजनिक काम करनेकी अपनी शक्तिका कुछ अंदाज़ मुझे यहाँ हुआ, और यहीं मुझे अुसे सीखनेका अवसर मिला। धार्मिक भावना अपने आप तीव्र होने लगी। और, कह सकता हूँ कि सच्ची वकालत भी मैं यहीं सीखा। वकीलके नाते मैं बिलकुल नालायक़ नहीं रहूँगा, अिसका विश्वास भी मुझे यहीं हुआ। वकील बननेकी चाबी भी यहीं मेरे हाथ लगी।

दादा अब्दुल्लाका मुक़दमा छोटा न था। दावा ४०,००० पौण्डका यानी छः लाख रुपयोंका था।

दोनों पक्षोंकी ओरसे अच्छेसे अच्छे सॉलीसिटर और बैरिस्टर लगाये गये थे। वादीके केसको सॉलीसिटरके लिअे तैयार करने और हक़ीक़तोंका पता लगानेका सारा बोझ मुझ पर था। मैं समझ गया कि अिस केसको तैयार करनेमें मुझे अपनी ग्रहणशक्ति और व्यवस्था-शक्तिका ठीक-ठीक अन्दाज़ हो जायेगा।

मैंने केसमें पूरी दिलचस्पी ली। मैं अुसमें तन्मय हो गया। मैंने खूब मेहनत की। मुझे धार्मिक चर्चा आदिमें और सार्वजनिक काममें बहुत दिलचस्पी थी, और मैं अुनमें समय भी देता था। फिर भी मेरे निकट यह चीज़ गौण थी। मैं केसकी तैयारीको प्रधानता देता था। मैंने मुवक्किलके केसको अन्त तक देखकर यही परिणाम निकाला कि अुसका केस बहुत मजबूत है। क़ानूनको अुसकी मदद करनी ही चाहिये।

लेकिन मैंने देखा कि अिस मामलेको लड़ते-लड़ते दोनों संबंधी बरबाद हो जायँगे।

मैंने तैयब सेठसे विनती की। आपसमें निपटा लेनेकी सलाह दी। मुझे लगा कि मेरा धर्म दोनोंसे मित्रता रखनेका था, दोनों संबंधियोंको मिलानेका था। मैंने समझौतेके लिअे जी-तोड़ महेनत की। तैयब सेठ

मान गये। आखिर पंच नियुक्त हुअे। केस चला। केसमें दादा अब्दुल्ला जीते।

लेकिन केवल अितनेसे मुझे संतोष न हुआ। यदि पंचके निर्णय पर अमल हो, तो तैयब सेठ अुतनी रक़म अेक साथ दे ही न सकें। रास्ता अिसका अेक ही था — दादा अब्दुल्ला अुन्हें पर्याप्त समय दें। दादा अब्दुल्लाने अुदारतासे काम लेकर बहुत लम्बा समय दिया। दोनों पक्ष प्रसन्न हुअे। दोनोंकी प्रतिष्ठा बढ़ी। मेरे सन्तोषका पार न रहा। मैं सच्ची वकालत सीखा, मनुष्यका अच्छा पहलू खोजना सीखा, मनुष्य-हृदयमें प्रवेश करना सीखा। मैंने देखा कि वकीलका कर्त्तव्य दोनों पक्षोंके बीच पड़ी हुअी दरारको पाटनेका है। अिस शिक्षणने मेरे मनमें अैसी जड़ें जमाअीं कि बीस वर्षकी मेरी वकालतका मुख्य समय अपने ऑफिसमें बैठकर सैकड़ों मामलोंको निपटानेमें ही बीता। अिसमें मैंने कुछ खोया नहीं। यह भी नहीं कह सकता कि धन खोया। आत्मा तो खोयी ही नहीं।

३३

धार्मिक मंथन

मेरे भविष्यके बारेमें मि० बेकरकी चिन्ता बढ़ती जाती थी। वे मुझे वेलिंग्टन कन्वेन्शनमें ले गये। अुन्हें आशा थी कि अिस सम्मेलनमें होनेवाली जागृति, अुसमें आनेवाले लोगोंका धार्मिक अुत्साह और अुनकी निष्कपटताका मेरे हृदय पर अैसा गहरा प्रभाव पड़ेगा कि मैं ख्रिस्ती बने बिना न रह सकूँगा।

लेकिन मि० बेकरका अंतिम आधार प्रार्थनाकी शक्ति पर था। अुसकी महिमाके विषयमें मैंने सब कुछ तटस्थ भावसे सुना। मैंने अुनसे कहा कि यदि ख्रिस्ती बननेका अंतरनाद आया, तो अुसे स्वीकार करनेमें मेरे लिअे कोअी भी वस्तु बाधक न होगी। अंतरनादके वश होना मैं अिससे पहले कअी वर्षोंसे सीख चुका था। अुसके वश होनेमें

मुझे आनन्द आता था। अुसके विरुद्ध जाना मेरे लिअे कठिन और दुःखरूप था।

सम्मेलनमें श्रद्धालु ख्रिस्तियोंसे भेंट हुअी। अुसमें सम्मिलित होनेवालोंकी धार्मिकताको मैं समझ सका, अुसकी क़दर कर सका। किन्तु मुझे अपनी मान्यतामें — अपने धर्ममें — परिवर्तन करनेका कोअी कारण न मिला। मुझे अैसा प्रतीत न हुआ कि अपनेको ख्रिस्ती कहलाने पर ही मैं स्वर्गमें जा सकता हूँ या मोक्ष पा सकता हूँ। जब मैंने यह बात अुन भले ख्रिस्ती मित्रोंसे कही, तो अुन्हें आघात तो पहुँचा, किन्तु मैं लाचार था।

मेरी कठिनाअियाँ गहरी थीं। मेरे गले यह बात अुतरती न थी, कि 'अेक अीशु ख्रिस्त ही अीश्वरका पुत्र है। अुसे जो मानेगा, वही तरेगा।' मैं अीशुको अेक त्यागी, महात्मा और दैवी शिक्षकके रूपमें मान सकता था। लेकिन अुसे अेक अद्वितीय पुरुषके रूपमें मानना सम्भव न था। अीशुकी मृत्युसे संसारको भारी दृष्टान्त मिला, लेकिन अुसकी मृत्युमें कोअी गूढ़, चमत्कारिक प्रभाव था, अिस बातको मेरा हृदय स्वीकारता न था। ख्रिस्तियोंके पवित्र जीवनमें से मुझे अैसी कोअी चीज़ न मिली, जो दूसरे धर्मानुयायियोंके जीवनसे न मिलती हो। सिद्धान्तकी दृष्टिसे ख्रिस्ती सिद्धान्तोंमें मुझे कोअी अलौकिकता दिखाअी नहीं दी। त्यागकी दृष्टिसे हिन्दू-धर्मानुयायियोंका त्याग मुझे श्रेष्ठतर मालूम हुआ। ख्रिस्ती-धर्मको मैं सम्पूर्ण अथवा सर्वोपरि धर्मके रूपमें स्वीकार न सका।

अपना यह हृदय-मन्थन मैंने अवसर पाकर ख्रिस्ती मित्रोंके सम्मुख रखा। वे मुझे अिसका कोअी सन्तोषजनक अुत्तर न दे सके।

लेकिन जिस तरह मैं ख्रिस्ती धर्मको अंगीकार न कर सका, अुसी तरह हिन्दूधर्मकी संपूर्णताके विषयमें अथवा अुसके सर्वोपरि होनेके विषयमें भी अुस समय मैं कोअी निश्चय न कर सका। हिन्दूधर्मकी त्रुटियाँ मेरी आँखोंके सामने तैरा करती थीं। यदि अस्पृश्यता हिन्दूधर्मका अंग है, तो वह मुझे अुसका सड़ा हुआ और फ़ाज़िल अंग प्रतीत हुआ। और सम्प्रदायों, तथा अनेक जात-बिरादरियोंके अस्तित्वको मैं समझ न सका।

जिस प्रकार खिस्ती मित्र मुझे प्रभावित करनेका प्रयत्न कर रहे थे, अुसी प्रकार मुसलमान मित्रोंका भी प्रयत्न शुरू था। अब्दुल्ला सेठ मुझे अिस्लामका अध्ययन करनेके लिअे ललचा रहे थे। अुसकी खूबियोंकी चर्चा तो वे करते ही रहते।

मैंने अपनी मुसीबतें रायचन्दभाअीके सामने रखीं। हिन्दुस्तानके दूसरे धर्मशास्त्रियोंके साथ भी पत्र-व्यवहार किया। अुनके जवाब भी आ पहुँचे। रायचन्दभाअीके पत्रसे मुझे कुछ शान्ति प्राप्त हुअी। अुन्होंने मुझे धीरज रखने और हिन्दूधर्मका गहरा अध्ययन करनेकी सलाह दी। अुनके अेक वाक्यका भावार्थ अिस प्रकार था — 'निष्पक्षपातपूर्वक विचार करते हुअे मुझे यह प्रतीति हुअी है कि हिन्दूधर्ममें जो सूक्ष्म और गूढ़ विचार हैं, आत्माका निरीक्षण है, दया है, वह दूसरे धर्ममें नहीं है।'

मेरा अध्ययन मुझे अेक अैसी दिशामें ले गया, जो खिस्ती मित्रोंके लिअे अिष्ट न था। यद्यपि मैं अुनके सोचे हुअे मार्ग पर नहीं मुड़ा, तो भी अुनके समागमने मुझमें जो धर्म-जिज्ञासा जाग्रत की, अुसके लिअे तो मैं अुनका चिर ऋणी बन गया।

३४

को जाने कलकी ?

मुक़दमा पूरा होने पर मुझे लगा कि अब प्रिटोरियामें रहना निरर्थक है। मैं डरबन पहुँचा। वहाँ जाकर हिन्दुस्तान लौटनेकी तैयारी की। अब्दुल्ला सेठने सिडनहॅममें मेरे लिअे अेक भोजका कार्यक्रम रखा था।

वहाँ सारा दिन बिताना था। मैं अुन्हें देख रहा था। मेरे सामने कुछ अखबार पड़े थे। अेक कोनेमें मैंने अेक ही छोटा-सा पैरा देखा। शीर्षक था, 'अिण्डियन फ्रेन्चाअिज़'। आशय अुसका यह था कि नातालकी धारासभामें हिन्दु-

स्तानियोंको अपने सदस्य चुननेके जो अधिकार थे, वे रद्द कर दिये जायँ। मैं अिस क़ानूनसे अपरिचित था। मजलिसमें आये हुअे किसीको भी हिन्दुस्तानियोंके हक़ छीननेवाले अिस बिलका कोअी पता न था। मैंने अब्दुल्ला सेठसे पूछा। अुन्होंने कहा — 'अिन मामलोंमें हम क्या जानें? हमें तो व्यापार पर कोअी आफ़त आती है, तो अुसका पता चलता है। अखबार पढ़ते हैं, तो अुसमें भी भाव-तावकी बातें ही समझते हैं। क़ानूनकी बातोंको हम क्या जानें? हमारे आँख-कान तो हैं, हमारे गोरे वकील।'

'लेकिन हमारे यहाँ यहींके जनमे और अंग्रेज़ी पढ़े-लिखे जो अितने सारे नौजवान हिन्दुस्तानी हैं, वे क्या करते हैं?'

अब्दुल्ला सेठने सिर पर हाथ रखा और कहा — 'अरे भाअी, अुनसे हमें क्या मिल सकता है? वे तो हमारे पास भी नहीं फटकते, और सच पूछो तो हम भी अुन्हें नहीं पहचानते। वे खि़स्ती ठहरे। अिसलिअे पादरियोंके पंजेमें रहते हैं। और पादरी गोरे हैं। वे सरकारके तावेमें हैं!'

मेरी आँख खुली। सोचा, अिन लोगोंको अपनाना चाहिये। क्या खि़स्ती धर्मका यही अर्थ है? वे खि़स्ती हैं, अिसलिअे देशके नहीं रहे, और परदेशी बन गये?

लेकिन मुझे तो वापस देश लौटना था। अिसलिअे अूपरके विचारोंको मूर्त्तिमंत न किया। अब्दुल्ला सेठसे कहा —

'लेकिन यदि यह क़ानून ज्योंका त्यों पास हो गया, तो आपको भारी पड़ जायगा। यह तो हिन्दुस्तानियोंकी हस्तीको मिटानेका पहला क़दम है। अिसमें स्वाभिमानकी हानि है।'

'तो आप क्या सलाह देते हैं?'

हमारी अिस बातचीतको दूसरे मेहमान भी ध्यानसे सुन रहे थे। अुनमें से अेकने कहा — 'मैं आपसे सच बात कहूँ? अगर आप अिस स्टीमरसे न जायँ और अेकाध महीना रुक जायँ, तो जिस तरह आप कहेंगे, हम लड़ेंगे।' दूसरे कह अुठे —

'यह सच बात है। अब्दुल्ला सेठ, आप गांधीभाअीको रोक लीजिये।'

अब्दुल्ला सेठ अुस्ताद थे। वे बोले — 'अब अिन्हें रोकनेका मुझे अधिकार नहीं, अथवा जितना मुझे है अुतना आपको है। लेकिन आप जो कहते हैं, सो ठीक है। हम सब अिन्हें रोक लें। मगर ये तो बैरिस्टर हैं, अिनकी फीसका क्या होगा?'

मुझे बुरा लगा और मैं बीच ही में बोल अुठा —

'अब्दुल्ला सेठ, अिसमें मेरी फीसका सवाल अुठता ही नहीं। सार्वजनिक सेवामें फीस कैसी? यदि मैं रुका, तो अेक सेवकके नाते ही रुकूँगा। अगर आपका विश्वास हो, कि सब मेहनत करेंगे, तो मैं अेक महीना रुक जानेको तैयार हूँ। अितना ज़रूर है कि यद्यपि आपको मुझे कुछ देना नहीं होगा, फिर भी अैसे काम बिलकुल बिना पैसेके तो हो ही नहीं सकते।' कअी आवाज़ें अेक साथ सुनाअी पड़ीं — 'खुदाकी मेहर है। पैसे तो अिकट्ठा हो जायँगे। आदमी भी हैं। बस, अेक आप रहना क़बूल कर लीजिये।'

मजलिस, मजलिस न रही और कार्यकारिणी-समिति बन गअी। मैंने मनमें लड़ाअीकी रूपरेखा निश्चित की। मैंने अेक महीना रह जानेका निश्चय किया।

अिस प्रकार अीश्वरने दक्षिण अफ्रीकामें मेरे स्थायी निवासकी नींव डाली और स्वाभिमानकी लड़ाअीका बीज बोया गया।

३५

रुक़ा

सन् १८९३ में नातालकी हिन्दुस्तानी जनताके अग्रगण्य नेता सेठ हाजी मुहम्मद हाजीदादा माने जाते थे। अिसलिअे अुनके सभापतित्वमें अेक सभा हुअी। अुसमें फ्रेन्चाअिज़ बिलका विरोध करनेका प्रस्ताव पास हुआ। स्वयंसेवकोंकी भरती हुअी। आये हुअे दुःखके सामने नीच-अूँच, छोटे-बड़े, मालिक-नौकर, जात-पाँत, धर्म-प्रान्त आदिके भेद मिट गये। सब हिन्दकी सन्तान और सेवक थे।

मैंने सभाको वस्तुस्थिति समझाअी। जगह-जगह तार रवाना हुअे। जवाबमें बिलकी चर्चा दो दिनके लिअे मुल्तवी रही। सब ख़ुश हुअे।

अर्ज़ी तैयार हुअी। सहियाँ ली गअीं। अर्ज़ी रवाना हुअी। अख़बारमें छपी। बिल तो पास हो गया।

सब जानते थे कि यही परिणाम होगा। लेकिन क़ौममें नवजीवनका संचार हुआ। सब कोअी समझने लगे कि हम अेक क़ौम हैं। मात्र व्यापारी हक़ोंके लिअे ही नहीं, बल्कि क़ौमी हक़ोंके लिअे लड़ना भी सबका धर्म है।

राज्यके प्रधानके नाम्म अेक जंगी अर्ज़ी भेजनेका ठहराव किया। अिस अर्ज़ी पर जितनोंकी सहियाँ ली जा सकें, लेनी थीं। अेक पखवाड़ेमें अर्ज़ी भेजने योग्य सहियाँ मिल गअीं।

अर्ज़ीके कारण हिन्दुस्तानकी आम जनताको नातालका पहला परिचय हुआ। 'टाअिम्स ऑफ अिण्डिया' ने अुस पर अग्रलेख लिखा, और हिन्दुस्तानियोंकी माँगका अच्छा समर्थन किया। लन्दनके 'टाअिम्स' का समर्थन मिला। अिससे बिलको स्वीकृति न मिलनेकी आशा बँधी।

अब मेरे लिअे नाताल छोड़ना कठिन हो गया। लोगोंने मुझे अत्यन्त आग्रहके साथ कहा कि मैं स्थायी रूपसे नातालमें ही बस

जाअूँ। मैंने मन ही मन निश्चय किया था कि मुझे सार्वजनिक खर्च पर हरगिज़ न रहना चाहिये। मैंने अलग घर बसानेकी आवश्यकता अनुभव की। अुस समय मैंने यह माना कि घर भी अच्छा और अच्छी वस्तीमें लेना चाहिये।

मैंने यह सोचा कि दूसरे बैरिस्टरोंकी तरह रहनेसे क़ौमका सम्मान बढ़ेगा। मुझे अैसा मालूम हुआ कि अिस प्रकारका घर मैं तीन सौ पौंड प्रतिवर्षके विना चला ही न सकूँगा। मैंने निश्चय किया कि कोअी अितनी रक़मकी वकालतका विश्वास दिला सके, तभी मैं रह सकता हूँ। और मैंने क़ौमके लोगोंसे अपने निश्चयकी चर्चा की।

अिस पर वहस हुअी। आखिर नतीजा यह निकला कि कोअी बीस व्यापारियोंने अेक वर्षके लिअे मेरा वर्षासन निश्चित कर दिया। अिसके अलावा दादा अब्दुल्ला विदाअीके समय जो भेंट देनेवाले थे, अुसके बदले अुन्होंने मुझे आवश्यक फर्नीचर खरीद दिया। और, मैं नातालमें रह गया।

३६

काला चोगा

मुझे वकालतकी सनद लेनी थी। मैंने अर्ज़ी दी। साथमें दो प्रसिद्ध गोरे व्यापारियोंके प्रमाण-पत्र भेजे और अेटरनी-जनरल मि० अेस्कम्बने अर्ज़ी पेश करना मंजूर किया।

वकील-मंडलने मेरी अर्ज़ीका विरोध करनेका निश्चय किया। अुसके वकीलने अब्दुल्ला सेठकी मारफ़त मुझे बुलाया। अुन्होंने मेरे साथ शुद्ध हृदयसे बात की। अुन्हें गोरोंके प्रमाण-पत्रसे संतोष नहीं हुआ। अुन्होंने अब्दुल्ला सेठका शपथ-पत्र चाहा; और अिसका ज़िक्र करते हुअे जो भाव प्रदर्शित किया, अुससे मुझे क्रोध आ गया। लेकिन मैंने अुसे रोका। आवश्यक शपथ-पत्र तैयार किया और अुन्हें दिया। लेकिन

वकील-मंडलने अपना विरोध अदालतके सामने पेश किया। अदालतने अुसे रद्द कर दिया।

मुख्य न्यायाधीशने कहा — 'अदालतके नियमोंमें काले-गोरेका भेद नहीं है। हमें मि० गांधीको वकालत करनेसे रोकनेका अधिकार नहीं। अर्ज़ी मंजूर की जाती है। मि० गांधी, आप शपथ ले सकते हैं।'

मैं अुठा। रजिस्ट्रारके सामने शपथ ली। शपथ लेनेके बाद तुरत ही मुख्य न्यायाधीशने कहा — 'अब आपको अपनी पगड़ी अुतारनी चाहिये। वकीलके नाते वकीलोंकी पोशाकसे संबंध रखनेवाले अदालती नियमका पालन आपको भी करना चाहिये।'

मैं अपनी मर्यादा समझा। मैंने पगड़ी अुतारी।

अब्दुल्ला सेठको और दूसरे मित्रोंको मेरी यह नरमी (अथवा कमज़ोरी?) अच्छी न लगी। मैंने अुन्हें समझानेका प्रयत्न किया। लेकिन अुनको संतोषजनक ढंगसे समझा न सका। मेरे जीवनमें आग्रह और अनाग्रह हमेशा साथ-साथ ही चलते रहे हैं। सत्याग्रहके लिअे यह अनिवार्य है, अैसा बादमें कअी बार मैंने अनुभव किया है। अपनी अिस समाधान-वृत्तिके लिअे मुझे कअी बार जानका खतरा अुठाना पड़ा है, और मित्रोंके असन्तोषको सहना पड़ा है। लेकिन सत्य वज्रके समान कठिन है और कमलके समान कोमल है।

वकील-मंडलके विरोधने दक्षिण अफ्रीकामें दूसरी बार मेरे विज्ञापनका काम किया।

३७

नाताल अिण्डियन कांग्रेस

वकीलका धन्धा करना मेरे लिअे गौण वस्तु थी, और हमेशा गौण ही रही। नातालमें अपने निवासको सार्थक बनानेके लिअे तो मुझे सार्वजनिक काममें तन्मय होना था। मुझे अेक संस्थाकी स्थापना करना आवश्यक मालूम हुआ। अिसलिअे मैंने अब्दुल्ला सेठसे सलाह की, दूसरे साथियोंसे मिला, और हमने अेक सार्वजनिक संस्था खड़ी करनेका निश्चय किया। यों सन् १८९४ के मअी महीनेकी २२वीं तारीखको 'नाताल अिण्डियन कांग्रेस' का जन्म हुआ।

मैंने शुरूमें ही यह सीख लिया था कि सार्वजनिक काम कभी क़र्ज़ लेकर न करना चाहिये। दूसरे कामोंके बारेमें लोगोंका चाहे विश्वास किया जा सके, लेकिन पैसेके बारेमें विश्वास नहीं किया जा सकता। मैं यह देख चुका था कि लिखवाअी हुअी रक़म देनेका धर्म लोग कहीं भी नियमित रीतिसे पालते नहीं हैं। अिसलिअे 'नाताल अिण्डियन कांग्रेस' ने कभी क़र्ज़ लेकर काम किया ही नहीं।

सदस्य बनानेमें साथियोंने असीम अुत्साहका परिचय दिया था। बहुतेरे लोग खुश होकर नाम लिखाते और तुरन्त पैसे दे देते। लेकिन पैसा अिकट्ठा करना ही तो हमारा हेतु न था। आवश्यकतासे अधिक पैसे न रखनेके तत्त्वको भी मैं समझ चुका था।

कांग्रेसकी पाअी-पाअीका हिसाब शुरूसे ही साफ़ रहा था। शुद्ध हिसाबके बिना शुद्ध सत्यकी रक्षा करना असंभव है।

कांग्रेसका दूसरा अंग अुपनिवेशमें जनमे हुअे हिन्दुस्तानियोंकी सेवा करनेका था। अिसके लिअे 'कॉलोनियल बॉर्न अिण्डियन अेज्युकेशनल अेसोसियेशन' की स्थापना की गअी।

कांग्रेसका तीसरा अंग था, बाहरी काम। अिसमें दक्षिण अफ्रीकाके अंग्रेज़ोंमें और सुदूर अिंग्लैण्ड तथा हिन्दुस्तानमें सच्ची स्थितिका प्रचार

करनेका काम था। अिस हेतुसे मैंने दो पुस्तिकायें लिखीं। अिन दोनों पुस्तिकाओंको तैयार करनेमें मैंने बहुत मेहनत और अध्ययन किया था। अुसका परिणाम भी वैसा ही हुआ। अिस कार्यके निमित्तसे दक्षिण अफ्रीकामें हिन्दुस्तानियोंके मित्र पैदा हुअे। अिंग्लैण्डमें और हिन्दुस्तानमें सब पक्षोंकी ओरसे मदद मिली, और काम लेनेका मार्ग मिला तथा निश्चित हुआ।

३८

बालासुन्दरम्

जैसी जिसकी भावना, वैसा अुसका फल; अपने बारेमें मैंने अिस नियमको अनेक बार लागू होते देखा है। लोगोंकी, अर्थात् ग़रीबोंकी सेवा करनेकी मेरी प्रबल अिच्छाने हमेशा ग़रीबोंके साथ मेरा मेल अनायास ही करा दिया है।

नाताल अिण्डियन कांग्रेसमें गिरमिटियोंका दल भरती नहीं हुआ था। अुनके मनमें कांग्रेसके प्रति अनुराग तभी अुत्पन्न होता, जब कांग्रेस अुनकी सेवा करती। अुसे अैसा अवसर प्राप्त हो गया।

अेक दिन फटे कपड़े पहना हुआ, थर-थर काँपता, मुँहसे लहू बहाता हुआ, आगेके दो दाँत ज़िसके टूट गये थे, अैसा अेक हिन्दुस्तानी मद्रासी हाथमें साफ़ा लिये रोता-रोता मेरे पास आकर खड़ा हुआ। अुसे अुसके मालिकने बुरी तरह मारा था। अिसके कारण बालासुन्दरम्के दो दाँत टूट गये थे।

मैंने अुसे डॉक्टरके पास भेजा। चोटके बारेमें प्रमाण-पत्र प्राप्त करके मैं बालासुन्दरम्को मजिस्ट्रेटके पास ले गया। अुसने प्रमाण-पत्र पढ़कर मालिकके नाम समन्स जारी करनेका हुक्म दिया।

मेरा अिरादा मालिकको सज़ा करानेका न था। मैं तो बालासुन्दरम्को अुसके पाससे हटाना चाहता था। मैं मालिकसे मिला। अुससे कहा, मैं आपको सज़ा कराना नहीं चाहता। अगर आप अुसका गिरमिट

दूसरेके नाम लिखनेको राज़ी हो जायें, तो मुझे संतोष हो। मालिक तो यही चाहता था। मैंने दूसरा मालिक खोज निकाला। मजिस्ट्रेटने गिर-मिट दूसरेके नाम करा दिया।

बालासुन्दरम्के केसकी बात गिरमिटियोंमें चारों ओर फैल गयी, और मैं अुनका भाओी माना गया। मुझे यह बात अच्छी लगी। मेरे दफ़्तरमें गिरमिटियोंका ताँता लग गया और मुझे अुनके सुख-दुःख जाननेकी सुविधा प्राप्त हुओी।

बालासुन्दरम् अपना साफ़ा हाथमें रखकर मेरे सामने आया था। अिस हक़ीक़तमें अतिशय करुण रस भरा हुआ है। अुसमें हमारी नामोशी समायी है। जब कोओी गिरमिटिया या दूसरे अनजान हिन्दुस्तानी किसी भी गोरेके सामने जाते, तो अुसके सम्मानमें पगड़ी अुतारते। बाला-सुन्दरम्ने सोचा कि मेरे सामने भी अुसी तरह जाना चाहिये। मैंने अुसे साफ़ा बाँधनेके लिओ कहा। संकोचके साथ अुसने साफ़ा बाँधा, लेकिन अिससे अुसे जो ख़ुशी हुओी, सो मैं समझ सका। आज तक मैं अिस पहेलीको बूझ नहीं पाया हूँ कि लोग दूसरोंको अपमानित करके अुसमें क्योंकर अपने सम्मानका अनुभव कर सकते हैं!

३९

तीन पौंडका कर

बालासुन्दरम्के क़िस्सेने मुझे गिरमिटिया हिन्दुस्तानियोंके सम्पर्कमें ला दिया। लेकिन अुन पर कर लादनेका जो आन्दोलन चला, अुसके परिणामस्वरूप मुझे अुनकी स्थितिका अध्ययन करना पड़ा।

सन् १८९४ में नातालकी सरकारने अेक बिल तैयार किया, जिसके अनुसार गिरमिटिया हिन्दुस्तानियोंको हर साल २५ पौंडका अर्थात् रुपये ३७५ का कर सरकारको देना ज़रूरी था। मैं तो अिस बिलको पढ़कर दिङ्मूढ़ ही बन गया। अिस विषयमें कांग्रेसको जो हलचल करनी चाहिये, सो करनेका प्रस्ताव अुसने पास किया।

सन् १८६० के आसपास जब नातालमें रहनेवाले गोरोंने देखा कि अीखकी फ़सल अच्छी हो सकती है, तो अुन्होंने मज़दूरोंकी तलाश शुरू की। अुन्होंने हिन्दुस्तानकी सरकारके साथ चर्चा चलाकर हिन्दुस्तानी मज़दूरोंको नाताल जाने देनेकी अिजाज़त हासिल की। अुन्हें लालच यह दिया गया था कि वहाँ अुनको ५ साल तक बंधनमें रहकर मज़दूरी करनी होगी, और पाँच सालके बाद स्वतंत्र रीतिसे नातालमें बसनेका मौक़ा मिलेगा।

अुस समय गोरोंकी अिच्छा यह थी कि हिन्दुस्तानी मज़दूर अपने पाँच वर्ष पूरे करनेके बाद ज़मीन जोतें और अपने अुद्यमसे नातालको लाभ पहुँचावें।

हिन्दुस्तानी मज़दूरने अिस तरहका लाभ अपेक्षासे अधिक दिया। लेकिन अिसके साथ ही अुसने तो व्यापार भी शुरू कर दिया। स्वतंत्र व्यापारी भी आये।

गोरे व्यापारी चौंके। अुन्हें व्यापारमें अिन लोगोंकी यह होड़ असह्य मालूम हुअी।

हिन्दुस्तानियोंके साथ गोरोंके विरोधकी जड़ अिस बातमें थी। यह विरोध मताधिकार छीन लेने और गिरमिटियों पर कर लादनेके रूपमें क़ानूनी ढंग पर मूर्तिमन्त हुआ।

हिन्दुस्तानके वाअिसरॉयने २५ पौंडका कर तो नामंज़ूर कर दिया, लेकिन ३ पौंडका कर वसूल करनेकी स्वीकृति दे दी। अिसमें अुन्होंने हिन्दुस्तानके हितका तनिक भी विचार नहीं किया। अैसी स्थितिवाले लोगोंसे अिस प्रकारका कर दुनियामें कहीं भी वसूल नहीं होता था।

कांग्रेसको जो बात अखरी, वह तो यह थी कि वह गिरमिटियोंके हितकी पूरी रक्षा न कर सकी। और कांग्रेसने अपना यह निश्चय कभी शिथिल नहीं होने दिया, कि तीन पौंडके करको किसी-न-किसी दिन तो हटना ही है। अिस निश्चयके पूरा होनेमें २० वर्ष बीत गये।

४०

धर्म-निरीक्षण

अिस प्रकार मैं जो अपनी क़ौमकी सेवामें ओतप्रोत हो गया था, अुसका कारण था, आत्म-दर्शनकी अभिलाषा। अीश्वरका परिचय सेवा द्वारा ही होगा, यह सोचकर मैंने सेवाधर्म स्वीकार किया था। हिन्दुस्तानकी सेवा करता था, क्योंकि वह सेवा मुझे सहज प्राप्त थी, और मैं अुसे करना जानता था। मुझे अुसकी खोजके लिये कहीं जाना न पड़ा। मैं तो यात्रा करने, काठियावाड़की खटपटोंसे छुट्टी पाने और जीविकाका जुगाड़ करनेके विचारसे दक्षिण अफ्रीका गया था। लेकिन वहां मैं अीश्वरकी खोजमें — आत्मदर्शनके प्रयत्नमें फँस गया। खिस्ती भाअियोंने मेरी जिज्ञासाको बहुत तीव्र कर दिया था। वह किसी प्रकार शान्त न होती थी; और मैं शान्त होना चाहूँ तो भी खिस्ती भाअी-बहन मुझे शान्त न होने दें, अैसी स्थिति थी।

धार्मिक ग्रंथोंके स्वाध्यायके लिये मुझे जो फ़ुरसत प्रिटोरियामें मिल चुकी थी, वह तो अब असंभव थी। लेकिन जो थोड़ा समय बचता, अुसका अुपयोग मैं अैसे वाचनमें किया करता। मेरा पत्र-व्यवहार जारी था। रायचन्दभाअी मेरी रहनुमाअी कर रहे थे। किन्हीं मित्रने मेरे लिये नर्मदाशंकरकी 'धर्मविचार' पुस्तक भेज दी। अुसकी प्रस्तावना मेरे लिये सहायक सिद्ध हुअी। 'हिन्दुस्तान क्या सिखाता है?' नामक मैक्समूलरकी पुस्तक मैंने बहुत रसपूर्वक पढ़ी। थियॉसोफिकल सोसायटी द्वारा प्रकाशित अुपनिषद्का भाषांतर पढ़ा। हिन्दूधर्मके प्रति मेरा आदर बढ़ा। मैं अुसकी खूबी समझने लगा। लेकिन दूसरे धर्मोंके प्रति मेरे मनमें कोअी अभाव पैदा न हुआ। मैंने वाशिंग्टन अर्विंगकृत महम्मदका चरित्र और कार्लािलकृत

महम्मद-स्तुति नामक पुस्तकें पढ़ीं। पैग़म्बरके प्रति मेरा सम्मान बढ़ा। मैंने 'जरथुस्तके वचन' नामकी पुस्तक भी पढ़ी।

अिस प्रकार मैंने भिन्न-भिन्न संप्रदायोंका न्यूनाधिक ज्ञान प्राप्त किया। आत्मनिरीक्षण बढ़ा।

४१

घरेलू कारबार

मेरे बम्बअीमें और विलायतमें घर बसाकर बैठने और नातालमें घर बसानेमें अन्तर था। नातालमें कुछ खर्च केवल प्रतिष्ठाके विचारसे क़ायम रखे हुआ था। मैंने यह मान लिया था कि नातालमें हिन्दुस्तानी बैरिस्टरके नाते और हिन्दुस्तानियोंके प्रतिनिधिके नाते मुझे अपना खर्च ठीक-ठीक बढ़ाकर रखना चाहिये, अिसलिअे वहाँ मैंने अच्छी बस्तीमें और अच्छा घर भाड़े लिया था। घरकी सजावट भी अच्छी रखी थी। भोजन सादा था, लेकिन अंग्रेज़ मित्रोंको न्योतना होता था। साथ ही, हिन्दुस्तानी साथियोंको भी न्योतता था, अिसलिअे सहज ही खर्च भी बढ़ गया।

नौकरका संकट तो सब कहीं अनुभव किया ही। किसीको नौकरकी तरह रखना मुझसे बना ही नहीं।

मेरे साथ अेक साथी था। अेक रसोअिया रखा था, जो परिवारका अंग बन गया। ऑफिसमें जो कारकुन रखे थे, अुनमें से भी जिन्हें रखा जा सकता था, अुन्हें अपने साथ घरमें ही रखा था।

अूपर जिस साथीकी चर्चा की है, वह बहुत होशियार और मेरी जानमें वफ़ादार था। किन्तु मैं अुसे पहचान न सका। मैंने ऑफिसके अेक कारकुनको घरमें रखा था। मेरे साथीके दिलमें अुसके प्रति अीर्ष्या पैदा हुअी। अुसने अैसा जाल रचा, जिससे मेरे मनमें कारकुनके लिअे शक पैदा हो। यह कारकुन बहुत स्वतंत्र स्वभावका था। अुसने

घर और दफ़्तर दोनों छोड़ दिये। मुझे दुःख हुआ। अुसके साथ अन्याय तो नहीं हुआ? अिसका विचार मुझे बराबर सताता रहा।

अिस बीच जो मैंने रसोअिया रखा था, अुसे कारणवश दूसरी जगह जाना पड़ा, अिसलिअे अुसकी जगह दूसरा रसोअिया रखा।

अिस रसोअियेको रखे मुश्किलसे दो या तीन दिन हुअे होंगे, कि अितनेमें अुसने मेरे घरमें, मेरे बिना जाने, जो बुराअी चल रही थी, सो देख ली और मुझे सावधान करनेका निश्चय किया। लोगोंमें यह धारणा फैल चुकी थी, कि मैं विश्वासशील और अपेक्षाकृत अच्छा आदमी हूँ। अिस कारण नये रसोअियेको मेरे ही घरमें चलनेवाली गन्दगी भयानक मालूम हुअी।

लगभग बारह बजेका समय था। अैसे समय रसोअिया हाँफता-हाँफता ऑफिसमें आया और मुझसे बोला — 'आपको कुछ देखना हो तो खड़े पैरों घर चलिये।'

मैंने कहा — 'अिसका मतलब क्या? तुझे यह बताना चाहिये कि काम क्या है। अैसे समय मेरे लिअे घर जाने और देखनेकी बात क्या हो सकती है?'

'नहीं चलेंगे, तो पछतायेंगे। मैं अिससे अधिक आपको और कुछ कहना नहीं चाहता।'

अुसकी दृढ़तासे मैं खिंचा। अपने कारकुनको लेकर घरकी ओर चला। रसोअिया आगे-आगे चल रहा था।

घर पहुँचने पर वह मुझे दुमंज़िले पर ले गया। जिस कमरेमें मेरा वह साथी रहता था, अुसकी ओर अिशारा करके बोला — 'यह कमरा खोलकर देखिये।'

अब मैं समझा। मैंने कमरेका दरवाज़ा खटखटाया।

जवाब क्योंकर मिलता? मैंने बहुत ज़ोरसे दरवाज़ा खटखटाया। दीवार काँप अुठी। दरवाज़ा खुला। अन्दर मैंने अेक बदचलन औरत देखी। मैंने अुससे कहा — 'बहन, तू तो यहाँसे चली ही जा। अब फिर कभी अिस घरमें पैर मत रखना।'

साथीसे कहा — 'आजसे तुम्हारा और मेरा सम्बन्ध समाप्त हुआ। मैं खूब ठगाया और बेवकूफ़ बना। मुझे मेरे विश्वासका अैसा बदला तो न मिलना चाहिये था।'

साथी भड़क अुठा। मेरी सब पोल खोल देनेकी मुझे धमकी दी।

'मेरे पास छिपी हुअी कोअी बात है ही नहीं। मैंने जो कुछ भी किया हो, सो तुम खुशी-खुशी प्रकट करना। लेकिन तुम्हारे साथका मेरा सम्बन्ध समाप्त होता है।'

साथी अधिक भड़का। मैंने पुलिस सुपरिण्टेंडेंटकी मदद माँगनेका विचार किया। साथी ठण्डा पड़ा। अुसने माफ़ी माँगी और तुरन्त ही घर छोड़कर जाना क़बूल किया। घर छोड़ा।

अिस घटनाने मेरे जीवनको ठीक-ठीक चौकस बनाया। अिसके बाद ही मैं यह स्पष्ट रूपसे देख सका कि अुक्त साथी मेरे लिअे मोह-रूप और अनिष्ट था। साथीका चाल-चलन अच्छा न था। फिर भी मैंने यह मान लिया था कि वह मेरे प्रति वफ़ादार है। अुसे सुधारनेका प्रयत्न करनेमें मैं खुद क़रीब-क़रीब सन गया था। मैंने अपने हितैषियोंकी सलाहका निरादर किया था। मोहने मुझे बुरी तरह अंधा बना दिया था।

अगर अिस आकस्मिक घटनाके कारण मेरी आँख न खुली होती, मुझे सत्यका पता न चला होता, तो संभव है कि जो आत्मसमर्पण मैं कर सका हूँ, सो करनेमें मैं कभी समर्थ न होता; मेरी सेवा सदा अधूरी रहती।

लेकिन जिसे राम रखे अुसे कौन चखे? मेरी निष्ठा शुद्ध थी। अिस कारण अपनी भूलोंके बावजूद मैं बच गया।

अुस रसोअियेको तो मानो अीश्वरने ही प्रेरित किया था! वह रसोअी बनाना जानता न था। वह मेरे यहाँ रह न सकता। लेकिन अगर वह न आता, तो दूसरा कोअी मुझे जाग्रत न कर सकता। अितनी सेवा करके रसोअियेने अुसी दिन और अुसी क्षण रुखसत चाही —

'मैं आपके घरमें नहीं रह सकता। आप भोले ठहरे। यहाँ मेरा काम नहीं।'

मैंने आग्रह न किया।

अब मुझे खयाल आया कि अुस कारकुनके प्रति मेरे दिलमें शक पैदा करनेवाला मेरा यह साथी ही था। मैंने अुसके साथ न्याय करनेकी बहुत कोशिश की, लेकिन मैं अुसे सम्पूर्ण रूपसे कभी सन्तुष्ट न कर सका। मेरे लिअे यह सदा ही दुःखकी बात रही। टूटे बरतनको कितनी ही मज़बूतीके साथ क्यों न जोड़ो, फिर भी वह जोड़ा हुआ ही माना जायगा, साबुत हरगिज़ नहीं।

४२

देशकी ओर

अब मैं दक्षिण अफ्रीकामें तीन साल रह चुका था। मैं लोगोंको पहचानने लगा था। लोग मुझे पहचानने लगे थे। सन् १८९६ में मैंने छः महीनोंके लिअे देश जानेकी अिजाज़त चाही। मैंने देखा कि मुझे दक्षिण अफ्रीकामें लम्बे समय तक रहना होगा। कह सकते हैं कि मेरी वकालत वहाँ ठीक चल रही थी। सार्वजनिक कामोंमें लोग मेरी अुपस्थितिकी आवश्यकता अनुभव करते थे। मैं भी अिसे अनुभव करता था। अिसलिअे मैंने दक्षिण अफ्रीकामें परिवारके साथ रहनेका निश्चय किया और अिसके लिअे देश जाकर आना ठीक समझा। साथ ही यह भी खयाल आया कि देश जानेसे कुछ सार्वजनिक काम हो सकेगा। अैसा लगा कि देशमें लोकमत तैयार करके अिस प्रश्नके विषयमें अधिक दिलचस्पी पैदा की जा सकती है।

सन् १८९६ के मध्यमें मैं 'पोंगोला' स्टीमरमें देशके लिअे रवाना हुआ। यह स्टीमर कलकत्ते जानेवाली थी।

स्टीमरके टंडेलसे मित्रता हुअी। वह प्लीमथ ब्रदरके सम्प्रदायका था। अिस कारण हमारे बीच अध्यात्म विद्याकी बातें ही अधिक हुअीं। अुसने नीति और धर्मश्रद्धाके बीच भेद किया। जिसमें नीति पर पहरा देना पड़े, वह धर्म अुसे नीरस मालूम हुआ। हम अेक-दूसरेको समझा न सके। मैं अपने अिस विचारमें दृढ़ बना कि धर्म और नीति अेक ही वस्तुके वाचक हैं।

चौबीस दिनके अन्तमें यह आनन्ददायिनी यात्रा समाप्त हुअी, और मैं हुगलीके सौंदर्यको निरखता हुआ कलकत्ते अुतरा। अुसी दिन मैंने बम्बअीका टिकट कटाया।

४३
हिन्दुस्तानमें

कलकत्तेसे वम्बअी जाते हुअे वीचमें प्रयाग पड़ता था। वहाँ ट्रेन ४५ मिनट ठहरती थी। अिस वीच मैंने शहरमें अेक चक्कर लगा लेनेका विचार किया। मुझे केमिस्टकी दुकानसे दवा भी खरीदनी थी। दवा देनेमें काफ़ी समय ले लिया। स्टेशन पहुँचते ही मैंने देखा कि गाड़ी चल पड़ी है।

मैं होटलमें ठहर गया और वहींसे अपना काम शुरू करनेका निश्चय किया।

मैंने प्रयागके 'पायोनियर' पत्रके सम्पादकके नाम मुलाक़ातके लिअे चिट्ठी लिखी। अुन्होंने मुझे तुरन्त ही मिलनेको लिखा। मैं खुश हुआ। अुन्होंने मेरी वातें ध्यानसे सुनीं। कहने लगे कि मैं जो भी कुछ लिखूँगा, अुस पर वे तुरन्त ही अपनी टिप्पणी देंगे, और वोले—'लेकिन मैं आपसे यह नहीं कह सकता कि आपकी सभी माँगोंको मैं स्वीकार कर ही सकूँगा।' मैंने अुनसे शुद्ध न्यायके अतिरिक्त न तो कुछ माँगा और न कुछ चाहा।

वाक़ीका दिन प्रयागके भव्य त्रिवेणी संगमका दर्शन करनेमें और अपने सामने पड़े कामका विचार करनेमें विताया।

वम्वअीसे विना रुके राजकोट पहुँचा और अेक पुस्तिका लिखनेकी तैयारी की। अुसे हरा 'पुट्ठा' चढ़ाया था। अिसलिअे वादमें वह 'हरी पुस्तिका' के नामसे प्रसिद्ध हुअी। अुसमें मैंने जान-बूझकर दक्षिण अफ्रीकाके भारतीयोंकी स्थितिका अेक सौम्य चित्र खींचा था।

'हरी पुस्तिका' की प्रतियाँ समूचे हिन्दुस्तानके अखबारों और सभी प्रसिद्ध पक्षोंके लोगोंके नाम भेजी थीं। 'पायोनियर' में अुस पर सबसे पहले लेख प्रकाशित हुआ। अुसका सार विलायत पहुँचा, और सारका सार फिर राअिटरकी मारफ़त नाताल पहुँचा। वह तार तो केवल तीन पंक्तियोंका था।

अिन्हीं दिनों बम्बअीमें पहली बार महामारीका प्रकोप हुआ। चारों ओर घबराहट फैल रही थी। राजकोटमें भी महामारीके फैलनेका डर था। मुझे लगा कि मैं आरोग्य विभागका काम ठीक तरहसे कर सकता हूँ। मैंने अपनी सेवा स्टेटको देनेकी बात लिखी। स्टेटने कमेटी बैठाअी और मुझे अुसमें स्थान दिया। मैंने पाखानोंकी सफ़ाअी पर जोर दिया और कमेटीने गली-गलीमें जाकर पाखानोंकी जाँच करनेका निश्चय किया। ग़रीब लोगोंने अपने पाखानोंकी जाँच करानेमें ज़रा भी आनाकानी नहीं की, यही नहीं, बल्कि अुन्हें जो सुधार सुझाये गये, अुन पर अुन्होंने अमल भी किया। लेकिन जब हम सरकारी अधिकारियोंके घरोंकी जाँचके लिअे निकले, तो कअी जगहोंमें तो हमें पाखानोंको जाँचनेकी अिजाज़त भी न मिली। सुधारकी तो बात ही क्या थी?

कमेटीको ढेढ़ोंकी बस्तीमें भी जाना तो था ही। कमेटीके सदस्योंमें से केवल अेक सदस्य मेरे साथ वहाँ जानेको तैयार हुअे। मुझे तो ढेढ़ोंकी बस्ती देखकर सानन्द आश्चर्य ही हुआ। ढेढ़ोंकी बस्तीमें मैं अुस दिन जीवनमें पहली बार गया था। ढेढ़ भाअी-बहन हमें देखकर अचम्भेमें आ गये। अुनकी बस्तीमें पाखाने तो थे नहीं, फिर भी अिजाज़त लेकर मैं अुनके घरमें गया और घरकी तथा आँगनकी सफ़ाअी देखकर ख़ुश हो गया। घरके अन्दर सब लिपा हुआ देखा। आँगन बुहारा हुआ, और जो थोड़े बरतन थे, वे साफ़ और चमचमाते हुअे थे।

४४
राजनिष्ठा और शुश्रूषा

मैंने अपने अन्दर जितनी शुद्ध राजनिष्ठाका अनुभव किया है, दूसरोंमें मुश्किलसे ही कहीं अुतनी राजनिष्ठा देखी है। जिस राज-निष्ठाकी जड़में सत्य-विषयक मेरा स्वाभाविक प्रेम था। राजनिष्ठाका या दूसरी किसी वस्तुका दिखावा मुझसे कभी हो ही न सका। अुन दिनों भी मैं ब्रिटिश राजनीतिमें दोष तो देखता था, फिर भी कुल मिलाकर मुझे वह नीति अच्छी मालूम होती थी।

दक्षिण अफ्रीकामें मैं अुलटी नीति पाता था। वहाँ रंगद्वेष देखता था। मैं मानता था कि यह क्षणिक और स्थानिक है, अिसलिअे राजनिष्ठामें मैं अंग्रेजोंकी प्रतिस्पर्धा करनेका यत्न करता था। बड़ी मेहनत और लगनके साथ मैंने अंग्रेजोंके राष्ट्रगीतका स्वर सीख लिया। और, जब-जब भी बिना आडम्बरके वफ़ादारी जतानेके अवसर आते, मैं अुनमें सम्मिलित होता।

मैं अपने परिवारके बालकोंको 'गॉड सेव दि किंग' सिखाता था। ट्रेनिंग कॉलिजके विद्यार्थियोंको मैंने यह गीत सिखाया था। लेकिन आगे चलकर मुझे यह गीत गाना खला। जैसे-जैसे अहिंसाके बारेमें मेरे विचार प्रबल होते गये, वैसे-वैसे मैं अपनी वाणी और विचारों पर अधिक अंकुश रखने लगा। मैंने अपने मित्र डॉ० बूथके सामने अपनी कठिनाअी रखी। अुन्होंने भी क़बूल किया कि अहिंसक आदमीको अिसे गाना शोभा नहीं देता।

राजकोटमें दक्षिण अफ्रीकाका मेरा काम चल रहा था, कि अिस बीच मैं बम्बअी हो आया। पहले न्यायमूर्ति रानड़ेसे मिला और बादमें जस्टिस बदरुद्दीन तैयबजीसे मिला। दोनोंने मुझे सर फीरोजशाहसे मिलनेकी सलाह दी। मैं अुनसे मिलनेवाला था ही। मैं अुनके प्रभावसे चौंधियानेको भी तैयार ही था। लेकिन 'बम्बअीके बेताज़के बादशाह'

ने मुझे डराया नहीं। पिता जिस प्रेमके साथ अपने नौजवान पुत्रसे मिलता है, वे अुसी तरह मिले। अुन्होंने मेरी बात सुन ली और कहा — 'गांधी, तेरे लिअे मुझे आम सभा करनी होगी। तेरी मदद करनी चाहिये।' और मुंशीसे सभाका दिन निश्चित करनेको कहा। मुझे आदेश हुआ कि मैं सभाके अेक दिन पहले अुनसे मिल लूँ। मैं निर्भय होकर मन ही मन मुस्कराता हुआ घर पहुँचा।

बम्बअीकी अिस यात्राके दिनोंमें मैं वहाँ अपने बहनोअीसे मिलने गया। वे बीमार थे। अुनकी स्थिति ग़रीबीकी थी। मैं बहन-बहनोअीको लेकर राजकोट पहुँचा। बीमारी अनुमानसे अधिक गंभीर हो गअी। मैंने अुन्हें अपने कमरेमें टिकाया। मैं सारा दिन अुनके पास ही रहने लगा। रातमें भी जागना पड़ता था। अुनकी सेवा करते हुअे मैं दक्षिण अफ्रीकाका काम कर रहा था। बहनोअीका स्वर्गवास हो गया। लेकिन अुनके अंतिम दिनोंमें मुझे अुनकी सेवा करनेका अवसर मिला, अिससे मुझे अत्यधिक सन्तोष हुआ।

जिस तरह वफ़ादारीका गुण मुझमें स्वाभाविक था, अुसी तरह शुश्रूषाका भी। बीमार, फिर वे अपने हों या बिराने, मुझे अुनकी सेवा करनेका शौक़ था। शुश्रूषाके अिस शौक़ने आगे चलकर विशाल रूप धारण किया। यह शौक़ आगे अितना बढ़ा कि अिसके पीछे मैं अपना धन्धा छोड़ता, अपनी धर्मपत्नीको लगाता और समूचे घरको लगा देता। अिस वृत्तिको मैंने शौक़का नाम दिया है, क्योंकि मैं देख सका हूँ कि ये गुण जब आनन्ददायक होते हैं, तभी टिक सकते हैं। जिस सेवामें आनन्द नहीं आता वह न सेवकको फलती है, न सेव्यको रुचती है। जिस सेवामें आनन्द आता है अुस सेवाकी तुलनामें अैश-आराम या धनोपार्जन आदि कार्य तुच्छ प्रतीत होते हैं।

४९

बम्बअी-पूनामें सभा

बहनोअीके देहान्तके दूसरे ही दिन मुझे बम्बअीकी सभाके लिअे जाना था। सार्वजनिक सभाके लिअे अपने भाषण पर विचार करने जितना समय मुझे मिला ही न था। मैं मन ही मन यह सोचता हुआ बम्बअी पहुँचा कि अीश्वर मुझे जैसे-तैसे निबाह लेगा। भाषण लिखनेका तो मुझे स्वप्नमें भी ख़याल न था।

सभाकी तारीख़के अगले दिन शामको पाँच बजे मैं आज्ञानुसार सर फीरोज़शाहके आफिसमें हाज़िर हुआ। अुन्होंने मुझे भाषण लिखकर पढ़नेकी आवश्यकता समझाअी। मैंने भाषण लिखा और छपाया।

मैंने सभामें काँपते-काँपते भाषण पढ़ना शुरू किया; लेकिन मैं हारा; अूँची आवाज़से पढ़ न सका। मैंने अपना भाषण अपने पुराने मित्र केशवराव देशपाण्डेके हाथमें रख दिया। लेकिन अुससे काम न चला। प्रेक्षकोंने वाच्छाकी अिच्छा प्रकट की। वे अुठे। सभा तुरन्त शांत हो गअी, और सभाजनोंने अथसे अिति तक भाषण सुना। सर फीरोज़शाहको भाषण अच्छा लगा। मुझे गंगा नहाने जितना सन्तोष हुआ।

सर फीरोज़शाहने मेरा रास्ता आसान कर दिया। बम्बअीसे मैं पूना गया। मुझे मालूम था कि पूनामें दो पक्ष थे। मुझे तो सबकी मदद लेनी थी। लोकमान्यसे मिला। अुन्हें मेरा यह विचार पसन्द पड़ा। मुझे प्रोफेसर भाण्डारकर और प्रोफेसर गोखलेसे मिलनेको कहा। मैं गोखलेके पास गया। वे मुझसे बड़े प्रेमसे मिले और अुन्होंने मुझको अपना बना लिया। अुनके साथ भी मेरा यह पहला परिचय था। लेकिन न जाने क्यों अैसा लगा मानो हम पहले भी मिल चुके हों। सर फीरोज़शाह मुझे हिमालय-जैसे लगे। लोकमान्य समुद्र-जैसे लगे।

गोखले गंगा-जैसे लगे। अुसमें मैं नहा सकता था। हिमालय चढ़ा नहीं जाता। समुद्रमें डूबनेका भय रहता है। गंगाकी गोदमें तो खेला जा सकता है। अुसमें डोंगियाँ लेकर सैर की जा सकती है। राजनीतिक क्षेत्रमें गोखलेने मेरे हृदयमें जीते-जी जो स्थान बनाया और देहान्तके बाद आज भी अुनका जो स्थान बना हुआ है, वैसा और कोअी नहीं बना सका।

रामकृष्ण भाण्डारकरने मेरा स्वागत अुसी भावसे किया, जिस भावसे पिता पुत्रका करता है। तटस्थ सभापतिके बारेमें मेरे आग्रहकी बात सुनकर अुनके मुँहसे सहज ही यह अुद्गार निकला कि 'बस, यही ठीक है।' वे सभापति-पद स्वीकार करनेको तैयार हो गये। बिना किसी होहल्ले और दिखावेके अेक सादे मकानमें पूनाके अिस विद्वान् और त्यागी मंडलने सभा की और मुझे सम्पूर्ण प्रोत्साहनके साथ विदा किया।

वहाँसे मैं मद्रास गया। मद्रास तो पागल हो गया। वहाँ कअियोंके प्रेम और अुत्साहका अितना अधिक अनुभव किया कि यद्यपि वहाँ सबके साथ मुख्यतः अंग्रेज़ीमें ही बोलना पड़ता था, फिर भी मुझे घरके-जैसा ही मालूम हुआ। वे कौनसे बन्धन हैं, जिन्हें प्रेम तोड़ न सकता हो?

४६

'जल्दी वापस लौटो'

मद्राससे कलकत्ते गया। कलकत्तेमें मेरी मुश्किलोंका पार न रहा। मैं सुरेन्द्रनाथ बैनर्जीसे मिला। अुन्होंने कहा — 'मुझे डर है कि लोग आपके काममें दिलचस्पी नहीं लेंगे।' अुन्होंने जिनके नाम बताये अुन सज्जनोंसे मैं मिला। वहाँ मेरी दाल न गली। मेरी मुश्किलें बढ़ती जाती थीं। 'अमृतबाज़ार पत्रिका' के कार्यालयमें गया। वहाँ भी जो सज्जन मुझे मिले, अुनका यह ख़याल हो गया था कि मैं कोअी रमता राम होअूँगा। 'बंगवासी' ने तो हद कर दी। मुझे अेक घण्टे तक बैठाये ही रखा। सम्पादक महोदय दूसरोंसे बातें करते जाते थे; लोग लौटते जाते थे, लेकिन वे स्वयं मेरी ओर देखते तक न थे। अेक घण्टे तक राह देखनेके बाद जब मैंने अपना प्रश्न छेड़ा, तो अुन्होंने कहा — 'आप देखते नहीं हैं, हमारे सामने कितना काम पड़ा है! आपके-जैसे तो हमारे यहाँ बहुतेरे आते रहते हैं। अच्छा यही है कि आप यहाँसे विदा हो जायँ। हमें आपकी बात नहीं सुननी है।'

मैं हारा नहीं। अपने रिवाजके मुताबिक़ मैं अंग्रेज़ोंसे भी मिला। 'अिंग्लिशमैन' के मि० सॉण्डर्सने मुझे अपनाया। अुनका ऑफिस मेरे लिअे खुल गया। अुनका अख़बार मेरे लिअे खुल गया। अुन्होंने अपने अग्रलेखमें घटा-बढ़ी करनेकी स्वतंत्रता भी मुझे दी। हमारे बीच स्नेह स्थापित हुआ। अुन्होंने मुझे वचन दिया कि अुनसे जितनी मदद बन पड़ेगी, वे करेंगे। अुन्होंने अपना यह वचन अक्षरशः पाला और अपनी तबीयत बिगड़ने तक अुन्होंने मेरे साथ पत्र-व्यवहार जारी रखा। मेरे जीवनमें अैसे अनपेक्षित मीठे सम्बन्ध अनेक बँधे हैं। मि० सॉण्डर्सको मेरी जो चीज़ पसन्द आअी, सो थी अतिशयोक्तिका अभाव और सत्यपरायणता। अुन्होंने मुझसे अुलटी-सीधी जिरह करनेमें कोअी कसर

न रखी। अिसमें अुन्होंने देखा कि दक्षिण अफ्रीकाके गोरोंके पक्षको निष्पक्षपातपूर्वक पेश करनेमें और अुसकी तुलना करनेमें मैंने कोअी कसर नहीं रखी थी।

मेरा अनुभव मुझसे कहता है कि प्रतिपक्षीको न्याय देकर हम अपने लिअे जल्दी न्याय प्राप्त करते हैं। अिस प्रकार अनपेक्षित मदद मिल जानेसे कलकत्तेमें भी सार्वजनिक सभा करनेकी आशा बँधी। अितनेमें डरबनका अेक तार मिला —

'पार्लियामेंट जनवरीमें बैठेगी। जल्दी वापस लौटो।'

अिस कारण अखबारोंके लिअे अेक पत्र लिखकर और फ़ौरन रवाना होनेकी ज़रूरत बताकर मैंने कलकत्ता छोड़ा।

दादा अब्दुल्लाने स्वयं 'कुरलैंड' नामक अेक स्टीमर खरीदा था। अुसमें मुझे और मेरे परिवारको मुफ़्त ले जानेका अुन्होंने आग्रह किया। मैंने आभार सहित अपनी स्वीकृति दी और दिसम्बरके आरम्भमें अपनी धर्मपत्नी, दो लड़कों और अपने स्वर्गीय बहनोअीके अेकमात्र लड़केको लेकर 'कुरलैंड' में दूसरी बार दक्षिण अफ्रीकाके लिअे रवाना हुआ। अिस स्टीमरके साथ ही 'नादरी' नामका दूसरा स्टीमर भी रवाना हुआ। दादा अब्दुल्ला अुसके अेजण्ट थे। दोनों स्टीमरोंमें मिलकर लगभग आठ सौ हिन्दुस्तानी मुसाफ़िर थे। अुनमें से आधेसे अधिक लोग ट्रान्सवाल जानेवाले थे।

४७

तूफ़ानके आसार

चूंकि हिन्दू घरोंमें छोटी अुमरमें ही विवाह होते हैं, और चूंकि मध्यम श्रेणीके लोगोंमें अधिकतर पति शिक्षित और पत्नी अशिक्षित होती है, अिसलिअे पति-पत्नीके जीवनमें अन्तर रहता है और पतिको पत्नीका शिक्षक बनना पड़ता है। मुझे अपनी धर्मपत्नीकी और बालकोंकी पोशाकका, खान-पानका और बोलचालका ध्यान रखना होता था। मुझे अुन्हें रहन-सहन सिखानी होती थी। अुस समयके कुछ संस्मरण अब भी मुझे हँसाते हैं।

मैं जिन दिनोंकी बात लिख रहा हूँ, अुन दिनों में यह मानता था कि सुधरे हुओंमें अपनी गिनती करानेके लिअे हमारा बाह्याचार जहाँ तक बने वहाँ तक युरोपियनोंसे मिलता हुआ होना चाहिये। अैसा करनेसे ही प्रभाव पड़ता है और बिना प्रभाव पड़े देशसेवा नहीं हो सकती।

अिसलिअे पत्नीकी और बालकोंकी पोशाक मैंने ही पसन्द की। जहाँ युरोपियन पोशाकका अनुकरण करना बिलकुल अनुचित प्रतीत हुआ वहाँ पारसीका किया। पत्नीके लिअे पारसी बहनोंके ढंगकी साड़ियाँ खरीदीं; बच्चोंके लिअे पारसी कोट-पतलून लिये। सबके लिअे बूट और मोज़े तो ज़रूरी थे ही। पत्नीको और बालकोंको भी ये दोनों चीज़ें कअी महीनों तक अच्छी न लगीं। लेकिन अुन्होंने लाचार होकर पोशाकके अिन परिवर्तनोंको स्वीकार किया। अितनी ही लाचारीसे और अुससे भी अधिक अनिच्छासे अुन्होंने खाते समय छुरी-काँटेका अुपयोग शुरू किया। और, जब मेरा मोह नष्ट हुआ,

तो अुन्होंने फिरसे बूट, मोज़ों और छुरी-काँटों आदिका त्याग किया। जिस प्रकार शुरूके फेरफार दुःखदायी थे, अुसी प्रकार आदत पड़नेके बाद अुनका त्याग भी दुःखदायी था। लेकिन अिस समय मैं देख रहा हूँ, कि हम सब सुधारोंकी केंचुल अुतारकर हलके हो गये हैं।

हमारा स्टीमर दूसरे बन्दरगाहोंमें ठहरे बिना सीधा नाताल पहुँचनेवाला था। अिसलिअे हमें सिर्फ़ अठारह दिनकी यात्रा करनी थी। अभी हमारे पहुँचनेमें तीन या चार दिन बाक़ी थे कि अितनेमें समुद्रमें भयंकर तूफ़ान अुठा; अैसा मालूम हुआ, मानो मुक़ाम पर पहुँचते ही जिस भावी तूफ़ानका हमें सामना करना था, अुसकी यह अेक चेतावनी ही थी। तूफ़ान अितना तेज़ था और अितनी देर तक रहा कि मुसाफ़िर घबरा अुठे।

दुःखमें सब अेक हो गये। भेद भूल गये। हृदयसे अीश्वरको याद करने लगे। हिन्दू-मुसलमान सब साथ मिलकर अीश्वरका स्मरण करने लगे।

अिस चिन्तामें कोअी चौबीस घण्टे बीते होंगे। आख़िर बादल बिखरे। सूर्यनारायणने दर्शन दिये। कप्तानने कहा — 'तूफ़ान चला गया है।'

लोगोंके चेहरों परसे चिन्ता दूर हुअी, और अुसके साथ ही अीश्वर भी लुप्त हो गया! फिरसे मायाका आवरण चढ़ गया।

लेकिन अिस तूफ़ानने मुझे यात्रियोंमें ओतप्रोत कर दिया था। मुझे समुद्र लगता नहीं, चक्कर आते नहीं। अिस कारण मैं यात्रियोंके बीच निर्भय होकर घूम सकता था, अुन्हें आश्वासन दे सकता था, और कप्तानकी भविष्यवाणी सुनाता था। यह स्नेह-सम्बन्ध मेरे लिअे बहुत अुपयोगी सिद्ध हुआ। हमने १८ या १९ दिसम्बरको डरबनकी खाड़ीमें लंगर डाला। 'नादरी' भी अुसी दिन पहुँचा।

४८

तूफ़ान

दक्षिण अफ्रीकाके बन्दरगाहोंमें यात्रियोंके आरोग्यकी पूरी जाँच की जाती है। अगर रास्तेमें किसीको कोअी संक्रामक रोग हुआ हो, तो स्टीमरको सूतकमें — क्वॉरेण्टीनमें — रखते हैं। डॉक्टरने जाँच-पड़ताल करके हमारे स्टीमरके लिअे पाँच दिनका सूतक सूचित किया। किन्तु अिस सूतकके आदेशका हेतु केवल आरोग्य न था। डरबनके गोरे नागरिक हमें वापस भगा देनेका आन्दोलन कर रहे थे। अतअेव अुनका यह आन्दोलन भी अुक्त आदेशका अेक कारण था।

गोरे लगातार जंगी सभायें कर रहे थे। दादा अब्दुल्लाके नाम धमकियाँ भेजते थे। लेकिन वे किसीकी धमकीसे डरनेवाले जीव न थे। हमारे नाम भी धमकियाँ आअीं। मैं यात्रियोंमें .खूब घूमा। अुनको धीरज बँधाया। बड़े दिनका त्यौहार आया। अुस अवसर पर कप्तानने पहले दर्जेके मुसाफ़िरोंको दावत दी। दावतके बाद मैंने पश्चिमके सुधार पर भाषण किया। लेकिन मेरा दिल तो अुस लड़ाअीमें ही लगा हुआ था, जो डरबनमें चल रही थी।

अिस हमलेका केंद्रबिन्दु मैं था। मुझ पर दो आरोप थे —

१. मैंने हिन्दुस्तानमें नातालवासी गोरोंकी अनुचित निन्दा की थी;

२. मैं नातालको हिन्दुस्तानियोंसे भर देना चाहता था।

लेकिन मैं स्वयं बिलकुल निर्दोष था। मैंने किसीको नाताल जाने के लिअे ललचाया न था। और मैंने हिन्दुस्तानमें नातालके अंग्रेजोंके बारेमें अैसा अेक भी अक्षर नहीं कहा था, जो मैं नातालमें कह न चुका होअूँ।

अिसलिअे मैं पश्चिमके सुधारोंके बारेमें सोचा करता था। मैंने अुन्हें मुख्यतः हिंसक कहा था; पूर्वके सुधारोंको अहिंसक बताया था। बहुत करके कप्तानने ही पूछा —

'गोरे जिस तरहकी धमकी दे रहे हैं, अुसी तरह अगर वे आपको चोट पहुँचायें, तो आप अपने अहिंसक सिद्धान्तोंका अमल किस तरह करेंगे?'

मैंने जवाव दिया — 'मुझे आशा है कि अुन्हें माफ़ करनेकी और अुन पर मुक़दमा न चलानेकी हिम्मत और वुद्धि अीश्वर मुझे देगा। आज भी मेरे मनमें अुनके लिअे रोष नहीं है। मुझे अुनका अज्ञान और अुनकी संकुचित दृष्टि देखकर खेद होता है। मैं मानता हूँ कि वे जो कह रहे हैं और कर रहे हैं, वह अुचित ही है, अैसा वे शुद्धभावसे समझते हैं। अिसलिअे मेरे निकट रोषका कोअी कारण नहीं रहता।' पूछनेवाला हँसा।

आखिर २३ वें दिन, अर्थात् सन् १८९७ के जनवरी महीनेकी १३ वीं तारीखके दिन स्टीमरको मुक्ति मिली, और यात्रियोंके लिअे अुतरनेका हुक्म जारी हुआ।

४९

कसौटी

यात्री अुतरे। लेकिन मेरे वारेमें मि० अेस्कम्वने, जो अुन दिनों मंत्रि-मण्डलमें थे, कप्तानके नाम सँदेशा भेजा था कि — 'गांधीको और अुसके परिवारको शामके समय अुतारना। अुसके विरुद्ध गोरे वहुत अुत्तेजित हो गये हैं और अुसकी जान जोखिममें है।'

कप्तानने मुझे अिस सँदेशेकी खवर दी। मैंने वैसा करना क़वूल किया। लेकिन अिस सँदेशेको मिले अभी आधा घण्टा भी न हुआ था कि अितनेमें मि० लॉटन आये और कप्तानसे मिलकर अुससे वोले — 'अगर मि० गांधी मेरे साथ चलें, तो मैं अुन्हें अपनी जोखिम पर ले जाना चाहता हूँ। स्टीमरके अेजण्टके वकीलके नाते मैं आपसे कहता हूँ कि मि० गांधीके वारेमें जो सँदेशा आपको मिला है, अुससे आप मुक्त हैं।' फिर वे मेरे पास आये और मुझसे कुछ अिस प्रकार कहा —

'अगर आपको जिन्दगीका डर न हो, तो मैं चाहता हूँ कि मिसेज़ गांधी और बच्चे गाड़ीमें रुस्तमजी सेठके घर जायें, और आप व मैं सरे आम पैदल रवाना हों। मुझे यह बिलकुल जँचता नहीं कि आप अँधेरा होने पर चुपचाप शहरमें दाख़िल हों। अब तो सब कुछ शांत है, गोरे सब तितर-बितर हो गये हैं।'

मैं सहमत हुआ। मेरी धर्मपत्नी और बच्चे गाड़ीमें रुस्तमजी सेठके घर गये और सही-सलामत पहुँचे। मैं कप्तानसे विदा होकर मि० लॉटनके साथ अुतरा। रुस्तमजी सेठका घर क़रीब दो मील दूर रहा होगा।

जैसे ही हम स्टीमरसे अुतरे, कुछ लड़कोंने मुझे पहचान लिया, और वे 'गांधी, गांधी' चिल्ला अुठे। तुरन्त ही दो-चार लोग अिकट्ठा हुअे और चिल्लाहट बढ़ी। मि० लॉटनने रिक्शा मँगायी। मुझे तो अुसमें बैठना कभी अच्छा न लगता था। यह मेरा पहला ही अनुभव होनेको था। लेकिन लड़के क्योंकर बैठने देते? अुन्होंने रिक्शावालेको धमकाया। वह भाग खड़ा हुआ।

हम आगे बढ़े। भीड़ बढ़ती गयी। भीड़ने मुझे मि० लॉटनसे अलग कर दिया। फिर मुझ पर कंकरों और सड़े अंडोंकी झड़ी लग गयी। किसीने मेरी पगड़ी अुड़ा दी। लातें शुरू हुयीं।

मुझे ग़श आ गया। मैंने पासके घरकी जाफरी थामकर साँस ली। वहाँ खड़े रहनेकी जुगत थी ही नहीं। तमाचे पड़ने लगे।

अितनेमें पुलिसके बड़े अधिकारीकी स्त्री, जो मुझे पहचानती थी, अुस रास्तेसे गुज़री। मुझे देखते ही वह मेरे पास आकर खड़ी हो गयी, और यद्यपि अुस समय धूप नहीं थी, तो भी अपना छाता खोल लिया। अिससे भीड़ कुछ नरम पड़ी। अब प्रहार करने हों, तो मिसेज़ अलैक्ज़ेंडरको बचाकर ही करने थे।

अिस बीच मुझ पर मार पड़ते देख कोअी हिन्दुस्तानी नौजवान पुलिस-थाने पर दौड़ गया था। सुपरिण्टेण्डेण्टने मुझे बचानेके लिअे अेक दस्ता भेजा। वह समय पर आ पहुँचा। मेरा रास्ता पुलिस-

थानेके पाससे ही जाता था। सुपरिण्टेण्डेण्टने मुझे आश्रय लेनेकी सलाह दी। मैंने अिनकार किया।

दस्तेके साथ रहकर मैं सही-सलामत पारसी रुस्तमजीके घर पहुँचा। मेरी पीठ पर अन्धी मार पड़ी थी। सिर्फ़ अेक जगह थोड़ी चोट लगी थी। स्टीमरके डॉक्टर वहीं हाज़िर थे। अुन्होंने मेरी अच्छी शुश्रूषा की।

यों अन्दर शांति थी, लेकिन बाहर तो गोरोंने घर घेर लिया था। शाम पड़ चुकी थी। सुपरिण्टेण्डेण्ट वहाँ पहुँच गये थे, और भीड़को विनोद द्वारा वशमें रखनेका यत्न कर रहे थे।

फिर भी वे निश्चिन्त नहीं थे। अुन्होंने मेरे पास सँदेशा भेजा — 'अगर आप अपने मित्रके घर और सम्पत्तिको तथा अपने परिवारको बचाना चाहते हैं, तो आपको मेरी सूचनाके अनुसार अिस घरसे छिपे तौर पर भाग जाना चाहिये।'

भागनेके काममें अुलझ जानेसे मैं अपने घावोंको भूल गया। मैंने हिन्दुस्तानी सिपाहीकी पोशाक पहनी। साथमें दो डिटेक्टिव (जासूस) थे; अुन्होंने भी अपनी पोशाक और रूप बदला। गलीके नाके पर गाड़ी खड़ी थी, अुसमें बैठाकर वे मुझे अब अुसी थानेमें ले गये, जहाँ सुपरिण्टेण्डेण्टने मुझे आश्रय लेनेको कहा था। मैंने सुपरिण्टेण्डेण्ट और खुफिया पुलिसके अधिकारियोंका आभार माना।

अिस प्रकार जब अेक ओर मुझे ले जाया जा रहा था, तब दूसरी ओर सुपरिण्टेण्डेण्ट भीड़से गीत गवा रहे थे। जब मेरे सही-सलामत थाने पहुँचनेकी ख़बर अुन्हें मिली तब अुन्होंने भीड़से कहा — 'आपका शिकार तो अिस दुकानमें से सही-सलामत निकल भागा है।' भीड़के कुछ लोग ग़ुस्सा हुअे, कुछ हँसे। बहुतोंने अिस बातको मानेनेसे अिनकार किया।

सुपरिण्टेण्डेण्टकी सूचनासे भीड़ने अपने प्रतिनिधि नियुक्त किये। पारसी रुस्तमजीके मकानकी जाँच-पड़ताल करके लौटे और भीड़को निराशाजनक ख़बर सुनाअी। सब कोअी सुपरिण्टेण्डेण्टकी समय-सूचकता

और चतुराअीकी स्तुति करते हुअे, किन्तु कुछ मन ही मन गुस्सा होते हुअे बिखर गये।

मि० चेम्बरलेनने तार भेजकर सूचित किया कि मुझ पर हमला करनेवालों पर मुक़दमा चलाया जाय और अैसी व्यवस्था की जाय, जिससे मुझे न्याय मिले। मि० अेस्कम्बने मुझे अपने पास बुलाया। मुझे जो चोट पहुँची थी, अुसके लिअे अपना खेद प्रकट किया और हमला करनेवालों पर मुक़दमा चलानेकी बात कही।

मैंने जवाब दिया — 'मुझे किसी पर मुक़दमा नहीं चलाना है। हमला करनेवालोंको सज़ा दिलानेसे मुझे लाभ क्या? मैं तो अुन्हें दोषी भी नहीं मानता। दोष तो अधिकारियोंका, और अगर आप मुझे कहनेकी अिजाज़त दें, तो आपका माना जायगा। आप लोगोंको ठीक रास्ते ले जा सकते थे। जब सच्ची हक़ीक़त मालूम होगी और लोग जानेंगे, तो वे पछतायेंगे।'

'तो क्या आप मुझे यह चीज़ लिखकर देंगे? मुझे मि० चेम्बरलेनको वैसा तार भेजना पड़ेगा। मैं यह नहीं चाहता कि आप जल्दीमें कुछ लिख दें। अितना मैं क़बूल करता हूँ कि अगर आप हमला करनेवालों पर मुक़दमा नहीं चलायेंगे, तो सब कुछ शांत करनेमें मुझे बड़ी मदद मिलेगी और आपकी प्रतिष्ठा तो अवश्य ही बढ़ेगी।'

मैंने जवाब दिया — 'अिस सम्बन्धमें मेरे विचार स्थिर हो चुके हैं। मेरा यह निश्चय है कि मुझे किसी पर मुक़दमा नहीं चलाना है, अिसलिअे मैं आपको यहीं लिखकर देना चाहता हूँ।'

अिस प्रकार कहकर मैंने आवश्यक पत्र लिख दिया।

सं-

५०

शांति

जिस दिन मैं अुतरा था, अुसी दिन 'नाताल अेडवरटाअिज़र' का प्रतिनिधि मुझसे मिलकर गया था। अुसने बहुतसे प्रश्न पूछे थे, और अुनके अुत्तरमें मैं प्रत्येक आरोपका जवाब सम्पूर्णतापूर्वक दे सका था।

अिस खुलासेका और हमला करनेवालोंके खिलाफ़ मुक़दमा चलानेसे मेरे अिनकार करनेका अितना अधिक असर पड़ा कि गोरे शरमिन्दा हुअे। अखबारोंने मुझे निर्दोष बताया और हुल्लड़ मचानेवालोंकी निन्दा की। अिस प्रकार परिणाममें मुझे तो लाभ ही हुआ, और मेरा लाभ तो मेरे कार्यका ही लाभ था। हिन्दुस्तानी क़ौमकी प्रतिष्ठा बढ़ी और मेरा मार्ग अधिक सरल हुआ। अिस घटनाके कारण वकीलके नाते मेरा धन्धा भी बढ़ा।

लेकिन अिस प्रकार अगर हिन्दुस्तानियोंकी प्रतिष्ठा बढ़ी, तो साथ ही अुनके प्रति द्वेष भी बढ़ा। गोरोंको विश्वास हो गया कि हिन्दुस्तानियोंमें दृढ़तापूर्वक लड़नेकी शक्ति है, और अिसके साथ ही अुनका भय बढ़ गया! नातालकी धारासभामें दो क़ानून पेश हुअे, जिनसे हिन्दुस्तानियोंकी मुसीबतें बढ़ गअीं। अेकके कारण हिन्दुस्तानी व्यापारियोंके धन्धेको नुक़सान पहुँचा, दूसरेके कारण हिन्दुस्तानियोंकी आमद-रफ़्त पर कड़ा अंकुश रखा गया।

अिन क़ानूनोंने मेरा काम बहुत बढ़ा दिया। झगड़ा आख़िर विलायत पहुँचा, लेकिन क़ानून नामंजूर न हुअे।

५१

बाल-शिक्षण

जब मैं डरबनमें अुतरा, अुस समय मेरे साथ तीन बालक थे। अिन सबको पढ़ाना कहाँ? गोरोंके लिअे जो स्कूल चलते थे, मैं अपने बच्चोंको अुनमें भेज सकता था। लेकिन यह सब बतौर मेहरबानी और अपवादके रूपमें ही होता। हिन्दुस्तानी बालकोंको पढ़ानेके लिअे खिस्ती मिशनकी पाठशालायें थीं। मैं अपने बालकोंको अुनमें भेजनेके लिअे तैयार न था। वहाँ दी जानेवाली शिक्षा मुझे पसन्द न थी।

मैं स्वयं बालकोंको पढ़ानेका कुछ प्रयत्न करता था, किन्तु वह अत्यन्त अनियमित था।

मैं परेशान हुआ। मैंने अेक अैसे अंग्रेज़ी शिक्षकके लिअे विज्ञापन दिया, जो मेरी रुचिके अनुसार बच्चोंको शिक्षण दे सके। अेक अंग्रेज़ महिला मिली; अुसे रख लिया और अिस तरह गाड़ी कुछ आगे बढ़ी।

मैं बालकोंके साथ मात्र गुजरातीमें ही बोलता था। मैं अुन्हें देश भेज देनेके लिअे तैयार न था। अुन दिनों भी मुझे अैसा लगा करता था कि छोटे बच्चोंको माता-पितासे अलग न रहना चाहिये। सुव्यवस्थित घरमें बालकोंको जो शिक्षा सहज ही मिलती है, वह छात्रालयोंमें नहीं मिल सकती। मेरा बड़ा लड़का काफ़ी सयाना होनेके बाद, अपनी अिच्छासे, अहमदाबादके हाअीस्कूलमें पढ़नेके लिअे दक्षिण अफ्रीकासे चला आया था। दूसरे तीन लड़के कभी किसी स्कूलमें गये ही नहीं।

मेरे ये प्रयोग अपूर्ण थे। मैं स्वयं बालकोंको जितना समय देना चाहता था, दे न सका। अिस कारणसे और दूसरे अनिवार्य संयोगोंके कारण मैं अुन्हें अपनी अिच्छानुसार अक्षरज्ञान न दे सका। अिस मामलेमें मेरे सभी लड़कोंकी, न्यूनाधिक प्रमाणमें, मेरे विरुद्ध शिकायत भी रही है। अितना सब होने पर भी मेरी अपनी

राय यह है कि अुन्हें जो अनुभव-ज्ञान प्राप्त हुआ है, माता-पिताका जैसा सहवास वे प्राप्त कर सके हैं, स्वतंत्रताका जो पदार्थपाठ अुन्हें सीखनेको मिला है, वह सब अुन्हें न मिलता, यदि मैंने अुनको जिस किसी भी स्कूलमें भेजनेका आग्रह रखा होता। वे जैसी सादगी और सेवाभाव सीखे हैं, वैसी सादगी और सेवाभाव वे अपनेमें विकसित न कर सके होते, यदि अुन्होंने मुझसे अलग रहकर कृत्रिम शिक्षा पाअी होती; अुलटे अुनकी कृत्रिम रहन-सहन मुझे मेरे देशकार्यमें कदाचित् विघ्नरूप ही सिद्ध होती।

अिसलिअे यद्यपि मैं अुन्हें जितना चाहता था, अुतना अक्षरज्ञान नहीं दे सका, तो भी मुझे अैसा तो नहीं लगता कि मैंने अुनके प्रति अपने धर्मका यथाशक्ति पालन नहीं किया है, और न मुझे अिसका कोअी पश्चात्ताप ही होता है।

५२

सेवावृत्ति

मेरा धन्धा ठीक चल रहा था, किन्तु अुससे मुझे सन्तोष न था। मनमें बराबर यह अुधेड़-बुन चलती ही रहती कि जीवन अधिक सादा होना चाहिये, कुछ-न-कुछ शारीरिक सेवाकार्य होना चाहिये।

अितनेमें अेक दिन अेक अपंग कोढ़ी, जो गलित कुष्ठसे पीड़ित था, घर आ पहुँचा। अुसे खाना देकर विदा कर देनेकी हिम्मत न पड़ी। अुसे अेक कमरेमें टिकाया। अुसके घाव साफ़ किये और अुसकी सेवा की।

लेकिन यह काम अिसी तरह लम्बे समय तक चल नहीं सकता था। अुसे हमेशाके लिअे घरमें रखनेकी सुविधा न थी, मुझमें हिम्मत न थी। मैंने अुसे गिरमिटियोंके लिअे चलनेवाले सरकारी अस्पतालमें भेज दिया।

लेकिन अिससे मुझे तसल्ली न हुअी। शुश्रूपाका अैसा कोअी काम मैं हमेशा कर सकूँ, तो कितना अच्छा हो! डॉक्टर बूथ सेण्ट अेडम्स मिशनके मुख्य अधिकारी थे। वे हमेशा जो भी कोअी अुनके पास पहुँचता अुसे मुफ़्त दवा देते थे। पारसी रुस्तमजीके दानके कारण डॉ० बूथकी देखरेखमें अेक बहुत छोटा अस्पताल खुला। अुसमें दवा देनेके सिलसिलेमें अेकसे दो घण्टेका काम रहता था। मैंने अिस कामको अपने सिर लेने और अपने समयमें से अितना समय बचानेका निश्चय किया। मेरी वकालतका बहुत-सा काम तो ऑफिसमें बैठकर सलाह देने और दस्तावेज तैयार करनेका अथवा झगड़े मिटानेका था। कुछ मुक़दमे मजिस्ट्रेटकी अदालतमें रहते थे। अुनमें से ज़्यादातर तो अैसे होते थे, जिनमें झगड़ेकी गुंजाअिश नहीं थी। जब अैसे मुक़दमे होते, तो मि० खान, जो अुन दिनों मेरे साथ ही रहते थे, अुनकी ज़िम्मेदारी अपने सिर ले लेते थे, और मैं अिस छोटे-से अस्पतालमें काम करने लगा था।

रोज़ सबेरे वहाँ जाना होता था। जाने-आने और अस्पतालमें काम करनेमें हमेशा लगभग दो घण्टे लगते थे। अिस कामसे मुझे हमेशा शांति मिली। मैं दुःखी भारतवासियोंके गाढ़ संपर्कमें आया।

आगे चलकर यह अनुभव मेरे लिअे बहुत अुपयोगी सिद्ध हुआ।

बच्चोंकी परवरिशका प्रश्न तो मेरे सामने था ही। दक्षिण अफ्रीकामें मुझे दूसरे दो पुत्र हुअे। अुनका लालन-पालन करके अुन्हें किस तरह बड़ा करना चाहिये, अिस प्रश्नको सुलझानेमें मुझे अिस कामसे अच्छी मदद मिली। मेरा स्वतंत्र स्वभाव मुझे बहुत कसौटी पर चढ़ाता था और आज भी चढ़ाता है। हम दोनोंने निश्चय किया था, कि प्रसूति आदिका काम शास्त्रीय पद्धतिसे करना चाहिये। मैंने बाल-संगोपनका अभ्यास कर लिया। कहा जा सकता है कि अंतिम दो बालकोंका संगोपन, अुनकी परवरिश, मैंने स्वयं की।

मैंने देखा कि यदि बालकोंका लालन-पालन अुचित रीतिसे करना हो, तो माता और पिता दोनोंको बालकोंकी परवरिश आदिका साधारण ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिये। 208

५३
ब्रह्मचर्य – १

अब ब्रह्मचर्यके विषयमें विचार करनेका समय आया है। अेक पत्नीव्रतके लिअे तो विवाहके समय ही मेरे हृदयमें स्थान था। पत्नीके प्रति वफ़ादार रहना मेरे सत्यव्रतका अंग था। लेकिन अपनी स्त्रीके प्रति भी ब्रह्मचर्यका पालन करनेकी बात दक्षिण अफ्रीकामें ही स्पष्ट रीतिसे मेरे ध्यानमें आअी।

मुझे पत्नीके साथ कैसा सम्बन्ध रखना चाहिये? पत्नीको विषयभोगका साधन बनानेमें पत्नीके प्रति वफ़ादारी कहाँ रहती है? जब तक मैं विषयवासनाके अधीन रहता हूँ, तब तक मेरी वफ़ादारीका मूल्य प्राकृत ही माना जायगा। हमारे आपसके सम्बन्धमें किसी भी दिन पत्नीकी ओरसे मुझ पर आक्रमण हुआ ही नहीं। अिस दृष्टिसे मैं जब चाहूँ तब ब्रह्मचर्यका पालन मेरे लिअे सुलभ था। मेरी अशक्ति अथवा आसक्ति ही मुझे रोक रही थी।

जाग्रत होनेके बाद भी दो बार तो मैं निष्फल ही हुआ। प्रयत्न करता था, किन्तु फिसलता था। प्रयत्नका मुख्य हेतु अूँचा न था। मुख्य हेतु संतानोत्पत्तिको रोकनेका था। संतानोत्पत्तिकी अनावश्यकता ध्यानमें आते ही संयम-पालनका प्रयत्न शुरू किया।

संयमपालनकी कठिनाअियोंका पार न था। खटियाअें अलग डालनी शुरू कीं। रात थकने पर ही सोनेका प्रयत्न किया। अिस सारे प्रयत्नका विशेष परिणाम मैं तुरन्त ही देख न सका। किन्तु आज भूतकाल पर दृष्टिपात करते हुअे देखता हूँ कि अिन सब प्रयत्नोंने मुझे आख़िरका बल दिया।

अंतिम निश्चय तो ठेठ १९०६ में ही कर सका। अुन दिनों सत्याग्रहका आरंभ नहीं हुआ था। नातालमें जूलू लोगोंका 'विद्रोह'

हुआ। मैंने नाताल सरकारको अपनी सेवा अर्पित की। अिस सेवाके निमित्तसे मेरे मनमें तीव्र विचार अुत्पन्न हुअे। अपने स्वभावके अनुसार मैंने अिसकी चर्चा अपने साथियोंसे की। मुझे प्रतीत हुआ कि संतानोत्पत्ति और सन्तान-पालन सार्वजनिक सेवाके विरोधी हैं। कड़ी कूचें करते समय मैंने देखा कि यदि मुझे लोकसेवामें ही तन्मय हो जाना है, तो पुत्रैपणा और वित्तैपणाका त्याग और वानप्रस्थ-धर्मका पालन करना चाहिये।

विद्रोहके काममें मुझे डेढ़ महीनेसे अधिक समय न देना पड़ा। लेकिन अिन छः हफ़्तोंका समय मेरे जीवनका अतिशय मूल्यवान समय था। मैं अिन्हीं दिनों व्रतके महत्त्वको अधिकसे अधिक समझा। मैंने देखा कि व्रत बंधन नहीं, बल्कि स्वतंत्रताका द्वार है। आज तक मुझे अपने प्रयत्नोंमें अुचित सफलता नहीं मिली; क्योंकि मैं निश्चयवान न था। मुझे अपनी शक्तिमें विश्वास न था। मुझे अीश्वरकी कृपामें अविश्वास था, और अिसके कारण मेरा मन अनेक तरंगों और अनेक विकारोंके वश होकर काम करता था। मैंने देखा कि व्रतसे न बँधनेसे मनुष्य मोहमें फँसता है। व्रतसे बँधना वैसा ही है, जैसा व्यभिचारसे छूटकर अेक पत्नीसे सम्बन्ध रखना होता है। यह कहना निर्बलताकी निशानी है कि 'मैं प्रयत्न करनेमें मानता हूँ, व्रतसे बँधना नहीं चाहता', और अिसमें सूक्ष्म रूपमें भोगकी अिच्छा निहित है। जहाँ अमुक वस्तुके लिअे सम्पूर्ण वैराग्य अुत्पन्न हुआ है, वहाँ अुसके लिअे व्रत अनिवार्य वस्तु है।

५४

व्रह्मचर्य — २

अच्छी तरह चर्चा करनेके वाद और पुख्ता विचार करके ही सन् १९०६ में व्रत लिया। व्रत लेनेके समय तक मैंने धर्मपत्नीसे परामर्श नहीं किया था; किन्तु व्रत लेते समय किया। अुसकी ओरसे मेरा कोअी विरोध न हुआ।

शुरू-शुरूमें तो यह व्रत मेरे लिअे वहुत ही भारी सिद्ध हुआ। मेरी शक्ति अल्प थी।. विकारोंका दमन कैसे हो सकेगा? स्वपत्नीके साथ विकारी सम्वन्धका त्याग अेक अनोखी वात मालूम होती थी। फिर भी मैं स्पष्ट रूपसे यह देख सकता था कि यही मेरा कर्त्तव्य है। मेरी भावना शुद्ध थी। यह सोचकर कि अीश्वर शक्ति देगा ही, मैंने निश्चय कर डाला।

आज वीस वर्षके वाद अिस व्रतका स्मरण करते हुअे मुझे सानन्द आश्चर्य होता है। संयम-पालनकी वृत्ति तो सन् १९०१ से प्रवल थी, और मैं अुसका पालन कर ही रहा था; लेकिन जिस स्वतंत्रता और आनन्दका अुपभोग मैं अव करने लगा था, सन् १९०६ से पहले अुसका वैसा अुपभोग करनेकी वात मुझे याद नहीं पड़ती। क्योंकि अुन दिनों मैं वासनावद्ध था, किसी भी समय अुसके वश हो सकता था। अव वासना मुझ पर सवार होनेमें असमर्थ हो गअी।

साथ ही, अव मैं व्रह्मचर्यकी महिमाको अधिकाधिक समझने लगा। व्रत मैंने फिनिक्समें लिया था।

व्रह्मचर्यके संपूर्ण पालनका अर्थ है, व्रह्मदर्शन। मुझे यह ज्ञान शास्त्र द्वारा नहीं मिला था। मेरे सामने तो यह अर्थ क्रम-क्रमसे अनुभव-सिद्ध होता गया। व्रतके वाद मैं दिनोंदिन अिस वातको विशेष रूपसे अनुभव

करने लगा कि ब्रह्मचर्यमें शरीर-रक्षण, बुद्धि-रक्षण और आत्माका रक्षण है।

किन्तु कोअी यह न माने कि जहाँ मैं अिसमें से रसपान करता था, वहाँ अिसकी कठिनताका कोअी अनुभव मुझे न होता था। आज ५६ वर्ष पूरे हो चुके हैं, फिर भी अिसकी कठिनताका अनुभव तो होता ही है। यह असिधारा व्रत है। निरन्तर जागृतिकी आवश्यकता देखता हूँ।

ब्रह्मचर्यका पालन करना हो, तो स्वादेन्द्रिय पर क़ाबू पाना ही चाहिये। यदि स्वाद पर विजय पा ली जाय, तो ब्रह्मचर्य अतिशय सहल है। अिस कारण अबसे आगेके मेरे आहार-सम्बन्धी प्रयोग केवल अन्नाहारकी दृष्टिसे नहीं, बल्कि ब्रह्मचर्यकी दृष्टिसे होने लगे। मैंने प्रयोग कर-करके यह अनुभव किया कि खुराक कम, सादी, बिना मसालेकी और क़ुदरती हालतमें खानी चाहिये। जिन दिनों मैं सूखे और हरे वनपक्व फलों पर ही रहता था, अुन दिनों जिस निर्विकारताका अनुभव हुआ, अुसे आहारमें फेरफार करनेके बाद अनुभव न कर सका। फलाहारके दिनोंमें ब्रह्मचर्य सहज था, दुग्धाहारके निमित्तसे वह कष्टसाध्य बन गया है। दूधके समान स्नायु-पोषक और अुतनी ही आसानीसे हज़म होनेवाला फलाहार अभी तक अुपलब्ध नहीं हुआ है। अिसलिअे दूधको विकार पैदा करनेवाली वस्तु मानते हुअे भी मैं अभी अुसके त्यागकी सलाह किसीको दे नहीं सकता।

बाह्य अुपचारोंमें जिस तरह आहारके प्रकार और प्रमाणकी मर्यादा आवश्यक है अुसी प्रकार अुपवासमें भी है। आहारके बिना अिन्द्रियाँ काम नहीं कर सकतीं। अिसलिअे अिन्द्रिय-दमनके हेतुसे अिच्छापूर्वक किये गये अुपवास अिन्द्रिय-दमनमें बहुत सहायक होते हैं।

अुपवासकी सच्ची अुपयोगिता वहीं होती है, जहाँ मनुष्यका मन भी देह-दमनमें साथ देता है। तात्पर्य यह कि मनमें विषयभोगके प्रति विरक्ति पैदा होनी चाहिये। विषयकी जड़ें मनमें होती हैं। मनुष्य अुपवास करता हुआ भी विषयासक्त रह सकता है। किन्तु बिना

अुपवासके विषयासक्तिका समूल नाश संभव नहीं। अिसलिअे ब्रह्मचर्य-पालनमें अुपवास अनिवार्य अंग है।

ब्रह्मचर्यका प्रयत्न करनेवाले बहुतेरे विफल होते हैं, क्योंकि वे खान-पान और दर्शन आदिमें अब्रह्मचारीकी तरह रहनेकी अिच्छा रखकर भी ब्रह्मचर्यका पालन करना चाहते हैं। अिस प्रयत्नको अुष्ण ऋतुमें शीत ऋतुका अनुभव करने-जैसा कहा जा सकता है। संयमीके और स्वैराचारीके, भोगीके और त्यागीके जीवनके बीच भेद होना ही चाहिये। ब्रह्मचर्यका अर्थ है, मन, वचन, कायासे सब अिन्द्रियोंका संयम। अिस संयमके लिअे त्यागकी आवश्यकता है। त्यागके क्षेत्रकी कोअी सीमा ही नहीं। जब तक विचारों पर अितना प्रभुत्व प्राप्त न हो जाय कि बिना अिच्छाके अेक भी विचार न आवे, तब तक संपूर्ण ब्रह्मचर्य संभव नहीं। विचारमात्र विकार है। अुस पर क़ाबू पानेका मतलब है, मन पर क़ाबू पाना। और मनको वशमें करना तो वायुको वशमें करनेसे भी कठिन है। लेकिन मैंने स्वदेश लौटनेके बाद देखा कि अिस प्रकारका ब्रह्मचर्य केवल प्रयत्न-साध्य नहीं है। अीश्वर साक्षात्कार करनेके लिअे जो लोग मेरी व्याख्याके ब्रह्मचर्यका पालन करना चाहते हैं, वे यदि अपने प्रयत्नके साथ ही अीश्वर पर श्रद्धा रखनेवाले भी हैं, तो अुनके लिअे निराशाका कोअी कारण नहीं है।

अतअेव रामनाम और रामकृपा ही आत्मार्थीका अंतिम साधन है, अिस बातका साक्षात्कार मैंने हिन्दुस्तानमें ही किया।

५५

सादगी

भोगोंको भोगना शुरू तो किया, लेकिन वह टिक न सका। घरके लिअे साज-सामान वसाते समय तो मुझे अुस पर मोह पैदा हो ही न सका। अिसलिअे घर वसानेके साथ ही मैंने खर्च कम करना शुरू किया। धोवीका खर्च भी ज़्यादा मालूम हुआ। तिस पर चूँकि धोवी नियत समय पर कपड़े नहीं लौटाता था, अिसलिअे दो तीन दर्जन कमीज़से और अुतने ही कॉलरोंसे भी मेरा काम निकलता न था। मुझे यह व्यर्थ प्रतीत हुआ। अिसलिअे धोनेका सामान जुटाया। धुलाअी-कलाकी पुस्तक पढ़कर धोना सीखा। पत्नीको भी सिखाया।

आखिर मैंने धोवीके धन्धेमें भी अपने कामके लायक़ कुशलता प्राप्त कर ली थी, और धोवीकी धुलाअीके मुक़ावले घरकी धुलाअी थोड़ी भी घटिया न होती थी।

जिस तरह मैं धोवीकी ग़ुलामीसे छूटा, अुसी तरह नाअीकी ग़ुलामीसे छूटनेका भी प्रसंग प्राप्त हुआ। वैसे, विलायत जानेवाले सभी अपने हाथों हजामत वनाना सीखते ही हैं। लेकिन मैं नहीं जानता कि कोअी वाल काटना भी सीखते हैं। अेक वार प्रिटोरियामें मैं अेक अंग्रेज़ नाअीकी दुकान पर पहुँचा। अुसने मेरी हजामत वनानेसे कतअी अिनकार कर दिया और अिनकार करते समय जो तिरस्कार प्रगट किया, सो घातेमें। मुझे दुःख हुआ। मैं वाज़ारमें पहुँचा। वाल काटनेकी मशीन खरीदी और आअीनेके सामने खड़े होकर वाल काटे। वाल जैसे-तैसे कटे तो सही; किन्तु पीछेके वाल काटनेमें वड़ी कठिनाअी हुअी। सीधे तो कट ही न पाये। अदालतमें हँसी हुअी।

सच पूछा जाय तो अिसमें अुस नाअीका कोअी दोष न था। अगर वह श्यामवर्ण लोगोंके वाल काटता है, तो अुसकी कमाअी हाथसे जाती है। क्या अपने देशमें हम अस्पृश्योंके वाल अुच्च वर्णवाले

हिन्दुओंके नाओीसे कटाने देते हैं? मुझे दक्षिण अफ़्रीकामें अिसका बदला अेक नहीं अनेक वार मिला है; और चूँकि मैं यह समझता था कि यह हमारे दोपका परिणाम है, अिसलिअे मुझे अिस पर कभी रोप मालूम नहीं हुआ।

स्वावलम्वन और सादगीके मेरे शौक़ने आगे चलकर तीव्र रूप धारण किया। अिस चीजकी जड़ तो शुरूसे मौजूद थी ही। अुसके फैलने-फूलनेके लिअे मात्र सिंचनकी आवश्यकता थी। वह सिंचन अनायास ही मिल गया।

५६

बोअर-युद्ध

वोअर-युद्ध शुरू होनेके समय मेरी सहानुभूति केवल वोअरोंके प्रति थी। लेकिन मैं यह मानता था कि अैसे मामलोंमें व्यक्तिगत विचारोंके अनुसार काम करनेका अधिकार अभी मुझे प्राप्त नहीं हुआ है। ब्रिटिश राज्यके प्रति मेरे मनमें जो वफ़ादारी थी, वह मुझे वरवस युद्धमें भाग लेनेकी ओर घसीट कर ले गअी। मुझे लगा कि यदि मैं ब्रिटिश प्रजाजनके नाते अधिकार माँग रहा था, तो ब्रिटिश प्रजाजनकी हैसियतसे ब्रिटिश राज्यकी रक्षामें हाथ बँटाना मेरा धर्म था।

अिसलिअे जितने साथी मिले अुतनोंको साथ लेकर और अनेक मुसीबतें सहकर हमने घायलोंकी शुश्रूषा करनेवाली अेक टुकड़ी खड़ी की। डॉ० वूथने हमें घायल योद्धाओंकी सार-सम्हाल करनेकी तालीम दी। हमने सरकारसे प्रार्थना की कि वह हमें लड़ाअीमें सेवा करनेका अवसर दे। लेकिन हमें सूचित किया गया कि अुस समय हमारी सेवाकी ज़रूरत नहीं थी। समय पाकर हमारी माँग स्वीकार की गअी।

अिस टुकड़ीमें लगभग १,१०० लोग थे। डॉ० बूथ हमारे साथ थे। टुकड़ीने काम बहुत अच्छा किया; यद्यपि अुसे गोलाबारूदके बाहर रहकर काम करना था, और रेडक्रॉसकी हिफ़ाज़त प्राप्त थी। अिसके बावजूद, संकटके समय हमें गोलाबारूदकी हदके अन्दर काम करनेका भी मौक़ा मिला। छः हफ़्तोंके बाद हमारी टुकड़ीको विदा कर दिया गया।

अुस समय तो हमारे अिस छोटेसे कामकी बहुत स्तुति हुअी। अिसके कारण हिन्दुस्तानियोंकी प्रतिष्ठा बढ़ी। जनरल बूलरने अपने खरीतेमें हमारी टुकड़ीके कामकी तारीफ़ की। मुखियोंको लड़ाअीके पदक भी मिले।

हिन्दुस्तानी क़ौम अधिक संगठित हुअी। मैं गिरमिटवाले हिन्दुस्तानियोंके सम्पर्कमें बहुत अधिक आ सका। अुनमें अधिक जागृति पैदा हुअी। यह भावना अधिक दृढ़ हुअी कि हम सब हिन्दुस्तानी हैं। सबने माना कि अब हिन्दुस्तानियोंके माथे पड़े हुअे दुःख दूर होने ही चाहियें। अुस समय तो गोरोंके व्यवहारमें भी स्पष्ट परिवर्तन नज़र आया।

लड़ाअीमें जिन गोरोंसे काम पड़ा, अुनके साथकी याद भी मीठी थी। हम हज़ारों टॉमियोंके सम्पर्कमें आये। वे हमसे मित्रताका बरताव करते थे और यह जानकर हमारा आभार मानते थे कि हम वहाँ अुनकी सेवाके लिये हैं।

५७

म्युनिसिपैलिटी — अकाल-फण्ड

समाजके अेक भी अंगका अनुपयोगी रहना मुझे सदा ही अखरा है। जनताके दोष छिपाकर अुसका वचाव करना अथवा दोष दूर किये विना ही अधिकार प्राप्त करना, मुझे हमेशा अरुचिकर प्रतीत हुआ है। वार-वार यह आरोप किया जाता था कि हिन्दुस्तानके लोग अपने घरवार साफ़ नहीं रखते और वहुत गन्दे रहते हैं। अिस आरोपको मिटानेके लिअे शुरूमें क़ौमके खास-खास लोगोंके घरोंमें तो सुधार शुरू हो ही चुके थे। लेकिन घर-घर घूमनेका काम तो तभी शुरू हुआ, जव डरवनमें महामारीके प्रवेशका भय मालूम हुआ। अिसमें म्युनिसिपैलिटीके अधिकारियोंका भी हाथ था और अुनकी सम्मति भी थी। हमारी मदद मिलनेसे अुनका काम हलका हो गया, और हिन्दुस्तानियोंको कम मुसीवत सहनी पड़ी।

मुझको कुछ कड़वे अनुभव भी हुअे। स्थानीय सरकारसे अधिकार माँगनेके काममें मैं क़ौमके लोगोंकी मदद जितनी आसानीसे ले सकता था, अुतनी आसानीसे लोगोंको अपना फ़र्ज़ अदा करनेके काममें मदद देनेके लिअे राज़ी नहीं कर सका। कअी जगहोंमें अपमान होते और कअी जगह विनयपूर्वक लापरवाही दिखाअी जाती। गंदगी साफ़ करनेकी तकलीफ़ अुठाना वहुत वुरा मालूम होता था। अिसके कारण मैं अेक सवक़ अधिक अच्छी तरहसे सीखा, और वह यह था कि लोगोंसे कोअी भी काम कराना हो तो धीरज रखना चाहिये।

अिस आन्दोलनका परिणाम यह हुआ कि हिन्दुस्तानी समाजमें लोगोंने घरवारको साफ़ रखनेके महत्त्वको न्यूनाधिक मात्रामें स्वीकार किया। अधिकारी-समाजके निकट मेरी साख वढ़ी। वे समझ गये कि मेरा धन्धा केवल शिकायतें करने अथवा हक़ माँगनेका ही नहीं था,

बल्कि फ़रियाद करनेमें या अधिकारोंकी माँग करनेमें मैं जितनी दृढ़तासे काम लेता था, आंतरिक सुधारोंके बारेमें भी मैं अुतना ही अुत्साही और दृढ़ था।

अेक और दिशामें भी समाजकी वृत्तिको विकसित करनेका काम बाक़ी रहा था। अिस अुपनिवेशमें रहनेवालोंको समय पड़ने पर भारतवर्षके प्रति अपने धर्मको समझने और पालनेकी भी ज़रूरत थी। भारतवर्ष तो कंगाल है। लोग धन कमानेके लिअे परदेशमें रहना सहन करते हैं। अुनकी कमाअीका कुछ न कुछ हिस्सा आपत्तिके समय भारतवर्षको मिलना चाहिये। सन् १८९७ में और अुसके बाद सन् १८९९ में देशमें अकाल पड़े। अिन दोनों अकालोंके समय दक्षिण अफ्रीकासे अच्छी मदद गअी थी।

अिस प्रकार अिन दो अकालोंके अवसर पर जो प्रथा शुरू हुअी, वह आज तक क़ायम है।

अिस तरह दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंकी सेवा करते-करते मैं स्वयं अेकके बाद अेक अनेक बातें अनायास सीख रहा था। सत्य अेक विशाल वृक्ष है। जैसे-जैसे अुसकी सेवा की जाती है, वैसे-वैसे अुसमें से अनेक फल पैदा होते पाये जाते हैं; अुसका कोअी अन्त ही नहीं होता। ज्यों-ज्यों अुसमें गहरे पैठते हैं, त्यों-त्यों अुसमें से रत्न मिलते रहते हैं, सेवाके अवसर मिलते रहते हैं।

देश-गमन

लड़ाअीके कामसे फ़ुरसत पानेके बाद मुझे लगा कि अब मेरा काम दक्षिण अफ्रीकामें नहीं, बल्कि देशमें है। दक्षिण अफ्रीकामें बैठे-बैठे भं मैं कुछ न कुछ सेवा तो अवश्य ही करता, लेकिन मुझे अैसा प्रती हुआ कि वहाँ मेरा मुख्य धन्धा पैसा कमाना ही हो जायगा।

मैंने साथियोंसे मुक्त होनेकी माँग की। बड़ी मुश्किलके बा मेरी यह माँग अेक शर्त्तके साथ स्वीकार हुअी। शर्त्त यह थी कि अग क़ौमको अेक सालके अन्दर मेरी ज़रूरत मालूम पड़े, तो मुझे वाप दक्षिण अफ्रीका पहुँचना चाहिये। मुझे यह शर्त्त मुश्किल मालूम हुअी किन्तु मैं प्रेमपाशसे बँधा हुआ था —

काचे रे तांतणे मने हरजीअे बांधी,
जेम ताणे तेम तेमनी रे;
मने लागी कटारी प्रेमनी.

मीराबाअीकी यह अुपमा थोड़े-बहुत अंशोंमें मुझ पर घटित होत थी। पंच भी परमेश्वर ही हैं। मैं मित्रोंकी बातको ठुकरा नहीं सकत था। मैंने वचन दिया और अिजाज़त पाअी।

अिस बार मेरा निकट सम्बन्ध नातालके साथ ही रहा। नातालवे हिन्दुस्तानियोंने मुझे प्रेमामृतसे नहला दिया। जगह-जगह मानपत्र देनेवे लिअे सभायें हुअीं और हरअेक जगहसे क़ीमती भेंटें मिलीं।

जब सन् १८९६ में मैं देशके लिअे रवाना हुआ था, तब भं भेंटें मिली थीं, लेकिन अिस बारकी भेंटोंसे और सभाओंके दृश्यसे मैं अकुला अुठा। भेंटोंमें सोने-चाँदीकी वस्तुयें तो थीं ही, लेकिन साथ ही अुनमें हीरेकी वस्तुयें भी थीं।

अिन सब वस्तुओंको स्वीकार करनेका मुझे क्या अधिकार हो सकता था? अगर मैं अिन्हें स्वीकार करता तो अपने मनको यह कैसे समझा सकता कि मैं क़ौमकी सेवा पैसे लेकर नहीं करता? अिन भेंटोंमें कुछेक मुवक्किलोंकी भेंटोंको छोड़कर शेप सब मात्र मेरी सार्वजनिक सेवाके निमित्तसे ही थीं। फिर मेरे निकट तो मुवक्किलों और दूसरे साथियोंके बीच कोअी भेद न था। खास-खास मुवक्किल सभी सार्वजनिक काममें भी मदद देनेवाले थे।

फिर, अिन भेंटोंमें ५० गिन्नीका अेक हार कस्तूरबाअीके लिअे था। लेकिन अुसे मिली वस्तु भी मेरी सेवाके निमित्तसे थी, अिसलिअे अुसे अलग नहीं रखा जा सकता था।

जिस शामको अिन भेंटोंमें से मुख्य-मुख्य भेंटें मिली थीं, वह रात मैंने बावरेकी भाँति जागकर बिताअी। मैं अपने कमरेमें चक्कर काटता रहा, लेकिन बुद्धि किसी तरह सुलझती न थी। सैकड़ोंकी भेंट छोड़ना भारी मालूम पड़ता था। रखना अुससे भी अधिक भारी लगता था। कदाचित् मैं अिन भेंटोंको पचा सकूँ, लेकिन मेरे बालकोंका क्या हो? स्त्रीका क्या हो? अुन्हें शिक्षा तो सेवाकी मिली थी और सेवाके दाम नहीं लेने चाहियें, यह बात अुन्हें हमेशा समझाअी जाती थी। मैं घरमें क़ीमती गहने वग़ैरा रखता न था। सादगी बढ़ती जाती थी। गहनों और जेवरोंका मोह छोड़नेके लिअे अुन दिनों भी मैं दूसरोंसे कहा करता था। तो अब अिन गहनों और जवाहरातोंको मैं क्या करूँ?

मैं अिस निर्णय पर पहुँचा कि मुझे ये चीजें हरगिज़ न रखनी चाहियें। पारसी रुस्तमजी आदिको अिन गहनोंका ट्रस्टी नियुक्त करके अुनके नाम लिखनेके लिअे अेक पत्रका मसविदा तैयार किया और निश्चय किया कि सवेरे स्त्री-पुत्रादिसे सलाह करके अपना भार हलका कर लूँगा।

बालक तो तुरन्त समझ गये। मुझे खुशी हुअी। वे अपनी माँको समझानेके लिअे तैयार हुअे। किन्तु काम अपेक्षासे अधिक कठिन सिद्ध

हुआ। माँके बाण नोकदार थे। अुनमें से कुछ चुभते थे। किन्तु गहने तो मुझे वापस लौटाने ही थे। कअी मामलोंमें मैं जैसे-तैसे सम्मति प्राप्त कर सका। सन् १८९६ और सन् १९०१ में मिली हुअी भेंटें लौटा दीं। अुनका ट्रस्ट बना और अुनका अुपयोग मेरी अथवा ट्रस्टियोंकी अिच्छाके अनुसार सार्वजनिक कामके लिअे करनेकी शर्त पर वे बैंकमें रखी गअीं।

अपने अिस क़दमके लिअे मुझे कभी पश्चात्ताप नहीं हुआ। समय बीतने पर कस्तूरबाको भी अिसका औचित्य जँच गया। हम अनेक लालचोंमें से बच गये हैं।

मेरी यह राय बनी है कि सार्वजनिक सेवकके लिअे निजी भेंट या अुपहार वर्ज्य हैं।

७ : देशमें निवास

५९

कलकत्तेमें

यों मैं देश जानेके लिअे विदा हुआ।

हिन्दुस्तान पहुँचनेके वाद थोड़ा समय घूमने-फिरनेमें विताया। यह सन् १९०१ का साल था। अुस सालकी कांग्रेसका अधिवेशन कलकत्तेमें होनेवाला था। दीनशा अेदलजी वाच्छा सभापति थे। मुझे कांग्रेसमें तो जाना था ही। कांग्रेसका मेरा यह पहला अनुभव था।

वम्वअीसे जिस ट्रेनमें सर फीरोजशाह रवाना हुअे अुसी ट्रेनमें मैं गया था। मुझे अुनके डव्वेमें अेक स्टेशन तक जानेकी आज्ञा मिली थी। अुसके अनुसार मैं गया। वे वोले: 'गांधी, आपका काम वनेगा नहीं। आप जैसा कहेंगे वैसा प्रस्ताव तो हम पास कर देंगे, लेकिन अपने देशमें ही हमें कौनसे हक़ मिलते हैं? जहाँ तक अपने देशमें हमें सत्ता प्राप्त नहीं है, वहाँ तक अुपनिवेशोंमें आपकी स्थिति सुधर नहीं सकती।'

मैं तो दंग ही रह गया, किन्तु मैंने यह सोचकर सन्तोष किया कि मुझे कांग्रेसमें प्रस्ताव पेश करने देंगे।

कलकत्तेमें स्वयंसेवक मुझे रिपन कॉलेज ले गया। वहाँ कअी प्रतिनिधियोंको ठहराया गया था; किन्तु व्यवस्थाका अभाव था।

कांग्रेसके अधिवेशनको अेक-दो दिनकी देर थी। मैंने निश्चय किया था कि अगर कांग्रेसके कार्यालयमें मेरी सेवा स्वीकार की जाय, तो मुझे सेवा करनी और अनुभव लेना चाहिये।

जिस दिन हम पहुँचे अुसी दिन मैं नहा-धोकर कांग्रेसके कार्यालयमें गया। श्री भूपेंद्रनाथ वसू और श्री घोषाल मंत्री थे। मैं भूपेंद्रवावूके

पास पहुँचा। अुन्होंने मुझे घोषाल बाबूकी तरफ़ भेजा। मैं अुन
पास गया। अुन्होंने मुझे निरखा। ज़रा हँसे और पूछा:
'मेरे पास तो कारकुनका काम है। आप करेंगे?'
मैंने जवाब दिया: 'ज़रूर करूँगा।'

घोषालबाबूने मुझे काग़ज़ोंका अेक ढेर निपटानेके लिअे सौंप दिया। मैं तो अिस विश्वाससे ख़ुश-ख़ुश हो गया।

मैंने काग़ज़ोंके अुस ढेरको तुरन्त निपटा दिया। घोषालबाबू ख़ुश हुअे। मेरा अितिहास जाननेके बाद तो मुझे कारकुनका काम सौंपनेके कारण अुन्हें थोड़ी शर्म मालूम हुअी। मैंने अुन्हें निश्चिन्त किया। हमारे बीच काफ़ी अच्छा सम्बन्ध हो गया। कुछ ही दिनोंमें मुझे कांग्रेसके प्रबन्धका पता चल गया। बहुतसे नेताओंका परिचय हुआ। मैं अुनकी रीति-नीतिको देख सका। समयकी जो बरबादी होती थी, अुसका दर्शन भी मैंने किया। अंग्रेज़ी भाषाका प्राबल्य भी देखा, जिससे अुस समय भी मुझे दुःख हुआ था। मैंने यह भी देखा कि जो काम अेकसे होता था, अुसमें अेकसे अधिक लोग लग जाते थे, और कुछ महत्त्वके काम अैसे रह जाते थे, जिन्हें कोअी भी करता न था।

मेरा मन अिस सारी स्थितिकी टीका करता रहता था। किन्तु चित्त अुदार था, अिसलिअे यह मान लेता था कि जो हो रहा है, अुसमें अधिक सुधार सम्भव न होगा। और फलतः किसीके प्रति अरुचि अुत्पन्न न होती थी।

६०

कांग्रेसमें

कांग्रेसका अधिवेशन शुरू हुआ। मंडपका भव्य दृश्य, स्वयंसेवकोंकी क़तारें, मंच पर बुज़ुर्गोंकी बैठक आदि देखकर मैं घबराया।

सभापतिके भाषणके कुछ-कुछ भाग पढ़े गये। विषय-विचारिणी-समितिके सदस्योंका चुनाव हुआ। गोखले अुसमें मुझे ले गये थे। समितिमें अेकके बाद अेक प्रस्ताव पास होते गये। मैंने गोखलेको अपने प्रस्तावकी याद दिलाअी। वह अुनके ध्यानमें था ही। दूसरा काम समाप्त होने पर अुन्होंने अुस प्रस्तावको याद किया। अुसे वे देख चुके थे, अिसलिअे मुझे पेश करनेकी अिजाज़त मिली। मैंने काँपते स्वरमें अुसे पढ़ सुनाया। गोखलेने समर्थन किया। सब अेकस्वरसे कह अुठे — 'सर्वसम्मतिसे पास'। और वाच्छाने कहा — 'गांधी, आप पाँच मिनट बोलिये।'

अिस दृश्यसे मैं खुश न हुआ।

कांग्रेसमें लिखा हुआ भाषण न पढ़नेका मेरा निश्चय था, लेकिन दक्षिण अफ्रीकामें भाषण करनेकी जो हिम्मत आअी थी, अुसे मैं यहाँ खो बैठा था।

जब मेरे प्रस्तावका समय आया, तो सभापतिने मेरा नाम पुकारा।

मैं खड़ा हुआ। सिरमें चक्कर आने लगे। जैसे-तैसे प्रस्ताव पढ़ा। मैंने दक्षिण अफ्रीकाके दुःखोंकी कुछ बातें कहीं। अितनेमें सभापतिकी घण्टी बजी। मैंने अभी अपने पाँच मिनट पूरे नहीं किये थे। मैं जानता न था कि यह घण्टी तो मुझे चेतावनी देनेके लिअे दो मिनट पहले ही बजाअी गअी थी। मुझे दुःख तो हुआ ही। क्योंकि घण्टी बज चुकी थी, अिसलिअे मैं तो बैठ ही गया।

प्रस्तावोंका विरोध करने जैसा कुछ था ही नहीं। सब हाथ अुठाते ही थे। सारे प्रस्ताव सर्वसम्मतिसे स्वीकृत होते थे। मेरे

प्रस्तावका भी यही हाल हुआ। अिसलिअे मुझे प्रस्तावका महत्त्व मालूम न हुआ, फिर भी कांग्रेसमें प्रस्ताव पास होनेकी ही मेरे आनन्दके लिअे पर्याप्त थी।

६१
गोखलेके साथ

कांग्रेस समाप्त हुअी, किन्तु मुझे तो दक्षिण अफ्रीकाके कामके सिलसिलेमें कलकत्ते रहकर चेम्बर ऑफ कॉमर्स आदि मण्डलोंसे मिलना था। अिसलिअे मैं कलकत्तेमें अेक महीना रहा। मैंने अिण्डिया-क्लबमें रहनेका प्रबन्ध किया। गोखले अिस क्लबमें समय-समय पर बिलियर्ड खेलने आते रहते थे। जैसे ही अुन्हें पता चला कि मैं कलकत्ते ठहरने-वाला हूँ, अुन्होंने मुझे अपने साथ रहनेके लिअे आमंत्रित किया। मैंने अुनका आमंत्रण साभार स्वीकारा, लेकिन मुझे खुद ही वहाँ जाना ठीक न मालूम हुआ। अेक-दो दिन राह देखी, अितनेमें गोखले खुद ही मुझे अपने साथ ले गये।

पहले ही दिनसे गोखलेने मुझे यह माननेका मौक़ा न दिया कि मैं अुनका मेहमान हूँ। अुन्होंने मुझे अपने छोटे सगे भाअीकी तरह रखा। मेरी सब आवश्यकताअें समझ लीं और अुनके अनुकूल सारी व्यवस्था कर ली। सौभाग्यसे मेरी आवश्यकताअें कम थीं। सब कुछ स्वयं ही करनेकी आदत मैं डाल चुका था, अिसलिअे मुझे बहुत ही कम सेवा लेनी पड़ती थी। स्वावलम्बनकी मेरी अिस आदतकी, अुस समयकी मेरी पोशाक आदिकी सुघड़ताकी, मेरे अुद्यमकी और मेरी नियमितताकी अुन पर गहरी छाप पड़ी, और वे अिस सबकी अितनी स्तुति करने लगे कि मैं अकुला अुठा।

मुझे कभी अैसा भास नहीं हुआ कि अुनकी कोअी बात मुझसे छिपी हुअी है। जो भी कोअी बड़े आदमी अुनसे मिलने आते, अुनके साथ वे मेरा परिचय करा देते।

गोखलेकी काम करनेकी पद्धतिसे मुझे जितना आनन्द हुआ अुतना ही सिखनेको भी मिला। वे अपना अेक क्षण भी व्यर्थ न जाने देते थे। मैंने अनुभवसे देखा कि अुनके सारे सम्बन्ध देशकार्यके निमित्तसे ही थे। सारी चर्चा भी देशकार्यके विषयकी ही होती थी। बातचीतमें मैंने कहीं मलिनता, दम्भ अथवा झूठके दर्शन न किये।

गोखले घोड़ा-गाड़ी रखते थे। मैंने अुनसे अिसकी शिकायत की। मैं अुनकी मुश्किलोंको समझ नहीं सका था। 'आप सब जगह ट्राममें क्यों नहीं जा सकते? क्या अिससे नेता-वर्गकी प्रतिष्ठा कम होती है?'

थोड़े दुःखी होकर अुन्होंने मुझे जवाब दिया — 'तो आप भी मुझे समझ न सके? मुझे बड़ी धारासभासे जो मिलता है, अुसे मैं अपने लिअे खर्च नहीं करता। जब आपको भी मेरे समान ही बड़ी संख्यामें लोग पहचानने लगेंगे, तब आपके लिअे भी ट्राममें घूमना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य ही हो जानेवाला है। यह मान लेनेकी कोअी वजह नहीं है कि नेता लोग जो कुछ करते हैं, सो मौज-शौक़के लिअे ही करते हैं। आपकी सादगी मुझे पसन्द है। मैं भरसक सादगीसे रहता हूँ, किन्तु आप निश्चय मानिये कि मेरे जैसोंके लिअे कुछेक खर्च अनिवार्य हैं।'

अिस प्रकार मेरी अेक शिकायत तो बराबर रद हुअी। लेकिन दूसरी जो फ़रियाद मुझे पेश करनी थी, अुसका वे कोअी सन्तोषजनक जवाब नहीं दे सके।

मैंने कहा — 'लेकिन आप तो ठीकसे घूमने भी नहीं जाते। फिर अगर आप बीमार रहते हैं, तो अिसमें आश्चर्य क्या? क्या देशकार्यमें से आप व्यायामके लिअे भी फ़ुरसत नहीं निकाल सकते?'

जवाब मिला — 'आप मुझे किस समय फ़ुरसतमें पाते हैं कि जब मैं घूमने जा सकूं।'

मेरे मनमें गोखलेके प्रति अितना आदर था कि मैं अुन्हें प्रत्युत्तर नहीं देता था। अुनके अुक्त अुत्तरसे मुझे संतोष न हुआ। किन्तु मैं चुप रहा। कैसा भी काम क्यों न हो, जिस तरह हम खानेके लिअे समय निकालते हैं, अुसी तरह व्यायामके लिअे भी निकालना चाहिये। मेरी

यह नम्र सम्मति है कि अैसा करनेसे देशकी सेवा अधिक ही होती है, कम नहीं।

गोखलेकी छायामें रहनेसे बंगालमें मेरा काम सरल हो गया। बंगालके अग्रगण्य परिवारोंका मुझे सहज ही परिचय मिला, और बंगालके साथ मेरा निकटका संबंध बन गया। मैं ब्रह्मदेशकी भी डुबकी लगा आया। वहाँसे लौटनेके बाद मैं गोखलेसे विदा हुआ। अुनका विछोह मुझे खला, लेकिन बंगालका अथवा सच पूछो तो कलकत्तेका मेरा काम समाप्त हो चुका था।

अपने धंधेमें पड़नेसे पहले मेरा विचार तीसरे दर्जेमें हिन्दुस्तानकी अेक संक्षिप्त यात्रा करने और तीसरे दर्जेके यात्रियोंके परिचयमें आकर अुनके दुःखोंको समझ लेनेका था। मैंने अपना यह विचार गोखलेके सामने रखा। शुरूमें तो अुन्होंने अिसे हँसीमें टाल दिया, किन्तु जब मैंने अपनी आशाओंका वर्णन किया, तो अुन्होंने खुशी-खुशी मेरी योजनाको मान लिया।

अिस यात्राके लिअे मुझे नया सामान खरीदना था। पीतलका अेक डब्बा गोखलेने ही दिया और अुसमें मेरे लिअे बेसनके लड्डू और पूरी रखवाअी। पटसनका अेक बैग खरीदा। छाया (पोरबन्दरके पासका गाँव) के अूनका अेक कोट बनाया था। बैगमें वह कोट, तौलिया, कुरता और धोती रख ली थी। ओढ़नेके लिअे अेक कम्बल था। अिसके अलावा अेक लोटा साथमें रखा था। अितना सामान लेकर मैं रवाना हुआ।

गोखले और डॉ० प्रफुल्लचंद्र राय मुझे स्टेशन तक बिदा करने आये। मैंने दोनोंसे न आनेकी विनती की, किन्तु दोनोंने आनेका अपना आग्रह क़ायम रखा। गोखलेने कहा — 'अगर आप पहले दर्जेमें जाते, तो शायद मैं न चलता, लेकिन अब तो मुझे चलना ही है।'

६२
बंबअीमें

गोखलेकी बड़ी अिच्छा थी कि मैं बम्बअीमें स्थिर हो जाअूँ, वहाँ बैरिस्टरका धन्धा करूँ, और अुनके साथ सार्वजनिक काममें हाथ बँटाअूँ।

मेरी अपनी भी यही अिच्छा थी। किन्तु धन्धा मिलनेके बारेमें मुझे आत्मविश्वास न था। पुराने अनुभवोंकी याद भूली न थी। खुशामद करना ज़हर-जैसा लगता था।

अिसलिअे पहले तो मैं राजकोटमें ही रहा। केवलराम मावजी दवेने मेरे हाथमें तीन केस दिये। अुनमें दो अपीलें थीं और अेक असल केस था। असल केसमें कामयाबी हुअी, और दो अपीलोंके बारेमें तो मुझे शुरूसे ही कोअी अँदेशा न था। अिसलिअे कुछ अैसा लगा कि बम्बअी जाने पर भी वहाँ कोअी मुश्किल पेश न होगी। फिर भी मैं तो कुछ समय तक राजकोटमें ही रहनेकी बात सोच रहा था। अितनेमें अेक दिन केवलराम मेरे पास आये और बोले — 'गांधी, हम आपको यहाँ नहीं रहने देंगे। आपको तो बम्बअी ही जाना होगा।'

'लेकिन वहाँ तो कोअी मेरे हाल तक न पूछेगा। क्या मेरा खर्च आप चलायेंगे?'

'हाँ, हाँ, मैं आपका खर्च चलाअूँगा। बड़े बैरिस्टरकी तरह हम लोग कभी-कभी आपको यहाँ ले आया करेंगे, और लिखने-पढ़नेका जो काम होगा, सो आपको वहाँ भेजते रहेंगे। बैरिस्टरोंको बड़ा या छोटा बनाना तो हम वकीलोंका काम है न? अपना माप तो आप जामनगर और वेरावलमें दे ही चुके हैं, अिसलिअे मैं बेफ़िकर हूँ। आप जिस सार्वजनिक कामके लिअे पैदा हुअे हैं, अुसे हम काठियावाड़में दफ़न नहीं होने देंगे। कहिये, कब जायेंगे?'

'नातालसे मेरे कुछ पैसे आने वाक़ी हैं, वे आ जायें तो जाऊँ।'

पैसे दो-अेक हफ़्तोंमें आ गये और मैं वम्वअी गया। पेअिन, गिलवर्ट और सयानीके ऑफिसमें 'चेम्वर्स' किरायेसे लिये और स्थिर हुआ-सा लगा।

६३

धर्मसंकट

ऑफिसकी तरह ही मैंने गिरगाँवमें घर किरायेसे लिया, लेकिन अीश्वरने मुझे स्थिर न होने दिया। घर लियेको अभी वहुत दिन नहीं हुअे थे कि अितनेमें मेरा दूसरा लड़का अेक सख़्त वीमारीकी चपेटमें आ गया।

डॉक्टरकी सलाह ली। डॉक्टरने कहा — 'अिसके लिअे दवा कोअी काम न करेगी। अिसे तो अण्डे और मुर्ग़ीका शोरवा देनेकी ज़रूरत है।'

मणिलालकी अुमर दस वर्षकी थी। मैं अुसे क्या पूछता? अुसका अभिभावक तो मैं था। निर्णय मुझको करना था। डॉक्टर अेक वहुत भले पारसी थे। 'डॉक्टर! हम सव तो अन्नाहारी हैं। मैं अपने लड़केको अिन दोमें से अेक भी वस्तु देना नहीं चाहता। आप दूसरा कोअी अुपाय न वतायेंगे?' मैंने कहा।

डॉक्टर वोले — 'आपके लड़केकी जान ख़तरेंमें है। दूध और पानी मिलाकर दिया जा सकता है, किन्तु अुससे पूरा पोषण न मिल सकेगा। आप जानते हैं कि मैं तो वहुतेरे हिन्दू परिवारोंमें जाता हूँ, लेकिन दवाके नाम पर हम जो भी वस्तु अुन्हें दें, वे ले लेते हैं।'

'आप सच ही कह रहे हैं। आपको यही कहना भी चाहिये। मेरी ज़िम्मेदारी वहुत वड़ी है। लड़का वड़ा और सयाना होता तो मैं

अवश्य ही अुसकी अिच्छा जाननेका प्रयत्न करता, और वह जो चाहता सो करने देता। किन्तु आज तो मुझे ही अिस बालकके लिये सोचना है। मुझे तो यह लगता है कि मनुष्यके धर्मकी कसौटी अैसे ही समय होती है। खरा हो या खोटा हो, मैंने अपना यह धर्म माना है कि मनुष्यको मांसादिक न खाने चाहियें। जीवनके साधनोंकी भी हद होती है। कुछ बातें अैसी हैं, जो हमें जीनेके लिअे भी नहीं करनी हैं। अैसे समयमें मेरे धर्मकी मर्यादा मुझे अपने लिअे और अपनोंके लिअे भी मांस अित्यादिका अुपयोग करनेसे रोकती है। अिसलिअे मुझे आप जिस खतरेकी बात कहते हैं, वह खतरा अुठाना ही होगा।'

डॉक्टर भले थे। वे मेरी कठिनाअीको समझ गये और अुन्होंने मेरी माँगके मुताबिक़ मणिलालको देखनेके लिअे आना क़बूल किया।

मैं क्यूनीके अुपचार जानता था। अुसके प्रयोग भी किये थे। यह भी जानता था कि बीमारीमें अुपवासका बड़ा स्थान है। मैंने मणिलालको क्यूनीके ढंग पर कटिस्नान कराना शुरू किया।

बुखार अुतरता न था। रातमें कुछ-का-कुछ बकता था। मैं घबराया। कहीं बालकको खो बैठा, तो दुनिया मुझे क्या कहेगी? बड़े भाअी क्या कहेंगे? दूसरे डॉक्टरोंको क्यों न बुलाया जाय? वैद्यको क्यों न बुलाया जाय? माँ-बापको क्या अधिकार है, कि वे अपनी ज्ञानहीन अक़्ल चलायें।

अिस तरहके विचार आते थे। साथ ही ये विचार भी आते — प्राणी! जो तू अपने लिअे करता है, वही लड़केके लिअे करेगा, तो परमेश्वर संतुष्ट रहेगा। तुझे जलके अुपचारमें श्रद्धा है, दवामें नहीं। डॉक्टर प्राणदान नहीं देता। अुसके भी प्रयोग ही चलते हैं। जीवनकी डोरी तो अेक अीश्वरके ही हाथमें है। अीश्वरका नाम लेकर, अुस पर श्रद्धा रखकर, तू अपना मार्ग न छोड़।

अिस प्रकार मनमें अुधेड़-बुन चल रही थी। रात पड़ी। मैंने मणिलालको गीली निचोड़ी हुअी चादरमें लपेटनेका निश्चय किया। मैं अुठा। चादर ली। ठंडे पानीमें डुबोअी, निचोअी। अुसमें अुसे सिरसे

पैर तक लपेटा। अूपरसे दो कम्बल ओढ़ा दिये। सिर पर गीला तौलिया रखा। बुखार तवेकी तरह तप रहा था। पसीना आता ही न था।

मैं बहुत थक चुका था। मणिलालको अुसकी माँके सिपुर्द करके मैं आधे घंटेके लिअे थोड़ी हवा खाने, ताज़ा होने, शांति पानेके विचारसे चौपाटी पर गया। रातके कोअी दस बजे होंगे। लोगोंका आना-जाना कम हो चुका था। मुझे बहुत थोड़ा होश था। मैं विचार-सागरमें डुबकी लगा रहा था। हे अीश्वर, अिस धर्मसंकटमें तू मेरी लाज रखना। मुँहसे 'राम-राम' का रटन तो जारी ही था। कुछ देर अिधर-अुधर टहलकर मैं धड़कती छाती लिये वापस लौटा।

जब मैं घर पहुँचा. तो मणिलालको पसीना आ रहा था। बुखार अुतर रहा था। मैंने अीश्वरका आभार माना।

सुबह मणिलालका बुखार हलका मालूम हुआ। दूध और पानी तथा फल पर वह चालीस दिन रहा। मैं निर्भय हो चुका था। बुखार हठीला था, किन्तु क़ाबूमें आ चुका था। आज मेरे सब लड़कोंमें मणिलाल सबसे अधिक सुदृढ़ शरीरवाला है।

अिस बातका निराकरण कौन कर सकता है, कि यह रामकी बख्शिश है या जलके अुपचारकी? अल्पाहारकी है या सार-सँभाल की? मैंने तो यह समझा कि अीश्वरने मेरी लाज रख ली, और मैं तो आज भी यही मानता हूँ।

६४

पुनः दक्षिण अफ्रीका

मणिलाल स्वस्थ तो हुआ, किन्तु मैंने देखा कि गिरगाँववाला मकान रहने लायक़ नहीं था। अुसमें नमी थी, पूरा अुजेला नहीं था। अतअेव रेवाशंकर वैद्यसे सलाह करके हम दोनोंने वम्बअीके किसी अुपनगरम खुली जगहवाला बँगला लेनेका निश्चय किया। सान्ताक्रूज़में अेक सुन्दर बँगला मिल गया और हम अुसमें रहने गये। अैसा प्रतीत हुआ कि आरोग्यकी दृष्टिसे अब हम सुरक्षित हैं। मैंने चर्चगेट जानेके लिअे पहले दर्जेका पास निकलवाया। पहले दर्जेमें अक्सर में अकेला ही रहता, जिससे मनमें कुछ अभिमानका भी अनुभव करता। वहुत दफ़ा वाँदरासे चर्चगेट जानेवाली खास गाड़ी पकड़नेके लिअे मैं सान्ताक्रूज़से वाँदरा तक पैदल जाता।

आर्थिक दृष्टिसे मेरा धंधा मेरी अपेक्षासे कुछ अधिक ठीक चलने लगा। दक्षिण अफ्रीकाके मुवक्किल मुझे कुछ-न-कुछ काम सौंपा करते थे। मुझे अैसा लगा कि अुससे मेरा खर्च आसानीके साथ निकलता रहेगा। हाअीकोर्टका काम तो मुझे अभी तक कुछ मिलता न था। हाअीकोर्टमें दूसरे नये वैरिस्टरोंकी तरह मैं भी केस सुननेके लिअे जाता था। वहाँ जो कुछ जाननेको मिलता था, अुसकी अपेक्षा समुद्रकी फरफराती हुअी हवाके झोंके खानेका आनन्द अधिक मिलता था। मैंने देखा कि वहाँ जिस तरह झोंके खाना 'फैशन' माना जाता था।

गोखलेकी आँख तो मुझ पर लगी ही रहती थी। हफ़्तेमें दो-तीन वार चेम्बरमें आकर मेरी कुशलता पूछ जाते। और कभी-कभी अपने खास मित्रोंको भी साथ लेते आते। अपनी कार्य-पद्धतिसे मुझे परिचित कराते जाते। किन्तु मेरे भविष्यके वारेमें यह कहना ठीक होगा कि अीश्वरने मेरा चाहा कभी कुछ वनने ही न दिया।

ज्योंही मैंने स्वस्थ होनेका निश्चय किया और स्वस्थताका अनुभव किया, त्यों ही अचानक दक्षिण अफ्रीकाका तार आया — 'चेम्बरलेन यहाँ आ रहे हैं, आपको आना चाहिये।' मुझे अपना वचन याद था ही। मैंने तार दिया — 'मेरा खर्च भेजिये। आनेको तैयार हूँ।' अुन्होंने तुरंत पैसे भेजे और मैं दफ़्तर समेटकर रवाना हुआ।

मैंने सोचा था कि मुझे अेकाध साल तो वहाँ सहज ही लग जायगा। बँगला चालू रखा और यह भी अिष्ट समझा कि बाल-बच्चे अुसीमें रहें।

अुन दिनों मैं मानता था कि जो नौजवान देशमें कमाते नहीं और साहसी हैं, अुनके लिअे परदेश निकल जाना अच्छा है। अिस विचारसे मैं चार-पाँचको अपने साथ ले गया, जिनमें अेक मगनलाल गांधी भी थे।

बाल-बच्चोंका बिछोह, बनाये हुअे घोंसलेको तोड़ना, निश्चित वस्तुमें से अनिश्चितमें प्रवेश — यह सब क्षणभरके लिअे अखरा। किन्तु मैं तो अनिश्चित जीवनका आदी हो चुका था। अिस संसारमें, जहाँ अीश्वरके या सत्यके सिवाय और कुछ भी निश्चित नहीं है, वहाँ निश्चितताका विचार करना ही दोषमय प्रतीत होता है।

हमारे आसपास यह जो सब दीखता और होता है, सो सब अनिश्चित है, क्षणिक है; अुसमें निश्चयरूपसे जो अेक परमतत्त्व छिपा हुआ है, अुसकी तनिक-सी झाँकी हो, अुस पर श्रद्धा बनी रहे, अिसीमें जीवनकी सार्थकता है। अुस तत्त्वकी खोजमें ही परम पुरुषार्थ है।

यह नहीं कहा जा सकता कि मैं डरबन अेक दिन भी पहले पहुँचा था। मेरे लिअे वहाँ काम तैयार ही था। मि० चेम्बरलेनके पास डेप्युटेशनके जानेकी तारीख़ निश्चित हो चुकी थी। मुझे अुनके समक्ष पढ़नेके लिअे अेक प्रार्थना-पत्र तैयार करना था और डेप्युटेशनके साथ जाना था।

८ : दक्षिण अफ्रीकामें तीसरी बार

६५
नातालमें

मि० चेम्बरलेन दक्षिण अफ्रीकासे साढ़े तीन करोड़ पौंड लेने आये थे। वे अंग्रेज़ोंका और संभव हो, तो बोअरोंका मन हरण करने आये थे। अिस कारण हिन्दुस्तानी प्रतिनिधियोंको सूखा जवाब मिला।

'आप जानते हैं कि जिम्मेदार अुपनिवेशों पर बड़ी सरकारका अंकुश नाम-मात्रका ही है। आपकी शिकायत तो सच्ची मालूम होती है। मैं अपनी शक्तिभर यत्न करूँगा। लेकिन आपको, जिस तरह आपसे बन पड़े अुस तरह, यहाँके गोरोंको राज़ी रखकर रहना है।'

प्रतिनिधि अुत्तर सुनकर ठंडेगार हो गये। मैंने हाथ धो डाले। मुझे अैसा लगा कि 'जब जागे तभी सवेरा' समझकर फिरसे ककहरा घोटना होगा। साथियोंको समझाया।

मि० चेम्बरलेन ट्रान्सवालके लिअे रवाना हुअे। मुझे वहाँका केस तैयार करके पेश करना था। प्रिटोरिया किस तरह पहुँचा जाय?

लड़ाअीके बाद ट्रान्सवाल वीरान-सा हो गया था। खाने-पीनेको अनाज न था; पहनने-ओढ़नेको कपड़े न थे। जैसे-जैसे माल अिकट्ठा होता जाता था, वैसे-वैसे ही घरबार छोड़कर भागे हुअे लोगोंको वापस आने दिया जाता था। अिसके कारण हरअेक ट्रान्सवाल-वासीको पास लेना पड़ता था। गोरोंको तो यह पास माँगे ही मिल जाता था, हिन्दुस्तानियोंके लिअे मुश्किल थी।

जिस समय मैं वहाँ पहुँचा, अेशियावासियोंके लिअे नया विभाग खुल चुका था। वह धीमे-धीमे अपना जाल फैला रहा था। हिन्दुस्तानी आदमी अिस विभागके नाम अर्ज़ी भेजता। फिर कअी दिनों बाद

अुसे जवाब मिलता। ट्रान्सवाल जानेके अिच्छुक बहुतेरे थे। अतअेव अुनके लिअे दलाल खड़े हो गये। अिन दलालों और अफ़सरोंके बीच ग़रीब हिन्दुस्तानियोंके हज़ारों रुपये लुट गये। मुझसे कहा गया था कि बिना वसीलेके परवानेकी अिजाज़त मिलती ही नहीं, और कभी-कभी तो वसीलेके रहते भी फ़ी आदमी १००–१०० पौण्ड तक खर्च होता है। अिसमें मेरा पता कहाँ लगता?

मैं अपने पुराने मित्र डरबनके पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्टके पास पहुँचा। अुसने मेरे नामका परवाना जारी कर दिया। मैं प्रिटोरियाके लिअे रवाना हुआ।

प्रिटोरिया पहुँचा। अर्ज़ी तैयार की। यहाँ प्रतिनिधियोंके नाम पहलेसे पूछे गये। प्रिटोरियाके हिन्दुस्तानियोंको पता चल गया था, कि अिसमें हेतु मुझे अलग रखनेका था।

६६

ट्रान्सवालमें

नये विभागके अधिकारी समझ न सके कि मैं ट्रान्सवालमें दाखिल किस तरह हुआ। शांति-रक्षाका क़ानून यह था कि जो बिना परवानेके दाखिल हो, अुसे गिरफ़्तार किया जाय और क़ैदकी सज़ा दी जाय। अिस धाराके अनुसार मुझे गिरफ़्तार करनेकी चर्चाअें चलीं। लेकिन मुझसे परवाना माँगनेकी किसीकी हिम्मत न पड़ी। जब अधिकारियोंको मालूम हुआ कि मैं परवानेके साथ दाखिल हुआ हूँ, तब अुन्हें निराशा हुअी।

मुझे अिस विभागके अधिकारीसे मिलनेका संदेश मिला। मेरे नाम कोअी पत्र नहीं आया था। अग्रगण्य हिन्दुस्तानियोंको वहाँ निरन्तर जाना पड़ता था। अिस अधिकारीने तैय्यब सेठसे मेरे बारेमें पूछा। सेठके जवाबसे साहब नाराज़ हुअे और हुक्म किया—'गांधीको मेरे पास लाना।'

मैं तैय्यब सेठ वगैराके साथ गया। हम सब खड़े रहे। साहबने मुझसे साफ़ साफ़ कह दिया —

'आप यहाँके निवासी नहीं माने जा सकते। आपको तो वापस जाना होगा। आप मि० चेम्बरलेनके पास भी नहीं जा सकते। यहाँके हिन्दुस्तानियोंकी रक्षा करनेके लिअे तो हमारा विभाग विशेष रूपसे खोला गया है। अच्छा, जाअिये।'

साहबने मुझे जवाब देनेका समय ही नहीं दिया। दूसरे साथियोंको रोका। अुन्हें धमकाया और सलाह दी कि वे मुझे ट्रान्सवालसे विदा कर दें।

साथी कसैला मुँह लेकर बाहर आये। अिस प्रकार हमारे सामने अचानक ही अेक नअी समस्या खड़ी हो गअी।

मुझे अिस अपमानसे बहुत दु:ख हुआ। लेकिन पहले अिस प्रकारके अपमान सहन कर चुका था, अिसलिअे मैं पक्का हो रहा था। फलत: मैंने यह निश्चय किया कि अपमानकी परवाह न करके तटस्थ भावसे मुझे जो कर्त्तव्य सूझे, मैं करूँ।

अुक्त अधिकारीकी सहीसे अेक पत्र आया। अुसमें लिखा था कि मि० चेम्बरलेन डरबनमें मि० गांधीसे मिल चुके हैं, अिसलिअे अब अुनका नाम प्रतिनिधियोंमें से निकाल डालनेकी ज़रूरत है।

साथियोंको यह पत्र असह्य मालूम हुआ। अुन्होंने डेप्युटेशनके विचारको छोड़ देनेकी अिच्छा प्रकट की। मैंने अुन्हें क़ौमकी नाज़ुक हालत बताअी। मुझे क़ौमकी मर्यादाका अनुभव था। अिसलिअे मैंने साथियोंको शांत किया और मेरे बदले ज्यॉर्ज गॉडफ्रेको, जो हिन्दुस्तानी बैरिस्टर थे, ले जानेकी सलाह दी।

लेकिन अिससे क़ौमका और मेरा काम बढ़ा। मुझे ताना देकर कहनेवाले लोग भी मिले कि — 'आपके कहनेसे क़ौमने लड़ाअीमें हाथ बँटाया, लेकिन अुसका परिणाम तो यही निकला न?'

मुझ पर अिसका कोअी असर न हुआ। मैंने कहा — 'बीती बातोंका विचार करनेकी अपेक्षा यह सोचना अधिक अच्छा है कि अब हमारा कर्त्तव्य क्या है। सच पूछो तो जिस कामके लिअे मुझे बुलाया था,

वह तो अब पूरा हुआ माना जा सकता है। लेकिन मैं मानता हूँ कि आपकी ओरसे अनुमति मिल जाने पर भी मैं अब ट्रान्सवालसे न हटूंगा। अब मेरा काम नातालसे नहीं, बल्कि यहाँसे चलना चाहिये। मुझे अेक वर्षके अन्दर वापस जानेका विचार छोड़ देना चाहिये और यहाँ वकालतकी सनद हासिल करनी चाहिये। अिस नये विभागका सफलतापूर्वक सामना करनेकी हिम्मत मुझमें है। अगर अिसका अैसा सामना न किया गया, तो क़ौम लुट जायगी और शायद यहाँसे क़ौमका पैर अुखड़ जायगा।'

अिस तरह मैंने चर्चा चलाअी। प्रिटोरिया और जोहानिसबर्गमें रहनेवाले हिन्दुस्तानी अगुओंके साथ सलाह करके आखिर जोहानिसबर्गमें ऑफिस रखनेका निश्चय किया। मुझे सनद मिली। ऑफिसके लिअे मकान अच्छी जगहमें प्राप्त किया, और वकालत शुरू की।

६७
बढ़ती हुअी त्यागवृत्ति

आज तक कुछ-न-कुछ द्रव्य अेकत्र करनेकी अिच्छा रहती थी। परमार्थके साथ स्वार्थका मिश्रण था।

जब बम्बअीमें ऑफिस खोला, तो अेक अमेरिकन बीमा-दलाल मिलने आया था। अुसने मुझसे भावी कल्याणकी बातें कीं। अुस समय तक मैंने दक्षिण अफ्रीकामें और हिन्दुस्तानमें बहुतसे दलालोंको दाद नहीं दी थी। मेरा ख़याल यह था कि बीमा करानेमें कुछ-न-कुछ भीरुता और अीश्वरके प्रति अविश्वास है। किन्तु अिस बार मैं ललचाया। मैंने दस हज़ार रुपयोंकी पॉलिसी करवाअी।

किन्तु दक्षिण अफ्रीकाकी मेरी बदली हुअी परिस्थितिने मेरे विचार बदल डाले। दक्षिण अफ्रीकाकी नअी आपत्तिके समयमें मैंने जितने भी क़दम अुठाये, सब अीश्वरको साक्षी रखकर ही अुठाये थे। मुझे बिलकुल ही अन्दाज़ न था कि दक्षिण अफ्रीकामें मेरा कितना समय बीतेगा।

मुझे लगता था कि मैं वापस हिन्दुस्तान नहीं जा पाअूँगा। मुझे बाल-बच्चोंको अपने साथ ही रखना चाहिये। अब अुनका वियोग होना ही न चाहिये। अुनके भरण-पोषणका प्रबन्ध भी दक्षिण अफ्रीकामें ही होना चाहिये। अिस प्रकार विचार करनेके साथ ही मुझे अपनी वह पॉलिसी दुःखद प्रतीत हुआी। बीमा-दलालके जालमें फँसनेके लिअे मैं लज्जित हुआ। 'तूने यह कैसे मान लिया कि भाआी अगर बापके समान हैं, तो वे छोटे भाआीकी विधवाको भार-स्वरूप मानेंगे? यह भी क्यों सोचा कि तू ही पहले मरेगा? पालन करनेवाला तो अीश्वर ही है; न तू है और न भाआी। बीमा करवाकर तूने अपने बाल-बच्चोंको भी पराधीन बनाया। वे स्वावलम्बी क्यों न बनें? असंख्य गरीबोंके बाल-बच्चोंका क्या होता है? तू अपनेको अुनके समान क्यों नहीं मानता?'

अिस प्रकार विचार-प्रवाह चला। अिस पर अमल अेक-ब-अेक नहीं किया था। मुझे याद पड़ता है कि अेक किस्त तो दक्षिण अफ्रीकासे भी भेजी थी।

किन्तु अिस विचार-प्रवाहको बाहरका अुत्तेजन प्राप्त हुआ। दक्षिण अफ्रीकाकी अपनी पहली यात्रामें खिस्ती वातावरणके बीच पहुँचकर मैं धर्मके बारेमें जाग्रत रहा था। अिस बार थियोसॉफीके वातावरणमें रहा। मि० रीच थियोसॉफिस्ट थे। अुन्होंने मेरा संपर्क जोहानिसबर्गकी सोसायटीसे करा दिया। मैं अुसका सदस्य तो बना ही नहीं, फिर भी मैं प्रायः प्रत्येक थियोसॉफिस्टके गाढ़ संपर्कमें आया। अुनके साथ रोज धर्म-चर्चा होती। थियोसॉफीमें भ्रातृभाव पैदा करना और बढ़ाना मुख्य चीज है। हम अिस विषयकी खूब चर्चा करते थे। जहाँ मुझे सदस्योंके विश्वास और आचरणमें भेद नजर आता, वहाँ मैं टीका भी करता था। अिस टीकाका प्रभाव मेरे अपने अूपर काफ़ी अच्छा हुआ। मैं आत्म-निरीक्षण करने लग गया।

६८

निरीक्षणका परिणाम

थियोसॉफिस्ट मित्र मुझे अपने मंडलमें खींचना अवश्य चाहते थे। किन्तु अैसा करके वे हिन्दूके नाते मुझसे कुछ पानेकी अिच्छा रखते थे। थियोसॉफीकी पुस्तकोंमें हिन्दूधर्मकी छाया और छाप तो पुष्कल है ही; अिसलिअे अिन भाअियोंने माना कि मैं अुनकी मदद कर सकूंगा। मैंने अुन्हें समझाया कि संस्कृतका मेरा अभ्यास नहींके बराबर है। मैंने हिन्दू-धर्मके प्राचीन ग्रंथ संस्कृतमें पढ़े नहीं हैं। भाषान्तरके द्वारा भी मेरा वाचन कम ही हुआ है। किन्तु वहाँ मेरी हालत 'जहाँ झाड़ नहीं, तहाँ अेरण्ड ही झाड़' जैसी बन गअी। किसीके साथ विवेकानन्दका 'राजयोग' पढ़ना शुरू किया, तो किसीके साथ मणिलाल नभूभाअीका। अेक मित्रके साथ 'पातंजल योगदर्शन' पढ़ना पड़ा। कअियोंके साथ गीताका अभ्यास शुरू हुआ। 'जिज्ञासु-मंडल' के नामसे अेक छोटा-सा मंडल भी स्थापित किया, और नियमित अभ्यास शुरू हुआ। गीताके प्रति मेरा प्रेम और श्रद्धा तो थी ही। अब अुसमें गहरे पैठनेकी आवश्यकता अनुभव की। मेरे पास अेक-दो अनुवाद थे। अुनकी मददसे मूल संस्कृत समझ लेनेका प्रयत्न किया और प्रतिदिन अेक अथवा दो श्लोक कंठ करनेका निश्चय किया।

सुबह दतौन और स्नानके समयका अुपयोग मैंने कंठ करनेके लिअे किया। दतौनमें पंद्रह मिनट और स्नानमें बीस मिनट बीतते थे। दतौन अंग्रेजी ढंगसे खड़े-खड़े करता था। सामनेकी दीवार पर गीताके श्लोक लिखकर लटका देता और अुन्हें आवश्यकतानुसार देखता और रटा करता था। अिस तरह रटे हुअे श्लोक बादमें स्नानसे निपटते समय तक पक्के हो जाते। अिस बीच पिछले श्लोकोंका नित्य अेक पाठ हो जाता। अिस प्रकार मुझे याद है कि मैंने तेरह अध्याय तक गीता कंठाग्र कर ली थी।

मेरे लिअे गीताकी पुस्तक आचारकी अेक प्रौढ़ मार्ग-दर्शक पुस्तक बन गअी। अिस पुस्तकने मेरे धार्मिक कोशका काम किया। जिस प्रकार

अपरिचित अंग्रेज़ी शब्दके हिज्जों अथवा अुसके अर्थके लिअे मैं अंग्रेज़ी शब्द-कोश टटोलता था, अुसी प्रकार आचार-विषयक कठिनाअियों और अुसकी अटपटी पहेलियोंको मैं गीताजीकी मददसे सुलझाता था। अपरिग्रह, समभाव आदि शब्दोंने मुझे बाँध लिया। समभाव कैसे बढ़ाना, कैसे अुसकी रक्षा करना? अपमान करनेवाले अधिकारियों, रिश्वत लेनेवाले अधिकारियों, व्यर्थका विरोध करनेवालों, और कल तकके साथियों आदिके साथ ही जिन्होंने ज़बरदस्त अुपकार किया है, अैसे सज्जनोंके बीच भेद न करनेका अर्थ क्या? अपरिग्रहका पालन किस प्रकार होता होगा? देह अपने आपमें कौन कम परिग्रह है? स्त्री-पुत्रादि परिग्रह नहीं तो और क्या है? पुस्तकोंके ढेरोंवाली आलमारियाँ क्या जला देनी चाहियें? घर फूंककर तीर्थ करना चाहिये? तुरन्त ही अुत्तर मिला कि घर फूंके बिना तीर्थ होता ही नहीं। अंग्रेज़ी क़ानूनने मदद की। स्नेलकी क़ानून-विषयक सिद्धान्तोंकी चर्चाका स्मरण हुआ। गीताजीके अभ्यासके परिणाम-स्वरूप 'ट्रस्टी' शब्दका अर्थ विशेष रूपसे समझा। क़ानूनके शास्त्रके प्रति आदर बढ़ा। अुसमें भी मैंने धर्मके दर्शन किये। गीताजीसे मैं यह समझा कि ट्रस्टीके पास करोड़ोंकी संपत्ति होने पर भी मुमुक्षुको अपना बरताव अैसा रखना चाहिये, मानो ट्रस्टकी अेक पाअी भी अुसकी नहीं है। मुझे यह दीयेकी तरह साफ़ दीखा कि अपरिग्रही बननेमें, समभावी होनेमें हेतुका, हृदयका परिवर्तन आवश्यक है। रेवाशंकरभाअीको लिख डाला कि बीमेकी पॉलिसी खतम कर दें। कुछ वापस मिले तो ले लें, न मिले तो समझें कि दिये हुअे पैसे गये। बालकोंकी और स्त्रीकी रक्षा अुनका और हमारा सिरजनहार करेगा। अिस आशयका पत्र भेजा। पितृतुल्य भाअीको लिखा — 'अब तक तो मेरे पास जो बचा सो आपको अर्पित किया, अब मेरी आशा छोड़ दें। अब जो बचेगा, सो यहीं क़ौमके लिअे खर्च होगा।'

मैं भाअीको यह बात झट समझा न सका। पहले तो अुन्होंने मुझे कड़े शब्दोंमें, अपने प्रति मेरे धर्मका बोध कराया — 'मुझे पितासे अधिक चतुर न बनना चाहिये। जिस तरह पिताने परिवारका पोषण किया, अुस तरह मुझे भी करना चाहिये।' वग़ैरा। मैंने अुत्तरमें विनयपूर्वक लिखा

कि मैं पिताका ही काम कर रहा हूँ। यदि परिवारके अर्थको थोड़ा व्यापक वना लें, तो मेरी वात समझमें आने-जैसी मालूम होगी।

भाओीने आशा छोड़ी। लगभग अवोला-जैसा ले लिया। मुझे अिससे दुःख हुआ। लेकिन जिसे मैं धर्म समझता था, अुसे छोड़नेमें कहीं अधिक दुःख होता था। मैंने हलका दुःख सहन किया। फिर भी भाओीके प्रति मेरी भक्ति निर्मल और प्रचण्ड थी। भाओीका दुःख अुनके प्रेमसे पैदा हुआ था। अुन्हें मेरे पैसेसे भी वढ़कर मेरे सदाचारकी खास ज़रूरत थी।

अपने आखिरी दिनोंमें भाओी पसीजे। मृत्युशय्या पर पड़े-पड़े अुन्होंने अनुभव किया कि मेरा क़दम ही अच्छा और धर्मानुकूल था। अुनका अत्यन्त करुणाजनक पत्र मिला। यदि पिता पुत्रसे माफ़ी माँग सकता हो, तो अुन्होंने मुझसे माँगी। मुझे लिखा कि मैं अुनके लड़कोंकी परवरिश अपने ढंगसे करूँ। मुझसे मिलनेके लिअे अधीर हुअे। मुझे तार किया। मैंने तारसे जवाव दिया — 'आअिये।' लेकिन हमारा मिलाप वदा न था।

६९
निरामिषाहारकी भेंट

जीवनमें जैसे-जैसे त्याग और सादगी वढ़ी और धर्म-जागृतिमें वृद्धि हुअी, वैसे-वैसे निरामिषाहारका और अुसके प्रचारका शौक़ वढ़ता गया। प्रचारका काम मैंने अेक प्रकारसे ही करना जाना है — आचारसे, और आचारके साथ ही जिज्ञासुसे वातचीत करके।

थियोसॉफिस्ट मंडलकी अेक महिला साहसी थीं। अुसने वड़े पैमाने पर अेक निरामिषाहारी-गृह खोला। अिस महिलाको कलाका शौक़ था। काफ़ी खर्चीली थी और हिसावका वहुत भान न था। शुरूमें अुसका काम छोटे पैमाने पर चला। लेकिन अुसने अुसमें वृद्धि करने और वड़ी जगह प्राप्त करनेका निश्चय किया। अिसके लिअे मेरी मदद चाही। अुस समय मुझे अुसके हिसाव-किताबकी कोअी जानकारी न थी। मैंने मान लिया था कि अुसका अनुमान ठीक ही होगा। मेरे पास सुविधा थी।

कअी मुवक्किलोंकी रक़में मेरे पास रहती थीं। अुनमें से अेककी अिजाज़त लेकर अुसकी रक़ममें से लगभग अेक हज़ार पौंड दिये। कोअी दो-तीन महीनोंमें ही मुझे मालूम हो गया कि ये पैसे वापस नहीं मिलेंगे। अितनी बड़ी रक़म खोनेकी शक्ति मुझमें नहीं थी। मेरे पास अितने पैसोंका दूसरा अुपयोग था। पैसे वापस लौटे ही नहीं। किन्तु विश्वासू वद्रीके पैसे क्योंकर डूबते? अुसने तो मुझीको जाना था। मैंने वे पैसे भर दिये।

अपने अेक मुवक्किल मित्रसे मैंने पैसोंकी अिस लेन-देनकी चर्चा की। अुन्होंने मुझे मीठा अुलाहना देते हुअे जाग्रत किया —

"भाअी, (दक्षिण अफ्रीकामें 'महात्मा' न बना था, 'बापू' भी न था। मुवक्किल मित्र मुझे 'भाअी' कहकर ही बुलाते थे।) यह आपका काम नहीं। हम तो आपके विश्वास पर चलनेवाले हैं। ये पैसे आपको वापस नहीं मिलेंगे। वद्रीको तो आप बचा लेंगे और अपनी गाँठके खोयेंगे। किन्तु सुधारके अैसे कामोंमें सब मुवक्किलोंके पैसे देने लगेंगे, तो मुवक्किल मर मिटेंगे। और आप भिखारी बनकर घर बैठेंगे। अिससे आपके सार्वजनिक कामको धक्का पहुँचेगा।"

अिन मुवक्किलकी चेतावनी मुझे सच्ची लगी। वद्रीके पैसे तो मैं भर सका, लेकिन यदि अुन्हीं दिनों मैंने दूसरे हज़ार पौण्ड खोये होते, तो अुनकी भरपाअी करनेकी मुझमें थोड़ी भी शक्ति न थी, और मुझे क़र्ज़में ही डूबना पड़ता। और क़र्ज़का धन्धा तो मैंने अपने सारे जीवनमें कभी किया ही नहीं, और अुसके प्रति मेरे मनमें हमेशा भारी अरुचि रही है। मैंने देखा कि सुधारके लिअे भी अपनी शक्तिके बाहर जाना अुचित नहीं। मैंने यह भी अनुभव किया कि अिस प्रकारके लेन-देनमें पड़ कर मैंने गीताके तटस्थ निष्काम कर्मवाले मुख्य पाठका अनादर किया है। यह भूल मेरे लिअे दीपस्तम्भ बन गअी।

मेरे विविध प्रयोग

जैसे-जैसे मेरे जीवनमें सादगी बढ़ती गअी, वैसे-वैसे रोगोंके लिअे दवा लेनेकी अरुचि, जो शुरूसे ही थी, बढ़ती गअी। जब मैं डरबनमें वकालत करता था, तब डॉ० प्राणजीवनदास महेता मुझे बुलाने आये थे। अुन दिनों मुझे कमज़ोरी रहती थी और कभी-कभी सूजन भी आ जाती थी। अुन्होंने अिसका अिलाज किया था और अुससे मुझे आराम हुआ था। अुसके बाद मुझे वापस देश लौटने तक कोअी अुल्लेख योग्य व्याधि हुअी हो, सो याद नहीं पड़ता।

किन्तु जोहानिसबर्गमें मुझे क़ब्ज़ रहती और बीच-बीचमें सिर भी दुखा करता। रेचनकी कोअी न कोअी दवा लेकर स्वास्थ्य ठीक रखता था। भोजन तो हमेशा पथ्यकारक ही करता था, लेकिन अुससे मैं बिलकुल व्याधि-मुक्त नहीं हुआ। मनमें यह अिच्छा बनी ही रहती थी कि रेचनसे भी छुट्टी मिले तो अच्छा हो।

मैं तीन बार पेट भरकर खाता और दोपहरकी चाय भी पीता था। मैं कभी अल्पाहारी न था। निरामिषाहारमें भी बिना मसालेके जितने स्वाद किये जा सकते थे, करता था। छः-सात बजेसे 'पहले शायद ही अुठता था। मैंने 'नो ब्रेकफास्ट अेसोसिअेशन' के विषयमें पढ़ा। अुस परसे मुझे लगा कि यदि मैं सवेरेका खाना छोड़ दूँ, तो सिरके दर्दसे अवश्य ही मुक्ति पा जाअूँ। मैंने सवेरेका भोजन छोड़ा। कुछ दिन तक यह कठिन तो मालूम हुआ, लेकिन सिरका दर्द सदाके लिअे चला गया। अुस परसे मैंने यह नतीजा निकाला कि मेरी खुराक ज़रूरतसे ज़्यादा थी।

लेकिन अिस फेरफारसे क़ब्ज़की शिकायत दूर नहीं हुअी। क्यूनीके कटिस्नानके अुपचार किये, अुनसे थोड़ा आराम हुआ। मैंने मिट्टीके अुपचारके बारेमें पढ़ा, और अुसका अुपचार शुरू किया। मुझ पर

अुसका आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ा। अुससे क़ब्ज़की मेरी शिकायत बिलकुल मिट गयी। अिसके बाद मैंने अपने अूपर और अपने अनेक साथियों पर मिट्टीके अुपचार आज़माये हैं, और मुझे याद नहीं पड़ता कि अुनमें मैं कभी निष्फल हुआ हूँ।

देशमें आनेके बाद मैं अैसे अुपचारोंके संबंधमें आत्मविश्वास खो बैठा हूँ। प्रयोग करनेका और अेक जगह स्थिर बैठनेका मुझे अवसर भी नहीं मिल पाया। फिर भी मिट्टी और पानीके अुपचारोंके संबंधमें मेरी श्रद्धा जैसी शुरूमें थी, आज भी बहुत-कुछ वैसी ही है। मैं तो मानता हूँ कि मनुष्योंको दवा लेनेकी आवश्यकता क्वचित् ही होती है। पथ्य और पानी, मिट्टी अित्यादि घरेलू अुपचारोंसे अेक हज़ारमें से नौ सौ निन्यानवे केस अच्छे हो सकते हैं।

पल-पल पर वैद, हकीम और डॉक्टरके घर दौड़नेसे और शरीरमें अनेक प्रकारके पाकों और रसायनोंको भरनेसे मनुष्य अपने जीवनको न केवल अल्पायु बनाता है, बल्कि अपने मन परके क़ाबूको खो बैठता है। फलतः वह मनुष्यत्व खोता है और शरीरका स्वामी रहनेके बदले शरीरका ग़ुलाम बनता है।

मिट्टीके प्रयोगोंके जैसा मेरा आहारका भी प्रयोग था। अुसके संबंधमें मैंने 'आरोग्य-विषयक साधारण ज्ञान' * नामक पुस्तकमें विस्तारसे लिखा है। अुसमें लिखे गये अपने विचारोंमें फेरफार करनेकी आवश्यकता मैंने अनुभव नहीं की। फिर भी अपने आचारमें मैंने महत्त्वके फेरफार किये हैं।

अुक्त पुस्तकके लिखनेमें — अन्य लेखनकी भाँति — केवल धर्म-भावना ही कारण रूप थी, और वही आज भी मेरे प्रत्येक कार्यमें विद्यमान है। अिसलिअे अुसमें दिये गये कुछ विचारों पर मैं आज अमल नहीं कर सकता हूँ, अिससे मुझे खेद होता है और शरम मालूम होती है।

---

* 'आरोग्यकी कुंजी' के नामसे गांधीजीने यह पुस्तक दुबारा लिख डाली है; अिसका हिन्दी अनुवाद हमारे यहांसे प्रकाशित हो चुका है। अिसलिअे अब अुसे देखना चाहिये। —प्रकाशक

लेकिन मेरे भाग्यमें हिन्दुस्तानमें रहते हुअे अपने प्रयोगको सम्पूर्णता तक पहुँचाना बदा न था।

खाने-पीनेके साथ आत्माका कोअी संबंध नहीं। वह न खाती है, न पीती है। जो पेटमें जाता है वह नहीं, बल्कि जो वचन अन्दरसे निकलते हैं, वे हानि-लाभ पहुँचाते हैं, आदि दलीलोंको मैं जानता हूँ। अिनमें तथ्यांश है। लेकिन यहाँ तो दलीलमें अुतरे बिना मैं अपना यह दृढ़ निश्चय ही प्रकट किये देता हूँ कि जो अीश्वरसे डर कर चलना चाहता है, अैसे साधक और मुमुक्षुके लिअे अपने आहारका चुनाव — त्याग और स्वीकार — अुतना ही आवश्यक है, जितना विचार और वाणीका त्याग और स्वीकार आवश्यक है।

७१

बलवानके साथ मुठभेड़

अेशियाअी अधिकारियोंका बड़े-से-बड़ा केन्द्र जोहानिसबर्गमें था। अिस केन्द्रमें हिन्दुस्तानी, चीनी आदिका रक्षण नहीं, बल्कि भक्षण होता था, यह मुझे साफ़ दीख रहा था। मेरे पास रोज़ शिकायतें आतीं — 'हक़दार दाख़िल नहीं हो सकते और वग़ैर हक़वाले सौ-सौ पौण्ड देकर चले आ रहे हैं। अगर आप अिसका अिलाज न करेंगे, तो और कौन करेगा?' मेरी अपनी भी यही भावना थी। यदि यह सड़ाँध दूर न हुअी, तो मेरा ट्रान्सवालमें बसना व्यर्थ ही कहा जायगा।

मैं प्रमाण अेकत्र करने लगा। जब मेरे पास प्रमाणोंका अच्छा-सा संग्रह हो गया, तो मैं पुलिस-कमिश्नरके पास पहुँचा। अुसने मेरी बात धीरजसे सुनी और प्रमाण प्रस्तुत करनेको कहा। स्वयं ही साक्षियोंकी जाँच की। अुसे विश्वास हो गया, किन्तु मेरी तरह वह भी जानता था कि दक्षिण अफ्रीकामें गोरे पंचोंसे गोरे गुनहगारको दण्डित कराना कठिन था। फिर भी वह कारवाअी करनेके लिअे तैयार हुआ।

दो अधिकारियोंके बारेमें ज़रा भी शक न था, अिसलिअे अुन दोके नाम वारण्ट जारी हुअे, मुक़दमा चला। सबूत भी अच्छे मिले। फिर भी दोनों छूट गये!

मैं बहुत निराश हुआ। पुलिस-कमिश्नरको भी दुःख हुआ। मुझे वकीलके धंधेसे अरुचि अुत्पन्न हो गअी। पर यह देखकर कि बुद्धिका अुपयोग दोषको छिपानेमें किया जा रहा है, मुझे बुद्धि ही अप्रिय लगने लगी।

दोनों अधिकारियोंका अपराध अितना प्रसिद्ध हो चुका था कि अुनके बरी हो जाने पर भी सरकार अुन्हें निबाह तो सकी ही नहीं। दोनों बरखास्त किये गये और अेशियाअी केन्द्र कुछ स्वच्छ बना। अब क़ौमको तसल्ली हुअी और हिम्मत भी आअी।

मेरी प्रतिष्ठा बढ़ी। मेरा धंधा भी बढ़ा। क़ौमके जो सैकड़ों पौण्ड हर महीने रिश्वत ही में खर्च होते थे, अुनमें से बहुतसे बचे। जो अप्रामाणिक थे, वे तो अभी भी अपनी चराअी जारी रखे हुअे थे। किन्तु जो प्रामाणिक थे, वे अपनी प्रामाणिकताकी रक्षा कर सके थे।

ये अधिकारी अितने अधम थे, फिर भी व्यक्तिगत रूपसे मेरे दिलमें अुनके विरुद्ध कुछ न था। मेरे अिस स्वभावको वे जानते थे। और जब अुनकी कंगाल हालतमें मुझे अुन्हें मदद पहुँचानेका अवसर मिला था, तब मैंने अुनकी मदद भी की थी।

अिसका असर हुआ। गोरोंके जिस वर्गके सम्पर्कमें मैं आया, वे मेरे प्रति निर्भय बनने लगे; और यद्यपि मुझे अुनके विभागके विरुद्ध अक्सर लड़ना पड़ता था, तीखे शब्दोंका अुपयोग करना पड़ता था, फिर भी वे मेरे साथ मीठा सम्बन्ध रखते थे। अुन दिनों मुझे अिस बातका ठीक-ठीक ज्ञान नहीं था कि अिस प्रकारका व्यवहार मेरे स्वभावका अेक अंग ही था। बादमें यह बात मेरे समझमें आअी कि अैसे व्यवहारमें सत्याग्रहकी जड़ निहित है, और वह अहिंसाका अेक विशिष्ट अंग है।

मनुष्य और अुसका काम, ये दो भिन्न चीज़ें हैं। अच्छे कामोंके प्रति आदर और बुरोंके प्रति तिरस्कार होना ही चाहिये। किन्तु

अच्छे-बुरे काम करनेवालोंके प्रति हमेशा आदर अथवा दया होनी चाहिये। वैसे, समझनेमें यह चीज़ आसान है, फिर भी अिसका अमल कम-से-कम होता है। यही कारण है कि अिस दुनियामें ज़हर फैलता रहता है।

सत्यकी शोधके मूलमें अिस प्रकारकी अहिंसा मौजूद है। मैं प्रतिक्षण यह अनुभव करता रहता हूँ कि जब तक यह हाथमें न आवे तब तक सत्य मिलता ही नहीं। व्यवस्थाके विरुद्ध झगड़ा शोभा देता है, व्यवस्थापकके विरुद्ध झगड़ा करना अपने विरुद्ध करनेके समान है। क्योंकि सब अेक ही कूँचीसे चित्रित हैं, अेक ही ब्रह्माकी सन्तान हैं। व्यवस्थापकमें तो अनंत शक्तियाँ विद्यमान हैं। व्यवस्थापकका अनादर — तिरस्कार — करनेसे अुन शक्तियोंका अनादर होता है, और वैसा होनेसे व्यवस्थापकको और साथ ही दुनियाको नुक़सान पहुँचता है।

७२

अेक पुण्य स्मरण

मेरे जीवनमें बार-बार अैसी घटनायें घटती ही रही हैं, कि जिनके द्वारा मैं अनेक धर्मावलम्बियों और अनेक जातियोंके गाढ़ परिचयमें आ सका हूँ। अिन सबके अनुभव परसे यह कहा जा सकता है, कि मैंने अपनों और बिरानों, देशी और विदेशी, गोरों और कालों, हिन्दू और मुसलमान अथवा ख्रिस्ती, पारसी या यहूदीके बीच कभी कोअी भेद नहीं किया।

मेरा हृदय अैसे किसी भेदको पहचान ही न सका। अिस चीज़को मैं अपने लिअे गुण नहीं मानता, क्योंकि जिस प्रकार अहिंसा, ब्रह्मचर्य अपरिग्रह आदि यमोंके विकासके लिअे प्रयत्न करनेका और अु[illegible] प्रयत्नके अभी तक चालू रहनेका मुझे पूरा भान है, अुस तरह अि[illegible] प्रकारके अभेदको सिद्ध करनेके लिअे मैंने कोअी खास प्रयत्न कि[illegible] हो, अैसा मुझे याद नहीं पड़ता।

जब मैं डरबनमें वकालत करता था, तो अक्सर मेरे मुंशी या कारकुन मेरे साथ रहते थे। अुनमें हिन्दू और ख्रिस्ती थे, अथवा प्रांतकी दृष्टिसे कहूँ तो गुजराती और मद्रासी थे। मुझे याद नहीं पड़ता कि अुनके बारेमें मेरे मनमें कभी भेदभाव अुत्पन्न हुआ हो। अुन्हें मैं अपने परिवारका अंग ही मानता था और यदि अिसमें पत्नीकी ओरसे कोअी विघ्न आता, तो मैं अुससे लड़ता था।

अेक मुंशी ख्रिस्ती थे। अुनके माता-पिता पंचम जातिके थे। घरकी रचना पाश्चात्य ढंगकी थी। हर कमरेमें मोरीके बदले पेशाबके लिअे खास बरतन रहता था। अुसे अुठानेका काम नौकरका नहीं, बल्कि हम पति-पत्नीका था। पंचम कुलमें जनमे हुअे ये मुंशी नये थे। अुनका बरतन भी हमींको अुठाना था। कस्तूरबाअी दूसरे तो अुठाती थी, लेकिन अुसकी दृष्टिमें अिसे अुठाना हदसे बाहरकी बात थी। हमारे बीच कलह शुरू हुआ। मेरा अुठाना अुसे बरदाश्त न होता था और खुद अुसके लिअे अुसे अुठाना भारी हो गया था।

किन्तु मैं जितना प्रेमी अुतना ही घातक पति था। मैं अपनेको अुसका शिक्षक भी मानता था और अिस कारण अपने अन्धप्रेमके वश होकर अुसे खूब ही सताता था।

यों अुसके केवल बरतन अुठाकर ले जाने भरसे मुझे सन्तोष न हुआ। सन्तोष तो मुझे तभी हो, जब वह अुसे हँसते मुँह ले जाय। अिसलिअे मैंने दो बातें अूँचे स्वरमें कहीं। मैं बड़बड़ा अुठा— 'यह कलह मेरे घरमें नहीं चलेगा।'

यह वचन तीरकी तरह चुभा।

पत्नी धधक अुठी— 'तो अपना घर अपने पास रखो, मैं यह चली।'

मैं तो अीश्वरको भूल बैठा था। दयाका अंश भी न रह गया था। मैंने हाथ पकड़ा। सीढ़ीके सामने ही बाहर निकलनेका दरवाज़ा था। मैं अिस ग़रीबिनी अबलाको पकड़कर दरवाज़े तक खींच ले गया। दरवाज़ा आधा खोला।

आँखोंसे गंगा-जमुना वह रही थी, और कस्तूरवाआी वोली—

'आपको तो लाज नहीं है। मुझे है। तनिक तो शरमाअिये। मैं वाहर निकलकर जाअूँगी कहाँ? यहाँ माँ-वाप नहीं हैं, जो अुनके घर चली जाअूँ। मैं औरत हूँ, अिसलिअे मुझे आपके घूँसे खाने होंगे। अव जरा शरमाअिये और दरवाज़ा बन्द करिये। कोअी देख लेगा, तो दोनोंमें से किसी अेककी भी शोभा न रहेगी।'

मैंने मुँह तो लाल रखा, लेकिन साथ ही शरमिन्दा भी हुआ। दरवाज़ा बन्द कर लिया। यदि पत्नी मुझे नहीं छोड़ सकती थी, तो मैं भी अुसे छोड़कर कहाँ जानेको था? हमारे वीच झगड़े तो वहुत हुअे हैं, किन्तु परिणाम हमेशा मंगलकारी ही रहा है। पत्नीने अपनी अद्भुत सहनशक्तिसे विजय पाअी है।

यह घटना तो हमारे वीते युगकी है। आज न मैं मोहान्ध पति हूँ, न शिक्षक। कस्तूरवाअी चाहे तो आज मुझे धमका सकती है। आज हम कसौटी पर परखे हुअे मित्र हैं, अेक-दूसरेके प्रति निर्विकार वनकर रहते हैं। मेरी वीमारीमें विना किसी वदलेकी अिच्छा रखे मेरी सेवा-टहल करनेवाली वह सेविका है।

अूपरकी घटना सन् १८९८ में घटी थी। अुस समय मैं ब्रह्मचर्यके पालनके वारेमें कुछ भी जानता न था। यह वह समय था, जव मुझे अिस वातका स्पष्ट भान न था कि पत्नी केवल सहधर्मिणी, सहचारिणी और सुख-दुःखकी साथिन है। मैं जानता हूँ कि अुन दिनों मैं यह मानकर चलता था कि वह विषयभोगका भाजन है, और पतिकी चाहे जैसी आज्ञाको पालनेके लिअे पैदा हुअी है।

सन् १९०० के वर्षसे मेरे विचारोंमें गंभीर परिवर्तन हुआ। १९०६ में अुनकी परिणति हुअी। जैसे-जैसे मैं निर्विकार वनता गया, वैसे-वैसे मेरी घर-गृहस्थी शांत, निर्मल और सुखी वनती गअी है, और आज भी वनती जा रही है।

अिस पुण्य स्मरणसे कोअी यह न मान वैठे कि हम आदर्श दम्पती हैं। अथवा मेरी धर्मपत्नीमें कुछ भी दोष नहीं है। या कि

अब तो हमारे आदर्श अेक ही हैं। कस्तूरबाअीका अपना कोअी स्वतंत्र आदर्श है या नहीं, सो वह बेचारी खुद भी जानती न होगी। संभव है कि मेरे बहुतसे आचरण अुसे आज भी अच्छे न लगते हों। अिसके बारेमें हम कभी चर्चा नहीं करते, करनेमें सार नहीं। किन्तु अुसमें अेक गुण बहुत बड़ी मात्रामें है। अिच्छासे हो या अनिच्छासे, ज्ञानपूर्वक हो या अज्ञानपूर्वक, मेरे पीछे-पीछे चलनेमें अुसने अपने जीवनकी सार्थकता मानी है, और स्वच्छ जीवन बितानेके अपने प्रयत्नमें मुझे कभी रोका नहीं है। अिस कारण, यद्यपि हमारी बुद्धि-शक्तिमें बहुत अंतर है, तो भी मुझे यह लगा है कि हमारा जीवन सन्तोषी, सुखी और अूर्ध्वगामी है।

७३

अंग्रेज़ोंसे परिचय — १

जब यह कथा लिखनी शुरू की थी, मेरे पास कोअी योजना तैयार न थी। अिन अध्यायोंको मैं अपने सामने कुछ पुस्तकें, डायरी या दूसरे काग़ज़-पत्र रखकर नहीं लिख रहा हूँ। कहा जा सकता है कि लिखनेके दिन अन्तर्यामी मुझे जिस तरह कहता है, मैं अुस तरह लिखता हूँ। जो क्रिया मेरे अन्तरमें चलती है, मैं निश्चयपूर्वक नहीं जानता कि अुसे अन्तर्यामीकी क्रिया कहा जा सकता है या नहीं। लेकिन कअी वर्षोंसे मैंने जिस प्रकार अपने बड़े-से-बड़े माने गये और छोटे-से-छोटे गिने जानेवाले कार्य किये हैं, अुसकी छानबीन करते हुअे मुझे यह कहना अनुचित प्रतीत नहीं होता कि वे अन्तर्यामीकी प्रेरणासे हुअे हैं।

अन्तर्यामीको मैंने देखा नहीं, जाना नहीं। संसारकी अीश्वर-विषयक श्रद्धाको मैंने अपनी बना लिया है। यह श्रद्धा किसी प्रकार मिटाअी नहीं जा सकती, अिसलिअे अुसे श्रद्धारूपसे पहचानना छोड़कर मैं अनुभवके रूपमें ही पहचानता हूँ। फिर भी, अिस प्रकारसे अनुभवके रूपमें अुसका परिचय देना भी सत्य पर अेक प्रकारका प्रहार करना

है, असलिअे कदाचित् अधिक अुचित तो यह कहना ही होगा कि शुद्ध रूपमें अुसका परिचय करानेवाला शब्द मेरे पास नहीं है।

मेरी यह मान्यता है कि अुस अदृष्ट अन्तर्यामीके वशीभूत होकर मैं यह कथा लिख रहा हूँ।

अितिहासके रूपमें आत्मकथा-मात्रकी अपूर्णता और अुसकी कठिनाअियोंके बारेमें पहले मैंने जो पढ़ा था, आज अुसका अर्थ मैं अधिक समझता हूँ। मैं यह जानता हूँ कि सत्यके प्रयोगोंकी आत्मकथामें, जितना कुछ मुझे याद है, अुतना सब मैं हरगिज़ नहीं दे रहा हूँ। कौन जानता है कि सत्यका दर्शन करानेके लिअे मुझे कितना देना चाहिये? अथवा न्यायमंदिरमें अेकांगी और अधूरे प्रमाणोंकी क्या क़ीमत कूती जायगी?

अिस तरह सोचने पर क्षणभरके लिअे मनमें यही विचार आता है, कि क्या अिन अध्यायोंका लेखन बन्द कर देना ही अधिक योग्य न होगा? किन्तु आखिर अिस निश्चय पर पहुँचा हूँ कि जब तक शुरू किया हुआ काम स्पष्ट रूपसे अनीतिमय प्रतीत न हो, तब तक अुसे न छोड़नेके न्यायके अनुसार ही जब तक अन्तर्यामी न रोके, तब तक अिन अध्यायोंका लेखन मुझे जारी रखना है।

यह कथा टीकाकारोंको सन्तुष्ट करनेके लिअे नहीं लिखी जा रही। सत्यके प्रयोगोंमें यह भी अेक प्रयोग ही है। साथ ही, यह दृष्टि भी है ही कि अिससे साथियोंको कुछ आश्वासन मिलेगा। अिसका आरम्भ ही अुनके सन्तोषके लिअे है।

जिस प्रकार मैंने हिन्दुस्तानी कारकुनों और दूसरोंको अपने कुटुम्बियोंकी तरह रखा था, अुसी प्रकार मैं अंग्रेजोंको भी रखने लगा। मेरा यह व्यवहार मेरे साथ रहनेवाले सब लोगोंके लिअे अनुकूल न था। कुछ सम्बन्धोंके कड़ुअे अनुभव भी प्राप्त हुअे। किन्तु अैसे अनुभव तो देशी-विदेशी दोनोंके निमित्तसे हुअे। कड़ुअे अनुभवोंके लिअे मुझे पश्चात्ताप नहीं हुआ। कड़ुअे अनुभवोंके रहते भी, और यह जानते हुअे भी कि मित्रोंको असुविधा होती है और सहन करना पड़ता है, मैंने अपनी आदत नहीं बदली, और मित्रोंने अुसे अुदारतापूर्वक सहन

किया है। मेरा अपना विश्वास यह है कि आस्तिक मनुष्योंमें, जो अपनेमें विद्यमान अीश्वरको सबमें देखा चाहते हैं, सबके साथ अलिप्त होकर रहनेकी शक्ति आनी चाहिये। और वैसी शक्ति तभी विकसित की जा सकती है, कि जब जहाँ-जहाँ अनखोजे अवसर आवें, वहाँ-वहाँ अुनसे दूर न भागकर मात्र नये-नये सम्पर्क स्थापित किये जायँ, और वैसा करते हुअे भी राग-द्वेष-रहित रहा जाय।

अिसलिअे जब बोअर-ब्रिटिश-युद्ध शुरू हुआ, तब अपना घर भरा हुआ होते हुअे भी मैंने जोहानिसबर्गसे आये हुअे दो अंग्रेजोंको अपने यहाँ टिकाया। दोनों थियोसॉफिस्ट थे। अिन मित्रोंके सहवासने भी धर्मपत्नीको तो रुलाया ही था। मेरे निमित्तसे अुसके बाँटे रोनेके अवसर तो अनेक आये हैं। यद्यपि मुझे याद है कि अिन मित्रोंको रखनेमें कुछ कठिनाअियाँ खड़ी हुअी थीं, फिर भी मैं यह अवश्य कह सकता हूँ कि दोनों व्यक्ति घरके दूसरे लोगोंके साथ हिलमिल गये थे।

७४

अंग्रेज़ोंसे परिचय – २

अेक बार जोहानिसबर्गमें मेरे पास चार हिन्दुस्तानी कारकुन हो गये थे। मैं नहीं कह सकता कि अुन्हें कारकुन मानूँ या बेटे। किन्तु अिससे मेरा काम न सधा। टाअिपिंगके बिना तो काम चल ही न सकता था। टाअिपिंगका जो थोड़ा भी ज्ञान था, सो अेक मुझे ही था। अिन चार नौजवानोंमें से दोको टाअिपिंग सिखाया, किन्तु अंग्रेज़ीका ज्ञान कम होनेसे अुनका टाअिपिंग कभी अच्छा न हो सका। फिर अिन्हींमें से मुझे हिसाबनवीस भी तैयार करने थे। नातालसे अपनी अिच्छानुसार किसीको बुला न सकता था, क्योंकि बग़ैर परवानेके कोअी हिन्दुस्तानी दाखिल हो ही न पाता था। और अपनी सुविधाके लिअे मैं अधिकारियोंसे मेहरबानीकी भीख माँगनेको तैयार न था।

मैं सोचमें पड़ा। काम अितना बढ़ गया कि कितनी भी मेहनत क्यों न की जाय, मेरे लिअे यह संभव न रहा कि मैं वकालत और सार्वजनिक सेवा दोनोंको ठीकसे कर सकूँ।

कारकुनीके लिअे अंग्रेज़ स्त्री-पुरुषोंके मिलने पर भी मैं अुन्हें न रखूँ, अैसी कोअी बात न थी। अेक टाअिपराअिटिंग अेजण्टके द्वारा मुझे मिस डिक नामकी अेक स्कॉच कुमारिका मिल गअी। यह महिला हाल ही स्कॉटलैंडसे आअी थी। अुसे तुरन्त काम पर लगना था। हिन्दुस्तानीके अधीन काम करनेमें अुसे कोअी आपत्ति न थी। वह तुरन्त काम पर आने लगी।

अुसने केवल मेरे कारकुनका ही नहीं, बल्कि मैं यह मानता हूँ, कि सगी लड़की या बहनका पद तुरन्त ही आसानीसे ले लिया। मुझे शायद ही कभी अुसके काममें कोअी ग़लती निकालनी पड़ी हो। अेक समय अैसा था, जब हज़ारों पौंडका व्यवहार अुसके हाथमें था, और वह हिसाब-किताब भी रखने लग गअी थी। अुसने तो सम्पूर्ण रूपसे मेरा विश्वास सम्पादन कर लिया था। लेकिन मेरे मन बड़ी बात यह थी कि मैं अुसकी गुह्यतम भावनाओंको जानने जितना अुसका विश्वास सम्पादन कर सका था। अपना साथी पसन्द करनेमें अुसने मेरी सलाह ली। कन्यादान देनेका सौभाग्य मुझीको प्राप्त हुआ। विवाह हो जाने पर अुसने मेरा काम छोड़ दिया।

ऑफिसमें अेक शॉर्टहैण्ड राअिटरकी ज़रूरत तो बराबर रहती ही थी। अेक महिला अिसके लिअे भी मिल गअी। नाम था, मिस श्लेशिन। जब वह मेरे पास आअी, अुसकी अुमर कोअी सत्रह सालकी रही होगी। अुसकी कुछ विचित्रताओंसे मि० कैलनबैक और मैं दोनों हार जाते। वह नौकरी करनेके अिरादेसे नहीं आअी थी। अुसे तो अनुभव कमाने थे। अुसके स्वभावमें कहीं रंग-द्वेष तो था ही नहीं। किसीका भी अपमान करनेसे डरती न थी, और अपने मनमें जिसके बारेमें जो विचार आते, सो कहनेमें संकोच न रखती थी। अपने अिस स्वभावके कारण वह कभी-कभी मुझे परेशानीमें डाल देती, लेकिन अुसका सरल और शुद्ध स्वभाव सारी परेशानी दूर कर देता।

अुसकी त्यागवृत्तिका पार न था। अुसने अेक लम्बे समय तक तो मुझसे सिर्फ़ छः पौंड लिये, और दस पौंडसे अधिक लेनेसे तो अुसने अन्त तक साफ़ अिनकार ही किया। जब मैं अधिक लेनेको कहता, तो वह मुझे धमकाती और कहती — 'मैं वेतनके लिअे नहीं रही हूँ। मुझे तो आपके साथ यह काम करना अच्छा लगता है। और आपके आदर्श मुझे पसन्द हैं, अिसलिअे मैं टिकी हूँ।'

जैसी अुसकी त्यागवृत्ति तीव्र थी, वैसी ही अुसकी हिम्मत भी थी। मुझे स्फटिकमणि-सी पवित्रतावाली और क्षत्रियको भी चौंधियानेवाली वीरतासे युक्त जिन महिलाओंके सम्पर्कमें आनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है, अुनमें से अेक मैं अिस बालाको मानता हूँ।

काम करनेमें अुसने रात या दिनका कोअी भेद कभी जाना नहीं। जब हम सब जेलमें थे, शायद ही कोअी ज़िम्मेदार आदमी बाहर रहा था, तब वह अकेली समूची लड़ाअीको सँभाले हुअे थी। स्थिति यह थी कि लाखोंका हिसाब अुसके हाथमें, सारा पत्र-व्यवहार अुसके हाथमें, और 'अिण्डियन ओपीनियन' भी अुसके हाथमें। फिर भी वह थकना जानती न थी।

७५

अिंडियन ओपीनियन

अिसी अरसेमें श्री मदनजीतने 'अिंडियन ओपीनियन' अखवार निकालनेका विचार किया। मेरी सलाह और सहायता माँगी। छापाखाना तो वे चला ही रहे थे। अखवार निकालनेके विचारसे मैं सहमत हुआ। सन् १९०४ में अिस अखवारका जन्म हुआ। मनसुखलाल नाजर सम्पादक वने। किन्तु सम्पादनका असल वोझ मुझ पर ही पड़ा। मेरे भाग्यमें प्रायः हमेशा दूरसे ही अखवारकी व्यवस्था सँभालनेका योग रहा है।

यह अखवार साप्ताहिक था। मैंने यह न सोचा था कि अिसमें मुझे कुछ पैसे डालने होंगे। लेकिन कुछ ही समयमें मैंने देखा कि अगर मैं पैसे न दूँ, तो अखवार चले ही नहीं। मैं अुसमें पैसे अुँड़ेलता गया। मुझे अैसे समयकी याद है, जव मुझको हर महीने ७५ पौंड भेजने पड़ते थे।

किन्तु अितने वर्षोंके वाद मुझे लगता है कि अिस अखवारने क़ौमकी अच्छी सेवा की है। अिससे धन कमानेका अिरादा तो शुरूसे ही किसीका न था।

जव तक वह मेरे अधीन था, अुसमें किये गये परिवर्तन मेरे जीवनमें हुअे परिवर्तनोंके द्योतक थे। अुसमें मैं प्रतिसप्ताह अपनी आत्मा अुँड़ेलता था, और जिसे मैं सत्याग्रहके रूपमें पहचानता था, अुसे समझानेका प्रयत्न करता था। जेलके समयोंको छोड़कर दस वर्षोंके, अर्थात् सन् १९१४ तकके 'अिंडियन ओपीनियन' के शायद ही कोअी अंक अैसे होंगे, जिनमें मैंने कुछ न लिखा हो। अिसमें मैंने अेक भी शब्द विना विचारे, विना तौले लिखा हो, या किसीको केवल खुश करनेके लिअे लिखा हो, अथवा जानवूझकर अतिशयोक्ति की हो,

अैसी कोअी चीज मुझे याद नहीं पड़ती। मेरे लिअे यह अखबार संयमकी तालीम सिद्ध हुआ था। अुसके बिना सत्याग्रहकी लड़ाअी चल न सकती।

अिस अखबारके जरिये मैं मनुष्यके रंग-बिरंगी स्वभावको बहुत-कुछ जान पाया। सम्पादक और ग्राहकके बीच निकटका और स्वच्छ सम्बन्ध स्थापित करनेकी ही धारणा होनेसे मेरे पास हृदय अुंड़ेलनेवाले पत्रोंका ढेर लग जाता। अुन्हें पढ़ना, अुन पर विचार करना, अुनमें से विचारोंका सार लेकर अुत्तर देना, यह सब मेरे लिअे शिक्षाका अुत्तम साधन बन गया था। मैं सम्पादकके दायित्वको भली-भाँति समझने लगा, और मुझे क़ौमके लोगों पर जो प्रभुत्व प्राप्त हुआ, अुसके कारण भविष्यमें होनेवाली लड़ाअी हो सकी, शोभित हुअी और अुसे शक्ति मिली।

'अिंडियन ओपीनियन' के पहले महीनेके कारबारसे ही मैं अिस परिणाम पर पहुँच गया कि समाचारपत्र सेवाभावसे ही चलाने चाहियें। समाचारपत्र अेक जबरदस्त शक्ति है। किन्तु जिस प्रकार निरंकुश पानीका प्रवाह गाँवके गाँव डुबोता और फ़सलको नष्ट करता है, अुसी प्रकार निरंकुश क़लमका प्रवाह भी नाशकी सृष्टि करता है। यदि अैसा अंकुश बाहरसे आता है, तो वह निरंकुशतासे भी अधिक विषैला सिद्ध होता है। अंकुश अन्दरका ही लाभदायक हो सकता है।

७६

'कुली लोकेशन'

हिन्दुस्तानमें हम अपनी बड़ी-से-बड़ी समाज-सेवा करनेवाले ढेढ़-भंगी अित्यादिको गाँवसे बाहर अलग रखते हैं। गुजरातीमें अुनकी बस्तीको 'ढेढ़वाड़ा' कहते हैं और अुनका नाम लेते समय घिनाते हैं। अिसी प्रकार खिस्ती युरोपमें अेक ज़माना अैसा था, जब यहूदी लोग अस्पृश्य माने जाते थे, और अुनके लिअे जो 'ढेढ़वाड़ा' बसाया जाता था, अुसे 'घेटो' कहते थे। अिसी तरह दक्षिण अफ्रीकामें हम हिन्दुस्तानी वहाँके ढेढ़ बने थे।

दक्षिण अफ्रीकामें हम 'कुली' के नामसे 'मशहूर' हैं। यहाँ तो हम 'कुली' शब्दका अर्थ केवल मज़दूर करते हैं। लेकिन दक्षिण अफ्रीकामें अिस शब्दका जो अर्थ होता था, अुसे 'ढेढ़', 'पंचम' अित्यादि तिरस्कार-वाचक शब्दों द्वारा ही सूचित किया जा सकता है। वहाँ 'कुलियों' के रहनेके लिअे जो अलग जगह रखी जाती है, वह 'कुली लोकेशन' कहलाती है। जोहानिसबर्गमें अैसा अेक लोकेशन था। यहाँ निन्यानबे वर्षके लिअे ज़मीन पट्टे पर दी गअी थी। अुसमें हिन्दुस्तानियोंकी आबादी अत्यन्त घनी थी। बस्ती बढ़ती थी, किन्तु लोकेशन बढ़ नहीं सकता था।

सफ़ाअीकी रक्षा करनेवाले विभागकी अक्षम्य असावधानीसे और हिन्दुस्तानी बाशिन्दोंके अज्ञानके कारण निश्चय ही आरोग्यकी दृष्टिसे लोकेशनकी स्थिति खराब थी। अुक्त विभागने अुसे नष्ट करनेका निश्चय किया, और वहाँकी धारासभासे ज़मीन पर क़ब्ज़ा करनेकी सत्ता प्राप्त की।

वहाँ रहनेवाले अपनी ज़मीनके मालिक थे, अिसलिअे अुनको कुछ-न-कुछ नुक़सानी तो देनी ही चाहिये। नुक़सानीकी रक़म निश्चित करनेके लिअे खास अदालत क़ायम हुअी थी।

अधिकांश दावोंमें मकान-मालिकोंने मुझे अपना वकील किया था। मुझे अिस कामसे धन पैदा करनेकी अिच्छा न थी। मैंने अुनसे कह दिया था—'आप चाहे हारें, चाहे जीतें, मुझे पट्टे पीछे १० पौंड देंगे, तो काफ़ी होगा।' मैंने अुन्हें जताया कि अिसमें से भी आधोआध रक़म ग़रीबोंके लिअे अस्पताल बनाने या अैसे ही किसी सार्वजनिक काममें खर्च करनेके लिअे अलग रखनेका मेरा अिरादा है। यह सुनकर सब बहुत खुश हुअे।

अिन लोगोंने अपने खास दु:खोंको मिटानेके लिअे स्वतंत्र हिन्दुस्तानी व्यापारी वर्गके मंडलसे भिन्न अेक मंडलकी रचना की थी। अुसमें कुछ बहुत शुद्ध हृदयके, अुदार भावनावाले और चरित्रवान् हिन्दुस्तानी भी थे। अुनके द्वारा मैं अुत्तर-दक्षिणके अनगिनत हिन्दुस्तानियोंके गाढ़ सम्पर्कमें आया और केवल अुनका वकील ही नहीं, बल्कि भाअी बनकर भी रहा। सेठ अब्दुल्लाने मुझे गांधी नामसे पहचाननेसे अिनकार किया। अुन्होंने अेक अतिशय प्रिय नाम खोज लिया। वे मुझे 'भाअी' कहकर पुकारने लगे। दक्षिण अफ्रीकामें अन्त तक मेरा यही नाम रहा। लेकिन जब ये गिरमिट-मुक्त हिन्दुस्तानी मुझे 'भाअी' कहकर पुकारते, तो मुझको अुसमें अेक मिठास मालूम होती।

७७

महामारी – १

अिस लोकेशनकी मालिकीका पट्टा जब म्युनिसिपैलिटीने ले लिया, तो वहाँ रहनेवाले हिन्दुस्तानियोंको तुरन्त ही हटाया नहीं गया था। लेकिन दो परिवर्तन हुअे। हिन्दुस्तानी लोग मालिक न रहकर म्युनिसिपल विभागके किरायेदार बने और गन्दगी बढ़ी।

अिसके कारण हिन्दुस्तानियोंके दिलोंमें बेचैनी थी ही, कि अितनेमें अचानक महामारी फूट निकली। यह महामारी प्राण-घातक थी। यह फेफड़ोंकी बीमारी थी। गाँठवाली महामारीकी तुलनामें यह अधिक भयंकर मानी जाती थी। महामारीका आरंभ सोनेकी अेक खानसे हुआ था। वहाँ अधिकतर हब्शी काम करते थे। कुछ हिन्दुस्तानी भी थे। अुनमें से २३ को अचानक छूत लगी और भयंकर महामारीके शिकार बनकर वे लोकेशनमें अपने घर रहने आये।

अुस समय भाअी मदनजीत 'अिण्डियन ओपीनियन' के ग्राहक बनाने और चन्दा वसूल करने आये थे। ये बीमार अुनके देखनेमें आये और अुनका हृदय व्यथित हुआ। अुन्होंने मुझे चिट्ठी भेजकर तुरन्त आनेको लिखा।

मदनजीतने अेक खाली मकानका ताला निधड़क तोड़ डाला, और अुसे अपने क़ब्ज़ेमें लेकर अुसमें अिन बीमारोंको रखा। मैं अपनी साअिकल पर लोकेशन पहुँचा। वहाँसे टाअुन क्लार्कको हक़ीक़त भेजी।

डॉ० विलियम गॉडफ्रेको खबर मिलते ही वे दौड़े आये, और बीमारोंके डॉक्टर तथा नर्सका काम करने लगे।

अनुभवके सहारे मेरा यह विश्वास बना है कि भावना शुद्ध हो, तो संकटका सामना करनेके लिअे सेवक और साधन मिल ही

जाते हैं। मेरे ऑफिसमें चार हिन्दुस्तानी थे। अुन्हें कारकुन कहो, साथी कहो या पुत्र कहो, मैंने अुन्हें होमनेका निश्चय किया।

शुश्रूषाकी वह रात भयानक थी। डॉक्टरकी हिम्मतने हमको निडर बना दिया। बीमारोंकी अधिक सेवा-टहल हो सके, वैसी स्थिति न थी। चार नौजवानोंकी तनतोड़ मेहनत और निडरता देखकर मेरे हर्षका पार न रहा। अुस रात हमने किसी बीमारको न खोया।

७८

महामारी – २

दूसरे दिन म्युनिसिपैलिटीने अेक खाली गोदामका क़ब्ज़ा मुझे दिया और बीमारोंको वहाँ ले जानेकी सूचना की। हमने खुद ही अुसे साफ़ किया और वहाँ अेक तत्काल काम देनेवाला अस्पताल खड़ा कर दिया।

हम नर्सको क्वचित् ही बीमारोंको छूने देते थे। नर्स स्वयं छूनेको तैयार थी। लेकिन हमारी कोशिश यह थी कि अुसे जोखिममें न डालें।

बीमारोंको समय-समय पर ब्रेंडी देनेकी सूचना थी। छूतसे बचनेके लिअे नर्स हमें भी थोड़ी ब्रेंडी लेनेको कहती और खुद भी लेती। हममें से कोअी ब्रेंडी लेनेवाला न था। डॉक्टरकी अिजाज़तसे तीन बीमारों पर, जो ब्रेंडीके बिना रहनेको तैयार थे और मिट्टीके प्रयोग करने देनेको राज़ी थे, मैंने मिट्टीका प्रयोग शुरू किया, और अुनके माथे और छातीमें जहाँ-जहाँ दर्द होता था वहाँ मिट्टी रखना शुरू किया। अिन तीन बीमारोंमें से दो बचे, बाक़ीके सब बीमारोंका देहान्त हो गया।

जोहानिसबर्गसे सात मील दूर संक्रामक रोगियोंका अेक अस्पताल था। वहाँ तम्बू खड़े किये गये, और जो लोग महामारीकी चपेटमें आये, अुन्हें वहाँ ले जानेकी व्यवस्था की गअी। हम अिस कामसे मुक्त हुअे।

कुछ ही दिनोंमें अुस भली नर्सको महामारी हुअी और अुसका देहान्त हो गया। यह तो कोअी नहीं कह सकता कि वे बीमार क्योंकर बचे, और हमारे बीमारीसे मुक्त रहनेका कारण क्या हुआ। किन्तु मिट्टीके अुपचार पर मेरी श्रद्धा और दवाके रूपमें दारूके अुपयोगके बारेमें मेरी अश्रद्धा बढ़ी। मैं जानता हूँ कि यह श्रद्धा और अश्रद्धा दोनों बेबुनियाद माने जायँगे। परंतु अुस समय मुझ पर जो छाप पड़ी और जो अभी तक बनी हुअी है; अुसे मैं मिटा नहीं सकता।

अिस महामारीके शुरू होते ही मैंने अख़बारमें अिसके बारेमें अेक कड़ा पत्र लिखा था। अुस पत्रकी बदौलत मुझे मि० हेनरी पोलाक मिले, और वह पत्र ही जोसेफ डोककी मुलाक़ातका अेक कारण बना।

मैं अेक निरामिष भोजन-गृहमें जीमने जाता था। वहाँ मेरा परिचय मि० आल्बर्ट वेस्टके साथ हुआ। हम हमेशा शामको अुस गृहमें अेकत्र होते और खानेके बाद साथमें घूमने निकलते।

अेक लम्बे समयसे मेरा अपना यह नियम था, कि जब आसपास महामारीकी हवा हो, पेट जितना हलका रहे अुतना ही अच्छा। अिसलिअे मैंने शामका खाना बन्द कर दिया था, और दोपहरको अैसे समय पहुँचकर खा आता था, जब कि दूसरे कोअी पहुँचे न होते थे। चूँकि मैं महामारीके बीमारोंकी सेवामें लगा था, अिसलिअे दूसरोंके संपर्कमें कम-से-कम आना चाहता था।

मुझे भोजन-गृहमें न देखनेके कारण दूसरे या तीसरे ही दिन सबेरेके समय वेस्टने मेरे कमरेका दरवाज़ा खटखटाया। दरवाज़ा खोलते ही वे बोले —

'आपको भोजन-गृहमें न देखकर मैं तो घबरा अुठा था। अिसलिअे यह सोचकर कि अिस वक़्त तो आप मिल ही जायँगे, मैं यहाँ आया हूँ। मेरे कर सकने योग्य कोअी मदद हो, तो मुझसे कहिये। मैं बीमारोंकी सेवा-शुश्रूषाके लिअे भी तैयार हूँ।'

मैंने कहा — 'आपको नर्सके रूपमें तो मैं कभी न लूँगा। अगर नये बीमार न निकले, तो हमारा काम अेक-दो दिनमें ही पूरा हो जायगा। लेकिन अेक काम अवश्य है।'

'कौनसा?'

'क्या आप डरबन पहुँचकर 'अिण्डियन ओपीनियन' के प्रेसका प्रबन्ध अपने हाथमें लेंगे?' अुन्होंने अंतिम अुत्तर शाम तक देनेको कहा।

अुसी दिन शामको थोड़ी बातचीत की। वेस्टको हर महीने १० पौंडका वेतन और छापाखानेमें कुछ मुनाफा हो, तो अुसका अमुक भाग देनेका निश्चय किया। दूसरे ही दिन रातकी मेलसे वेस्ट डरबनके लिये रवाना हुअे, और अपनी अुगाहीका काम मुझे सौंपते गये। अुस दिनसे लेकर मेरे दक्षिण अफ्रीका छोड़नेके दिन तक वे मेरे सुख-दुःखके साथी रहे।

७९

लोकेशनकी होली

लोकेशनकी स्थितिके बारेमें म्युनिसिपैलिटी भले ही लापरवाह हो, किन्तु गोरे नागरिकोंके आरोग्यके विषयमें तो वह चौबीस घण्टे जाग्रत थी। अुनके आरोग्यकी रक्षाके लिअे खर्च करनेमें अुसने कोअी कसर न रखी, और अिस मौक़े पर महामारीको आगे बढ़नेसे रोकनेके लिअे तो अुसने पानीकी तरह पैसे बहाये। अुसके अिस शुभ प्रयत्नमें मुझसे जितनी मदद बन पड़ी, मैंने दी। मैं मानता हूँ कि यदि मैंने वैसी मदद न दी होती, तो म्युनिसिपैलिटीके लिअे काम मुश्किल हो जाता और कदाचित् वह बन्दूकके बलका अुपयोग करती और अपना चाहा सिद्ध करती।

लेकिन वैसा कुछ हो नहीं पाया। हिन्दुस्तानियोंके व्यवहारसे म्युनिसिपैलिटीके अधिकारी खुश हुअे। म्युनिसिपैलिटीकी माँगोंके अनुकूल बरताव करानेमें मैंने हिन्दुस्तानियों पर अपने प्रभावका पूरा-पूरा अुपयोग किया।

लोकेशनके आसपास पहरा बैठ गया। बिना अिजाज़त न कोओी लोकेशनके बाहर जा सकता था, न बिना अिजाज़त कोओी अन्दर घुस सकता था। मुझे और मेरे साथियोंको स्वतंत्रता-पूर्वक अन्दर जानेके परवाने दिये गये थे। म्युनिसिपैलिटीका अिरादा यह था कि लोकेशनमें रहनेवाले सब लोगोंको तीन हफ़्तेके लिअे जोहानिसबर्गसे तेरह मील दूर अेक खुले मैदानमें तम्बू गाड़कर बसाया जाय और लोकेशनको जला डाला जाय।

लोग बहुत घबराये। लेकिन चूँकि मैं अुनके साथ था, अिसलिअे अुन्हें तसल्ली थी। अिनमें से बहुतेरे ग़रीब अपने पैसे अपने घरोंमें गाड़कर रखते थे। बैंकका तो वे नाम भी न जानते थे। मैं अुनका बैंक बना। अैसे समय मैं कोओी मेहनताना तो ले ही न सकता था। जैसे-तैसे मैंने अिस कामको पूरा किया। अपने बैंकके मैनेजरसे मेरी अच्छी जान-पहचान थी। मैंने अुनसे कहा कि मुझे अुनके पास बैंकमें बहुतसी रक़म जमा करनी होगी। मैनेजरने मेरे लिअे सब प्रकारकी सुविधा कर दी। तय हुआ कि जन्तुनाशक पानीसे धोकर पैसे बैंकमें भेज दिये जायँ। लोकेशनमें रहनेवालोंको अेक स्पेशल ट्रेनमें क्लिपस्प्रुट फार्म पर ले गये। वहाँ अुनके लिअे सीधे-सामानकी व्यवस्था म्युनिसिपैलिटीने की। लोगोंको मानसिक दुःख हुआ। नया-नया-सा लगा। लेकिन कोओी ख़ास तकलीफ़ अुठानी नहीं पड़ी। मैं हर रोज़ अेक बार बाअीसिकल पर वहाँ हो आता था। अिस प्रकार तीन हफ़्ते खुली हवामें रहनेसे लोगोंके स्वास्थ्यमें अवश्य ही सुधार हुआ, और मानसिक दुःखको तो वे पहले चौबीस घण्टोंके अन्दर ही अन्दर भूल गये। अतअेव बादमें वे आनन्दसे रहने लगे।

जिस दिन लोकेशनको खाली किया, अुसके दूसरे दिन अुसकी होली की गअी। म्युनिसिपैलिटीने अुसकी अेक भी चीज़को बचानेका लोभ न किया। अिसका परिणाम यह हुआ कि महामारी आगे बढ़ ही न पाअी और शहर निर्भय बना।

अेक पुस्तकका चमत्कारिक प्रभाव

अिस महामारीने ग़रीब हिन्दुस्तानियों पर मेरे प्रभुत्व, मेरे धन्धे, और मेरी ज़िम्मेदारीको बढ़ा दिया। साथ ही युरोपियनोंके बीच मेरी बढ़ती हुअी कुछ जान-पहचान भी अितनी निकटकी होती गअी कि अुसके कारण भी मेरी नैतिक ज़िम्मेदारी बढ़ने लगी।

जिस तरह वेस्टसे मेरी जान-पहचान निरामिषाहारी भोजन-गृहमें हुअी, अुसी तरह पोलाककी बात बनी। अुनकी शुद्ध भावनासे मैं अुनकी ओर आकर्षित हुआ। पहली ही रातमें हम अेक-दूसरेको पहचानने लगे, और जीवन-विषयक अपने विचारोंमें हमें बहुत साम्य दिखाअी पड़ा।

'अिण्डियन ओपीनियन'का खर्च बढ़ता जाता था। वेस्टका पहला ही विवरण मुझे चौंकानेवाला था। अिस काममें न व्यवस्था थी, न मुनाफ़ा था।

मैं जानता हूँ कि अिस नअी जानकारीके कारण वेस्टकी दृष्टिमें मेरी गिनती अुन लोगोंमें हुअी होगी, जो जल्दीमें दूसरोंका विश्वास कर लेते हैं। सत्यके पुजारीको तो बहुत सावधानी रखनी चाहिये। पूरे विश्वासके बिना किसीके मन पर आवश्यकतासे अधिक प्रभाव डालना भी सत्यको लांछित करना है। अिस बातको जानते हुअे भी जल्दीमें विश्वास करके काम लेनेकी अपनी प्रकृतिको मैं ठीकसे सुधार नहीं सका। अिसमें मैं हैसियतसे अधिक काम करनेके लोभका दोष देखता हूँ। अिस लोभके कारण मुझे जितना बेचैन होना पड़ा है, अुसकी अपेक्षा मेरे साथियोंको कहीं अधिक बेचैन होना पड़ा है। वेस्टका अैसा पत्र आनेसे मैं नातालके लिअे रवाना हुआ। पोलाक तो मेरी सब बातें जानने लगे ही थे। वे मुझे छोड़ने स्टेशन तक आये और यह कहकर कि "यह पुस्तक रास्तेमें पढ़ने योग्य है, अिसे पढ़ जाअिये, आपको पसंद आयेगी," अुन्होंने रस्किनकी 'अन्टु दिस लास्ट' मेरे हाथमें रख दी।

अिस पुस्तकको हाथमें लेनेके बाद मैं छोड़ ही न सका। अिसने मुझे जकड़ लिया। ट्रेन शामको डरबन पहुँचती थी। पहुँचनेके बाद मुझे सारी रात नींद नहीं आअी। पुस्तकमें सूचित विचारोंको अमलमें लानेका अिरादा किया।

मेरा पुस्तकी ज्ञान बहुत ही कम है। अिस अनायास या बरबस पाले गये संयमसे मुझे कोअी नुक़सान नहीं हुआ। किन्तु जो थोड़ी पुस्तकें पढ़ी हैं, अुन्हें मैं ठीकसे हज़म कर सका हूँ। अैसी पुस्तकोंमें जिसने मेरे जीवनमें तत्काल महत्त्वके रचनात्मक परिवर्तन कराये, वैसी तो यही अेक पुस्तक कही जा सकती है। बादमें मैंने अुसका तरजुमा किया, और वह 'सर्वोदय' के नामसे छपा।

मेरा विश्वास यह है कि जो चीज़ मेरे अन्दर गहराअीमें छिपी पड़ी थी, रस्किनके अिस ग्रन्थरत्नमें मैंने अुसका स्पष्ट प्रतिबिंब देखा, और अिस कारण अुसने मुझ पर अपना साम्राज्य जमाया, और मुझसे अुसमें दिये गये विचारोंको क्रियान्वित कराया।

मैं 'सर्वोदय' के सिद्धान्तको अिस प्रकार समझा हूँ —

१. सबकी भलाअीमें अपनी भलाअी मौजूद है।

२. वकील और नाअी दोनोंके कामकी क़ीमत अेक-सी होनी चाहिये, क्योंकि आजीविकाका हक़ सबके लिअे अेक समान है।

३. सादा, मज़दूरीका, किसानका जीवन ही सच्चा जीवन है।

पहली चीज़ मैं जानता था। दूसरीको मैं धुँधले रूपमें देखता था। तीसरीका मैंने विचार ही नहीं किया था। 'सर्वोदय' ने मुझे दीयेकी तरह दिखा दिया कि पहलेमें दूसरे दोनों समाये हुअे हैं। सबेरा हुआ, और मैं अिस पर अमल करनेके प्रयत्नमें लगा।

८१

फिनिक्सकी स्थापना

सुबह वेस्टके साथ बातचीत करके मैंने सुझाया कि 'अिण्डियन ओपीनियन' को अेक खेत पर ले जाना चाहिये। वहाँ सब अपने खान-पानके लिअे आवश्यक खर्च समान रूपसे लें, सब अपनी खेती करें और बाक़ीके वक़्तमें 'अिण्डियन ओपीनियन' का काम करें। वेस्टने अिस सुझावको स्वीकार किया।

प्रेसमें कोअी दस काम करनेवाले थे। मैंने अुनसे बातचीत शुरू की। दो जने संस्थामें शामिल होनेको तैयार हुअे। दूसरोंने क़बूल किया कि मैं जहाँ प्रेस ले जाअूँगा, वहाँ वे आवेंगे।

तुरन्त ही मैंने डरबनसे तेरह मील और फिनिक्ससे ढाअी मील दूर अेक ज़मीन अेक हज़ार पौंडमें खरीदी। वहाँ कारखाना खड़ा किया, और रहनेके घर बनाये। सगे-संबंधी आदि जो धन कमानेकी अुमंगसे दक्षिण अफ्रीका आये थे, अुनको अपने मतमें मिलाने और फ़िनिक्समें भरती करनेकी कोशिश मैंने शुरू की। कुछ लोग समझे। अुन सबमें से आज मैं मगनलाल गांधीका नाम अलगसे लेता हूँ। अपने धंधेको समेटकर जबसे वे मेरे साथ आये हैं, तबसे बराबर टिके हैं, और अपने बुद्धिबलसे, त्यागशक्तिसे तथा अनन्य भक्तिसे वे मेरे आन्तरिक प्रयोगोंके मूल साथियोंमें आज प्रधान पदके अधिकारी हैं, तथा स्वयंशिक्षित कारीगरके नाते मेरे विचारमें वे अुनके बीच अद्वितीय स्थान रखते हैं।

अिस प्रकार सन् १९०४ में फिनिक्सकी स्थापना हुअी।

८२

पोलाक

मेरे लिअे यह हमेशा दुःखकी बात रही है कि फिनिक्स-जैसी संस्थाकी स्थापना करनेके बाद मैं स्वयं अुसमें बहुत ही कम रह सका। अिसकी स्थापनाके समय मेरी कल्पना यह थी कि मैं भी वहीं जा बसूंगा, अपनी आजीविका अुसमें से प्राप्त करूँगा, धीमे-धीमे वकालत छोड़ दूंगा, फिनिक्समें रहते हुअे जो सेवा बन पड़ेगी सो करूँगा, और फिनिक्सकी सफलताको ही सेवा समझूंगा। किन्तु जैसा सोचा था, अिन विचारोंका वैसा अमल हो ही न पाया। मैंने अक्सर अपने अनुभवसे यह देखा कि हम चाहते हैं कुछ, और होता कुछ और ही है। लेकिन अिसके साथ ही मैंने यह अनुभव भी किया है, कि जहाँ सत्यकी ही साधना और अुपासना होती है, वहाँ परिणाम चाहे हमारी धारणाके अनुसार न निकले, तो भी जो अनसोचा परिणाम निकलता है, वह अकुशल नहीं होता, और कभी-कभी अपेक्षासे अधिक अच्छा होता है। फिनिक्समें जो अनपेक्षित परिणाम निकले और फिनिक्सने जो अनपेक्षित स्वरूप धारण किया, वह अकुशल नहीं था, अितनी बात तो मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ।

संस्थाका काम अभी बिलकुल व्यवस्थित न हो पाया था कि अितनेमें अिस नवनिर्मित परिवारको छोड़कर मैं जोहानिसबर्ग भागा। मेरी अैसी स्थिति नहीं थी कि मैं वहाँके कामको लम्बे समयके लिअे छोड़ सकता।

फिनिक्ससे लौटकर मैंने पोलाकको अिस महत्त्वके परिवर्तनकी बात सुनाअी। अपनी दी हुअी पुस्तकका यह परिणाम देखकर अुनके आनन्दका पार न रहा। वे भी फिनिक्स पहुँच गये।

किन्तु मैं ही अुनको लम्बे समय तक वहाँ रख न पाया। मि० रीचने विलायत जाकर क़ानूनकी पढ़ाअी पूरी करनेका निश्चय किया। फलतः

मैंने पोलाकको सुझाया कि वे ऑफिसमें रहें और वकीलका काम करें। मैंने सोचा यह था कि अुनके वकील वन जानेके बाद आखिर हम दोनों फिनिक्स ही जा पहुँचेंगे।

ये सारी कल्पनायें खोटी ठहरीं। पोलाकको फिनिक्सका जीवन पसन्द था; किन्तु चूँकि मुझ पर अुनका विश्वास था, अिसलिअे मुझसे कोअी दलील न करके वे मेरे कहने पर जोहानिसवर्ग आये और मेरे ऑफिसमें वकालती कारकुनकी तरह काम करने लगे।

अिस प्रकार फिनिक्सके आदर्श तक झटपट पहुँचनेके शुभ विचारसे मैं अुसके विरोधी जीवनमें अधिकाधिक गहरा अुतरता दिखाअी पड़ा; और यदि अीश्वरी संकेत भिन्न ही न होता, तो सादे जीवनके नाम पर फैलाये गये मोहजालमें मैं खुद ही फँस जाता।

८३

मित्रोंके विवाह

अब मैंने अिस बातकी आशा छोड़ दी थी कि जल्दी ही देश जाने अथवा वहाँ जाकर स्थिर होनेका अवसर मिलेगा। अिसलिअे पत्नी और बच्चोंको बुलानेका निश्चय किया।

पोलाकको अपने साथ ही रहनेके लिअे निमंत्रित किया, और हम सगे भाअीकी तरह रहने लगे। जिस महिलाके साथ पोलाकका विवाह हुआ, अुसके साथ अुनकी मित्रता तो पिछले कअी वर्षोंसे थी, किन्तु पोलाक थोड़े धन-संग्रहकी बाट जोह रहे थे। मैंने दलील देते हुअे कहा — 'जिसके साथ हृदयकी गाँठ बँध गअी है, मात्र धनकी कमीके कारण अुसका वियोग सहना अनुचित है। आपके हिसाबसे तो कोअी गरीब विवाह कर ही नहीं सकता। फिर, अब तो आप मेरे साथ रहते हैं, अिसलिअे घरखर्चका सवाल ही नहीं अुठता। मैं तो यह अिष्ट समझता हूँ कि आप जल्दी ही अपना विवाह कर लें।' अुन्होंने मेरी दलीलको तुरन्त ही मान लिया। भावी मिसेस पोलाक तो विलायतमें

थीं। कुछ ही महीनोंमें वे विवाहके लिअे जोहानिसवर्ग आ पहुँचीं। वड़े मजिस्ट्रेटके सामने अुनके विवाहकी रजिस्ट्री हुअी।

अिस समय तक ब्रह्मचर्य-विषयक मेरे विचार परिपक्व नहीं हुअे थे। अिसलिअे मेरा धंधा कुँआरे मित्रोंका विवाह करा देनेका था। जव वेस्टके लिअे पितृ-यात्रा करनेका समय आया, तो मैंने अुन्हें सलाह दी थी कि जहाँ तक वन पड़े वे अपना व्याह करके ही लौटें, और अुन्होंने अुस पर अमल भी किया।

जिस तरह अिन गोरे मित्रोंके व्याह करवाये, अुसी तरह हिन्दुस्तानी मित्रोंको प्रोत्साहित किया, कि वे अपने परिवारोंको वुला लें। अिसके कारण फिनिक्स अेक छोटा-सा गाँव वन गया।

८४

घर और शिक्षा

डरवनमें जो घर वसाया था, अुसमें परिवर्तन तो किये ही थे। खर्च अधिक रखा था। फिर भी झुकाव सादगीकी तरफ़ था। किन्तु जोहानिसवर्गमें 'सर्वोदय' के विचारोंने अधिक परिवर्तन कराये।

'वैरिस्टरके घरमें जितनी सादगी रखी जा सकती थी अुतनी तो रखनी शुरू कर ही दी। सच्ची सादगी तो मनकी वढ़ी। हरअेक काम अपने हाथों करनेका शौक़ वढ़ा और वालकोंको भी अुसमें पलोटना शुरू किया।

वाज़ारकी रोटी खरीदनेके वदले हाथसे रोटी वनाना शुरू किया। सात पौंड खर्च करके हाथसे चलानेकी अेक चक्की खरीदी। अिस चक्कीको चलानेमें पोलाक, मैं और वालक मुख्यतः भाग लेते थे। वालकोंके लिअे यह कसरत वहुत अच्छी सिद्ध हुअी।

घर साफ़ रखनेके लिअे अेक नौकर था। वह कुटुम्वीजनकी तरह रहता था, और अुसके काममें वालक पूरा हाथ वँटाते थे।

मैं यह तो नहीं कहूँगा कि बालकोंके अक्षरज्ञानके प्रति मैं लापरवाह रहा, लेकिन यह ठीक है कि मैंने अुसका त्याग करनेमें संकोच न किया। अुन्हें अक्षरज्ञान करानेकी अिच्छा बहुत थी, प्रयत्न भी करता था, किन्तु अिस काममें हमेशा कोअी-न-कोअी विघ्न आ जाता। अुनके लिअे घर पर दूसरी शिक्षाकी सुविधा नहीं की थी। यदि मैं अुन्हें अक्षरज्ञान करानेके लिअे अेक घण्टा भी नियमित रूपसे बचा सका होता, तो मैं मानता कि अुन्हें आदर्श शिक्षा प्राप्त हुअी है। मैंने अैसा आग्रह न रखा, अिसका दुःख मुझे और अुन्हें दोनोंको रह गया है। अिस त्रुटिके लिअे मुझे पश्चात्ताप नहीं; अथवा है भी, तो अितना ही कि मैं आदर्श पिता न बन सका। किन्तु मेरी राय यह है कि अुनके अक्षरज्ञानका होम भी मैंने, अज्ञानसे ही क्यों न हो, फिर भी सद्भावपूर्वक मानी गअी सेवाके लिअे किया है। मैं यह कह सकता हूँ कि अुनके चरित्र-निर्माणके लिअे जितना कुछ आवश्यक रूपसे करना चाहिये था, सो करनेमें मैंने कहीं भी त्रुटि नहीं रखी है।

८५

ज़ूलू 'विद्रोह'

घर बसाकर बैठनेके बाद स्थिर होकर बैठना मेरे नसीबमें रहा ही नहीं। जोहानिसबर्गमें मैं कुछ स्थिर-सा होने लगा था, कि अितनेमें ही अेक अनसोची घटना घटी। खबर पढ़नेको मिली कि नातालमें ज़ूलू 'विद्रोह' हुआ है। मुझे ज़ूलू लोगोंसे दुश्मनी न थी। 'विद्रोह' के औचित्यके विषयमें भी मुझे शंका थी। किन्तु अुन दिनों मैं अंग्रेजी सल्तनतको संसारका कल्याण करनेवाली सल्तनत मानता था। मेरी वफ़ादारी हार्दिक थी। मैंने पढ़ा कि स्वयंसेवकोंकी सेना अिस विद्रोहको दबानेके लिअे रवाना हो चुकी है।

मैं अपनेको नातालवासी मानता था। अिस कारण मैंने गवर्नरको पत्र लिखा कि अगर ज़रूरत हो तो घायलोंकी सेवा करनेवाले हिन्दुस्तानियोंकी अेक टुकड़ी लेकर मैं सेवाके लिअे जानेको तैयार हूँ। तुरन्त ही गवर्नरका स्वीकृति-सूचक जवाव मिला। अुक्त पत्र लिखनेसे पहले ही मैंने अपना प्रबंध तो कर ही लिया था। तय यह किया था, कि यदि मेरी माँग मंजूर हो जाय, तो जोहानिसवर्गके घरको अुठा देंगे, मि० पोलाक अलग घर लेकर रहेंगे, और कस्तूरवाअी फिनिक्स जाकर रहेंगी। अिस योजनाको कस्तूरवाअीकी पूर्ण सम्मति प्राप्त हुअी।

डरवन पहुँचने पर मैंने चौवीस आदमियोंकी टुकड़ी तैयार की। अिस टुकड़ी ने छः हफ़्ते सतत सेवा की।

केन्द्र पर पहुँचनेके वाद जव हमारे हिस्से मुख्यत: जूलू घायलोंकी सुश्रूषा करनेका ही काम आया, तो मैं वहुत ख़ुश हुआ। वहाँके डॉक्टर अधिकारीने हमारा स्वागत किया। अुसने कहा—'कोअी गोरे अिन घायलोंकी सेवा करनेके लिअे तैयार नहीं होते।' वीमार हमें देखकर ख़ुश हो गये। गोरे सिपाही हमें ज़ख़म साफ़ करनेसे रोकनेका प्रयत्न करते; हमारे न मानने पर खीझते और जूलूओंके वारेमें जैसे गन्दे शव्दोंका अुपयोग करते, अुनसे तो कानके कीड़े झड़ जाते।

धीरे-धीरे अिन सिपाहियोंके साथ भी मेरा परिचय हो गया, और अुन्होंने मुझे रोकना वन्द कर दिया। अुनमें से कोअी पेशेदार सिपाही न थे; वल्कि सव स्वयंसेवक थे।

जिन वीमारोंकी सेवा-सुश्रूषाका काम हमें सौंपा गया था, अुन्हें कोअी लड़ाअीमें घायल हुअे न मानता था। अुनमें से अेक हिस्सा अुन क़ैदियोंका था, जो शकमें पकड़े गये थे। जनरलने अुन्हें कोड़े खानेकी सज़ा दी थी। अिन कोड़ोंसे जो घाव पैदा हुअे थे, सार-सँभालके अभावमें वे पक गये थे। दूसरा भाग अुन लोगोंका था, जो जूलूओंके मित्र माने जाते थे। अिन मित्रोंको सिपाहियोंने भूलसे घायल किया था, यद्यपि अिन्होंने मित्रता-सूचक चिह्न पहन रखे थे।

हृदय-मंथन

'जूलू-विद्रोह' में मुझे बहुतसे अनुभव आये और बहुत सोचनेको भी मिला। बोअर-युद्धके समयमें मुझे लड़ाअीकी भयंकरता अितनी प्रतीत नहीं हुअी थी, जितनी यहाँ प्रतीत हुअी। यहाँ लड़ाअी नहीं थी, किन्तु मनुष्यका शिकार था। मुझे अिसमें रहना बहुत कठिन मालूम हुआ। लेकिन मैं सब कुछ कड़ुअी घूँटकी तरह पी गया, और मेरे हिस्से जो काम आया है, सो तो केवल जूलू लोगोंकी सेवाका आया है, अिस विचारके सहारे मैंने अपनी अन्तरात्माको शांत किया।

यहाँ बस्ती बहुत कम थी। पहाड़ों और खाअियोंमें भले, सादे और जंगली माने जानेवाले जूलू लोगोंके कूबोंको छोड़कर और कुछ न था। अिस कारण दृश्य भव्य मालूम होता था। जब अिस निर्जन प्रदेशमें हम किसी घायलको लेकर अथवा यों ही मीलों पैदल जाते होते थे, तब मैं सोचमें डूब जाता था।

यहाँ ब्रह्मचर्यके बारेमें मेरे विचार परिपक्व हुअे। मैंने अपने साथियोंसे भी अिसकी थोड़ी चर्चा की। मुझे अभी अिस बातका साक्षात्कार तो नहीं हुआ था, कि अीश्वर-दर्शनके लिअे ब्रह्मचर्य अनिवार्य वस्तु है, किन्तु मैं यह स्पष्ट देख सका था कि सेवाके लिअे यह आवश्यक है। मुझे लगा कि अिस प्रकारकी सेवा तो मेरे हिस्से अधिकाधिक आती रहेगी, और यदि मैं भोगविलासमें, संतानोत्पत्तिमें और संततिके पालन-पोषणमें लगा रहूँ, तो मुझसे संपूर्ण सेवा नहीं हो सकेगी। मैं दो घोड़ों पर सवारी नहीं कर सकता। यदि पत्नी सगर्भा होती, तो मैं निश्चिन्त भावसे अिस सेवामें प्रवृत्त हो ही न सकता। ब्रह्मचर्यका पालन किये बिना परिवारकी वृद्धि करते रहना समाजके अभ्युदयके लिअे किये जानेवाले मनुष्यके प्रयत्नका विरोध करनेवाली वस्तु बन जाती है। विवाहित होते हुअे भी ब्रह्मचर्यका पालन किया जाय, तो परिवारकी सेवा समाज-सेवाकी

विरोधी न बने। मैं अिस प्रकारके विचार-चक्रमें फँस गया और व्रत
ले लेनेके लिअे कुछ अधीर भी बन गया। अिन विचारोंसे मुझे अेक
प्रकारका आनन्द हुआ और मेरा अुत्साह बढ़ा। कल्पनाने सेवाके क्षेत्रको
बहुत विशाल बना दिया।

फिनिक्स पहुँचकर मैंने तो व्रत ले लिया कि अबसे आगे जीवन-
भर ब्रह्मचर्यका पालन करूँगा। अुस समय मैं अिस व्रतके महत्त्व और
अिसकी कठिनाअियोंको पूरी तरह समझ न सका था। अिसकी
कठिनाअियोंका अनुभव तो आज तक करता रहता हूँ। अिसके
महत्त्वको दिन-दिन अधिकाधिक समझता जाता हूँ।

ब्रह्मचर्यका आरंभ शारीरिक अंकुशसे होता है। किन्तु शुद्ध
ब्रह्मचर्यमें तो विचारकी मलिनता भी न रहनी चाहिये। संपूर्ण ब्रह्मचारीके
तो स्वप्नमें भी विकारी विचार नहीं होते। और जहाँ तक विकारी
सपने आते हैं, वहाँ तक यह मानना चाहिये कि ब्रह्मचर्य बहुत अपूर्ण है।

मुझे कायिक ब्रह्मचर्यके पालनमें भी महान् कष्ट सहना पड़ा है।
आज यह कहा जा सकता है कि मैं अुसके विषयमें निर्भय बना हूँ।
लेकिन मुझे अपने विचारों पर जो जय प्राप्त करनी चाहिये, सो मुझे मिल
नहीं सकी है। मुझे नहीं लगता कि मेरे प्रयत्नमें न्यूनता रहती है।
लेकिन मैं अभी तक यह समझ नहीं सका हूँ कि हम जिन विचारोंको
नहीं चाहते, वे हम पर कहाँसे और किस प्रकार हमला करते हैं। मुझे
अिसमें संदेह नहीं है कि मनुष्यके पास विचारोंको भी रोकनेकी चाबी है।
लेकिन अभी तो मैं अिस निर्णय पर पहुँचा हूँ कि यह चाबी भी
हरअेकको अपने लिअे खुद खोज लेनी है।

अिस प्रकार जिस ब्रह्मचर्यका पालन मैं अिच्छा अथवा अनिच्छासे
सन् १९०० से करता आया हूँ, व्रतपूर्वक अुसका आरंभ सन् १९०६ के
मध्यसे हुआ।

८७
आहारके अधिक प्रयोग

मन-वचन-कायासे ब्रह्मचर्यका पालन कैसे हो, यह अेक फ़िकर; और सत्याग्रहके युद्धके लिअे अधिक-से-अधिक समय किस तरह बच सके, और अधिक शुद्धि किस प्रकार हो, यह दूसरी फ़िकर; अिन दो फ़िकरोंने मुझे आहारमें अधिक संयम और अधिक फेरफार करनेके लिअे प्रेरित किया। साथ ही, पहले जो फेरफार मैं मुख्यतः आरोग्यकी दृष्टिसे करता था, वे अब धार्मिक दृष्टिसे होने लगे।

अिसमें अुपवास और अल्पाहारने अधिक स्थान लिया। जिसमें विषयवासना रहती है, अुसमें जीभके स्वाद भी अच्छी मात्रामें होते हैं। मेरी भी यही स्थिति थी। जननेंद्रिय और स्वादेन्द्रिय पर क़ाबू पानेकी कोशिशमें मुझे अनेक कठिनाअियोंका सामना करना पड़ा है, और आज भी मैं यह दावा नहीं कर सकता कि मैंने दोनों पर जय प्राप्त की है। मैंने अपने आपको अत्याहारी माना है। मैंने अेकादशीका फलाहार और अुपवास शुरू किया। जन्माष्टमी आदि दूसरी तिथियाँ भी पालना शुरू किया, किन्तु संयमकी दृष्टिसे मैं फलाहार और अन्नाहारके बीच बहुत भेद न देख सका। अिसलिअे तिथियोंके दिन निराहार अुपवास अथवा अेकाशनको अधिक महत्त्व देने लगा। साथ ही, प्रायश्चित्तादिका कोअी निमित्त मिलता, तो अुस निमित्तसे भी अेक बारका अुपवास कर डालता था।

अिसमें मैंने यह भी देखा कि अुपवासादि जिस हद तक संयमके साधन हैं, अुसी हद तक वे भोगके साधन भी बन सकते हैं। अिस कारण मैं आहारकी वस्तुमें और अुसके परिमाणमें फेरफार करने लगा। किन्तु रस तो पीछा पकड़े ही हुअे थे। जिस चीज़को छोड़ता, और अुसके बदले जिसे लेता, अुसमें से अेक नया ही और अधिक रस पैदा हो जाता! अनुभवने सिखाया कि मनुष्यको स्वादके लिअे नहीं, बल्कि शरीरके

निर्वाहके लिअे ही खाना चाहिये। जब प्रत्येक अिन्द्रिय केवल शरीरके और शरीरके द्वारा आत्माके दर्शनके लिअे ही काम करती है, तब अुसके रस शून्यवत् होते हैं, और तभी कहा जा सकता है कि वह स्वाभाविक रूपसे बरतती है।

८८

घरमें सत्याग्रह

मुझे जेलका पहला अनुभव सन् १९०८ में हुआ। अुस समय मैंने देखा कि जेलमें क़ैदियोंसे जो कुछ नियम पलवाये जाते हैं, संयमी अथवा ब्रह्मचारीको अुनका पालन स्वेच्छापूर्वक करना चाहिये। जैसे, क़ैदियोंको सूर्यास्तसे पहले पाँच बजे खा लेना होता है। अुन्हें चाय-कॉफी नहीं दी जाती। नमक खाना हो, तो अलगसे लेना होता है। स्वादके लिअे तो कुछ खाया ही नहीं जा सकता।

अतअेव जेलसे छूटनेके बाद मैंने तुरन्त फेरफार किये। भरसक चाय पीना बन्द किया और शामको जल्दी खानेकी आदत डाली, जो आज स्वाभाविक हो गअी है।

किन्तु अेक अैसा प्रसंग बन पड़ा, जिसके कारण नमकका भी त्याग किया, जो लगभग दस वर्ष तक तो अखण्ड भावसे क़ायम रहा। मैंने पढ़ा था कि मनुष्यके लिअे नमक खाना ज़रूरी नहीं है। और, यह तो मुझे सूझा ही था कि नमक न खानेसे ब्रह्मचारीको लाभ होता है। मैंने यह भी पढ़ा और अनुभव किया था कि कमज़ोर शरीरवालेको दाल न खानी चाहिये। किन्तु मैं अुन्हें तुरन्त छोड़ न सका था। दोनों चीज़ें मुझे प्रिय थीं।

शस्त्रक्रियासे कस्तूरबाअीका जो रक्तस्राव बन्द हुआ था, वह फिर शुरू हो गया। किसी प्रकार बन्द ही न होता था। अकेले पानीके अुपचार व्यर्थ सिद्ध हुअे। दूसरी दवा करनेका आग्रह न था। मैंने अुससे नमक और दाल छोड़नेकी विनती की। बहुत मनाने पर भी

मानी नहीं। आखिर अुसने कहा—'दाल और नमक छोड़नेको तो कोअी आपसे कहे, तो आप भी न छोड़ेंगे।' मुझे दुःख हुआ और हर्ष भी हुआ। मुझे अपना प्रेम अुंडेलनेका अवसर मिला। अुसके हर्षवश मैंने तुरन्त ही कहा—'मुझे बीमारी हो और वैद जिस चीजको या दूसरी किसी चीजको छोड़नेके लिअे कहे, तो मैं अवश्य छोड़ दूँ। लेकिन जा, मैंने तो अेक सालके लिअे दाल और नमक दोनों छोड़े। तू छोड़े या न छोड़े, सो अलग बात है।'

पत्नीको बहुत पश्चात्ताप हुआ। वह कह अुठी—'मुझे माफ़ कीजिये। आपका स्वभाव जानते हुअे भी मैं कहते कह गअी। अब मैं तो दाल और नमक नहीं खाअूँगी। लेकिन आप अपनी बात लौटा लें। यह तो मेरे लिअे बहुत बड़ी सजा हो जायगी।'

मैंने कहा—'अगर तू दाल-नमक छोड़ेगी तो अच्छा ही होगा। लेकिन मैं ली हुअी प्रतिज्ञा लौटा नहीं सकता। मनुष्य किसी भी निमित्तसे संयम क्यों न पाले, अुसमें लाभ ही है।'

मैं अिसे सत्याग्रहका नाम देना चाहता हूँ, और अिसको अपने जीवनकी मीठी स्मृतियोंमें से अेक मानता हूँ।

अिसके बाद कस्तूरबाअीकी तबीयत खूब सँभली।

स्वयं मुझ पर तो अिन दोनोंके त्यागका अच्छा ही असर हुआ। त्यागके बाद नमक अथवा दालकी अिच्छा तक न रही। अिन्द्रियोंकी शक्तिका अधिक अनुभव करने लगा। और संयमको बढ़ानेकी तरफ़ मन दौड़ने लगा। वैद्यक दृष्टिसे दोनों चीजोंके त्यागके विषयमें दो मत हो सकते हैं, किन्तु मुझे अिसमें कोअी शंका ही नहीं कि संयमकी दृष्टिसे तो अिन दोनों चीजोंके त्यागमें लाभ ही है। भोगी और संयमीके आहार भिन्न, अुनके मार्ग भिन्न होने चाहियें। ब्रह्मचर्यका पालन करनेकी अिच्छा रखनेवाले भोगीका जीवन बिताकर ब्रह्मचर्यको कठिन और कभी-कभी लगभग असम्भव बना डालते हैं।

८९

संयमकी ओर

अब दिन-प्रतिदिन ब्रह्मचर्यकी दृष्टिसे आहारमें परिवर्तन होते गये। अिनमें पहला परिवर्तन दूध छोड़नेका हुआ। मुझे पहलें-पहले रायचन्द भाअीसे मालूम हुआ था कि दूध अिन्द्रिय-विकार पैदा करनेवाली वस्तु है। अन्नाहार-विषयक अंग्रेज़ी पुस्तकोंके वाचनसे अिस विचारमें वृद्धि हुअी। लेकिन जब तक ब्रह्मचर्यका व्रत नहीं लिया था, तब तक दूध छोड़नेका कोअी खास अिरादा नहीं कर सका था। यह चीज़ तो मैं बहुत पहलेसे समझने लगा था कि शरीरके निर्वाहके लिअे दूध आवश्यक नहीं है। लेकिन वह झट छूटनेवाली चीज़ न थी। मैं यह अधिकाधिक समझने लगा था कि अिन्द्रिय-दमनके लिअे दूध छोड़ना चाहिये। अिन्हीं दिनों मेरे पास कलकत्तेसे कुछ साहित्य आया, जिसमें गाय-भैंस पर ग्वालों द्वारा किये जानेवाले घातक अत्याचारोंकी चर्चा थी। अिस साहित्यका मुझ पर चमत्कारिक प्रभाव पड़ा। मैंने अिस सम्बन्धमें मि० कैलनबैकसे चर्चा की। अुन्होंने दूध छोड़नेकी सलाह दी। मैंने अुसका स्वागत किया। हम दोनोंने अुसी क्षण टॉल्स्टॉय फार्म पर दूधका त्याग किया। यह घटना सन् १९१२ में हुअी।

अितने त्यागसे शांति न हुअी। दूध छोड़नेके कुछ ही समय बाद केवल फलाहारके प्रयोगका निश्चय किया। फलाहारमें भी जो सस्तेसे सस्ता फल मिले, अुसीसे अपनी गुज़र चलानेका विचार था। ग़रीब-से-ग़रीब आदमी जैसा जीवन विताता है, हम दोनोंको वैसा जीवन वितानेकी अुमंग थी। हमने फलाहारकी सुविधाका भी खूब अनुभव किया।

यद्यपि मैंने ब्रह्मचर्यके साथ आहार और अुपवासका निकट सम्बन्ध सूचित किया है, तो भी यह चौकस है कि अुसका मुख्य

आधार मन पर है। मैला मन अुपवाससे शुद्ध नहीं होता। आहारका अुस पर प्रभाव नहीं पड़ता। मनका मैल तो विचारसे, ओीश्वरके ध्यानसे और आखिर ओीश्वरी प्रसादसे ही छूटता है।

जिन दिनों दूध और अनाज छोड़कर फलाहारका प्रयोग शुरू किया, अुन्हीं दिनों संयमके हेतुसे अुपवास भी शुरू किये। मि० कैलनबैक अिसमें भी मेरे साथ हो गये। ब्रह्मचर्यके व्रतको सहारा पहुँचानेके लिअे मैंने अेकादशीके दिन अुपवास रखनेका निश्चय किया। फलाहारी अुपवास तो अब मैं हमेशा ही रखने लगा था। अिसलिअे मैंने पानीकी छूट रखकर पूरे अुपवास शुरू किये।

मेरा अनुभव यह है कि अुपवासादिसे मुझ पर तो आरोग्य और विषयकी दृष्टिसे बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। फिर भी मैं यह जानता हूँ कि अैसा कोअी अनिवार्य नियम नहीं है, कि अुपवास आदिसे सब पर अैसा प्रभाव पड़ेगा ही। अिन्द्रिय-दमनके हेतुसे किये गये अुपवाससे ही विषयोंको संयत करनेका परिणाम निकल सकता है। मतलब यह, कि अुपवासके दिनोंमें विषयको संयत करने और स्वादको जीतनेकी सतत भावना रहने पर भी अुसका शुभ परिणाम निकल सकता है। संयमीके मार्गमें अुपवासादि अेक साधनके रूपमें आवश्यक हैं, किन्तु ये ही सब कुछ नहीं हैं। और, यदि शरीरके अुपवासके साथ मनका अुपवास न हो, तो अुसकी परिणति दम्भमें हो और वह हानिकारक सिद्ध हो।

९०

शिक्षक

टॉल्स्टॉय-आश्रममें बालकों और बालिकाओंके लिअे शिक्षाका कुछ-न-कुछ प्रवन्ध आवश्यक था। ख़ास अिसी कामके लिअे शिक्षक रखना असम्भव था, और मुझे अनावश्यक प्रतीत हुआ। शिक्षाकी प्रचलित पद्धति मुझे पसन्द न थी। सच्ची पद्धति क्या हो सकती है, अिसका अनुभव मैं ले नहीं पाया था। अितना समझता था कि आदर्श स्थितिमें सच्ची शिक्षा तो माँ-बापकी निगरानीमें ही हो सकती है। सोचा यह था कि चूँकि टॉल्स्टॉय-आश्रम अेक परिवार है और मैं अुसमें पिताकी जगह हूँ, अिसलिअे अिन नवयुवकोंके निर्माणकी ज़िम्मेदारी मुझे यथाशक्ति अुठानी चाहिये।

अिस कल्पनामें बहुतसे दोष तो थे ही। नवयुवक मेरे पास जन्मसे नहीं थे। सब अलग-अलग वातावरणमें पले थे। सब अेक ही धर्मके भी न थे।

किन्तु मैंने हृदयकी शिक्षाको अर्थात् चरित्रके विकासको हमेशा पहला स्थान दिया है। और यह सोचकर कि अुसका परिचय तो जिस किसी अुमरमें और कितने भी प्रकारके वातावरणोंमें पले हुअे बालकों और बालिकाओंको न्यूनाधिक प्रमाणमें कराया जा सकता है, अिन बालकों और बालिकाओंके साथ मैं रात और दिन पिताकी तरह रहता था। मैंने चरित्रको अुनकी शिक्षाका पाया माना था। यदि पाया पक्का हो, तो अवकाश मिलने पर दूसरी बातें बालक मदद ले या अपनी ताक़तसे ख़ुद जान-समझ सकते हैं।

फिर भी मैं यह तो समझता था कि थोड़ा-बहुत अक्षरज्ञा[न] तो कराना ही चाहिये, अिसलिअे कक्षाअें शुरू कीं।

शारीरिक शिक्षाकी आवश्यकता समझता था। यह शिक्षा अुन[को] सहज ही मिल रही थी।

आश्रममें नौकर तो थे ही नहीं। पाखाना सफ़ाओीसे लेकर रसोओी बनाने तकके सारे काम आश्रमवासियोंको ही करने होते थे। फलोंके पेड़ बहुत थे। नओी बोनी करनी ही थी। छोटे-बड़े सबको, जो रसोओीके काममें लगे न होते थे, रोज़ अमुक समय बगीचेमें काम करना ही पड़ता था। अिसमें बड़ा हिस्सा बालकोंका था। अिस काममें अुनके शरीर भलीभाँति कसे जाते थे। अिसमें अुन्हें आनन्द आता था, और फलतः दूसरी कसरतकी या खेल-कूदकी अुन्हें कोओी ज़रूरत न रहती थी।

शारीरिक शिक्षाके सिलसिलेमें ही शारीरिक धन्धेकी शिक्षाका भी अुल्लेख कर दूं। अिरादा यह था कि सबको कोओी न कोओी अुपयोगी धन्धा सिखाया जाय। मि० कैलनबैक चप्पल बनाना सीख आये। अुनसे मैंने सीखा और जो बालक अिस धन्धेको सीखनेके लिअे तैयार हुअे अुन्हें मैंने यह सिखाया। आश्रममें बढ़ओीका काम जानने-वाला अेक साथी था, अिसलिअे यह काम भी कुछ हद तक सिखाया जाता था। रसोओीका काम तो लगभग सभी बालक सीख गये।

टॉल्स्टॉय-आश्रममें शुरूसे ही यह रिवाज डाला था कि जिस कामको हम शिक्षक न करें, अुसे बालकोंसे न कराया जाय। और, बालक जिस काममें लगे हों, अुसमें अुनके साथ अुसी कामको करने-वाला अेक शिक्षक हमेशा रहे। अिस तरह बालकोंने जो सीखा, अुमंगके साथ सीखा।

९१

अक्षरज्ञान

अक्षरज्ञान कराना कठिन मालूम हुआ। मेरे पास अुसके लिअे आवश्यक सामग्री न थी। खुद मुझे, जितना मैं चाहता था अुतना समय नहीं था, अुतनी योग्यता न थी। शारीरिक काम करते-करते मैं थक जाता, और जिस समय थोड़ा आराम करनेकी ज़रूरत होती, अुसी समय पढ़ाअीके वर्ग लेने होते थे।

अक्षरज्ञानके लिअे अधिक-से-अधिक तीन घण्टे रखे थे। हरअेक बालकको अुसकी मातृभाषा द्वारा ही शिक्षा देनेका आग्रह था। सबको अंग्रेज़ी भी सिखाअी ही जाती थी। अिसके अलावा गुजरातके हिन्दू बालकोंको थोड़ा संस्कृतका और सब बालकोंको हिन्दीका परिचय कराया जाता था। अितिहास, भूगोल और अंकगणित सबको सिखाना था। यही पाठ्यक्रम था।

मुख्यत: आश्रमके ये बालक सब निरक्षर और पाठशालामें कहीं न पढ़े हुअे थे। मैंने सिखाते-सिखाते देखा कि मुझे अुन्हें सिखाना तो कम ही है। ज़्यादा काम तो अुनकी आदत छुड़ाने, अुनमें स्वयं पढ़नेकी रुचि जगाने और अुनकी पढ़ाअी पर निगरानी रखनेका ही था।

मुझे पाठ्य-पुस्तककी आवश्यकता कभी प्रतीत न हुअी। मेरा खयाल यह है कि शिक्षक ही विद्यार्थीकी पाठ्य-पुस्तक है। जिन्होंने अपने मुँहसे सिखाया था, अुसका स्मरण आज भी बना हुआ है। बालक आँखसे जितना ग्रहण करते हैं, अुसकी अपेक्षा कानसे सुनी हुअी बातको वे थोड़े परिश्रमसे और बहुत अधिक ग्रहण कर सकते हैं।

९२

आत्मिक शिक्षा

विद्यार्थियोंके शरीर और मनको शिक्षित करनेकी अपेक्षा आत्मा को शिक्षित करनेमें मुझे बहुत परिश्रम करना पड़ा। मैं मानता था कि अुन्हें अपने-अपने धर्मग्रन्थोंका साधारण ज्ञान होना चाहिये, अिसलिअे मैंने यथाशक्ति अिस बातकी व्यवस्था की थी, कि अुन्हें वैसा ज्ञान मिल सके। किन्तु अिसे मैं बुद्धिकी शिक्षाका अंग मानता हूँ। आत्माकी शिक्षा अेक भिन्न ही विभाग है। आत्माका विकास करनेका अर्थ है, चरित्रका निर्माण करना, अीश्वरका ज्ञान पाना, आत्मज्ञान प्राप्त करना। अिस ज्ञानको प्राप्त करनेमें बालकोंको बहुत अधिक मददकी ज़रूरत होती है, और अिसके बिना दूसरा ज्ञान व्यर्थ है, हानिकारक भी हो सकता है, अैसा मेरा विश्वास था।

मैंने सुना है कि लोगोंमें यह वहम फैला हुआ है कि आत्म-ज्ञान चौथे आश्रममें प्राप्त होता है। लेकिन जो लोग अिस अमूल्य वस्तुको चौथे आश्रम तक मुलतवी रखते हैं, वे आत्मज्ञान प्राप्त नहीं करते, बल्कि बुढ़ापा और दूसरी तरफ़ दयाजनक बचपन पाकर पृथ्वी पर भाररूप बनकर जीते हैं; और अिस प्रकारका अनुभव व्यापक पाया जाता है।

आत्मिक शिक्षा किस प्रकार दी जाय? मैं बालकोंसे भजन गवाता, अुन्हें नीतिकी पुस्तकें पढ़कर सुनाता; किन्तु अिससे भी मुझे सन्तोष न होता। मैंने देखा कि यह ज्ञान पुस्तकों द्वारा तो दिया ही नहीं जा सकता। शरीरकी शिक्षा जिस प्रकार शारीरिक कसरत द्वारा दी जाती है, बुद्धिकी बौद्धिक कसरत द्वारा, अुसी प्रकार आत्माकी आत्मिक कसरत द्वारा दी जा सकती है। आत्माकी कसरत शिक्षकके आचरण द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है। अिसलिअे युवक हाजिर हों चाहे न हों, शिक्षकको सदा सावधान रहना चाहिये। मैं

झूठ वोलूँ और अपने शिष्योंको सच्चा वनानेका प्रयत्न करूँ, तो वह व्यर्थ ही होगा। डरपोक शिक्षक शिष्योंको वीरता नहीं सिखा सकता। व्यभिचारी शिक्षक शिष्योंको संयम किस प्रकार सिखाये? मैंने देखा कि मुझे अपने पास रहनेवाले युवकों और युवतियोंके सम्मुख पदार्थ-पाठ-सा वनकर रहना चाहिये। अिस प्रकार मेरे शिष्य मेरे शिक्षक वने। कहा जा सकता है कि टॉल्स्टॉय-आश्रमका अधिकतर संयम अिन युवकों और युवतियोंकी वदौलत था।

आश्रममें अेक युवक वहुत अूधम मचाता, झूठ वोलता और किसीसे दवता नहीं था। अेक दिन अुसने वहुत ही अूधम मचाया। मैं घवरा अुठा। मैं विद्यार्थियोंको कभी सज़ा न करता था। अिस वार मुझे वहुत क्रोध हो आया। मैं अुसके पास पहुँचा। समझाने पर वह किसी प्रकार समझता ही न था। मुझे धोखा देनेका भी प्रयत्न किया। मैंने अपने पास पड़ा हुआ रूल अुठाकर अुसकी वाँह पर मारा। मारते समय मैं काँप रहा था। विद्यार्थी रो पड़ा। अुसने मुझसे माफ़ी माँगी। मेरे रूलमें अुसे मेरे दुःखका दर्शन हो गया। अिस घटनाके वाद अुसने फिर कभी मेरा सामना न किया। लेकिन अुस दिन अुसे रूल मारनेका पछतावा मेरे दिलमें आज तक वना हुआ है। अुसे मारकर मैंने अपनी आत्माका नहीं, वल्कि अपनी पशुताका दर्शन कराया था।

मैं वालकोंको मार-पीटकर पढ़ानेका हमेशा विरोधी रहा हूँ। रूलकी घटनाने मुझे अिस वातके लिअे अधिक सोचनेको विवश किया, कि विद्यार्थीके प्रति शिक्षकका क्या धर्म है? अुसके वाद युवकों द्वारा अैसे ही दोप हुअे, लेकिन मैंने फिर कभी दण्ड-नीतिका अुपयोग नहीं किया। अिस प्रकार आत्मिक ज्ञान देनेके प्रयत्नमें मैं स्वयं आत्माके गुणको अधिक समझने लगा।

१३

भले-बुरेका मिश्रण

आश्रममें कुछ लड़के बहुत ही अूधमी और दुष्ट स्वभावके थे। कुछ आवारा थे। अुन्हींके साथ मेरे तीन लड़के थे। अिसी तरह पले हुअे दूसरे भी बालक थे। लेकिन मि० कैलनबैकका ध्यान तो अिस ओर ही था कि वे आवारा युवक और मेरे लड़के अेक जगह किस तरह रह सकते हैं। अेक दिन वे बोल अुठे — 'आपका यह तरीक़ा मुझे ज़रा भी जँचता नहीं है।'

मैंने कहा — 'मैं अपने लड़कों और अिन आवारा लड़कोंके बीच भेद कैसे कर सकता हूँ? अिस समय तो मैं दोनोंके लिअे समानरूपसे ज़िम्मेदार हूँ। ये नौजवान मेरे बुलाये आये हैं। अिसलिअे अिन्हें यहीं रखना चाहिये। दूसरे, क्या मैं आजसे अपने लड़कोंको यह भेदभाव सिखाअूँ कि वे दूसरे कुछ लड़कोंके मुक़ाबले अूँचे हैं? अुनके दिमाग़में अिस प्रकारके विचारको ठूँसना ही अुन्हें ग़ैररास्ते ले जाने-जैसा है। आजकी स्थितिमें रहनेसे वे गढ़े जायँगे और अपने आप सारासारकी परीक्षा करने लगेंगे।'

यह नहीं कहा जा सकता कि प्रयोगका परिणाम बुरा निकला। मैं नहीं मानता कि अुससे मेरे लड़कोंको कोअी नुक़सान हुआ। अुलटे मैं यह देख सका कि अुन्हें लाभ हुआ है। अगर माता-पिताकी देखरेख ठीक-ठाक हो, तो अुनके भले और बुरे बच्चोंके साथ रहने और पढ़नेसे भलोंकी कोअी हानि नहीं होती।

१४

प्रायश्चित्तरूप अुपवास

कुछ जेलवासियोंके रिहा होने पर टॉल्स्टॉय-आश्रममें थोड़े ही लोग रह गये। अिनमें अधिकतर फिनिक्सवासी थे। असलिये मैं आश्रमको फिनिक्स ले गया। फिनिक्समें मेरी कड़ी परीक्षा हुअी। आश्रमवासियोंको फिनिक्स छोड़कर मैं जोहानिसबर्ग गया। वहाँ कुछ ही दिन रहा था कि मेरे पास दो व्यक्तियोंके भयंकर पतनके समाचार पहुँचे। सत्याग्रहकी महान् लड़ाअीमें कहीं भी निष्फलता-सी दिखाअी पड़ती, तो मुझे अुससे कोअी आघात न पहुँचता। किन्तु अिस घटनाने मुझ पर वज्र-प्रहार-सा किया। मैं तिलमिला अुठा। मैंने अुसी दिन फिनिक्सकी गाड़ी पकड़ी। मि० कैलनबैकने मेरे साथ चलनेका आग्रह किया। पतनके समाचार मुझे अुन्हींके द्वारा मिले थे।

रास्तेमें मैंने अपने धर्मको समझ लिया। मैंने अनुभव किया कि अपनी निगरानीमें रहनेवालोंके पतनके लिअे अभिभावक अथवा शिक्षक न्यूनाधिक अंशमें ज़िम्मेदार तो हैं ही। अिस घटनामें मेरी ज़िम्मेदारी मुझे स्पष्ट प्रतीत हुअी। मुझको मेरी पत्नीने सावधान तो कर ही दिया था। किन्तु स्वभावसे विश्वासी होनेके कारण मैंने पत्नीकी चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया था। साथ ही, मुझे यह भी लगा कि जब मैं अिस पतनके लिअे प्रायश्चित्त करूँगा तभी ये पतित मेरे दुःखको समझ सकेंगे, और अुससे अुन्हें अपने दोषका भान होगा और कुछ-न-कुछ अन्दाज़ बैठेगा। अतअेव मैंने सात दिनके अुपवास और साढ़े चार महीनोंके अेकाशनका व्रत लिया। कैलनबैकने भी मेरे साथ ही अैसा व्रत रखनेका आग्रह किया। मैं अुनके निर्मल प्रेमको रोक न सका। अिस निश्चयके वाद मैं तुरन्त ही शांत हो गया। दोषितोंके प्रति क्रोध न रहा और अुनके लिअे मनमें मात्र दया ही रह गअी।

मेरे अुपवाससे सबको कष्ट तो हुआ, लेकिन अुसके कारण वातावरण शुद्ध बना। सबको पाप करनेकी भयंकरताका बोध हुआ। और विद्यार्थियों अेवं विद्यार्थिनियोंके और मेरे बीचका सम्बन्ध अधिक मज़बूत और सरल बन गया।

अिसके कुछ समय बाद ही मुझे चौदह अुपवास करनेका अवसर मिला था। मेरी यह धारणा है कि अुसका परिणाम अपेक्षासे भी अधिक अच्छा निकला था।

अिन घटनाओं पर से मैं यह सिद्ध करना नहीं चाहता कि शिष्योंके प्रत्येक दोषके लिअे शिक्षकोंको हमेशा अुपवास आदि करने चाहियें। लेकिन मैं मानता हूँ कि कुछ परिस्थितियोंमें अिस प्रकारके प्रायश्चित्त रूप अुपवासकी गुंजाअिश अवश्य है। किन्तु अुसके लिअे विवेक और अधिकार अपेक्षित है।

९७

गोखलेसे मिलने

जब सन् १९१४ में सत्याग्रहकी लड़ाअी समाप्त हुअी, तो गोखलेकी अिच्छानुसार मुझे अिंग्लैंड होते हुअे हिन्दुस्तान पहुँचना था। अिसलिअे जुलाअी महीनेमें कस्तूरबाअी, कैलनबैक और मैं — तीनों — विलायतके लिअे रवाना हुअे। सत्याग्रहकी लड़ाअीके दिनोंमें मैंने तीसरे दर्जेमें सफ़र करना शुरू किया था। अिसलिअे समुद्री मार्गके लिअे भी तीसरे दर्जेका टिकट कटाया।

मि० कैलनबैकको दूरबीनका अच्छा शौक़ था। दोअेक क़ीमती दूरबीनें अुनके पास थीं। अिस सम्बन्धमें हमारे बीच रोज़ चर्चा होती। मैं अुन्हें यह समझानेका प्रयत्न करता कि यह हमारे आदर्शके और हम जिस सादगी तक पहुँचना चाहते हैं, अुसके अनुकूल नहीं है।

अेक दिन अिसको लेकर हमारे बीच ज़ोरकी ठन गअी। मैंने कहा — 'हमारे बीच अिस प्रकारके झगड़े हों, अिससे अच्छा तो यह है

कि हम अिन दूरवीनोंको ही समुद्रमें फेंक दें और अिनकी कोअी चर्चा ही न करें ?'

मि० कैलनवैकने तुरन्त ही जवाब दिया — 'अिस मनहूस चीज़को जरूर फेंक दो।'

मैंने कहा — 'मैं फेंकता हूँ।'

अुन्होंने अुतनी ही तत्परतासे अुत्तर दिया — 'मैं सचमुच ही कहता हूँ कि ज़रूर ही फेंक दो।'

मैंने दूरवीन फेंक दी। वह कोअी ७ पौंडकी थी। लेकिन अुसकी क़ीमत जितनी दामोंमें थी, अुससे ज़्यादा अुस परके मि० कैलनवैकके मोहमें थी। फिर भी अुन्होंने अिस सम्बन्धमें कभी दुःखका अनुभव नहीं किया। अुनके और मेरे वीच अैसे कअी अनुभव होते रहते।

हम दोनोंके आपसी सम्बन्धसे हमें रोज़ नया सीखनेको मिलता था। क्योंकि दोनों सत्यका ही अनुसरण करके चलनेका प्रयत्न करते थे। सत्यका अनुसरण करनेसे क्रोध, स्वार्थ, द्वेष अित्यादि सहज ही शांत होते थे; शांत न होते, तो सत्य मिलता न था। राग-द्वेषादिसे भरापूरा मनुष्य सरल चाहे हो ले, वाचिक सत्यका पालन चाहे कर ले, किन्तु अुसे शुद्ध सत्य मिल ही नहीं सकता। शुद्ध सत्यकी शोधका अर्थ है, राग-द्वेषादि द्वंद्वसे सर्वथा मुक्ति प्राप्त करना।

जव हमने यात्रा शुरू की थी, तव मुझे अुपवास समाप्त किये वहुत समय न वीता था। मुझमें पूरी शक्ति नहीं आअी थी। स्टीमरमें रोज़ डेक पर चलनेकी कसरत करके ठीक-ठीक खाने और खाये हुअेको हज़म करनेका प्रयत्न करता था। लेकिन अिसके साथ ही मेरे पैरकी पिंडलियोंमें ज़्यादा दर्द रहने लगा। विलायत पहुँचनेके वाद मेरा दर्द वढ़ा। विलायतमें डॉ० जीवराज महेतासे पहचान हुअी थी। अुन्हें अुपवास और दर्दका अितिहास सुनाने पर अुन्होंने कहा — 'अगर आप कुछ दिनोंके लिअे पूरा आराम न करेंगे, तो पैरोंके सदाके लिअे वेकार हो जानेका डर है।' अिसी समय मुझे पता चला कि लम्वे अुपवास करनेवालेको खोअी हुअी ताक़त झट प्राप्त करने या वहुत खानेका

लोभ कभी न करना चाहिये। अुपवास करनेकी अपेक्षा अुपवास छोड़नेमें अधिक सावधान रहना पड़ता है, और शायद अुसमें संयम भी अधिक होता है।

अिंग्लैंडकी खाड़ीमें पहुँचते ही हमें लड़ाओी छिड़ जानेके समाचार मिले। हम छठी अगस्तको विलायत पहुँचे।

९६
लड़ाओीमें हिस्सा

विलायत पहुँचने पर पता चला कि गोखले तो पेरिसमें अटक गये हैं, और कहना मुश्किल था कि वे कबतक पहुँचेंगे। अुनसे मिले बिना देश जाना न था। अिस बीच क्या किया जाय? लड़ाओीके बारेमें मेरा धर्म क्या था? जेलके मेरे साथी और सत्याग्रही सोराबजी अडाजणिया विलायतमें ही बैरिस्टरीका अभ्यास करते थे। अुनसे और अुनकी मारफ़त डॉ० जीवराज महेता अित्यादि जो लोग विलायतमें पढ़ रहे थे, अुनसे विचार-विमर्श किया। विलायतमें रहनेवाले हिन्दुस्तानियोंकी अेक सभा बुलाओी, और अुनके सम्मुख मैंने अपने विचार रखे। मुझे लगा कि विलायतवासी हिन्दुस्तानियोंको लड़ाओीमें अपना हिस्सा अदा करना चाहिये। सभामें अिसके विरुद्ध काफ़ी दलीलें दी गओीं। मुझे हमारी स्थिति निरी गुलामीकी स्थिति नहीं लगती थी। मैं तो यह सोचता था कि यदि हम अंग्रेजोंके द्वारा और अुनकी मददसे अपनी स्थिति सुधारना चाहते हैं, तो हमें अुनके संकटके समयमें अुनकी मदद करके स्थिति सुधारनी चाहिये। अुनकी शासन-पद्धति दोषपूर्ण होते हुअे भी मुझे अुस समय वह अुतनी असह्य नहीं मालूम होती थी, जितनी आज मालूम होती है। किन्तु जिस प्रकार पद्धति परसे मेरा विश्वास अुठ गया है, और अिस कारण मैं आज अंग्रेजी

राज्यकी मदद नहीं करता, अुसी प्रकार जिनका विश्वास पद्धति परसे ही नहीं, बल्कि अंग्रेज़ अधिकारियों परसे भी अुठ चुका था, वे क्योंकर मदद करनेको तैयार होते?

अुन्होंने देखा कि यही अवसर है, जब जनताकी माँगको दृढ़ता-पूर्वक प्रकट करना है, और शासन-पद्धतिमें सुधार करा लेनेका आग्रह रखना है। मैंने अंग्रेज़ोंकी अिस आपत्तिके समयमें अपनी माँगें पेश करना ठीक न समझा, और लड़ाअीके समयमें अधिकारोंकी माँगको मुल्तवी रखनेके संयममें सभ्यता और दूरदृष्टिका दर्शन किया। अिस-लिअे मैं अपनी सलाह पर दृढ़ रहा और लोगोंसे कहा कि जिन्हें भरतीमें अपने नाम लिखाने हों, वे लिखावें। काफ़ी संख्यामें नाम लिखे गये।

अिस विषयमें मैंने लार्ड क्रूको पत्र लिखा, और हिन्दुस्तानियोंकी माँगको स्वीकार करनेके लिअे घायल सैनिकोंकी सेवा करनेकी तालीम लेना आवश्यक माना जाय, तो वैसी तालीम लेनेकी अिच्छा और तैयारी प्रकट की। लॉर्ड क्रूने हिन्दुस्तानियोंकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। घायलोंकी सार-सँभाल करनेकी प्रारंभिक शिक्षाका आरंभ किया। छः हफ़्तोंका छोटा-सा कोर्स था। हम क़रीब अस्सी आदमी अिस खास कक्षामें सम्मिलित हुअे थे। परीक्षा लेने पर अेक ही आदमी नापास हुआ। जो पास हुअे, अुनके लिअे अब सरकारकी ओरसे क़वायद आदि सिखानेका प्रबन्ध हुआ।

१७

धर्मकी पहेली

ज्यों ही यह खबर दक्षिण अफ्रीका पहुँची कि युद्धमें काम करनेके लिये हमने अपने नाम सरकारके पास भेजे हैं, त्यों ही मेरे नाम वहाँसे दो तार आये। अुनमें अेक पोलाकका था। अुसमें पूछा गया था— 'क्या आपका यह कार्य अहिंसाके आपके सिद्धान्तके विरुद्ध नहीं है?'

अैसे तारकी मुझे कोअी आशा तो थी ही नहीं, क्योंकि 'हिन्द-स्वराज' में मैंने अिस विषयकी चर्चा की थी, और दक्षिण अफ्रीकामें मित्रोंके साथ तो अिसकी चर्चा निरन्तर होती ही रहती थी।

जिस विचार-धाराके वश होकर मैं बोअर-युद्धमें सम्मिलित हुआ था, अुसीका अुपयोग अिस बार भी किया था। मैं अिस बातको ठीकसे समझता था कि युद्धमें सम्मिलित होनेका अहिंसाके साथ कोअी मेल बैठ नहीं सकता, किन्तु कर्त्तव्यका बोध हमेशा दीयेकी तरह स्पष्ट नहीं होता। सत्यके पुजारीको अक्सर ठोकर खानी पड़ती है।

अहिंसा व्यापक वस्तु है। हम हिंसाकी होलीके बीच घिरे हुअे पामर प्राणी हैं। यह वाक्य ग़लत नहीं है कि 'जीव जीव पर जीता है।' मनुष्य अेक क्षणके लिअे भी बाह्य हिंसाके बिना जी नहीं सकता। खाते-पीते, अुठते-बैठते, सभी क्रियाओंमें अिच्छा-अनिच्छासे कुछ-न-कुछ हिंसा तो वह करता ही रहता है। यदि वह अिस हिंसासे छूटनेके लिअे घोर प्रयत्न करता है, अुसकी भावनामें मात्र अनुकंपा होती है, वह सूक्ष्म-से-सूक्ष्म जंतुका भी नाश नहीं चाहता, और यथाशक्ति अुसे बचानेका प्रयत्न करता है, तो वह अहिंसाका पुजारी है। अुसकी प्रवृत्तिमें निरन्तर संयमकी वृद्धि होगी, अुसमें निरन्तर करुणा बढ़ती रहेगी। किन्तु देहधारी बाह्य हिंसासे सर्वथा मुक्त नहीं हो सकता।

फिर, अहिंसाकी तहमें अद्वैत-भावना निहित है। और यदि प्राणि-मात्रमें अभेद हो, तो अेकके पापका प्रभाव दूसरे पर पड़ता है; अिस

कारण मनुष्य हिंसासे बिलकुल अस्पृष्ट नहीं रह सकता। समाजमें रहनेवाला मनुष्य समाजकी हिंसामें, अनिच्छासे ही क्यों न हो, अुसका भागीदार बनता है। जब दो राष्ट्रोंके बीच युद्ध छिड़े, तब अहिंसामें विश्वास रखनेवाले व्यक्तिका धर्म है कि वह अुस युद्धको रोके। जो अिस धर्मका पालन न कर सके, जिसमें विरोध करनेकी शक्ति न हो, जिसे विरोध करनेका अधिकार प्राप्त न हो, वह युद्ध-कार्यमें सम्मिलित हो; और सम्मिलित होते हुअे भी अुसमें से अपनेको, अपने देशको और साथ ही संसारको अुबारनेकी हार्दिक कोशिश करे।

मुझे अंग्रेज़ी राज्यके द्वारा अपने राष्ट्रकी स्थिति सुधारनी थी। अगर आख़िरको मुझे अस राज्यके साथ व्यवहार बनाये रखना हो, अुस राज्यके झण्डेके नीचे रहना हो, तो या तो मुझे प्रकट रूपसे युद्धका विरोध करके अुसका अुस समय तक सत्याग्रहके शास्त्रके अनुसार बहिष्कार करना चाहिये, जब तक अुस राज्यकी युद्ध-नीतिमें परिवर्तन न हो, अथवा अुसके जो क़ानून भंग करने योग्य हों, अुनका सविनय-भंग करके जेलकी राह पकड़नी चाहिये, अथवा मुझे अुसके युद्ध-कार्यमें सम्मिलित होकर अुसका मुक़ाबला करनेकी शक्ति और अधिकार प्राप्त करने चाहियें। मुझमें यह शक्ति न थी। अिसलिअे मैंने माना कि मेरे पास युद्धमें सम्मिलित होनेका ही मार्ग बचा था।

मैंने बंदूकधारीमें और अुसकी मदद करनेवालेमें अहिंसाकी दृष्टिसे कोअी भेद नहीं माना। फ़ौजमें मात्र घायलोंकी ही सार-सँभाल करनेके काममें लगा हुआ व्यक्ति भी युद्धके दोषोंसे मुक्त नहीं हो सकता।

पोलाकका तार मिलते ही मैंने कुछ मित्रोंसे अुसकी चर्चा की। अपने अूपर दिये गये विचारोंका औचित्य मैं अुस समय भी सब मित्रोंके सामने सिद्ध नहीं कर सका था। प्रश्न सूक्ष्म है। अुसमें मतभेदके लिअे अवकाश है। सत्यका आग्रही मात्र रूढ़िसे चिपट कर ही कोअी काम न करे; वह अपने विचारों पर हठ-पूर्वक डटा न रहे; हमेशा यह मान कर चले कि अुनमें दोष हो सकता है, और जब दोषका ज्ञान हो तब भारी-से-भारी जोखिमोंको अुठाकर भी अुसे स्वीकार करे और प्रायश्चित्त भी करे।

१८

छोटासा सत्याग्रह

अिस प्रकार धर्म समझकर मैं युद्धमें सम्मिलित तो हुआ, लेकिन मेरे नसीबमें न सिर्फ़ अुसमें सीधे हाथ बँटाना नहीं आया, बल्कि अैसे नाजुक समयमें सत्याग्रह करनेकी भी नौबत आ गयी।

जब हमारे नाम मंजूर हुअे और दर्ज किये गये, तो हमें पूरी क़वायद सिखानेके लिअे अेक अधिकारी नियुक्त किया गया। हम सबका ख़याल यह था कि ये अधिकारी युद्धकी तालीम देने-भरके लिअे हमारे मुखिया थे। बाक़ी सब मामलोंमें दलका मुखिया मैं था। मैं अपने साथियोंके प्रति ज़िम्मेदार था और साथी मेरे प्रति; अर्थात् हमारा ख़याल यह था कि अधिकारीको सारा काम मेरे द्वारा लेना चाहिये। सोहराबजी बहुत सयाने थे। अुन्होंने मुझे सावधान किया —'भाअी, ध्यान रखिये, अैसा प्रतीत होता है कि ये सज्जन यहाँ अपनी जहाँगीरी चलाना चाहते हैं। हमें अुनके हुक्मकी जरूरत नहीं। मैं तो देखता हूँ कि मानो ये नौजवान भी हम पर हुक्म चलाने आये हैं।' मैं भी सोहराबजीकी सुझाअी बातको देख चुका था।

अिसी अरसेमें मेरी पसलियोंमें सख़्त सूजन आ गयी, और अुसके सिलसिलेमें मुझे आख़िर खटियाका सेवन करना पड़ा।

अधिकारीने अपना अधिकार चलाना शुरू किया। अुन्होंने स्पष्ट कह दिया कि वे सब मामलोंमें हमारे मुखिया हैं। सोहराबजी मेरे पास आये। अुनकी बातें सुनकर मैं अधिकारीके पास गया, और अपने पास आअी हुअी सब शिकायतें अुन्हें सुनाअीं। मेरी बात अुनके गले न अुतरी, और फ़ौजी नियमोंके विरुद्ध मालूम हुअी।

हमने सभा की। सत्याग्रहके गंभीर परिणाम कह सुनाये। लगभग सभीने सत्याग्रहकी शपथ ली। हमारी सभाने यह प्रस्ताव किया कि

यदि मौजूदा अधिकारी न हटाये जायँ और दलको नये अधिकारी पसन्द न करने दिये जायँ, तो हमारा दल क़वायदमें और कैम्पमें जाना बन्द करेगा।

मैंने यह हक़ीक़त अधिकारीको लिख भेजी और भारत-मंत्रीको भी लिखा। अिसके बाद तो हमारा परस्पर बहुत पत्र-व्यवहार हुआ। अधिकारीने धमकीसे और हिकमतसे हममें फूट पैदा की। शपथ-बद्ध होते हुअे भी कुछ लोग कलके या बलके वशमें हो गये। अितनेमें नेटली अस्पतालमें अनपेक्षित संख्यामें घायल सिपाही आ पहुँचे, और अुनकी सार-सँभालके लिअे हमारी समूची टुकड़ीकी आवश्यकता पड़ी। जिन्हें अधिकारी खींच सके, वे तो नेटली पहुँच गये। किन्तु दूसरे न गये, और अिंडिया-ऑफिसको यह अच्छा न लगा। मैं बिछौने पर पड़ा था, किन्तु दलके लोगोंसे मिलता रहता था। मैं मि० रॉबर्ट्सके सम्पर्कमें अच्छी तरह आ चुका था। वे मुझसे मिलने आये और बचे हुअे लोगोंको भी भेजनेका आग्रह किया। अुनका सुझाव यह था कि ये लोग अेक अलग दलकी शकलमें जायँ। नेटली अस्पतालमें तो दलको वहाँके मुखियाके अधीन रहना पड़ेगा, जिससे दलवालोंकी मानहानि न होगी। सरकारको अुनके जानेसे सन्तोष होगा और बड़ी संख्यामें आये हुअे घायलोंकी सेवा-शुश्रूषा होगी। मेरे साथियोंको और मुझे यह सुझाव पसन्द पड़ा, और बचे हुअे विद्यार्थी भी नेटली गये। अकेला मैं ही दाँत पीसता बिछौने पर पड़ा रहा।

११

मेरी बीमारी

जिन दिनों मेरी पसलियोंमें सूजन आयी थी, अुस समय गोखले विलायत आ पहुँचे थे। कैलनबैक और मैं हमेशा अुनसे मिलने जाते थे।

मेरी बीमारी चर्चाका विषय बन गयी। आहारके मेरे प्रयोग तो चल ही रहे थे। जीवराज महेता मेरी सार-सँभाल करते थे। अुन्होंने दूध और अन्न खानेका बहुत आग्रह किया। शिकायत गोखले तक पहुँची। फलाहारकी मेरी दलीलके बारेमें अुन्हें बहुत आदर न था; आग्रह यह था कि आरोग्यकी रक्षाके लिअे डॉक्टर जो कहें सो लेना चाहिये।

अुनके आग्रहको ठुकराना मेरे लिये बहुत ही कठिन था। मैंने विचारके लिये चौबीस घण्टेका समय माँगा। कैलनबैकसे चर्चा की। लेकिन मुझे स्वयं ही अन्तर्नादका पता लगाना था।

प्रश्न यह था कि कहाँ तक गोखलेके प्रेमके वश होनेमें धर्म था, अथवा यह कि शरीर-रक्षाके लिये वैसे प्रयोगोंको किस हद तक छोड़ना ठीक था। अिसलिअे मैंने निश्चय किया कि अिन प्रयोगोंमें से जो प्रयोग केवल धर्मकी दृष्टिसे चल रहा था, अुस पर क़ायम रहकर दूसरे सब मामलोंमें डॉक्टरके वश होना चाहिये। दूधके त्यागमें धर्मभावनाका स्थान मुख्य था। अिसलिअे दूधके त्याग पर डटे रहनेका निश्चय करके मैं सवेरे अुठा।

शामको गोखलेसे मिलने गया। अुन्होंने तुरन्त ही प्रश्न पूछा और मने धीमेसे जवाब दिया — 'मैं सब कुछ करूँगा, किन्तु आप अेक चीज़का आग्रह न कीजिये। मैं दूध और दूधके पदार्थ अथवा मांसाहार नहीं लूँगा। अिन्हें न लेनेसे देहपात होता हो, तो वैसा होने देनेमें मुझे तो धर्म मालूम होता है।' जब देखा कि यह

मेरा अंतिम निर्णय है, तो अुन्होंने आग्रह करना छोड़ दिया और डॉक्टरको मेरी वृत्तिके अनुसार सूचना दी।

मैं यह देखकर घबराया कि पसलीका दर्द मिट नहीं रहा है। सन् १८९० में मैं डॉ० अेलिन्सनसे मिला था, जो आहारके परिवर्तनके सहारे बीमारियोंका अिलाज करते थे। मैंने अुन्हें बुलवाया। वे आये। अुन्होंने मेरा आहार निश्चित कर दिया और कुछ दूसरे सुझाव भी दिये। मैंने अुन पर अमल किया। अिससे तबीयतमें थोड़ा सुधार हुआ। डॉक्टर दूसरी बार आये और आहारकी चीज़ोंमें फेरफार किया। अिस बारका फेरफार मेरे लिअे अधिक अनुकूल सिद्ध हुआ।

किन्तु दर्द बिलकुल मिटा नहीं था। सावधानीकी ज़रूरत थी ही। डॉक्टर महेता समय-समय पर मुझे देख तो जाते ही थे। हमेशा ही यह सुननेको मिलता कि 'मेरा अिलाज करायें, तो अभी दुरुस्त कर दूं।'

कभी-कभी लेडी रॉबर्ट्स मुझे देखने आती थीं। और, अेक दिन मि० राबर्ट्स आ पहुँचे। अुन्होंने मुझसे देश जानेका आग्रह किया — 'अिस हालतमें आप नेटली कभी नहीं जा सकेंगे। कड़ाकेकी सर्दी तो अभी आगे पड़ेगी। अब आप देश जाअिये और वहाँ अपना स्वास्थ्य सुधारिये। अगर तब तक लड़ाअी चलती रही, तो मदद करनेके बहुतेरे अवसर आपको मिलेंगे ही। अन्यथा आपने यहाँ जो किया है, अुसे मैं कम नहीं समझता।'

मैंने अुनकी अिस सलाहको मान लिया और देश जानेकी तैयारी की।

१००

रवानगी

चूँकि मि० कैलनवैक जर्मन थे, अिसलिअे अुन्हें हिन्दुस्तान जानेकी अिजाज़त न मिली। अुनके वियोगका दुःख मुझे तो हुआ ही, लेकिन मैं यह देख सका था कि मेरी अपेक्षा अुन्हें अधिक दुःख हुआ था।

हमने तीसरे दर्जेका टिकट कटानेका प्रयत्न किया, किन्तु पी० अेण्ड ओ० के स्टीमरोंमें तीसरे दर्जेके टिकट नहीं मिलते थे, अिसलिअे दूसरे दर्जेके लेने पड़े।

डॉक्टर महेताने मेरे शरीरको मीड्ज़ प्लास्टरकी पट्टीसे बाँध दिया था, और सलाह दी थी कि मैं अिस पट्टीको बँधी रहने दूँ। दो दिन तक तो मैंने अिसे सहन किया, लेकिन फिर सहन न कर सका, फलतः पट्टी अुतार डाली और नहाने-धोनेके लिअे छुट्टी पाअी। खानेमें मुख्यतः सूखे और हरे मेवेको ही स्थान दिया। तबीयत दिन-प्रतिदिन सुधरती गअी, और स्वेज़की खाड़ीमें पहुँचते-पहुँचते तो बहुत अच्छी हो गअी। मैंने माना कि यह शुभ परिवर्तन मात्र शुद्ध समशीतोष्ण हवाके कारण ही हुआ था।

कुछ दिनोंमें हम बम्बअी पहुँचे। जिस देशमें मैं सन् १९०५ में वापस लौटनेकी आशा रखता था, अुसमें मैं १० साल बाद वापस लौट सका हूँ, यह सोचकर मुझे बहुत आनन्द हुआ। बम्बअीमें गोखलेने सम्मेलन आदिकी व्यवस्था कर ही रखी थी। अुनका स्वास्थ्य नाजुक था, फिर भी वे बम्बअी आ पहुँचे थे। मैं अिस अुमंगके साथ बम्बअी पहुँचा था, कि अुनसे मिलकर और अपनेको अुनके जीवनमें समाकर मैं अपना भार अुतार डालूँगा। किन्तु विधाताने कुछ दूसरी ही रचना रच रखी थी।

१०१

मेरी वकालत

अपनी वकालतके समयके और वकीलके नातेवाले अितने संस्मरण मेरे पास हैं, कि अुन्हें लिखने बैठूँ, तो अुन्हींकी अेक पुस्तक तैयार हो जाय। किन्तु अुनमें से कुछ, जो सत्यसे संबंध रखनेवाले हैं, यहाँ देना शायद अनुचित न माना जायगा।

वकालतके धंधेमें मैंने कभी असत्यका प्रयोग नहीं किया, और वकालतका अधिकतर समय तो केवल सेवाके लिअे ही समर्पित था, तथा अुसके लिअे मैं जेब-खर्चके अलावा कुछ भी न लेता था। कभी-कभी जेब-खर्च भी छोड़ देता था।

विद्यार्थी-अवस्थामें भी मैं यह सुना करता था कि वकालतका धंधा झूठ बोले विना चल ही नहीं सकता। झूठ बोलकर मैं न तो कोअी पद लेना चाहता था और न पैसा कमाना चाहता था। अिसलिअे मुझ पर अिन बातोंका कोअी प्रभाव नहीं पड़ा था।

दक्षिण-अफ्रीकामें कअी बार अिसकी कसौटी हो चुकी थी। मैं जानता था कि प्रतिपक्षके साक्षियोंको सिखाया-पढ़ाया गया है, और अगर मैं मुवक्किलके साक्षीको तनिक झूठ बोलनेके लिअे प्रोत्साहित करूँ, तो मुवक्किलके केसमें कामयाबी मिल सकती है, किन्तु मैंने हमेशा अिस लालचको छोड़ा है। मेरे दिलमें भी हमेशा यही खयाल बना रहता था कि अगर मुवक्किलका केस सच्चा हो, तो अुसमें कामयाबी मिले और झूठा हो, तो हार हो। मुझे याद नहीं पड़ता कि फीस लेते समय मैंने कभी हार-जीतके आधार पर फीसकी दरें तय की हों। मुवक्किल हारे चाहे जीते, मैं तो हमेशा मेहनताना ही माँगता था, और जीतने पर भी अुसीकी आशा रखता था। मुवक्किलको भी शुरूसे कह देता — 'मामला झूठा हो, तो मेरे पास मत आना।' आखिर मेरी साख तो यही क़ायम हुअी थी कि झूठे केस मेरे पास कभी आते ही न थे।

वकालत करते समय मैंने अपनी अेक अैसी आदत भी डाली थी, कि मैं अपना अज्ञान न मुवक्किलसे छिपाता था, न वकीलसे। जहाँ-जहाँ मुझे कुछ सूझ नहीं पड़ता, वहाँ-वहाँ मुवक्किलको दूसरे वकीलके पास जानेको कहता अथवा कोअी मुझे वकील करता, तो मैं अुससे कहता, कि किसी अधिक अनुभवी वकीलकी सलाह लेकर मैं अुसका काम करूँगा। अिस शुद्धताके कारण मैं मुवक्किलोंका अखूट प्रेम और विश्वास सम्पादन कर सका था।

अिस विश्वास और प्रेमका पूरा-पूरा लाभ मुझे अपने सार्वजनिक काममें हुआ।

दक्षिण अफ्रीकामें वकालत करनेका हेतु केवल लोक-सेवा था। अिस सेवाके लिअे भी मुझे लोगोंका विश्वास सम्पादन करनेकी आवश्यकता थी। अुदार दिलके हिन्दुस्तानियोंने पैसे लेकर की गअी वकालतको भी सेवा माना, और जब मैंने अुन्हें अुनके हक़ोंके लिअे जेलके दुःख सहनेकी सलाह दी, तब अुनमेंसे बहुतोंने अुस सलाहको ज्ञानपूर्वक स्वीकार करनेकी अपेक्षा मेरे प्रतिकी अपनी श्रद्धा और मेरे प्रतिके अपने प्रेमके वश ही स्वीकार किया था। सैकड़ों, मुवक्किल न रहकर मेरे मित्र बन गये, सार्वजनिक सेवामें मेरे सच्चे साथी बने, और मेरे कठोर जीवनको अुन्होंने रसमय बना दिया।

१०२

पहला अनुभव

मेरे स्वदेश आनेके पहले जो लोग फिनिक्ससे वापस लौटनेवाले थे, वे यहाँ आ पहुँचे थे। मैंने अुन्हें लिखा था कि वे अेण्ड्रूज़से मिल लें और वे जैसा कहें वैसा करें।

शुरूमें अुन्हें काँगड़ी गुरुकुलमें ठहराया गया। वहाँ स्व० श्रद्धानन्दजीने अुन्हें अपने बालकोंकी तरह रखा। अिसके बाद अुन्हें शांतिनिकेतनमें रखा गया। वहाँ कविवरने और अुनके समाजने अुन्हें अुतने ही प्रेमसे नहलाया।

बम्बअीके बन्दरगाह पर अुतरते ही मुझे पता चला कि अुस समय यह परिवार शांतिनिकेतनमें था। अिसलिअे गोखलेसे मिलनेके बाद मैं वहाँ जानेको अधीर हो गया था।

बम्बअीमें सम्मान स्वीकार करते समय ही मुझे अेक छोटा-सा सत्याग्रह करना पड़ा था। मेरे निमित्तसे मि० पिटीटके यहाँ अेक सभा रखी गअी थी। अुसमें मैं गुजरातीमें जवाब देनेकी हिम्मत न कर सका। अुस महलमें और आँखोंको चौंधियानेवाले अुस ठाटबाटके बीच गिरमिटियोंकी सोहबतमें रहनेवाला मैं अपने-आपको देहाती-जैसा लगा। आजकी पोशाकके मुक़ाबले अुस समय पहना हुआ अँगरखा, साफ़ा आदि अपेक्षाकृत सुधरी हुअी पोशाक कही जा सकती है, फिर भी मैं अुस अलंकृत समाजमें अलग ही छिटका पड़ता था। लेकिन वहाँ तो जैसे-तैसे मैंने अपना काम निबाहा, और फीरोज़शाह मेहताकी बग़लमें आसरा लिया।

गुजरातियोंकी सभा तो थी ही। अिस सभाके बारेंमे मैंने पहलेसे कुछ बातें जान ली थीं। मि० जिन्ना भी गुजराती थे, अिसलिअे सभामें वे भी हाजिर थे। अुन्होंने अपना छोटा और मीठा भाषण अंग्रेज़ीमें किया। दूसरे भाषण भी अधिकतर अंग्रेज़ीमें ही हुअे। जब मेरे बोलनेका समय आया, तो मैंने अुत्तर गुजरातीमें ही दिया और गुजराती तथा हिन्दुस्तानीके प्रति अपने पक्षपातको कुछ ही शब्दोंमें व्यक्त करके मैंने गुजरातियोंकी सभामें अंग्रेज़ीके अुपयोगके विरुद्ध अपना नम्र विरोध दर्ज कराया। मुझे यह देखकर खुशी हुअी कि मैंने गुजरातीमें अुत्तर देनेकी जो हिम्मतकी थी अुसका किसीने अनर्थ नहीं किया, और सबने मेरे अुस विरोधको सहन कर लिया।

अिस प्रकार बम्बअीमें दो-अेक दिन रहकर और प्रारम्भिक अनुभव लेकर मैं गोखलेकी आज्ञासे पूना गया।

१०३

पूनामें

पूनामें गोखलेने और सोसायटीके सदस्योंने मुझे अपने प्रेमसे नहलाया। गोखलेकी तीव्र अिच्छा थी कि मैं भी सोसायटीमें सम्मिलित हो जाअूं। मैं स्वयं तो चाहता ही था, किन्तु सदस्योंको अैसा प्रतीत हुआ कि सोसायटीके आदर्श और काम करनेकी अुसकी रीति मुझसे भिन्न थी। अिसलिअे मेरे सदस्य बनने अथवा न बननेके बारेमें अुनके मनमें शंका थी।

मैंने अपने विचार गोखलेको बता दिये थे। मैं सोसायटीका सदस्य बनूं या न बनूं, तो भी मुझे अेक आश्रम खोलकर अुसमें फिनिक्सके साथियोंको रखना और खुद वहां बैठना था ही। अिस विश्वासके कारण कि गुजराती होनेसे मेरे पास गुजरातके द्वारा सेवा करनेकी पूंजी अधिक होनी चाहिये, मैं गुजरातमें ही कहीं स्थिर होना चाहता था। गोखलेको यह विचार पसन्द पड़ा था, अिसलिअे अुन्होंने कहा —

'आप अवश्य अैसा कीजिये। सदस्योंके साथकी बातचीतका जो भी परिणाम हो, यह तय है कि आपको आश्रमके लिअे द्रव्य मुझीसे लेना है। अुसे मैं अपना ही आश्रम समझूँगा।'

मेरा हृदय प्रफुल्लित हुआ। यह सोचकर मैं बहुत खुश हुआ कि मुझे पैसे अुगाहनेके धंधेसे मुक्ति मिल गअी है; अब मुझे अपनी जवाबदारी पर नहीं चलना पड़ेगा, बल्कि हरअेक परेशानीके समय मेरी रहनुमाअीके लिअे कोअी होगा। अिस विश्वासके कारण मुझे अैसा लगा, मानो मेरे सिरका बड़ा बोझ अुतर गया हो।

१०४

धमकी यानी क्या ?

बम्बअीसे मुझे अपने बड़े भाअीकी विधवाको और दूसरे कुटुम्बियोंको मिलनेके लिअे राजकोट और पोरबन्दर जाना था, अिसलिअे मैं अुधर गया।

बम्बअीसे काठियावाड़ तीसरे दर्जेमें ही जाना था। अिस यात्रामें मुझे साफ़ा और अँगरखा अुपाधिरूप प्रतीत हुअे। अिसलिअे मैंने केवल कुर्ता, धोती और आठ-दस आनेकी काश्मीरी टोपी ही पहनी। अिस तरहकी पोशाक पहननेवाला ग़रीब आदमी ही माना जाता है। अुन दिनों वीरमगाम अथवा वढ़वाणमें प्लेगके कारण तीसरे दर्जेके मुसाफ़िरोंकी जाँच होती थी। मुझे थोड़ा बुख़ार था। जाँच करनेवाले अधिकारीने मुझे हुक्म दिया कि मैं राजकोटमें डॉक्टरसे मिलूँ, और मेरा नाम लिख लिया।

वढ़वाण स्टेशन पर मुझे वहाँके प्रसिद्ध लोक-सेवक दर्जी मोतीलाल मिले थे। अुन्होंने मुझसे वीरमगामकी चुंगी-संबंधी जाँच-पड़ताल और अुस निमित्तसे होनेवाली कठिनाअियोंकी चर्चा की थी। मैंने अुन्हें संक्षेपमें ही में जवाब दिया —

'आप जेल जानेको तैयार हैं?'

मोतीलालने बहुत दृढ़तापूर्वक जवाब दिया —

'हम जरूर जेल जायेंगे, लेकिन आपको हमारी रहनुमाअी करनी होगी।'

मोतीलाल पर मेरी आँख टिक गअी। बादमें मैं अुनके संपर्कमें ठीक-ठीक आया था। जब सत्याग्रह-आश्रम स्थापित हुआ, तो वे हर महीने वहाँ कुछ दिन अपनी हाज़िरी दर्ज करा ही जाते थे। बालकोंको सीना सिखाते और आश्रमका सिलाअी-काम भी कर जाते थे। वीरमगामकी बात मुझे रोज सुनाते रहते थे। ये मोतीलाल भरी जवानीमें बीमारीके शिकार बन गये।

राजकोट पहुँचने पर मैं दूसरे दिन सवेरे अुस हुक्मके मुताबिक़ अस्पतालमें हाजिर हुआ। वहाँ तो मैं अपरिचित नहीं था। डॉक्टर शरमाये और जाँच करनेवाले अुक्त अधिकारी पर नाराज़ होने लगे। मुझे अुस नाराजीका कोअी कारण नज़र न आया। अधिकारीने तो अपने धर्मका पालन किया था। काठियावाड़में मैं जहाँ-जहाँ भी घूमा, वहाँ-वहाँ वीरमगामकी चुंगी-संबंधी जाँचके सिलसिलेमें होनेवाली परेशानियोंकी शिकायतें सुनीं। मुझे अिस संबंधमें जो भी सामग्री मिली, मैं अुसे पढ़ गया। बम्बअी-सरकारसे पत्र-व्यवहार शुरू किया। सेक्रेटरीसे मिला। लॉर्ड विलिंग्डनसे भी मिला था। अुन्होंने सहानुभूति प्रकट की, किन्तु दिल्लीकी ढिलाअीकी शिकायत की।

मैंने केन्द्रीय सरकारके साथ पत्र-व्यवहार शुरू किया। जब मुझे लार्ड चेम्सफर्डसे मिलनेका मौक़ा मिला, अुस समय यानी क़रीब दो सालके पत्रव्यवहारके बाद, मामलेकी सुनवाअी हुअी। कुछ ही दिनोंमें मैंने अखबारमें चुंगी रद्द करने-संबंधी नोटिस पढ़ा।

मैंने अिस जीतको सत्याग्रहकी बुनियाद-जैसा माना। बम्बअी-सरकारके सेक्रेटरीने मुझे बगसरामें किये गये मेरे भाषणमें सत्याग्रहका जो अुल्लेख हुआ था, अुसके बारेमें लिखा और पूछा —

'क्या आप अिसे धमकी नहीं मानते ? और क्या शक्तिशाली सरकार अैसी धमकीकी परवाह करेगी ?'

मैंने जवाब दिया —

'यह धमकी नहीं है। यह लोक-शिक्षा है। मेरे जैसे व्यक्तिका धर्म है कि वह लोगोंको अपने दुःख दूर करनेके सब वास्तविक अुपाय समझाये। जो जनता स्वतंत्रता चाहती है, अुसके पास अपनी रक्षाका अन्तिम अुपाय होना चाहिये। साधारणतः अैसे अुपाय हिंसक होते हैं। सत्याग्रह शुद्ध अहिंसक शस्त्र है। मैं अुसके अुपयोग और अुसकी मर्यादाको समझाना अपना धर्म मानता हूँ। अंग्रेज़ सरकार शक्तिशाली है, अिस विषयमें मुझे कोअी शंका नहीं। किन्तु सत्याग्रह सर्वोपरी शस्त्र है, अिस विषयमें भी मुझे कोअी शंका नहीं।'

समझदार सेक्रेटरीने अपना सिर हिलाया और बोले — 'हम देखेंगे।'

१०५

शांतिनिकेतन

राजकोटसे मैं शांतिनिकेतन गया। वहाँ शांतिनिकेतनके अध्यापकों और विद्यार्थियोंने मुझे अपने प्रेमसे नहलाया। स्वागतकी विधिमें सादगी, कला और प्रेमका सुन्दर मिश्रण था।

यहाँ मेरे मंडलको अलगसे ठहराया गया था। मगनलाल गांधी अुस मंडलको सम्हाल रहे थे, और फिनिक्स आश्रमके सब नियमोंका पालन सूक्ष्मतासे करते-कराते थे। अुन्होंने अपने प्रेम, ज्ञान और अुद्योगकी बदौलत अपनी सुगंध शांतिनिकेतनमें फैलाअी थी।

अपने स्वभावके अनुसार मैं विद्यार्थियों और शिक्षकोंमें घुलमिल गया, और स्वपरिश्रमके विषयमें चर्चा करने लगा। मैंने वहाँके शिक्षकोंके सामने अपनी यह बात रखी कि वैतनिक रसोअियोंके बदले शिक्षक और विद्यार्थी अपनी रसोअी स्वयं बना लें तो अच्छा हो। कुछ लोगोंको यह प्रयोग बहुत अच्छा लगा। नअी चीज़, फिर वह कैसी ही क्यों न हो, बालकोंको तो अच्छी लगती ही है, अिस न्यायसे यह चीज़ भी

अच्छी लगी, और प्रयोग शुरू हुआ। जब कविश्रीके सामने यह चीज़ रखी गअी, तो अुन्होंने अपनी यह सम्मति दी कि यदि शिक्षक अनुकूल हों, तो स्वयं अुन्हें तो यह प्रयोग अवश्य ही पसन्द होगा। अुन्होंने विद्यार्थियोंसे कहा — 'अिसमें स्वराज्यकी चाबी मौजूद है।'

लेकिन मेहनतके अिस कामको सवा सौ विद्यार्थी और शिक्षक भी अेकदम नहीं अपना सकते थे। अतअेव रोज़ चर्चा होती। कुछ लोग थकते।

आखिर कुछ कारणोंकी वजहसे यह प्रयोग बन्द हो गया। मेरा विश्वास यह है कि अिस जगत्‌विख्यात संस्थाने थोड़े समयके लिअे भी अिस प्रयोगको अपनाकर कुछ खोया नहीं। मैं शांतिनिकेतनमें कुछ समय तक रहनेका अिरादा रखता था। किन्तु विधाता मुझे ज़बरदस्ती घसीट कर ले गया। मैं मुश्किलसे अेक हफ़्ता वहाँ रहा होअूँगा, कि अितनेमें पूनासे गोखलेके अवसानका तार मिला। शांतिनिकेतन शोकमें डूब गया। सब मेरे पास समवेदनाके लिअे आये। मंदिरमें विशेष सभा की गअी। मैं अुसी दिन पूनाके लिअे रवाना हुआ। पत्नी और मगनलालको अपने साथ लिया। बाक़ी सब शांतिनिकेतनमें रहे।

बर्दवान तक अेण्ड्रूज़ मेरे साथ आये थे। अुन्होंने मुझसे पूछा — 'क्या आपको अैसा मालूम होता है कि हिन्दुस्तानमें सत्याग्रह करनेका अवसर आवेगा? और अगर अैसा मालूम होता हो, तो कब आवेगा, अिसकी कोअी कल्पना आपको है?'

मैंने जवाब दिया — 'अिसका जवाब देना मुश्किल है। अभी अेक वर्ष तो मुझे कुछ करना ही नहीं है। गोखलेने मुझसे प्रतिज्ञा करवाअी है, कि मुझे अेक वर्ष तक भ्रमण करना है, किसी सार्वजनिक प्रश्न पर अपना विचार न बनाना है, न प्रकट करना है। मैं अिस प्रतिज्ञाको अक्षरशः पालनेवाला हूँ। बादमें भी मुझे किसी प्रश्न पर कुछ कहनेकी ज़रूरत होगी, तभी मैं कहूँगा। अिसलिअे मैं नहीं समझता कि पाँच वर्ष तक सत्याग्रह करनेका कोअी अवसर आयेगा।'

१०६

मेरा प्रयत्न

पूना पहुँचने पर अुत्तरक्रिया आदि संपन्न करके हम
प्रश्नकी चर्चामें लग गये कि अब सोसायटी किस तरह निभे
अुसमें सम्मिलित होना चाहिये या नहीं। गोखलेके जीतेजी
सोसायटीमें दाख़िल होनेका प्रयत्न करना ज़रूरी न था। मु
गोखलेकी आज्ञा और अिच्छाके वश होना था। मुझको यह स्थिति
थी। भारतवर्षके तूफ़ानी समुद्रमें पड़ते समय मुझे अेक क
ज़रूरत थी, और गोखले-जैसे कर्णधारकी छायामें मैं सुरक्षित

किन्तु अब मुझे अैसा लगने लगा कि सोसायटीमें दाखिल
लिअे मुझे सतत प्रयत्न करना होगा। मैंने यह अनुभव कि
गोखलेकी आत्मा यह चाहेगी। मैंने बिना संकोचके और दृढ़त
अिसका प्रयत्न शुरू किया। किन्तु मैंने देखा कि सदस्योंमें मतभेद

हमारी सारी चर्चा मीठी थी और केवल सिद्धान्तका अनु
करनेवाली थी। लम्बी चर्चाके बाद हम अेक-दूसरेसे अलग
सदस्योंने दूसरी सभा तक निर्णयको मुल्तवी रखा।

घर लौटते हुअे मैं विचारके चक्रमें फँसा। क्या मेरे
बहुमतके सहारे दाख़िल होना अिष्ट होगा? क्या वह गोखलेके प्र
मेरी वफ़ादारी मानी जायगी? अगर मेरे विरुद्ध मत प्रकट हो, तो
अुस दशामें मैं सोसायटीकी स्थितिको नाज़ुक बनानेका निमित्त
बनूंगा? मैंने स्पष्ट देखा कि जब तक सोसायटीके सदस्योंमें मुझे दाखि
करनेके बारेमें मतभेद रहे तब तक स्वयं मुझीको दाख़िल होनेका आग्र
छोड़ देना चाहिये, और अिस प्रकार विरोधी पक्षको नाज़ुक स्थिति
पड़नेसे बचा लेना चाहिये; अुसीमें सोसायटी और गोखलेके प्रति मेरी
वफ़ादारी थी। ज्यों ही अन्तरात्मामें अिस निणयका अुदय हुआ, मैंने
तत्काल श्री शास्त्रीको पत्र लिखा, कि वे मेरे प्रवेशके विषयमें सभा

बुलायें ही नहीं। सोसायटीमें दाखिल होनेकी अपनी अर्ज़ीको वापस लेकर मैं सोसायटीका सच्चा सदस्य बना।

अनुभवसे मैं देखता हूँ, कि मेरा प्रथाके अनुसार सोसायटीका सदस्य न बनना ही अुचित था, और जिन सदस्योंने मेरे प्रवेशके बारेमें विरोध किया था अुनका विरोध वास्तविक था। लौकिक दृष्टिसे चाहे मैं सदस्य न रहा होअूं, फिर भी आध्यात्मिक दृष्टिसे तो मैं सदस्य रहा ही हूँ। लौकिक संबंधकी अपेक्षा आध्यात्मिक संबंध अधिक क़ीमती है। आध्यात्मिकतासे विहीन लौकिक संबंध प्राण-विहीन देहके समान है।

१०७

कुंभ

मुझे डॉक्टर प्राणजीवनदास महेतासे मिलनेके लिअे रंगून जाना था। वहाँ जाते हुअे श्री भूपेन्द्रनाथ बसुका निमंत्रण पाकर मैं कलकत्तेमें अुनके घर ठहरा। यहाँ बंगाली शिष्टाचारकी पराकाष्ठा हो गअी थी। अुन दिनों मैं फलाहार ही करता था। कलकत्तेमें जितना सूखा और हरा मेवा मिला, अुतना अिकट्ठा किया गया था। मेरे साथियोंके लिअे अनेक प्रकारके पक्वान्न बनाये गये थे। मैं अिस प्रेम और विवेकको तो समझा, लेकिन अेक-दो मेहमानोंके लिअे समूचे परिवारका सारे दिन व्यस्त रहना मुझे असह्य प्रतीत हुआ। अिस मुसीबतसे बचनेका मेरे पास अिलाज न था।

रंगूनमें भी मेरे फलाहारकी अुपाधि अपेक्षाकृत अधिक तो थी ही। मैंने पदार्थों पर तो अंकुश रख लिया था, लेकिन मैंने अुनकी कोअी मर्यादा निश्चित नहीं की थी। अिस कारण तरह-तरहका जो मेवा आता, अुसका मैं विरोध न करता। नाना प्रकारकी वस्तुअें आँख और जीभके लिअे रुचिकर होती हैं। खानेका कोअी निश्चित समय नहीं रहता था। मैं खुद जल्दी खाना पसंद करता था। लेकिन रातके आठ-नौ तो सहज ही बज जाते थे।

सन् १९१५ में हरद्वारमें कुंभका मेला था। अुसमें जानेकी मेरी कोअी अिच्छा न थी। लेकिन मुझे महात्मा मुन्शीरामजीके दर्शनोंके लिअे तो जाना ही था। कुंभके अवसर पर गोखलेके सेवक-समाजने अेक बड़ा जत्था भेजा था। तय हुआ था कि अुसकी मददके लिअे मैं अपना दल भी ले जाअूँ। शांतिनिकेतनवाली टुकड़ीको लेकर मगनलाल गांधी मुझसे पहले हरद्वार पहुँच गये थे। रंगूनसे लौटकर मैं अुनसे जा मिला।

हमने शांतिनिकेतनमें ही देख लिया था कि भंगीका काम करना हमारा अेक खास धन्धा ही बन जायगा। पाखानोंके लिअे डॉ० देवने खड्डे खुदवाये थे। अिन खड्डोंमें जमा होनेवाले पाखानेको समय-समय पर ढँकने और दूसरी तरह साफ़ रखनेका काम फिनिक्सकी टुकड़ीके ज़िम्मे कर देनेकी मेरी माँगको डॉ० देवने खुशी-खुशी मंजूर कर लिया। अिस सेवाकी माँग तो मैंने की, लेकिन अिसे करनेका बोझ मगनलाल गांधीने अुठाया।

मेरा धन्धा तो अधिकतर डेरेके अन्दर बैठकर 'दर्शन' देने और आनेवाले अनेक यात्रियोंके साथ धर्मकी और अैसी ही दूसरी चर्चा करनेका बन गया। मैं 'दर्शन' देते-देते अकुला अुठा। मुझे अुससे अेक मिनटकी भी फ़ुरसत न मिलती। अपने तम्बूके किसी भी हिस्सेमें मैं अेक क्षणके लिअे भी अकेला बैठ नहीं सकता था। दक्षिण अफ्रीकामें जो थोड़ी-बहुत सेवा बन पड़ी थी, अुसका अितना गहरा प्रभाव सारे भरतखण्ड पर पड़ा है, सो मैं हरद्वारमें अनुभव कर सका।

मैं तो चक्कीके पाटोंके बीच पिसने लगा। जहाँ प्रकट न होता, वहाँ तीसरे दर्जेके मुसाफ़िरकी तरह कष्ट अुठाता। और जहाँ ठहरता, वहाँ दर्शनार्थियोंके प्रेमसे अकुला अुठता। मेरे लिअे यह कहना प्रायः कठिन हो गया है कि अिन दोमें से कौनसी स्थिति अधिक दयाजनक होगी।

अुन दिनों मुझमें घूमने-फिरनेकी शक्ति काफ़ी थी। अिसलिअे मैं ठीक-ठीक घूम-फिर सका था। अिस भ्रमणमें मैंने लोगोंकी धर्म-भावनाकी अपेक्षा अुनका बावरापन, अुनकी चंचलता, पाखण्ड और अव्यवस्थाके ही अधिक दर्शन किये। साधुओंका तो जमघट ही

अिकट्ठा हुआ था। अैसा प्रतीत हुआ, मानो वे सिर्फ़ मालपुअे और खीर खानेके लिअे ही जन्मे हों। यहाँ मैंने पाँच पैरोंवाली गाय देखी। मुझे तो अिससे आश्चर्य हुआ, किन्तु अनुभवी लोगोंने मेरे अज्ञानको तुरन्त दूर कर दिया।

कुंभका दिन आया। मेरे लिअे वह धन्य घड़ी थी। मैं यात्राकी भावनासे हरद्वार नहीं गया था। तीर्थ-क्षेत्रमें पवित्रताकी शोधके लिये भटकनेका मोह मुझे कभी रहा न था। किन्तु सत्रह लाख लोग पाखण्डी नहीं हो सकते। अिनमें असंख्य लोग पुण्य कमानेके लिअे, शुद्धि प्राप्त करनेके लिअे आये थे, अिस बारेमें मुझे कोअी शंका न थी। यह कहना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है, कि अिस प्रकारकी श्रद्धा आत्मांको किस हद तक अूपर अुठाती होगी।

मैं बिछौने पर पड़ा-पड़ा विचारसागरमें डूबा। चारों ओर फैले हुअे पाखण्डके बीच ये पवित्र आत्मायें भी हैं। वे अीश्वरके दरबारमें दण्डनीय नहीं मानी जायँगी। यदि अैसे अवसर पर हरद्वारमें आना ही पाप हो, तो मुझे प्रकट रूपसे अुसका विरोध करके कुंभके दिन तो हरद्वारका त्याग ही करना चाहिये। यदि आनेमें और कुंभके दिन रहनेमें पाप न हो, तो मुझे कोअी न कोअी कठोर व्रत लेकर प्रचलित पापका प्रायश्चित्त करना चाहिये, आत्मशुद्धि करनी चाहिये। मेरा जीवन व्रतों द्वारा बना है। अिसलिअे मैंने कोअी कठिन व्रत लेनेका निश्चय किया। मुझे अुस अनावश्यक परिश्रमकी याद आअी, जो कलकत्ते और रंगूनमें मेरे कारण यजमानोंको अुठाना पड़ा था। अिसलिअे मैंने आहारकी वस्तुओंकी मर्यादा आँकने और अँधेरेसे पहले भोजन कर लेनेका व्रत लेना निश्चित किया। चौबीस घण्टोंमें पाँच चीज़ोंसे अधिक कुछ न खानेका और रात्रि-भोजनके त्यागका व्रत मैंने ले ही लिया। अिन व्रतोंमें अेक भी गली न रखनेका मैंने निश्चय किया। अिन दो व्रतोंने मेरी ठीक-ठीक परीक्षा की है, किन्तु जिस प्रकार परीक्षा की है, अुसी प्रकार ये मेरे लिअे ढाल-रूप भी बहुत सिद्ध हुअे हैं। अिनके कारण मेरा जीवन बढ़ा है, और अिनकी वजहसे मैं अनेक बार बीमारियोंसे बच निकला हूँ।

लक्ष्मण झूला

जब मैं पहाड़-से प्रतीत होनेवाले महात्मा मुन्शीरामजीके दर्शन करनेके हेतुसे अुनका गुरुकुल देखने गया, तो वहाँ मैंने बहुत शांति अनुभव की। महात्माने मुझे प्रेमसे नहलाया। गुरुकुलमें औद्योगिक शिक्षा दाखिल करनेकी आवश्यकताके बारेमें रामदेवजी और दूसरे शिक्षकोंके साथ काफ़ी चर्चा की। जल्दी ही गुरुकुलसे विदा होते समय मैंने दुःखका अनुभव किया।

मैंने लक्ष्मण झूलेकी बहुत तारीफ़ सुन रखी थी। मैं वहाँ पैदल जाना चाहता था। अेक मंज़िल हृषीकेशकी और वहाँसे दूसरी लक्ष्मण झूलेकी थी।

हृषीकेशमें बहुतसे संन्यासी मिलने आये थे। अुनमें से अेकको मेरे जीवनमें बहुत दिलचस्पी पैदा हुअी। मेरे सिर पर शिखा और गलेमें जनेअू न देखकर अुन्हें दुःख हुआ, और अुन्होंने मुझसे पूछा — 'आप आस्तिक होते हुअे भी जनेअू और शिखा नहीं रखते हैं, अिससे हमारे समान लोगोंको दुःख होता है। ये दो हिन्दूधर्मकी बाह्य संज्ञायें हैं, और प्रत्येक हिन्दूको अिन्हें धारण करना चाहिये।'

मैंने कहा — 'मैं जनेअू तो धारण नहीं करूँगा। जिसे न पहनते हुअे भी असंख्य हिन्दू हिन्दू माने जाते हैं, अुसे पहननेकी मैं अपने लिअे कोअी ज़रूरत नहीं देखता। फिर, जनेअू धारण करनेका अर्थ है, दूसरा जन्म लेना; अर्थात् स्वयं संकल्पपूर्वक शुद्ध बनना, अूर्ध्वगामी बनना। आजकल हिन्दूसमाज और हिन्दुस्तान दोनों गिरी हुअी हालतमें हैं। ये दोनों जिस गिरी हुअी हालतमें हैं, अुसमें जनेअू धारण करनेका हमें अधिकार ही क्या है? हिन्दूसमाजको जनेअूका अधिकार तभी हो सकता है, जब वह अस्पृश्यताका मैल धो डाले,

अूँच-नीचकी वात भूल जाय, दूसरे जड़ जमाये हुअे दोषोंको दूर करे, और चारों ओर फैले हुअे अधर्म तथा पाखण्डको मिटावे। अिसलिअे जनेअू धारण करनेकी आपकी वात मेरे गले नहीं अुतरती। किन्तु शिखाके सम्बन्धमें आपकी वात मुझे अवश्य सोचनी होगी। मैं शिखा तो रखता था। अुसे मैंने शरम और डरके मारे ही कटा डाला है। मुझे लगता है कि शिखा धारण करनी चाहिये। मैं अिस सम्वन्धमें अपने साथियोंसे चर्चा कर लूँगा।'

जनेअूके विषयमें दी गअी मेरी दलील स्वामीको अच्छी न लगी। जब वाह्य संज्ञा केवल आडंबर-रूप हो जाती है अथवा अपने धर्मको दूसरे धर्मसे अलग वतानेके काम आती है, तव वह त्याज्य हो जाती है। मैं नहीं देखता कि आजकल जनेअू हिन्दूधर्मको अूपर अुठानेका साधन है। अिसलिअे अुसके विषयमें मैं तटस्थ हूँ।

शिखाका त्याग स्वयं मेरे लिअे लज्जाजनक था, अिसलिअे साथियोंसे चर्चा करके मैंने अुसे धारण करनेका निश्चय किया।

हृषीकेश और लक्ष्मण झूलेके प्राकृतिक दृश्य वहुत भले लगे। प्राकृतिक कलाको पहचाननेकी पूर्वजोंकी शक्तिके विषयमें और कलाको धार्मिक स्वरूप देनेकी अुनकी दीर्घदृष्टिके विषयमें मैंने मन ही मन अत्यन्त आदरका अनुभव किया।

किन्तु मनुष्यकी कृतिसे चित्तको शांति न मिली। हरद्वारकी तरह ही हृषीकेशमें भी लोग रास्तोंको और गंगाके सुन्दर किनारोंको गन्दा कर देते थे। गंगाके पवित्र पानीको खराव करनेमें भी अुन्हें किसी प्रकारका संकोच न होता था।

लक्ष्मण झूला जाते हुअे लोहेका झूलता पुल देखा। वह पुल प्राकृतिक वातावरणको कलुषित करता था, और वहुत अप्रिय प्रतीत होता था। मेरी अुस समयकी वफ़ादारीको भी यह असह्य मालूम हुआ, कि यात्रियोंके अिस रास्तेकी चावी सरकारके हाथों सौंपी गअी थी।

१०९

आश्रमकी स्थापना

सन् १९१५ के मअी महीनेकी २५ तारीखके दिन सत्याग्रह आश्रमकी स्थाना हुअी। जब मैं अहमदाबादसे गुज़रा, तो अनेक मित्रोंने अहमदाबाद पसंद करनेको कहा, और आश्रमका खर्च खुद ही अुठा लेनेका जिम्मा लियां। अुन्होंने ही मकान खोजकर देना भी क़बूल किया।

अहमदाबाद पर मेरी नज़र टिकी थी। गुजराती होनेके कारण मैं मानता था कि गुजराती भाषाके द्वारा देशकी अधिक-से-अधिक सेवा कर सकूँगा। यह भी धारणा थी, कि चूँकि अहमदाबाद पहले हाथकी बुनाअीका केन्द्र था, अिसलिअे चरखेका काम यहीं अधिक अच्छी तरहसे हो सकेगा। साथ ही, यह आशा भी थी कि गुजरातका मुख्य नगर होनेके कारण यहाँके धनी लोग धनकी अधिक मदद कर सकेंगे।

अहमदाबादके मित्रोंके साथ जो चर्चायें हुअीं, अुनमें अस्पृश्योंका प्रश्न भी चर्चाका विषय बना था। मैंने स्पष्ट शब्दोंमें कहा था कि यदि कोअी योग्य अन्त्यज भाअी आश्रममें दाखिल होना चाहेगा, तो मैं अुसे ज़रूर दाखिल करूँगा।

मकानोंकी तलाश करते हुअे यह तय किया कि श्री जीवणलाल बैरिस्टरका कोचरबवाला मकान किरायेसे लिया जाय। मुझे अहमदाबादमें बसानेकी जिन्होंने आगे बढ़कर कोशिश की थी, अुनमें श्री जीवणलाल प्रमुख थे।

तुरंत ही प्रश्न अुठा कि आश्रमका नाम क्या रखा जाय? मित्रोंसे सलाह की। हमें तो सत्यकी पूजा, सत्यकी शोध करनी थी, अुसीका आग्रह रखना था। और, दक्षिण अफ्रीकामें मैंने जिस पद्धतिका अुपयोग किया था, भारतवर्षको अुसका परिचय कराना था, और यह देखना था कि अुसकी शक्ति कहाँ तक व्यापक हो सकती है; अिसलिअे मैंने और

साथियोंने 'सत्याग्रह-आश्रम' नाम पसंद किया। अिस नाममें सेवाका और सेवाकी पद्धतिका भाव सहज ही प्रकट होता था।

आश्रमके संचालनके लिअे नियमावली तैयार की और अुस पर सम्मतियाँ माँगीं। सर गुरुदास बेनर्जीको नियमावली अच्छी लगी, किन्तु अुन्होंने सुझाया कि व्रतोंमें नम्रताके व्रतको स्थान देना चाहिये। यद्यपि मैं जगह-जगह नम्रताके अभावको अनुभव करता था, फिर भी आभास यह होता था कि नम्रताको व्रतमें स्थान देनेसे नम्रता नम्रता न रह जायगी। नम्रताका सम्पूर्ण अर्थ तो शून्यता है। अिस शून्यता तक पहुँचनेके लिअे दूसरे व्रत आवश्यक हो सकते हैं। शून्यता तो मोक्षकी स्थिति है। मुमुक्षु अथवा सेवकके प्रत्येक कार्यमें नम्रता — निरभिमानता न हो, तो वह मुमुक्षु नहीं, सेवक नहीं; वह स्वार्थी है, अहंकारी है।

११०

कसौटी पर चढ़े

आश्रमको क़ायम हुअे अभी कुछ ही महीने हुअे थे, कि अितनेमें जैसी कसौटीकी मुझे आशा न थी, हमारी वैसी कसौटी हो गअी। भाअी अमृतलाल ठक्करका पत्र मिला — 'अेक ग़रीब और प्रामाणिक अन्त्यज परिवार है। वह आपके आश्रममें आकर रहना चाहता है। अुसे भरती करेंगे?'

मैं चौंका सही। साथियोंको पत्र पढ़नेके लिअे दिया। अुन्होंने स्वागत किया। भाअी अमृतलाल ठक्करको लिखा गया कि यदि वह परिवार आश्रमके नियमोंका पालन करनेको तैयार हो, तो अुसे भरती करनेकी तैयारी है।

दूदाभाअी, अुनकी पत्नी दानीबहन और दूध पीती व घुटनों चलती लक्ष्मी तीनों आये।

सहायक मित्र-मंडलीमें खलबली मच गअी। पैसेकी मदद बंद हुअी। बहिष्कारकी बातें मेरे कानों तक आने लगीं। मैंने साथियोंसे चर्चा करके तय कर रखा था कि — 'यदि हमारा बहिष्कार किया जाय, और हमें कहींसे कोअी मदद न मिले, तो भी अब हम अहमदाबाद नहीं छोड़ेंगे। अन्त्यजोंकी बस्तीमें जाकर अुनके साथ रहेंगे और जो भी कुछ मिलेगा, अुससे अथवा मज़दूरी करके अपना निर्वाह करेंगे।

आखिर मंगनलालने मुझे नोटिस दिया — 'अगले महीने आश्रमका ख़र्च चलानेके लिअे हमारे पास पैसे नहीं हैं।'

मैंने धीरजसे जवाब दिया — 'तो हम अन्त्यजोंकी बस्तीमें रहने जायँगे।'

मुझ पर अैसा संकट यह पहली ही बार नहीं आया था। हर बार अंतिम घड़ीमें साँवलेने मदद भेजी ही है।

अिसके बाद तुरंत ही अेक दिन सबेरे अेक सेठ मोटरमें आये और आश्रमके बाहर आ खड़े हुअे। मैं मोटरके पास गया। सेठने मुझसे पूछा — 'मैं आश्रमको कुछ मदद देना चाहता हूँ। आप लेंगे?'

मैंने जवाब दिया — 'अगर आप कुछ देंगे, तो मैं ज़रूर लूँगा। मुझे क़बूल करना चाहिये कि अिस समय मैं संकटमें भी हूँ।'

दूसरे दिन नियत समय पर मोटरका भोंपू बोला। सेठ अंदर न आये। मैं अुनसे मिलने गया। वे मेरे हाथमें रु० १३,०००)के नोट रखकर बिदा हो गये। मुझे लगभग अेक वर्षका ख़र्च मिल गया।

अिस परिवारको आश्रममें रखकर आश्रमने बहुतेरे पाठ सीखे हैं। और प्रारंभिक कालमें ही अिस बातके बिलकुल स्पष्ट हो जानेसे कि आश्रममें अस्पृश्यताके लिअे स्थान है ही नहीं, आश्रमकी मर्यादा निश्चित हो गअी, और अिस दिशामें अुसका काम बहुत सरल हो गया।

१११

गिरमिटकी प्रथा

नातालके गिरमिटियों पर लगा तीन पौंडका वार्षिक कर सन् १९१४ में अुठा दिया गया था, किन्तु गिरमिटकी प्रथा अभी तक बन्द न हुआी थी। भारतभूषण मालवीयजीने धारासभामें अिस प्रश्नको अुठाया था, और लॉर्ड हार्डिंगने अुनके प्रस्तावको स्वीकार करके घोषित किया था कि 'समय आने पर' अिस प्रथाको नष्ट करनेका वचन मुझे सम्राटकी ओरसे मिला है। लेकिन मुझे तो स्पष्ट ही लगा कि अिस प्रथाको तत्काल बन्द करनेका निर्णय हो जाना चाहिये। मैंने अिस प्रश्नके सिलसिलेमें हिन्दुस्तानका दौरा शुरू किया।

दौरेकी शुरुआत बम्बअीसे की। बम्बअीकी सभाके प्रस्तावमें गिरमिटकी प्रथा बंद करनेकी विनती करनी थी। सवाल था कि कब बन्द की जाय। तीन सुझाव थे — 'जितनी जल्दी हो सके अुतनी जल्दी,' '३१ वीं जुलाअी' और 'तुरंत'। '३१ वीं जुलाअी'का सुझाव मेरा था। मैं तो अेक निश्चित तारीख चाहता था, जिससे अुस अवधिमें कुछ न हो, तो आगे क्या करना है अथवा क्या किया जा सकता है, अिसकी सूझ पड़े। चर्चाके बाद प्रस्तावमें अुक्त तारीख रखी गअी। आमसभामें अुक्त प्रस्ताव रखा गया, और सर्वत्र ३१ वीं जुलाअी घोषित हुअी।

मैं कराची, कलकत्ता आदि स्थानोंमें भी हो आया था। सभी जगहोंमें अच्छी सभायें हुअीं और सब कहीं लोगोंमें खूब अुत्साह था। जब मैंने आरंभ किया था, तब मुझे यह आशा न थी कि अैसी सभायें होंगी और लोग अितनी संख्यामें हाजिर रहेंगे।

३१ वीं जुलाअीसे पहले गिरमिटकी प्रथाके बन्द होनेका प्रस्ताव प्रकाशित हुआ। सन् १८९४ में अिस प्रथाकी निन्दा करनेवाली

पहली अर्ज़ी मैंने तैयार की थी, और आशा रखी थी कि किसी-न किसी दिन यह 'आधी ग़ुलामी' रद्द होगी ही। सन् १८९४ से शुरू हुअे अिस प्रयत्नमें बहुतोंकी सहायता थी। किन्तु यह कहे बिना नहीं रहा जाता कि अिसके पीछे शुद्ध सत्याग्रह था।

११२

नीलका दाग़

जिस तरह चम्पारनमें आमके वन हैं, अुसी तरह सन् १९१७ में वहाँ नीलके खेत थे। चम्पारनके किसान अपनी ही ज़मीनके ३/२० भागमें नीलकी खेती, अुसके असल मालिकोंके लिअे करनेको क़ानूनसे बँधे हुअे थे। अिसे वहाँ 'तीन कठिया' कहा जाता था।

राजकुमार शुक्ल नामक चम्पारनके अेक किसान थे। अुन पर दुःख पड़ा था। यह दुःख अुन्हें अखरता था। लेकिन अपनी मुसीबतकी वजहसे अुनमें नीलके अिस दाग़को सबके लिअे धो डालनेकी अेक लगन पैदा हो गअी थी।

जब मैं लखनअू कांग्रेसमें गया, तो वहाँ अिस किसानने मेरा पीछा पकड़ा। लखनअूसे मैं कानपुर गया था। वहाँ भी राजकुमार शुक्ल हाज़िर मिले। जब मैं आश्रम पहुँचा, तो राजकुमार शुक्ल मेरे पीछे-पीछे वहाँ भी मौजूद थे। 'अब तो दिन मुकर्रर कीजिये।' मैंने कहा — 'देखिये, मुझे अमुक तारीखको कलकत्ता पहुँचना है। वहाँ आअिये, और मुझे ले जाअिये।' कलकत्तेमें मेरे भूपेन बाबूके घर पहुँचनेसे पहले अुन्होंने अुनके घर अपना डेरा डाल ही लिया था। अिस अनपढ़-अनगढ़ किन्तु निश्चयी किसानने मुझे जीत लिया।

सन् १९१७ के आरंभमें हम दोनों कलकत्तेसे रवाना हुअे। दोनोंकी अेकसी जोड़ी थी। दोनों किसान-जैसे ही मालूम होते थे। राजकुमार शुक्ल जिस गाड़ी पर ले गये, अुस गाड़ीमें हम दोनों सवार हुअे।

सवेरे पटना अुतरे। वे मुझे राजेन्द्रबाबूके घर ले गये। राजेन्द्रबाबू पुरी या कहीं और गये थे।

बिहारमें तो छुआछूतका बहुत सख्त रिवाज था। मेरी बालटीके पानीके छींटे नौकरको भ्रष्ट करते थे। राजकुमारने मुझे अन्दरके पाखानेका अुपयोग करनेको कहा। नौकरने बाहरके पाखानेकी ओर अिशारा किया। मेरे लिअे अिसमें परेशान या गुस्सा होनेका कोअी कारण न था। अिस प्रकारके अनुभव कर-करके मैं बहुत पक्का हो चुका था। अिन मनोरंजक अनुभवोंके कारण राजकुमार शुक्लके प्रति जिस तरह मेरा आदर बढ़ा, अुसी तरह अुनके संबंधका मेरा ज्ञान भी बढ़ा। पटनेसे लगाम मैंने अपने हाथमें ली।

११३

बिहारकी सरलता

किसी समय मौलाना मज़रुलहक़ और मैं दोनों लंदनमें पढ़ते थे। अुसके बाद हम सन् '१५ की बम्बअी कांग्रेसमें मिले थे। अुन्होंने पुरानी पहचान बताकर मुझे पटना जाने पर अपने घर आनेका आमंत्रण दिया था। अिस आमंत्रणके सहारे मैंने अुन्हें चिट्ठी भेजी। वे तुरन्त अपनी मोटर लाये और मुझे अपने घर ले चलनेका आग्रह किया। मैंने अुनका आभार माना और अुनसे कहा कि जिस जगह मुझे जाना है, वहांके लिअे वे मुझको पहली ट्रेनसे रवाना कर दें। अुसी दिन शामको मुज़फ़्फ़रपुरके लिअे ट्रेन जाती थी। अुन्होंने मुझे अुसमें रवाना किया। अुन दिनों आचार्य कृपलानी मुज़फ़्फ़रपुरमें रहते थे। मैंने अुन्हें तार किया। वे अध्यापक मलकानीके घर रहते थे। मुझे अुन्हींके यहां ले गये।

सवेरे मुवक्किलोंका अेक छोटा-सा दल मुझे मिलने आया। अुनमेंके रामनवमीप्रसादने अपने आग्रहके कारण मेरा ध्यान आकर्षित किया।

'आप जो काम करने आये हैं, वह अिस जगहसे न होगा। गयाबाबू यहाँके प्रसिद्ध वकील हैं। अुनकी ओरसे मैं आग्रह करता हूँ, कि आप अुनके घर ठहरें। हम सब सरकारसे डरते तो हैं ही, लेकिन हमसे जितनी बनेगी, हम आपकी मदद करेंगे। राजकुमार शुक्लकी बहुत-सी बातें बिलकुल सच हैं। मैंने बाबू ब्रजकिशोरप्रसाद और राजेन्द्रप्रसादको तार किये हैं। वे दोनों फ़ौरन ही आ जायँगे और आपको पूरी जानकारी व मदद दे सकेंगे।'

मैं गयाबाबूके घर गया। अुन्होंने और अुनके परिवारवालोंने मुझे प्रेमसे नहलाया।

ब्रजकिशोरबाबू और राजेन्द्रबाबू आये। ब्रजकिशोरबाबूके प्रति वकील-मंडलका आदरभाव देखकर मुझे सानन्द आश्चर्य हुआ। अिस मंडलीके और मेरे बीच जीवन-भरकी गाँठ बँध गअी।

ब्रजकिशोरबाबूने मुझे सारी हक़ीक़तोंकी जानकारी दी। मैंने कहा—'अब हमें मुक़दमे चलानेका ख़याल छोड़ ही देना चाहिये। जहाँ सब कोअी अितने भयभीत रहते हैं, वहाँ कचहरियोंकी मारफ़त कोअी अिलाज थोड़े ही हो सकता है। लोगोंके लिअे तो सच्ची औषध अुनके डरको भगाना है। जब तक यह 'तीन कठिया' प्रथा रद्द न हो, हम सुखसे बैठ नहीं सकते। मैं तो दो दिनमें जितना देखा जा सके अुतना देखने आया था। लेकिन अब देख रहा हूँ कि यह काम तो दो वर्ष भी ले सकता है। यदि अिसमें अितना समय भी लगे, तो मैं अुसे देनेको तैयार हूँ। मुझे यह तो सूझ रहा है कि अिस कामके लिअे क्या करना चाहिये। लेकिन अिसमें आपकी मदद ज़रूरी है।'

ब्रजकिशोरबाबूने शांत भावसे अुत्तर दिया—'हमसे जो बनेगी सो मदद देंगे, लेकिन हमें समझाअिये कि आप किस प्रकारकी मदद चाहते हैं।'

अिस बातचीतमें हमने सारी रात बिताअी। मैंने कहा—'मुझे आपकी वकालतके अुपयोगकी कम ही ज़रूरत पड़ेगी। आपके समान

लोगोंसे तो मैं लेखक और दुभापियेका काम लेना चाहूँगा। मैं देखता हूँ, कि अिसमें जेल भी जाना पड़ सकता है। अगर आप अिस जोखिमको अुठाना न चाहें, तो भले न अुठायें। लेकिन वकालत छोड़कर लेखक बनने और अपने धंधेको अनिश्चित अवधिके लिअे बन्द रखनेकी माँग करके मैं आप लोगोंसे कुछ कम नहीं माँग रहा हूँ। सारा काम सेवाभावसे और विना पैसेके होना चाहिये।'

व्रजकिशोरबाबू समझे, किन्तु अुन्होंने मुझसे और अपने साथियोंसे जिरह की। अन्तमें अुन्होंने अपना यह निश्चय प्रकट किया — 'हम अितने लोग आप जो काम हमें सौंपेंगे सो कर देनेके लिअे तैयार रहेंगे। हममें से जितनोंको आप जिस समय चाहेंगे अुतने आपके पास रहेंगे। जेल जानेकी बात नअी है। अुसके लिअे हम शक्ति-संचयकी कोशिश करेंगे।'

११४

अहिंसा देवीका साक्षात्कार?

मुझे तो किसानोंकी हालतकी जाँच करनी थी, किन्तु अुनके संपर्कमें आनेसे पहले मुझे यह आवश्यक मालूम हुआ कि मैं नीलके मालिकोंकी बात सुन लूँ और कमिश्नरसे मिल लूँ। दोनोंको चिट्ठी लिखी।

मालिकोंके मंत्रीके साथ जो मुलाक़ात हुअी, अुसमें अुसने साफ़ ही कह दिया कि आपकी गिनती परदेशीमें होती है। आपको हमारे और किसानोंके बीच कोअी दखल न देना चाहिये। कमिश्नर साहबसे मिला। अुन्होंने तो धमकाना ही शुरू किया और मुझे सलाह दी कि मैं आगे बढ़े बिना ही तिरहुत छोड़ दूँ।

मैंने सारी बातें साथियोंसे कहीं और कहा कि संभव है, सरकार मुझे जाँच करनेसे रोके और जेल जानेका समय मेरी अपेक्षासे भी पहले आ जावे। अगर गिरफ़्तार ही होना है, तो मुझे मोतीहारीमें

और संभव हो तो वेतियामें गिरफ़्तार होना चाहिये। और अिसके लिअे वहाँ जल्दी-से-जल्दी पहुँच जाना चाहिये।

अिस विचारसे मैं अुसी दिन साथियोंको लेकर मोतीहारीके लिअे रवाना हुआ। जिस दिन पहुँचे अुसी दिन सुना कि मोतीहारीसे कोअी पाँच मील दूर रहनेवाले अेक किसान पर अत्याचार किया गया था। मैंने निश्चय किया कि धरणीधरप्रसाद वकीलको साथ लेकर मैं दूसरे दिन सबेरे अुसे देखने जाअूँगा। सवेरे हाथी पर सवार होकर हम चल पड़े। आधे रास्ते पहुँचे होंगे, कि अितनेमें पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्टका आदमी वहाँ आ पहुँचा और मुझसे बोला — 'सुपरिण्टेण्डेण्ट साहबने आपको सलाम भेजा है।' मैं समझ गया। अुस जासूसके साथ अुसकी भाड़ेकी गाड़ीमें सवार हुआ। अुसने मुझे चम्पारन छोड़कर जानेका नोटिस दिया। वह मुझे घर ले गया। मैंने अुसे जवाब लिख दिया कि मैं चम्पारन छोड़ना नहीं चाहता हूँ, मुझे तो आगे बढ़ना है और जाँच करनी है। निर्वासनकी आज्ञाका अनादर करनेके लिअे मुझे दूसरे ही दिन कोर्टमें हाज़िर रहनेका समन मिला।

मैंने सारी रात जागकर मुझे जो पत्र लिखने थे सो लिखे, और व्रजकिशोरबाबूको सब प्रकारकी आवश्यक सूचनायें दीं।

समनकी बात अेक क्षणमें चारों ओर फैल गअी, और लोग कहते थे कि अुस दिन मोतीहारीमें जैसा दृश्य देखा गया, वैसा पहले कभी देखा न गया था। गोरखबाबूका घर और दफ़्तर लोगोंकी भीड़से भर अुठा। लोग क्षण भरको दण्डका भय भुलाकर अपने नये मित्रके प्रेमकी सत्ताके अधीन हुअे।

यहाँ याद रखना चाहिये कि चम्पारनमें मुझे कोअी पहचानता न था। वहाँका किसानवर्ग बिलकुल अनपढ़ था। चम्पारनमें कहीं कांग्रेसका नाम न था। वहाँ लोगोंमें किसीने आजतक कोअी राजनीतिक काम किया ही न था। लोग चम्पारनके बाहरकी दुनियाको जानते न थे। अितने पर भी अुनका और मेरा मिलन पुराने मित्रों-जैसा लगा। अतअेव यह कहनेमें अतिशयोक्ति नहीं, बल्कि अक्षरशः सचाअी है, कि

अिसके कारण मैंने वहाँ अीश्वरका, अहिंसाका और सत्यका साक्षात्कार किया। जब मैं अिस साक्षात्कारके अपने अधिकारकी जाँच करता हूँ, तो मुझे लोगोंके प्रति अपने प्रेमके सिवाय और कुछ नहीं मिलता। अिस प्रेमका अर्थ है, प्रेम अथवा अहिंसाके संबंधमें मेरी अविचल श्रद्धा।

११५

मुक़दमा वापस लिया गया

मुक़दमा चला। सरकारी वकील, मजिस्ट्रेट आदि घबराये हुअे थे। अुन्हें सूझ नहीं पड़ रहा था कि किया क्या जाय। सरकारी वकील सुनवाअी मुल्तवी रखनेकी माँग कर रहा था। मैंने बीचमें दखल दिया और प्रार्थना की कि मुल्तवी रखनेकी कोअी ज़रूरत नहीं है, क्योंकि मुझे चम्पारन छोड़नेके नोटिसका अनादर करनेका गुनाह क़बूल करना है। यह कहकर मैं अुस बहुत ही छोटे बयानको पढ़ गया, जो मैंने तैयार किया था।

अब केसकी सुनवाअीको मुल्तवी रखनेकी ज़रूरत तो रही न थी, किन्तु चूँकि मजिस्ट्रेट और वकीलने अिस परिणामकी आशा न की थी, अतअेव सज़ाके लिअे अदालतने केस मुल्तवी रखा। जब सज़ाके लिये कोर्टमें जानेका समय हुआ, तो अुससे कुछ पहले मेरे नाम मजिस्ट्रेटका हुक्म आया कि गवर्नर साहबके हुक्मसे मुक़दमा वापस ले लिया गया है। साथ ही कलेक्टरका पत्र मिला कि मुझे जो जाँच करनी हो, मैं करूँ, और अुसमें अधिकारियोंकी ओरसे जो मदद आवश्यक हो, सो माँगूँ।

सारे हिन्दुस्तानको सत्याग्रहका अथवा क़ानूनके सविनय-भंगका पहला स्थानीय पदार्थपाठ प्राप्त हुआ। अखबारोंमें अिसकी खूब चर्चा हुअी, और यों चम्पारनका तथा मेरी जाँचका अनपेक्षित रीतिसे विज्ञापन हुआ।

यद्यपि अपनी जाँचके लिअे मुझे संसारकी ओरसे निष्पक्षपातताकी ज़रूरत थी, फिर भी अखबारोंकी चर्चा और अुनके संवाददाताओंकी ज़रूरत न थी; यही नहीं, वल्कि अुनकी अतिशय टीका और जाँचकी लम्वी-चौड़ी रिपोर्टोंसे हानि होनेका भय था। अिसलिअे मैंने खास खास अखवारोंके सम्पादकोंसे प्रार्थना की थी कि वे रिपोर्टरोंको भेजनेका खर्च न अुठावें; जितना छपानेकी ज़रूरत होगी, अुतना मैं भेजता रहूँगा और अुन्हें खवर देता रहूँगा।

मैंने अिस लड़ाओीको कभी राजनीतिक रूप धारण न करने दिया। राजनीतिक काम करनेके लिअे भी, जहाँ राजनीतिकी गुंजाअिश न हो, वहाँ अुसे राजनीतिका स्वरूप देनेसे पाँडेको दोनों दीनसे जाना पड़ता है, और अिस प्रकार विपयका स्थानान्तर न करनेसे दोनों सुधरते हैं। चम्पारनकी लड़ाओी सिद्ध कर रही थी कि शुद्ध लोक-सेवामें प्रत्यक्ष नहीं, तो भी परोक्ष रीतिसे राजनीति मौजूद ही रहती है।

११६

कार्यपद्धति

अगर गोरखवावूके घर रहकर यह जाँच चलानी हो, तो गोरख-वावूको अपना घर खाली करना पड़े। मोतीहारीमें अभी लोग अितने निर्भय नहीं हुअे थे, कि कोओी माँगते ही मुझे अपना मकान किराये दे दे। किन्तु चतुर व्रजकिशोरवावूने अेक लम्वी-चौड़ी ज़मीनवाला मकान किराये पर लिया और हम अुसमें रहने गये।

अैसी स्थिति नहीं थी कि हम विलकुल विना पैसेके अपना काम चला सकें। ज़रूरत पड़ने पर व्रजकिशोरवावू अपनी जेवसे खर्च कर लेते, और कुछ मित्रोंसे भी वसूल करते। यह दृढ़ निश्चय था कि चम्पारनकी जनतासे अेक कौड़ी भी न ली जाय। वह ली जाती, तो अुसके ग़लत अर्थ लगाये जाते। यह भी निश्चय था कि अिस जाँचके लिअे हिन्दुस्तानमें सार्वजनिक चंदा न किया जाय। वैसा करने पर यह

जाँच राष्ट्रीय और राजनीतिक रूप धारण कर लेती। बम्बअीसे मित्रोंने रु० १५,०००)की मददका तार भेजा। निश्चय यह हुआ कि व्रजकिशोरबाबूका दल बिहारके खुशहाल लोगोंसे जितनी मदद ले सके, ले और कम पड़नेवाली रक़म मैं डॉक्टर प्राणजीवनदास महेतासे प्राप्त कर लूँ। डॉक्टर महेताने लिखा कि जो चाहिये, सो मँगा लें। अतअेव द्रव्यके संबंधमें हम निश्चिन्त हुअे।

शुरूके दिनोंमें हमारी रहन-सहन विचित्र थी। वकील-मंडलमें हरअेकका अपना रसोअिया था, और हरअेकके लिअे अलग रसोअी बनती थी। ये सब महाशय रहते तो अपने खर्चसे ही थे, किन्तु मेरे लिअे अुनकी यह रहन-सहन अुपाधिरूप थी। वे मेरे शब्द-बाणोंको प्रेम-पूर्वक सहते थे। आखिर यह तय हुआ कि नौकरोंको छुट्टी दी जाय, सब अेक साथ खायें, भोजनके नियमोंका पालन करें, और अेक ही रसोअीघरमें सबके लिअे केवल निरामिष भोजन ही बनाया जाय। अिससे खर्चमें बहुत बचत हुअी, काम करनेकी शक्ति बढ़ी और समय बचा।

किसानोंके दल-के-दल अपनी कहानी लिखाने आने लगे। कहानी लिखनेवालोंको कुछ नियमोंका पालन करना होता था। यद्यपि अिसके कारण समय थोड़ा अधिक खर्च होता था, फिर भी बयान बहुत सच्चे और साबित हो सकनेवाले मिलते थे।

अिन बयानोंके लेते समय खुफ़िया पुलिसका कोअी-न-कोअी अधिकारी हाज़िर रहता था। अुसके सुनते और देखते ही सारे बयान लिये जाते थे। अिसका अेक यह लाभ हुआ कि लोगोंमें निर्भयता पैदा हुअी, और अिस डरसे कि झूठ बोलने पर कहीं अधिकारी अुन्हें फाँद न लें, अुनको सावधानीसे बोलना पड़ता था।

मैं निल्हे गोरोंको खिझाना न चाहता था, बल्कि मुझे तो अुन्हें विनय द्वारा जीतनेका प्रयत्न करना था। अिसलिअे जिसके विरुद्ध विशेष शिकायतें आतीं, अुसे मैं पत्र लिखता और अुससे मिलनेका प्रयत्न भी करता। अुनमें से कुछ मेरा तिरस्कार करते, कुछ अुदासीन रहते और कुछ विनय प्रकट करते।

११७

गाँवोंमें

जैसे-जैसे मैं अनुभव प्राप्त करता गया, वैसे-वैसे मुझे लगा कि अगर चम्पारनमें ठीकसे काम करना हो, तो गाँवोंमें शिक्षाका प्रवेश होना चाहिये। लोगोंका अज्ञान दयाजनक था। गाँवोंमें बच्चे मारे-मारे फिरते थे अथवा माँ-बाप अुनसे नीलके खेतोंमें दिनभर मज़दूरी कराते थे, ताकि अुन्हें दिनके दो या तीन पैसे मिल सकें।

साथियोंसे चर्चा करके प्रथम छः गाँवोंमें बच्चोंके लिअे पाठशालाअें खोलनेका निश्चय किया। शर्त्त यह थी कि अुस-अुस गाँवके अगुओंको मकान और शिक्षकके भोजनका खर्च खुद जुटाना था और बाक़ी दूसरे खर्चकी व्यवस्था मुझे करनी थी।

सबसे बड़ा सवाल यह था कि शिक्षक कहाँसे लाये जायँ? मैंने अेक आम अपील द्वारा अिस कामके लिअे स्वयंसेवकोंकी माँग की। बारह शिक्षकों और शिक्षिकाओंका अेक दल बना।

लेकिन मुझे सिर्फ़ शिक्षाकी व्यवस्था करके ही रुकना न था। गाँवोंमें गन्दगीका पार न था। बड़ोंको स्वच्छताकी शिक्षा देना आवश्यक था। चम्पारनके लोग रोगोंसे पीड़ा पाते देखे गये थे।

अिस कामके लिअे डॉक्टरकी सहायता आवश्यक थी, और मुझे यह सहायता मिल गअी।

सबके बीच तय यह हुआ था कि कोअी निलहे गोरोंके खिलाफ़ दावा दायर न करे, राजनीतिको हाथ न लगाये; कोअी अपने क्षेत्रके बाहर अेक क़दम भी आगे न बढ़े। चम्पारनके अिन साथियोंका नियम-पालन अद्‌भुत था।

पाठशाला, सफ़ाअी और दवाके कामसे लोगोंमें स्वयंसेवाके प्रति विश्वास और आदर बढ़ा, और अुन पर अच्छा असर पड़ा।

लेकिन मुझे खेदके साथ यह कहना चाहिये कि अिस कामको स्थायी रूपसे करनेकी मेरी अिच्छा पूरी न हो सकी। तिसपर भी छः महीनों तक जो काम वहाँ हुआ, अुसने अपनी जड़ें अितनी जमा लीं कि किसी-न-किसी स्वरूपमें आज तक वहाँ अुसका वह असर बना हुआ है।

११८

अुजला पहलू

अेक ओरसे समाज-सेवाका काम हो रहा था, और दूसरी ओरसे लोगोंके दुःखोंकी कहानियाँ लिखनेका काम अुत्तरोत्तर बढ़ते पैमाने पर हो रहा था। निलहे गोरोंका क्रोध बढ़ने लगा। मेरी जाँचको बन्द करानेकी अुनकी कोशिशें बढ़ती गअीं।

अेक दिन मुझे बिहार-सरकारका पत्र मिला। अुसका भावार्थ यों था — 'आपकी जाँचको शुरू हुअे काफ़ी अरसा हो चुका है, अतः अब आपको अपनी जाँच बन्द करके बिहार छोड़ देना चाहिये।' पत्र विनय-पूर्वक लिखा गया था, पर अुसका अर्थ स्पष्ट था। मैंने लिखा कि जाँचका काम तो अभी देर तक चलेगा और समाप्त होने पर भी जब तक लोगोंके दुःख दूर न हों, मेरा अिरादा बिहार छोड़कर जानेका नहीं है।

गवर्नर सर अेडवर्ड गेटने मुझे बुलाया और कहा कि वे स्वयं अेक जाँच-समिति नियुक्त करना चाहते हैं; अुन्होंने मुझे अुसका सदस्य बननेके लिअे निमंत्रित किया। समितिके दूसरे नाम देखनेके बाद मैंने साथियोंसे सलाह की और अिस शर्तके साथ सदस्य बनना क़बूल किया कि मुझे अपने साथियोंसे सलाह-मशविरा करनेकी आजादी रहनी चाहिये; और सरकारको यह समझ लेना चाहिये कि सदस्य बन जानेसे मैं किसानोंकी हिमायत करना छोड़ न दूंगा, तथा जाँच हो चुकने पर मुझे संतोष न हुआ, तो किसानोंका मार्ग-दर्शन करनेकी अपनी स्वतंत्रताको मैं हाथसे जाने न दूंगा।

सर अेडवर्ड गेटने अिन शर्तोंको मुनासिब मानकर अिन्हें मंजूर किया। जाँच-समितिने किसानोंकी सारी शिकायतोंको सही ठहराया, और निलहे गोरोंने जो रक़म अनुचित रीतिसे वसूल की थी अुसका कुछ अंश लौटाने तथा 'तीन कठिया' के क़ानूनको रद्द करनेकी सिफ़ारिश की।

अिस रिपोर्टके सांगोपांग तैयार होने और अन्तमें क़ानूनके पास होनेमें सर अेडवर्ड गेटका बहुत बड़ा हाथ था। अुन्होंने समितिकी सिफ़ारिशों पर पूरा-पूरा अमल किया।

अिस प्रकार सौ सालसे चले आनेवाले 'तीन कठिया' क़ानूनके रद्द होते ही अुसके साथ निलहे गोरोंके राज्यका अस्त हुआ, जनताका जो समुदाय बराबर दबा ही रहता था, अुसे अपनी शक्तिका कुछ भान हुआ, और लोगोंका यह वहम दूर हुआ कि नीलका दाग़ धोये धुल ही नहीं सकता।

११९. मज़दूरोंके संपर्कमें

चम्पारनमें अभी मैं समितिके कामको समेट ही रहा था, कि अितनेमें खेड़ासे मोहनलाल पंड्या और शंकरलाल परीखका पत्र आया कि खेड़ा ज़िलेमें फ़सल नष्ट हो गअी है, और लगान माफ़ करानेकी ज़रूरत है। अुन्होंने आग्रह-पूर्वक लिखा था कि मैं वहाँ पहुँचूं और लोगोंकी रहनुमाअी करूँ। मौक़े पर पहुँचकर जाँच किये बिना कोअी सलाह देनेकी मेरी अिच्छा न थी, न मुझमें वैसी शक्ति या हिम्मत ही थी।

दूसरी ओरसे श्री अनसूयाबाअीका पत्र अुनके मज़दूर-संघके बारेमें आया था। मज़दूरोंकी तनख्वाहें कम थीं। तनख्वाह बढ़ानेकी अुनकी माँग बहुत पुरानी थी। अिस मामलेमें अुनकी रहनुमाअी करनेका अुत्साह मुझमें था। लेकिन मुझमें यह क्षमता न थी कि अिस अपेक्षाकृत छोटे

प्रतीत होनेवाले कामको भी मैं दूर बैठा कर सकूं। अिसलिअे मौक़ा मिलते ही मैं तुरंत अहमदाबाद पहुँचा।

अहमदाबादमें खेड़ा ज़िलेके कामके बारेमें सलाह-मशविरा हो ही रहा था कि अिस बीच मैंने मज़दूरोंका काम अपने हाथमें ले लिया।

मेरी हालत बहुत नाज़ुक थी। मज़दूरोंका मामला मुझे मज़बूत मालूम हुआ। मिल-मालिकोंके साथ मेरा संबंध मीठा था। अुनके विरुद्ध लड़नेका काम विकट था। अुनसे चर्चायें करके प्रार्थना की कि वे मज़दूरोंकी माँगके संबंधमें पंच नियुक्त करें। किन्तु मालिकोंने अपने और मज़दूरोंके बीच पंचके हस्तक्षेपकी योग्यताको स्वीकार न किया।

मैंने मज़दूरोंको हड़ताल करनेकी सलाह दी।

रोज़ नदी किनारे अेक पेड़की छायातले हड़तालियोंकी सभा होने लगी। अुसमें वे रोज़ सैकड़ोंकी संख्यामें हाज़िर रहते थे। मैं अुन्हें रोज़ प्रतिज्ञाका स्मरण कराता तथा शांति बनाये रखने और स्वाभिमानकी रक्षा करनेकी आवश्यकता समझाता था।

१२०

आश्रमकी झाँकी

मज़दूरोंकी चर्चाको आगे चलानेसे पहले यहाँ आश्रमकी झाँकी कर लेना आवश्यक है।

आश्रमकी जगह कोचरब गाँवमें थी। वहाँ प्लेग शुरू हुआ। प्लेगको मैंने कोचरब छोड़नेका नोटिस माना। श्री पूंजाभाअी हीराचंदने आश्रमके लिअे आवश्यक ज़मीनकी खोज तुरंत ही कर लेनेका बीड़ा अुठाया। अुन्होंने आजके आश्रमवाली ज़मीनका पता लगा लिया। अिसमें मेरे लिअे खास प्रलोभन यह रहा कि यह ज़मीन जेलके पास है।

कोअी आठ दिनके अंदर ही ज़मीनका सौदा तय किया। ज़मीन पर न कोअी मकान था, न कोअी पेड़ था। नदीका किनारा और

अेकान्त, ज़मीनके हक़में ये दो वड़ी सिफारिशें थीं। हमने तम्बुओंमें रहनेका निश्चय किया, और सोचा कि धीरे-धीरे स्थायी मकान वनाना शुरू कर देंगे।

स्थायी मकान वननेसे पहलेकी कठिनाअियोंका पार न था। वारिशका मौसम सामने था। अिस निर्जन ज़मीनमें साँप वग़ैरा थे ही। रिवाज यह था कि सर्पादिको मारा न जाय। लेकिन अुनके भयसे मुक्त तो हममें से कोअी भी न था, आज भी नहीं है।

फिनिक्स, टॉल्स्टॉय फार्म और सावरमती, तीनों जगहोंमें हिंसक जीवोंको न मारनेके नियमका यथाशक्ति पालन किया गया है। तीनों जगहोंमें निर्जन ज़मीनें वसानी पड़ी थीं। तीनों स्थानोंमें सर्पादिका अुपद्रव ठीक-ठीक था। तिस पर भी आज तक अेक भी जान खोनी न पड़ी, अिसमें मेरे समान श्रद्धालुको तो अीश्वरके हाथका, अुसकी कृपाका ही दर्शन होता है। कोअी यह निरर्थक शंका न अुठावे कि अीश्वर कभी पक्षपात नहीं करता, मनुष्यके दैनिक कामोंमें दखल देनेके लिअे वह निकम्मा नहीं वैठा है, आदि। मैं अिस चीज़को, अिस अनुभवको, दूसरी भाषामें रखना नहीं जानता। अीश्वरकी कृतिको लौकिक भाषामें प्रकट करते हुअे भी मैं जानता हूँ कि अुसका 'कार्य' अवर्णनीय है। किन्तु यदि पामर मनुष्य वर्णन करने वैठे, तो अुसके पास तो अपनी तोतली वोली ही हो सकती है। साधारणतः सर्पादिको न मारने पर भी समाजके पच्चीस वर्ष तक वचे रहनेको संयोग माननेके वदले अीश्वरकी कृपा मानना वहम हो, तो अैसा वहम भी संग्रह-योग्य है।

१२१

अपवास

मज़दूरोंने शुरूके दो हफ़्तों तक खूब हिम्मत दिखाओी; शांति भी खूब रखी; प्रतिदिनकी सभाओंमें बड़ी संख्यामें हाज़िर भी रहे। प्रतिज्ञाका स्मरण तो मैं अुन्हें रोज़ कराता ही था। वे रोज़ पुकार-पुकार कर कहते थे — 'हम मर मिटेंगे, लेकिन अपनी टेक कभी न छोड़ेंगे।'

लेकिन आख़िर वे कमज़ोर पड़ने लगे, और मुझे डर मालूम हुआ कि कहीं वे किसीके साथ ज़बरदस्ती न कर बैठें। मैं यह सोचने लगा कि अैसे समयमें मेरा धर्म क्या हो सकता है। जिस प्रतिज्ञाके करनेमें मेरी प्रेरणा थी, जिसका मैं प्रतिदिन साक्षी बनता था, वह प्रतिज्ञा क्योंकर टूटे? अिस विचारको आप चाहे अभिमान कहिये, चाहे अिसे मज़दूरोंके प्रति और सत्यके प्रति प्रेम कहिये।

सवेरेका समय था। मैं सभामें बैठा था। मुझे कुछ पता न था, कि मुझको क्या करना है। किन्तु सभामें ही मुंहसे निकल गया — 'यदि मज़दूर फिरसे तैयार न हों और फ़ैसला होने तक हड़तालको चला न सकें, तो और तब तक मुझे अुपवास करने हैं।'

जो मज़दूर हाजिर थे, वे सब हक्के-बक्के रह गये। वे अेक साथ कह अुठे — 'आप नहीं, हम अुपवास करेंगे। लेकिन आपको अुपवास करने न चाहियें, हमें माफ़ कीजिये, हम अपनी प्रतिज्ञा पालेंगे।'

मैंने कहा — 'आपको अुपवास करनेकी ज़रूरत नहीं। आपके लिअे तो यही बस है कि आप अपनी प्रतिज्ञाका पालन करें। हमारे पास पैसा नहीं है। हम मज़दूरोंको भीखका अन्न खिलाकर हड़ताल चलाना नहीं चाहते। आप कुछ मज़दूरी कीजिये और अुससे अपनी रोज़की रोटीके लायक़ पैसा कमा लीजिये; अैसा करेंगे, तो फिर हड़ताल कितने ही दिन क्यों न चले, आप निश्चिन्त रह सकेंगे। मेरा अुपवास तो अब फ़ैसलेसे पहले न टूटेगा।'

अिस अुपवासमें अेक दोष था। मालिकोंके साथ मेरा संबंध मीठा था। अिसलिअे अुन पर अुपवासका प्रभाव पड़े विना रह ही न सकता था। मैं जानता था कि सत्याग्रहीके नाते मैं अुनके विरुद्ध अुपवास कर ही नहीं सकता। अुन पर कोअी प्रभाव पड़े, तो वह मज़दूरोंकी हड़तालका ही पड़ना चाहिये। मेरा प्रायश्चित्त अुनके दोषोंके लिअे न था; मज़दूरोंके दोषोंके निमित्तसे था। मैं मज़दूरोंका प्रतिनिधि था, अिसलिअे अुनके दोषसे मैं दोषित होता था। मालिकोंसे मैं केवल प्रार्थना ही कर सकता था, अुनके विरुद्ध अुपवास करना अुन पर ज़्यादती करनेके समान था। फिर भी मैं जानता था कि मेरे अुपवासका प्रभाव अुन पर पड़े विना रहेगा ही नहीं। प्रभाव पड़ा भी। किन्तु मैं अपने अुपवासको रोक न सकता था। मैंने स्पष्ट देखा कि अैसा दोषमय अुपवास करना मेरा धर्म है।

मैंने मालिकोंको समझाया — 'मेरे अुपवासके कारण आपको अपना मार्ग छोड़नेकी तनिक भी ज़रूरत नहीं।' अुन्होंने मुझे कड़ुअे-मीठे ताने भी दिये। अुन्हें वैसा करनेका अधिकार था।

मालिक केवल दयावश होकर समझौता करनेका मार्ग ढूँढ़ने लगे। श्री आनंदशंकर ध्रुव भी वीचमें पड़े। आखिर वे पंच वनाये गये, और हड़ताल टूटी। मुझे केवल तीन अुपवास करने पड़े। मालिकोंने मज़दूरोंमें मिठाअी वाँटी। अिक्कीस दिनमें समझौता हुआ।

१२२

खेड़ा-सत्याग्रह

मजदूरोंकी हड़ताल समाप्त होते ही मुझे खेड़ा जिलेके सत्याग्रहका काम हाथमें लेना पड़ा। अुन दिनोंमें मैं गुजरात-सभाका सभापति था। सभाने कमिश्नर और गवर्नरको प्रार्थनापत्र भेजे, तार किये, अपमान सहे। सभा अुनकी धमकियाँ पी गयी।

लोगोंकी माँग अितनी साफ़ और अितनी साधारण थी, कि अुसके लिअे लड़ाअी लड़नेकी जरूरत ही न होनी चाहिये थी। क़ानूनी नियम यह था कि अगर फ़सल चार ही आना या अुससे कम आवे, तो अुस सालका लगान माफ़ किया जाना चाहिये। लेकिन सरकार क्यों मानने लगी? लोगोंकी ओरसे पंच बैठानेकी माँग की गयी। सरकारको वह असह्य मालूम हुअी। जितना अनुनय-विनय हो सकता था, सो सब कर चुकनेके बाद मैंने साथियोंसे परामर्श करके सत्याग्रह करनेकी सलाह दी।

पाटीदारोंके लिअे अिस प्रकारकी लड़ाअी नअी थी। गाँव-गाँव घूमकर अिसका रहस्य समझाना पड़ता था। सरकारी अधिकारी जनताके मालिक नहीं, बल्कि नौकर हैं, जनताके पैसेसे अुन्हें तनख्वाह मिलती है, यह सब समझाकर अुनका भय दूर करनेका काम मुख्य था। निर्भय होने पर भी विनयकी रक्षाका अुपाय बताना और अुसे गले अुतारना लगभग असंभव-सा प्रतीत होता था। यदि सत्याग्रही अविनयी बनता है, तो वह दूधमें जहर मिलानेके समान है। विनय सत्याग्रहका कठिन-से-कठिन अंश है। यहाँ विनयका अर्थ सम्मानपूर्वक वचन कहना ही नहीं है। विनयका अर्थ है, विरोधीके प्रति भी मनमें आदर, सरल भाव, अुसके हितकी अिच्छा और तदनुरूप व्यवहार।

शुरूके दिनोंमें लोगोंमें खूब हिम्मत पायी गयी। आरंभमें सरकारी कार्रवाअी भी कुछ ढीली ही थी। लेकिन जैसे-जैसे लोगोंकी दृढ़ता

बढ़ती मालूम हुअी, वैसे-वैसे सरकारको भी अधिक अुग्र कार्रवाअी करनेकी अिच्छा हुअी। लोगोंमें घबराहट फैली। कुछने लगान जमा कर दिया। दूसरे मन ही मन यह चाहने लगे कि सरकारी अधिकारी अुनका सामान ज़ब्त करके लगान वसूल कर लें, तो भर पायें। कुछ मर-मिटने वाले भी निकले।

भयभीत लोगोंको प्रोत्साहित करनेके लिअे मोहनलाल पंड्याके नेतृत्वमें मैंने अेक अैसे खेतमें खड़ी प्याज़की तयार फ़सलको अुतार लेनेकी सलाह दी, जो अनुचित रीतिसे ज़ब्त किया गया था। मेरी दृष्टिमें अिससे क़ानूनका भंग न होता था। लेकिन अगर क़ानून टूटता होता तो भी मैंने यह सुझाया कि मामूली-से लगानके लिअे समूची तैयार फ़सलको ज़ब्त करना क़ानूनन ठीक होने पर भी नीति-विरुद्ध है और स्पष्ट लूट है। अतअेव अिस प्रकार की गअी ज़ब्तीका अनादर करना धर्म है।

मोहनलाल पंड्या और अुनके साथियोंके गिरफ़्तार होने पर लोगोंका अुत्साह बढ़ा।

अिस लड़ाअीका अन्त विचित्र रीतिसे हुआ। साफ़ था कि लोग थक चुके थे। मेरा झुकाव अिस ओर था कि सत्याग्रहीके अनुरूप प्रतीत होनेवाला अिसकी समाप्तिका कोअी शोभाजनक अुपाय मिल जाय, तो अुसका सहारा लेना ठीक होगा। अैसा अेक अुपाय अनसोचा सामने आ गया। नड़ियाद तालुकेके तहसीलदारने सँदेशा भेजा कि अगर अच्छी हालत वाले पाटीदार लगान भर दें, तो ग़रीबोंका लगान मुल्तवी रहेगा। सारे ज़िलेकी ज़िम्मेदारी तो कलेक्टर ही अुठा सकता था, अिसलिअे मैंने कलेक्टरसे पूछा। अुनका जवाब मिला कि तहसीलदारने जो कहा है अुसके अनुसार तो हुक्म जारी हो ही चुका है। प्रतिज्ञामें यही वस्तु थी, अिसलिअे अिस हुक्मसे संतोष हुआ।

फिर भी अिस प्रकारकी समाप्तिसे हम कोअी प्रसन्न न हो सके। सत्याग्रहकी लड़ाअीके पीछे जो मिठास होती है, सो अिसमें नहीं थी। कलेक्टर मानता था कि अुसने नया कुछ किया ही नहीं। ग़रीब लोगोंको छोड़नेकी बात कही जाती थी, किन्तु वे शायद ही छूट पाये। जनता

यह कहनेका अधिकार आज़मा न सकी कि ग़रीबमें किसकी गिनती की जाय। मुझे दुःख था कि जनतामें अिस प्रकारकी शक्ति रही न थी। अतअेव लड़ाअीकी समाप्तिका अुत्सव तो मनाया गया, पर अिस दृष्टिसे वह मुझे निस्तेज ही लगा।

सत्याग्रहका शुद्ध अन्त वही माना जाता है, कि जब जनतामें आरंभकी अपेक्षा अन्तमें अधिक तेज और शक्ति पाअी जाती है। मैं अिसका दर्शन न कर सका।

फिर भी खेड़ाकी लड़ाअीसे गुजरातके किसान-समाजकी जागृतिका और अुसकी राजनीतिक शिक्षाका श्रीगणेश हुआ।

१२३

अैक्यकी अुत्कण्ठा

जिन दिनों खेड़ाका मामला चल रहा था, अुन दिनों युरोपका महायुद्ध भी जारी ही था। वाअिसरायने अुसके सिलसिलेमें नेताओंको दिल्ली बुलाया था। मुझसे आग्रह किया गया था कि मैं अुसमें हाजिर होअूं।

मैंने निमंत्रण स्वीकार किया और मैं दिल्ली गया। किन्तु अिस सभामें सम्मिलित होते समय मेरे मनमें अेक संकोच तो था ही। मुख्य कारण यह था कि अिस सभामें अलीभाअियोंको, लोकमान्यको और दूसरे नेताओंको निमंत्रित नहीं किया गया था। अुस समय दोनों अलीभाअी जेलमें थे।

अिस बातको तो मैं दक्षिण अफ्रीकामें ही समझ चुका था कि हिन्दू-मुसलमानके बीच सच्चा मित्र-भाव नहीं है। मैं वहाँ अैसे अेक भी अुपायको हाथसे जाने न देता था, जिससे दोनोंके बीचकी खटाअी दूर हो। झूठी खुशामद करके अथवा सत्त्व खोकर अुनको या किसी औरको रिझाना मेरे स्वभावमें न था। लेकिन वहींसे मेरे दिलमें यह बात जमी

हुअी थी कि मेरी अहिंसाकी कसौटी और असका विशाल प्रयोग अिस अकताके सिलसिलेमें ही होगा। आज भी मेरी यह राय क़ायम है। अीश्वर प्रतिक्षण मुझे कसौटी पर कस रहा है।

अिस प्रकारके विचार लेकर मैं बम्बअीके बंदरगाह पर अुतरा था, अिसलिअे वहाँ मुझे अिन दोनों भाअियोंसे मिलना अच्छा लगा। हमारा स्नेह बढ़ता गया।

अलीभाअियोंको छुड़ानेके लिअे मैंने सरकारके साथ पत्र-व्यवहार शुरू किया। अुसके निमित्तसे अुन भाअियोंकी खिलाफ़त संबंधी हलचलका अध्ययन किया। मैंने अनुभव किया कि अगर मैं मुसलमानोंका सच्चा मित्र बनना चाहता हूँ, तो मुझे अलीभाअियोंको छुड़ानेमें और खिलाफ़तके प्रश्नको न्याय-पूर्वक सुलझानेमें पूरी मदद करनी चाहिये। मेरे लिअे खिलाफ़तका सवाल सहल था। मुझे अुसके स्वतंत्र गुण-दोष देखनेकी ज़रूरत न थी। मुझे यह लगा कि अगर अुसके संबंधकी मुसलमानोंकी माँग नीति-विरुद्ध न हो, तो मुझे मदद करनी चाहिये। मुझको खिलाफ़त-संबंधी माँग न केवल नीति-विरुद्ध नहीं प्रतीत हुअी, बल्कि चूँकि ब्रिटेनके प्रधानमंत्री लॉयड ज्यॉर्जने अिस माँगको क़बूल किया था, अिसलिअे मुझे तो अुनसे अुनका वचन पलवानेका ही प्रयत्न करना था।

चूँकि मैंने खिलाफ़तके मामलेमें मुसलमानोंका साथ दिया था, अिसलिअे अिस संबंधमें मित्रों और आलोचकोंने मेरी काफ़ी आलोचना की है। अुन सब पर विचार करनेके बाद भी, जो राय मैंने बनाअी, और जो मदद दी तथा दिलाअी, अुसके बारेमें मुझे कोअी पश्चात्ताप नहीं है।

१२४

रँगरूटोंकी भरती

मैं सभामें हाज़िर हुआ। वाअिसरायकी तीव्र अिच्छा थी कि मैं सिपाहियोंकी मददवाले प्रस्तावका समर्थन करूँ। मैंने हिन्दी-हिन्दुस्तानीमें बोलनेकी अिजाज़त चाही। वाअिसरायने अिजाज़त दी, किन्तु साथ ही अंग्रेज़ीमें बोलनेको कहा। मैंने वहाँ जो कहा सो अितना ही था — 'मुझे अपनी ज़िम्मेदारीका पूरा ख़याल है, और अुस ज़िम्मेदारीको समझते हुअे भी मैं अिस प्रस्तावका समर्थन करता हूँ।'

हिन्दुस्तानीमें बोलनेके लिअे मुझे बहुतोंने धन्यवाद दिये। वे कहते थे कि अिधरके ज़मानेमें वाअिसरायकी सभामें हिन्दुस्तानी बोलनेका यह पहला ही अुदाहरण था। धन्यवादकी और पहले अुदाहरणकी बात सुनकर मुझे दुःख हुआ। मैं शरमाया। अपने ही देशमें, देशसे संबंध रखनेवाले कामकी सभामें, देशकी भाषाका बहिष्कार अथवा अुसकी अवगणना कितने दुःखकी बात थी!

मुझे रँगरूटोंकी भरती करनी थी। अिसकी याचना मैं खेड़ामें न करूँ, तो और कहाँ करूँ? साथियोंमें से कुछके गले बात तुरत अुतरी नहीं। जिनके अुतरी, अुन्होंने कार्यकी सफलताके बारेमें शंका प्रकट की। जिन लोगोंमें से भरती करनी थी, अुन लोगोंमें सरकारके प्रति किसी प्रकारकी मुहब्बत न थी। सरकारके अफ़सरोंका जो कड़ुवा अनुभव हुआ था, वह अभी ताज़ा ही था।

फिर भी सब अिस पक्षमें थे कि काम शुरू कर दिया जाय। शुरू करते ही मेरी आँख खुली। मेरा आशावाद भी कुछ शिथिल पड़ा।

धीरे-धीरे हमारे सतत कार्यका प्रभाव लोगों पर पड़ने लगा था। वैसे, नाम भी काफ़ी संख्यामें दर्ज होने लगे थे, और हम यह मानने लगे थे कि अगर पहली टुकड़ी निकल पड़े, तो दूसरोंके लिअे रास्ता खुल जायगा।

१२९

मौतके बिछौने पर

रँगरूटोंकी भरती करते-करते मेरा शरीर काफ़ी क्षीण हो गया। अुन दिनों मेरे आहारमें मुख्यतः सिकी हुआी और कूटी हुआी मूँगफली, अुसके साथ थोड़ा गुड़, केले वग़ैरा फल और दो तीन नीबूका पानी, अितनी चीज़ें रहा करती थीं। मैं यह जानता था कि अधिक मात्रामें खानेसे मूँगफली नुक़सान करती है। फिर भी वह अधिक खाअी गअी। अुसके कारण पेटमें सहज अैंठन रहने लगी। मुझे यह अैंठन बहुत ध्यान देने योग्य प्रतीत न हुअी। रात आश्रम पहुँचा। अुन दिनोंमें दवा वग़ैरा क्वचित् ही लेता था। विश्वास यह था कि अेक बारका खाना छोड़ देनेसे दर्द मिट जायगा। दूसरे दिन सवेरे कुछ भी न खाया था, अिसलिअे यह दर्द लगभग बन्द हो चुका था।

अुस दिन कोअी त्योहार था। मैंने कस्तूरबाअीसे कह दिया था कि मैं दोपहरको भी नहीं खाअूँगा। लेकिन अुसने मुझे ललचाया, और मैं लालचमें फँस गया। मेरे लिअे तेलमें भूने हुअे गेहूँकी लपसी बनाअी थी और ख़ासकर मेरे लिअे ही पूरे मूँग भी रख छोड़े थे। मैं स्वादके वश होकर पसीजा। पसीजते हुअे भी अिच्छा तो यह रखी थी कि कस्तूरबाअीको खुश करनेके लिअे थोड़ा कुछ खा लूँगा, स्वाद भी ले लूँगा और शरीरकी रक्षा भी कर लूँगा। लेकिन जब खाने बैठा, तो थोड़ा खानेके बदले पेट भरकर खा गया। अिस प्रकार स्वाद तो पूरा किया, पर साथ ही यमराजको न्योता भी भेज दिया। खानेके बाद अेक घण्टा भी न बीता था, कि ज़ोरकी अैंठन शुरू हो गअी।

रात नड़ियाद तो वापस जाना ही था।

हम नड़ियाद पहुँचे। वहाँसे अनाथाश्रम तक जाना था, जो आध मीलसे कुछ कम ही दूर था। लेकिन अुस दिन यह दूरी दस मीलके

वरावर मालूम हुआी। वड़ी मुश्किलसे घर पहुँचा। लेकिन पेटका दर्द वढ़ता ही जाता था। १५-१५ मिनटसे पाखानेकी हाजत मालूम होती थी। आखिरमें मैं हारा। मैंने अपनी असह्य वेदना प्रकट की और विछौना पकड़ा। चिन्तातुर होकर साथियोंने मुझे चारों ओरसे घेर लिया। अुन्होंने मुझे अपने प्रेमसे नहलाया। मेरे हठका पार न था। डॉक्टरोंको वुलानेसे मैंने अिनकार कर दिया। दवा तो लेनी ही न थी; सोचा, किये हुअे पापकी सज़ा भोगूंगा। खाना तो मैं वन्द कर ही चुका था, और शुरूके दिनोंमें तो मैंने फलका रस भी न लिया था।

आज तक जिस शरीरको मैं पत्थरके समान मानता था, वह अव गीली मिट्टी-जैसा वन गया। शक्ति क्षीण हो गअी। अतिशय परिश्रमके कारण वुखार आ गया और वेहोशी भी आअी। मित्र अधिक घवराये।

सेठ अंवालाल और अुनकी धर्मपत्नी दोनों नड़ियाद आये। साथियोंसे चर्चा करनेके वाद वे अत्यन्त सावधानीके साथ मुझे मिरज़ापुरवाले अपने वँगले पर ले गये। अितनी वात तो मैं अवश्य कह सकता हूँ कि अपनी वीमारीमें मुझे जो निर्मल और निष्काम सेवा प्राप्त हुअी, अुससे अधिक सेवा तो कोअी पा नहीं सकता। हलका वुखार रहने लगा। मनमें अेक विचार यह भी आया कि शायद मैं विछौनेसे अुठ न सकूँ। सेठके वँगलेमें प्रेमसे घिरा होने पर भी मैं अशांत हो अुठा, और मैंने अुनसे प्रार्थना की कि वे मुझे आश्रम ले चलें।

मैं अभी आश्रममें पीड़ा पा ही रहा था, कि अितनेमें वल्लभभाअी समाचार लाये कि जर्मनी पूरी तरह हार चुका है, और कमिश्नरने कहलवाया है कि रँगरूट भरती करनेकी कोअी आवश्यकता नहीं है। यह सुनकर मैं भरतीकी चितासे मुक्त हुआ और अिससे मुझे शांति मिली।

अुन दिनों मैं जलका अुपचार करता था और अुससे शरीर टिका हुआ था। पीड़ा शांत हुअी थी, किन्तु शरीर किसी भी अुपायसे पुष्ट

नहीं हो रहा था। दो-तीन मित्रोंने सलाह दी कि दूध लेनेमें आपत्ति हो, तो मांसका शोरवा लेना चाहिये। अेकने अण्डे लेनेकी सिफ़ारिश की, लेकिन मैं अिनमें से किसी भी सलाहको स्वीकार न सका। जिस धर्मका आचरण अपने पुत्रोंके लिअे किया, स्त्रीके लिअे किया, स्नेहियोंके लिअे किया, अपने लिअे अुस धर्मका त्याग मैं कैसे करता?

अिस प्रकार मुझे अपनी अिस वहुत लम्वी और जीवनकी सबसे पहली वड़ी वीमारीमें धर्मका निरीक्षण करने और अुसको कसौटी पर चढ़ानेका अलभ्य लाभ मिला। अेक रातको तो मैंने विलकुल आशा ही छोड़ दी थी। मुझे अैसा भास हुआ कि अब मृत्यु समीप ही है। डॉ० कानूगाने नाड़ी देखी और कहा — 'मैं ख़ुद तो मरनेके कोअी चिह्न देख ही नहीं रहा हूँ। नाड़ी साफ़ है। केवल कमज़ोरीके कारण आपके मनमें घवराहट है।' लेकिन मेरा मन न माना। रात तो वीती, किन्तु अुस रात मैं शायद ही सो सका होअूँगा।

सबेरा हुआ। मौत न आअी। फिर भी अुस समय जीनेकी आशा न वाँध सका और यह समझकर कि मृत्यु समीप है, जितनी देर वन सका अुतनी देर तक साथियोंसे गीता-पाठ सुननेमें लगा रहा। कामकाज करनेकी कोअी शक्ति रही ही नहीं थी। थोड़ी वात करनेसे दिमाग़ थक जाता था। अिस कारण जीनेमें कोअी रस न रहा। जीनेके लिअे जीना मुझे कभी पसंद पड़ा ही नहीं।

मैं मौतकी राह देखता वैठा था, अितनेमें डॉ० तलवलकर अेक विचित्र प्राणीको लेकर आये। वे मेरे समान 'चक्रम्' हैं, सो तो मैं अुन्हें देखते ही समझ सका था। वे वरफ़के अुपचारके वड़े हिमायती हैं। मेरी वीमारीकी वात सुनकर जिस दिन वे मुझ पर वरफ़के अपने अुपचारको आज़मानेके लिअे आये, तवसे हम अुन्हें 'आअिस डॉक्टर'के अुपनामसे पहचानते हैं। अुनकी खोजें योग्य हों चाहे अयोग्य, मैंने अुन्हें अपने शरीर पर प्रयोग करने दिये। मुझे वाह्य अुपचारोंसे स्वच्छ होना अच्छा लगता था, सो भी वरफ़के यानी पानीके। अतअेव अुन्होंने मेरे सारे शरीर पर वरफ़ घिसनी शुरू की। अिस अिलाजसे जितने परिणामकी आशा वे

लगाये हुअे थे, अुस तरहका परिणाम तो मेरे संबंधमें नहीं निकला। फिर भी मैं जो रोज मौतकी बाट देखा करता था, सो अब मरनेके बदले कुछ जीनेकी आशा रखने लगा। कुछ अुत्साह पैदा हुआ। मनके अुत्साहके साथ शरीरमें भी अुत्साहका अनुभव किया।

१२६

रौलट अैक्ट और मेरा धर्म-संकट

मित्रोंकी सलाह पाकर माथेरान गया। पेचिशके कारण गुदा-द्वार अितना नाजुक हो गया था कि साधारण स्पर्श भी सहा न जाता था; और अुसमें दरारें पड़ गअी थीं, जिससे मलत्यागके समय बहुत वेदना होती थी। अेक हफ़्तेमें माथेरानसे वापस लौटा। मेरी तबीयतकी हिफ़ाजतका जिम्मा शंकरलालने अपने हाथमें लिया था। अुन्होंने डॉक्टर दलालसे सलाह लेनेका आग्रह किया। डॉक्टर दलाल आये। वे बोले —

'जब तक आप दूध न लेंगे, मैं आपके शरीरको फिरसे हृष्ट-पुष्ट न बना सकूंगा। आपको लोहे और 'आर्सेनिक'की पिचकारी लेनी चाहिये।'

मैंने जवाब दिया — 'पिचकारी लगाअिये, लेकिन दूध मैं न लूंगा।'

'दूधके संबंधमें आपकी प्रतिज्ञा क्या है?'

'यह जानकर कि गाय-भैंस पर फूंकेकी क्रिया की जाती है, मुझे दूधसे नफ़रत हो गअी है, और यह तो मैं सदासे मानता रहा हूं कि दूध मनुष्यका आहार नहीं है. अिसलिअे मैंने दूध छोड़ दिया है।'

यह सुनकर कस्तूरबाअी, जो खटियाके पास ही खड़ी थी, बोल अुठी — 'तब तो बकरीका दूध ले सकते हैं।'

डॉक्टर बीच ही में बोले—'आप बकरीका दूध लें, तो मेरा काम बन जाय।'

मैं गिरा। सत्याग्रहकी लड़ाओीके मोहने मेरे अन्दर जीनेका लोभ पैदा कर दिया; मैंने प्रतिज्ञाके अक्षरार्थका पालन करके संतोष माना और अुसकी आत्माका हनन किया। सत्यके पुजारीने सत्याग्रहकी लड़ाओीके लिअे जीनेकी अिच्छा रखकर अपने सत्यको लांच्छित किया।

मेरे अिस कार्यका डंक अभी तक साफ़ नहीं हुआ है। अहिंसाकी दृष्टिसे आज बकरीका दूध मुझे नहीं अखरता। वह अखरता है, सत्यकी दृष्टिसे। मुझे अैसा भास होता है कि मैं अहिंसाको जितना पहचान सका हूँ, सत्यको अुससे अधिक पहचानता हूँ। मेरा अनुभव यह है कि अगर मैं सत्यको छोड़ दूँ, तो अहिंसाकी भारी गुत्थियाँ मैं कभी सुलझा ही न सकूँ। मुझे हर दिन यह बात खटकती रहती है कि मैंने व्रतकी आत्माका—भावार्थका हनन किया है। यह जानते हुअे भी मैं यह न जान सका कि अपने व्रतके प्रति मेरा क्या धर्म है, अथवा यह कहिये कि मुझमें अुसे पालनेकी हिम्मत नहीं है। दोनों बातें अेक ही हैं, क्योंकि शंकाके मूलमें श्रद्धाका अभाव रहता है।

बकरीका दूध शुरू करनेके कुछ दिन बाद डॉ० दलालने गुदा-द्वारकी दरारोंका ऑपरेशन किया और वह बहुत सफल हुआ।

बिछौना छोड़कर अुठनेकी कुछ आशा बँध रही थी और अखबार वग़ैरा पढ़ने लगा ही था कि अितनेमें रौलट कमेटीकी रिपोर्ट मेरे हाथमें आओी। अुसकी सिफ़ारिशें पढ़ कर मैं चौंका। भाओी अुमर और शंकरलालने चाहा कि कोओी चौकस क़दम अुठाना चाहिये। अेकाध महीनेमें मैं अहमदाबाद गया। मैंने वल्लभभाओीसे बातचीत की।

अिस बातचीतके परिणाम-स्वरूप यह निश्चय हुआ कि अैसे कुछ लोगोंकी अेक छोटी सभा बुलाओी जाय, जो मेरे संपर्कमें ठीक-ठीक आ चुके हैं।

सभा हुओी। अुसमें मुश्किलसे कोओी बीस लोगोंको न्योता गया था। प्रतिज्ञा-पत्र तैयार हुआ, और जितने लोग हाज़िर थे, अुन सबने

अुस पर हस्ताक्षर किये। मैंने अखबारोंमें लिखना शुरू किया, और शंकरलाल बैंकरने जोरका आंदोलन चलाया।

सत्याग्रह-सभाकी स्थापना हुआी। मैंने देखा कि शिक्षित समाजके और मेरे बीच बहुत मेल नहीं बैठ सकता। सभामें गुजराती भाषाके अुपयोगके मेरे आग्रहने और मेरे कुछ दूसरे तरीक़ोंने अुन्हें परेशानीमें डाल दिया। फिर भी बहुतोंने मेरे तरीक़ेको निबाहनेकी अुदारता दिखाअी। लेकिन मैंने शुरूमें ही देख लिया कि यह सभा लम्बे समय तक नहीं निभ सकेगी। फिर सत्य और अहिंसा पर मैं जो ज़ोर देता था, वह कुछ लोगोंको अप्रिय मालूम हुआ। फिर भी शुरूके दिनोंमें यह नया काम धड़ल्लेके साथ आगे बढ़ा।

१२७

वह अद्‌भुत दृश्य !

रौलट बिल प्रकाशित हुआ। मैंने वाअिसरायसे मिलकर अुन्हें बहुत मनाया, खानगी पत्र लिखे, सार्वजनिक पत्र लिखे। मैंने अुनमें स्पष्ट ही जता दिया कि सत्याग्रहको छोड़कर मेरे पास दूसरा कोअी मार्ग नहीं है। लेकिन सब व्यर्थ हुआ।

मेरा शरीर तो कमज़ोर था, फिर भी मैंने लंबी यात्राका खतरा अुठाया। मैंने महसूस किया कि मद्राससे आये हुअे निमंत्रणको अवश्य स्वीकार करना चाहिये। मद्रास जाने पर पता चला कि अुसके मूलमें राजगोपालाचार्य थे। राजगोपालाचार्यके साथ यह मेरा पहला परिचय कहा जा सकता है।

बिल क़ानूनकी शकलमें ग़ज़टमें छपा। अिस खबरके बादकी रातको मैं विचार करते-करते सो गया। अर्ध निद्राकी दशा रही होगी, अैसेमें सपनेमें मुझे विचार सूझा। मैंने सवेरे ही सवेरे राजगोपालाचार्यको बुलाया और कहा —

'मुझे रात स्वप्नावस्थामें यह विचार सूझा कि अिस क़ानूनके जवावमें हम सारे देशको हड़ताल करनेकी सूचना दें। धर्म-कार्यको शुद्धिपूर्वक करना ठीक मालूम होता है। अतअेव अुस दिन सब अुपवास करें और काम-धन्धा वन्द रखें।'

राजगोपालाचार्यको यह सूचना वहुत अच्छी लगी। दूसरे मित्रोंने भी अुसका स्वागत किया। मैंने अेक छोटी-सी विज्ञप्ति तैयार कर ली। पहले १९१९ के मार्चकी ३०वीं तारीख रखी गअी थी। वादमें ६ठी अप्रैल रखी गअी। चूंकि काम तुरन्त ही करना ज़रूरी समझा गया था, अतअेव तैयारीके लिअे लम्वी मुद्दत देनेका समय ही न था।

लेकिन न जाने कैसे, सारी व्यवस्था हो गअी। समूचे हिन्दुस्तानमें—शहरोंमें और गाँवोंमें हड़ताल हुअी। वह दृश्य भव्य था।

१२८

वह सप्ताह!—१

दिल्लीमें ता० ३० मार्चके दिन ही हड़ताल मनाअी गअी थी। जैसी हड़ताल अुस दिन रही, वैसी पहले कभी रही ही न थी। हिन्दू और मुसलमान दोनों अेकदिल होने लगे थे। श्रद्धानन्दजीको जुमा मसजिदमें वुलाया गया था। सत्ताधारी यह सव सहन न कर सके। दिल्लीमें दमन-नीति शुरू हुअी। श्रद्धानन्दजीने मुझे दिल्ली वुलाया।

जो हाल दिल्लीका था, वही लाहौर और अमृतसरका भी रहा। डॉ० सत्यपाल और किचलूके तार थे कि मुझे वहाँ तुरंत पहुँचना चाहिये।

६ठी अप्रैलके दिन वम्वअीमें सवेरे-सवेरे हज़ारों लोग चौपाटी पर स्नान करने गये और वहाँसे ठाकुरद्वार जानेके लिअे जुलूस रवाना हुआ। अिस जुलूसमें से मुसलमानभाअी हमें अेक मसजिदमें ले गये। वहाँ श्री सरोजिनीदेवीका और मेरा भाषण कराया।

वम्बअीमें संपूर्ण हड़ताल थी।

यहाँ क़ानूनके सविनय-भंगकी तैयारी कर रखी थी। सरकारने मेरी 'हिन्द स्वराज' और 'सर्वोदय' नामक जिन पुस्तकोंका प्रकाशन रोक दिया था, अुन्हें छपाना-बेचना सबसे आसान सविनय-भंग मालूम हुआ। अिसलिअे ये पुस्तकें छपाअी गअीं और शामको अुपवास छूटनेके वाद, और चौपाटीकी जंगी सभाके विसर्जित होने पर अिन्हें बेचनेका प्रबंध किया गया।

शामको बहुतसे स्वयंसेवक अिन पुस्तकोंको बेचने निकल पड़े। अेक मोटरमें मैं निकला। अपनी जेवमें जो था, सो सब देकर किताबें खरीदनेवाले बहुतेरे निकल आये। लोगोंको समझा दिया गया था, कि खरीदनेवालेको भी जेल जानेका खतरा अुठाना पड़ सकता है। लेकिन कुछ समयके लिअे लोगोंने जेलका भय छोड़ दिया था।

७ तारीखको पता चला कि जिन किताबोंके बेचने पर सरकारने रोक लगाअी थी, सरकारकी दृष्टिसे वे बेची नहीं गअी हैं। सरकारकी ओरसे यह कहा गया था कि नअी आवृत्ति छपाने-बेचने और खरीदनेमें कोअी गुनाह नहीं है। यह खबर सुनकर लोग निराश हुअे।

अुस दिन सवेरे लोगोंको चौपाटी पर स्वदेशी-व्रत और हिन्दू-मुस्लिम-व्रतके लिअे अिकट्ठा होना था। बहुत थोड़े लोग अिकट्ठा हुअे थे। मैं अुसी समयसे यह अनुभव करता रहा हूँ कि धूम-धड़क्केके काम और धीमे रचनात्मक कामके बीच क्या भेद है, और लोगोंमें पहले कामके लिअे पक्षपात और दूसरेके प्रति अरुचि क्यों है।

सात अप्रैलकी रातको मैं दिल्ली-अमृतसर जानेके लिअे रवाना हुआ। ८ अप्रैलको मथुरा पहुँचने पर कुछ अैसी भनक कान तक आअी कि शायद मुझे गिरफ़्तार करेंगे। पलवल स्टेशनके आनेसे पहले पुलिस अधिकारीने मेरे हाथमें हुक्म रखा कि मुझे पंजाबकी सरहदमें दाखिल नहीं होना चाहिये। हुक्म देनेके बाद पुलिसने मुझसे अुतर जानेको कहा। मैंने अुतरनेसे अिनकार किया।

मुझे पलवल स्टेशन पर अुतार लिया गया और पुलिसके हवाले किया गया। मुझे दिल्लीसे आनेवाली किसी ट्रेनके तीसरे दर्जेके डब्बेमें

बैठाया गया और साथमें पुलिसका दल भी बैठा। मथुरा पहुँचने पर मुझे पुलिसकी बारकमें ले गये। सुबह चार बजे मुझे जगाया गया और बम्बअीकी कोअी मालगाड़ी जा रही थी, अुसमें बैठाया गया। दोपहरको मुझे सवाअी माधोपुर पर अुतारा गया। वहाँ मुझे बम्बअीकी डाकगाड़ीमें पहले दर्जेमें सवार कराया गया। अब तक मैं मामूली क़ैदी था। अब 'जेण्टलमैन क़ैदी' माना जाने लगा।

सूरत पहुँचने पर किसी दूसरे अधिकारीने मुझे अपने क़ब्ज़ेमें लिया। अुसने मुझसे रास्तेमें कहा — 'आप रिहा कर दिये गये हैं। लेकिन आपके लिअे मैं ट्रेनको मरीन लाअिन्स स्टेशनके पास रुकवाअूँगा; आप वहाँ अुतरेंगे तो ज़्यादा अच्छा होगा।'

मैं मरीन लाअिन्स पर अुतरा। वहाँ किसी परिचितकी घोड़ागाड़ी दिखाअी पड़ी। वे मुझे रेवाशंकर झवेरीके घर छोड़ आये। अुन्होंने मुझे ख़बर दी — 'लोग गुस्सा हो अुठे हैं और पागल बन गये हैं। पायधूनीके पास अुपद्रवका डर है।'

अुमर सोबानी और अनसूयाबहन दोनों मोटरमें आये और मुझे पायधूनी ले गये। लोगोंने मुझे देखा और वे हर्षसे अुन्मत्त हो अुठे। अब जुलूस तैयार हुआ।

जुलूसको क्रॉफर्ड मार्केटकी ओरसे जानेसे रोकनेके लिअे घुड़सवारोंकी अेक टुकड़ी सामनेसे आ पहुँची। लोगोंने पुलिसकी पाँतको चीरकर आगे बढ़नेके लिअे ज़ोर लगाया। वहाँ अैसी हालत न थी कि मेरी आवाज़ सुनाअी पड़े। घुड़सवारोंकी टुकड़ीके अफ़सरने भीड़को तितर-बितर करनेका हुक्म दिया, और अपने भालोंको घुमाते हुअे अिस टुकड़ीने अेकदम घोड़े दौड़ाने शुरू कर दिये। लोगोंकी भीड़में दरार पड़ी। भगदड़ मच गअी। कोअी कुचले गये, कोअी घायल हुअे। सारा दृश्य भयंकर प्रतीत हुआ। घुड़सवार और जनता दोनों पागल-जैसे लगे।

लोग बिखर गये। हमारी मोटर आगे बढ़ी और मैं पुलिसके व्यवहारके संबंधमें शिकायत करनेके लिअे कमिश्नरके पास अुतर गया।

१२९

वह सप्ताह ! – २

मैंने कमिश्नरसे अुस दृश्यका वर्णन किया, जिसे मैं अभी-अभी देखकर आया था। अुन्होंने संक्षेपमें जवाब दिया — 'मैं नहीं चाहता था कि जुलूस फोर्टकी ओर जाय। वहाँ जाने पर अुपद्रव हुअे बिना न रहता।'

मैंने कहा — 'लेकिन मेरा खयाल यह है कि घुड़सवारोंकी टुकड़ी भेजनेकी कोअी ज़रूरत न थी।'

'आप अिसे नहीं जान सकते। आपकी शिक्षाका लोगों पर क्या असर हुआ है, अिसका पता आपकी अपेक्षा हम पुलिसवालोंको अधिक रहता है। मैं आपसे कहता हूँ कि लोग आपके क़ब्ज़ेमें भी नहीं रहेंगे। वे क़ानूनको तोड़नेकी बात तो झट समझ जायँगे, लेकिन शांतिकी बात अुनकी शक्तिसे परेकी है। आपके हेतु अच्छे हैं, लेकिन लोग अुन्हें समझेंगे नहीं।'

मैंने जवाब दिया — 'किन्तु आपके और मेरे बीच जो भेद है, सो अिसी बातमें है। मैं कहता हूँ कि लोग स्वभावसे लड़ाकू नहीं, बल्कि शांतिप्रिय हैं।'

हम दलीलमें अुतरे। आखिर साहबने कहा — 'अच्छी बात है, अगर आपको विश्वास हो जाय कि लोग आपकी शिक्षाको समझे नहीं हैं, तो आप क्या करेंगे?'

मैंने जवाब दिया — 'यदि मुझे अिसकी प्रतीति हो जाय, तो मैं अिस लड़ाअीको मुल्तवी कर दूंगा।'

'अगर आप धैर्यसे काम लेंगे, तो आपको अधिक पता चलेगा। आप जानते हैं, अहमदाबादमें क्या हो रहा है? अमृतसरमें क्या हुआ है? अिस सारे अुपद्रवकी ज़िम्मेदारी आपके सिर है।'

मैंने कहा — 'मुझे जहाँ अपनी ज़िम्मेदारी महसूस होगी, वहाँ मैं अुसे अपने अूपर लिये विना रहूँगा नहीं। यदि अहमदावादमें लोग कुछ भी करते हैं, तो मुझे आश्चर्य और दुःख होगा। अमृतसरके वारेमें मैं कुछ नहीं जानता। वहाँ तो मैं कभी गया ही नहीं हूँ। यदि पंजावकी सरकारने मुझे वहाँ जानेसे रोका न होता, तो मैं शांति-रक्षामें वहुत मदद कर सकता।'

अिस तरह हमारी वातचीत होती रही। मैं यह कहकर विदा हुआ कि चौपाटी पर सभा करने और लोगोंको शांति रखनेके लिअे समझानेका मेरा अिरादा है। चौपाटी पर सभा हुअी।

मैं अहमदावाद गया। वहाँ तो मार्शल लॉ शुरू हो चुका था। लोगोंमें भय फैला हुआ था। लोगोंने जैसा किया वैसा पाया, और अुसका व्याज भी अुन्हें मिला।

मुझे कमिश्नरके पास ले जानेके लिअे अेक आदमी स्टेशन पर हाज़िर था। मैं अुनके पास गया। वे वहुत ग़ुस्सेमें थे। मैंने अुन्हें शांतिसे जवाव दिया। यह भी सुझाया कि मार्शल लॉकी आवश्यकता नहीं है। और फिरसे शांति स्थापित करनेके लिअे जो अुपाय करने चाहियें, सो करनेकी अपनी तैयारी वताअी। मैंने आम सभा वुलानेकी माँग की। अुन्हें यह वात अच्छी लगी। मैंने सभा की। लोगोंको अुनके दोष दिखानेका प्रयत्न किया। प्रायश्चित्तके रूपमें मैंने तीन दिनके अुपवास किये और लोगोंको सलाह दी कि वे अेक दिनका अुपवास करें। जिन्होंने ख़ून वग़ैरामें हिस्सा लिया हो, अुन्हें सुझाया कि वे अपना गुनाह क़वूल कर लें।

जिस प्रकार लोगोंको सुझाया कि वे अपना गुनाह क़वूल कर लें, अुसी प्रकार सरकारको भी गुनाह माफ़ करनेकी सलाह दी। दोनोंमें से किसी अेकने भी मेरी वात न सुनी। न लोगोंने अपने दोष स्वीकार किये, न सरकारने किसीको माफ़ किया।

मैंने निश्चय कर लिया कि जव तक लोग शांतिका पाठ न सीखें, तव तक सत्याग्रह मुल्तवी रखा जाय।

कुछ मित्र नाराज़ हुअे। अुनका खयाल यह था कि अगर मैं सब कहीं शांतिकी आशा रखूँ और सत्याग्रहकी यही शर्त रहे, तो बड़े पैमाने पर सत्याग्रह चल ही न सकेगा। मैंने अपना मतभेद प्रकट किया। जिन लोगोंने काम किया है, जिनके द्वारा सत्याग्रह करनेकी आशा रखी जाती है, वे यदि शांतिका पालन न करें, तो सत्याग्रह चल ही नहीं सकता। मेरी दलील यह थी कि सत्याग्रही नेताओंको अिस प्रकारकी मर्यादित शांति बनाये रखनेकी शक्ति प्राप्त करनी चाहिये। अपने अिन विचारोंको मैं आज भी बदल नहीं सका हूँ।

१३०

'पहाड़-सी भूल'

अहमदाबादकी सभाके बाद मैं तुरंत ही नड़ियाद गया। 'पहाड़-सी भूल' नामक शब्द-प्रयोग मैंने पहली बार नड़ियादमें किया। मैं जिस सभामें भाषण कर रहा था, अुसमें मुझे अचानक यह ख़याल आया कि खेड़ा जिलेके और अैसे दूसरे लोगोंको क़ानूनका सविनय-भंग करनेके लिअे निमंत्रित करनेमें मैंने जल्दबाजीकी भूल की थी, और मुझे वह भूल पहाड़-सी प्रतीत हुअी।

अिस प्रकार अपनी भूल क़बूल करनेके लिअे मेरी काफ़ी हँसी अुड़ाअी गअी, फिर भी अपनी अिस स्वीकृतिके लिअे मुझे कभी पश्चात्ताप नहीं हुआ। जब हम दूसरोंके गज़ बराबर दोषोंको रजवत् मानकर देखते हैं, और अपने रजवत् प्रतीत होनेवाले दोषोंको पहाड़-जैसा देखना सीखते हैं, तभी हमें अपने और पराये दोषोंका ठीक-ठीक अंदाज़ हो पाता है। सत्याग्रही बननेकी अिच्छा रखनेवालेको तो अिस साधारण नियमका पालन बहुत अधिक सूक्ष्मताके साथ करना चाहिये।

अब हम यह देखें कि पहाड़-सी लगनेवाली वह भूल क्या थी। क़ानूनका सविनय-भंग अुन्हीं लोगों द्वारा किया जा सकता है, जिन्होंने

विनयपूर्वक और स्वेच्छासे क़ानूनकी क़द्र की हो। अधिकतर तो हम क़ानूनका पालन अिसलिअे करते हैं कि अुसे तोड़ने पर जो सज़ा होगी, अुससे हम डरते हैं। यह बात अुस क़ानून पर विशेषरूपसे घटित होती है, जिसमें नीति-अनीतिका प्रश्न नहीं होता। क़ानून हो चाहे न हो, फिर भी जो लोग भले माने जाते हैं, वे अेकाअेक कभी चोरी नहीं करते। लेकिन जब बाअिसिकल पर बत्ती जलानेके नियमका पालन करनेकी कोअी सलाह-भर देता है, तो भले आदमी भी अुसका पालन करनेके लिअे तुरंत तैयार नहीं होते; किन्तु जब अुसे क़ानूनमें स्थान मिलता है, तो दण्ड देनेकी असुविधासे बचनेके लिअे भी वे बाअिसिकल पर बत्ती जलाते हैं। अिस प्रकारका नियम-पालन स्वेच्छा-पालन नहीं कहा जा सकता।

लेकिन सत्याग्रही तो समाजके जिन क़ानूनोंकी क़द्र करेगा, अुनकी वह सोच-समझकर, स्वेच्छासे, क़द्र करना धर्म है, अैसा मानकर क़द्र करेगा। जिसने अिस प्रकार समाजके नियमोंका विचार-पूर्वक पालन किया है, समाजके नियमोंमें नीति-अनीतिका भेद करनेकी शक्ति अुसीको प्राप्त होती है, और अुसे सीमित परिस्थितियोंमें अमुक नियमोंको तोड़नेका अधिकार प्राप्त होता है। लोगोंके अिस तरहका अधिकार प्राप्त करनेसे पहले मैंने अुन्हें सविनय-भंगके लिअे निमंत्रित किया, अपनी यह भूल मुझे पहाड़-सी लगी।

यह तो सहज ही समझमें आ सकता है कि अिस प्रकारकी आदर्श स्थिति तक हज़ारों या लाखों लोग नहीं पहुँच सकते। किन्तु यदि बात अैसी है, तो सविनय अवज्ञा करानेसे पहले शुद्ध स्वयंसेवकोंका अेक अैसा दल खड़ा होना चाहिये, जो लोगोंको ये सारी बातें समझाये, और प्रतिक्षण अुनका मार्गदर्शन करे; और अैसे दलको सविनय अवज्ञाका तथा अुसकी मर्यादाका पूरा-पूरा ज्ञान प्राप्त हुआ होना चाहिये।

अिन विचारोंसे भरा हुआ मैं बंबअी पहुँचा और सत्याग्रह-सभाके ज़रिये सत्याग्रही स्वयंसेवकोंका दल खड़ा किया। लोगोंको सविनय अवज्ञाका मर्म समझानेके लिअे जिस तालीमकी ज़रूरत थी, सो अिस दलके जरिये देनी शुरू की, और अिस चीज़को समझानेवाली पत्रिकायें निकालीं।

यह काम शुरू तो हुआ, लेकिन मैंने देखा कि मैं अिसमें बहुत दिलचस्पी पैदा न कर सका। स्वयंसेवकोंकी भीड़ अिकट्ठी न हुअी। जिन्होंने अपने नाम दर्ज कराये थे, वे भी दृढ़ बननेके बदले खिसकने लगे। मैं समझ गया कि सविनय-भंगकी गाड़ी जितनी सोची थी, अुससे धीमी चलेगी।

१३१

'नवजीवन' और 'यंग अिंडिया'

सरकारी दमन-नीति पूरे जोरके साथ चल रही थी। पंजाबमें अुसके प्रभावका साक्षात्कार हुआ। वहाँ फ़ौजी क़ानून यानी मनमानी शुरू हो गअी।

मुझ पर दबाव पड़ने लगा कि मैं जैसे भी बने, पंजाब पहुँचूं। मैंने वाअिसरायको पत्र लिखे, तार भेजे, लेकिन अिजाज़त न मिली। बिना अिजाज़तके जाने पर अन्दर तो जा नहीं सकता था; किन्तु सविनय अवज्ञा करनेका संतोष-मात्र मिल सकता था। मैंने अनुभव किया कि निषेधाज्ञाका अनादर करके प्रवेश करूँगा, तो वह विनयी अनादर न माना जायगा। मेरे द्वारा की गअी क़ानूनकी अवज्ञा जलतेमें घी होमने-जैसी सिद्ध होगी। पंजाबमें प्रवेश करनेकी सलाहको मैंने सहसा माना नहीं। मेरे लिअे यह निर्णय अेक कड़ुआ घूंट था।

अितनेमें लोगोंको सोता छोड़कर सरकार मि० हॉर्निमैनको चुरा ले गअी। फलतः 'क्रॉनिकल' के व्यवस्थापकोंने अुसे चलानेका बोझ मुझ पर डाला। लेकिन मुझे यह ज़िम्मेदारी लम्बे समय तक अुठानी न पड़ी। सरकारकी मेहरबानीसे वह बन्द हो गया।

जो लोग 'क्रॉनिकल' की व्यवस्थाके कर्त्ताधर्त्ता थे, 'यंग अिंडिया' की व्यवस्था भी अुन्हींके हाथमें थी। अुन्होंने मुझे सुझाया कि मैं 'यंग

अिंडिया' की ज़िम्मेदारी अपने सिर लूँ। सत्याग्रहका रहस्य समझानेका अुत्साह मुझमें था ही। अिसलिअे मैंने मित्रोंका यह सुझाव मान लिया।

लेकिन अंग्रेज़ीके द्वारा जनताको सत्याग्रहकी तालीम किस प्रकार दी जा सकती थी? मेरे कार्यका मुख्य क्षेत्र गुजरातमें था। अुक्त मित्रोंने 'नवजीवन' मेरे हवाले किया, और अुसे मासिकके बदले साप्ताहिक बनाया।

अिन पत्रोंके ज़रिये मैंने जनताको यथाशक्ति सत्याग्रहकी तालीम देना शुरू किया। अिनमें विज्ञापन न लेनेका मेरा आग्रह शुरूसे था ही। मैं मानता हूँ कि अिससे कोअी हानि नहीं हुअी, और अिस प्रथाके कारण पत्रोंके विचार-स्वातंत्र्यकी रक्षा करनेमें बहुत मदद मिली।

अिन पत्रों द्वारा मैं अपनी शांति प्राप्त कर सका। क्योंकि यद्यपि मैं सविनय अवज्ञाको तुरंत ही शुरू न कर पाया, फिर भी मैं अपने विचार स्वतंत्रता-पूर्वक प्रकट कर सका।

१३२

पंजाबमें

मैं पंजाब जानेके लिअे अधीर हो रहा था। लेकिन मेरा जाना आगे पर टलता जाता था। वाअिसराय लिखाते रहते थे कि 'अभी ज़रा देर है।' आखिर जवाब आया — 'आप अमुक तारीखको जा सकते हैं।' बहुत करके तारीख १७ अक्तूबर थी।

मैं लाहौर पहुँचा। स्टेशन पर लोगोंका समुदाय अिस क़दर अिकट्ठा हुआ था, मानो बरसोंके वियोगके बाद कोअी प्रियजन आ रहा हो, और सगे-सम्बन्धी अुससे मिलने आये हों। लोग हर्षोन्मत्त हो गये थे।

बहुतेरे पंजाबी नेता जेलमें थे, अतअेव मुख्य नेताओंका स्थान पंडित मालवीयजी, पंडित मोतीलालजी और स्वामी श्रद्धानन्दजीने लिया

था। अिन नेताओंने और दूसरे स्थानीय नेताओंने मुझे फ़ौरन ही अपना लिया। कहीं भी मैं किसीको अपरिचित-सा नहीं लगा।

हम सबने सर्वसम्मतिसे निश्चय किया कि हण्टर-कमेटीके सामने गवाही न दी जाय। और, यह तय किया कि लोगोंकी ओरसे, अर्थात् कांग्रेसकी ओरसे अेक कमेटी बननी चाहिये। पंडित मालवीयजीने यह कमेटी नियुक्त की। कमेटीकी व्यवस्थाका बोझ सहज ही मुझ पर आ पड़ा था, और चूँकि अधिक-से-अधिक गाँवोंकी जाँचका काम मेरे हिस्से आया था, अिसलिअे मुझे पंजाब और पंजाबके गाँव देखनेका अलभ्य लाभ मिला।

लोगों पर ढाये गये जुल्मोंकी जाँच करते समय मैं जैसे-जैसे गहरा पैठने लगा, वैसे-वैसे सरकारी अराजकताकी, अधिकारियोंकी नादिरशाही और निरंकुशताकी अपनी कल्पनासे परेकी बातें सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ, और मैंने दुःखका अनुभव किया। जिस पंजाबसे सरकारको अधिक-से-अधिक सिपाही मिलते हैं, अुस पंजाबमें लोग अितना ज़्यादा जुल्म कैसे सहन कर सके, यह बात मुझे अुस समय भी आश्चर्य-जनक मालूम हुअी थी, और आज भी मालूम होती है।

अिस कमेटीकी रिपोर्ट तैयार करनेका काम भी मुझे सौंपा गया था। अिस रिपोर्टके बारेमें मैं अितना कह सकता हूँ कि अुसमें जान-बूझकर अेक भी जगह अतिशयोक्ति नहीं हुअी है। जहाँ तक मैं जानता हूँ, अुसकी अेक भी बात आज तक झूठ साबित नहीं हुअी।

१३३

खिलाफ़तके बदले गो-रक्षा ?

कांग्रेसकी ओरसे पंजावकी डायरशाहीकी जाँच हो रही थी। अुन्हीं दिनों मेरे हाथमें अेक सार्वजनिक निमंत्रण पड़ा। यह निमंत्रण दिल्लीमें हिन्दू-मुसलमानोंकी अेक मिली-जुली सभामें हाज़िर रहनेका था, जिसमें खिलाफ़तके सिलसिलेमें पैदा हुअी हालत पर विचार करना था, और यह तय करना था कि सुलहके अुत्सवमें सम्मिलित हुआ जाय या नहीं। यह सभा नवम्वर महीनेमें थी।

मैं सभामें हाज़िर रहा। सभाके सामने खिलाफ़तके प्रश्नके साथ गो-रक्षाका प्रश्न भी था। मेरी दलील यह थी कि दोनों प्रश्नों पर अुनके अपने गुण-दोषकी दृष्टिसे विचार करना चाहिये। यदि खिलाफ़तके मामलेमें सरकारकी ओरसे अन्याय होता हो, तो हिन्दुओंको मुसलमानोंका साथ देना चाहिये; और अिस प्रश्नके साथ गो-रक्षाके प्रश्नको जोड़ना न चाहिये। पड़ोसीके और अेक ही भूमिके निवासी होनेके नाते तथा हिन्दुओंकी भावनाका आदर करनेकी दृष्टिसे मुसलमानोंका स्वतंत्रभावसे गो-वध वंद करना अुनके लिअे शोभाकी वात है, वह अुनका फ़र्ज़ है; और यह अेक स्वतंत्र प्रश्न है। अगर यह फ़र्ज़ है और मुसलमान अिसे फ़र्ज़ समझें, तो हिन्दू खिलाफ़तके काममें मदद दें या न दें, तो भी मुसलमानोंको गो-वध वंद करना चाहिये। मैंने अपनी तरफ़से यह दलील पेश की कि अिस तरह दोनों प्रश्नोंका विचार स्वतंत्र रीतिसे किया जाना चाहिये, और अिसलिअे अिस सभामें तो सिर्फ़ खिलाफ़तके प्रश्नकी चर्चा करना ही मुनासिव है। गो-रक्षाके प्रश्न पर सभामें चर्चा न हुअी। लेकिन मौलाना अव्दुल वारी साहवने तो कहा — 'हिन्दू खिलाफ़तके मामलेमें मदद दें चाहे न दें, लेकिन चूँकि हम अेक ही मुल्कके रहने-वाले हैं, अिसलिअे मुसलमानोंको हिन्दुओंके जज़्वातकी खातिर गो-कुशी

बंद करनी चाहिये।' कुछ समयके लिअे तो अैसा ही मालूम हुआ, कि मुसलमान सचमुच गो-वध बन्द कर देंगे।

कअी प्रस्तावोंमें अेक प्रस्ताव यह भी था कि हिन्दू-मुसलमान सबको स्वदेशी-व्रतका पालन करना चाहिये, और अिसके लिअे विदेशी कपड़ेका बहिष्कार करना चाहिये। मौलाना हसरत मोहानीको यह प्रस्ताव जँच नहीं रहा था। अुन्होंने सुझाया कि यथासंभव हरअेक ब्रिटिश मालका बहिष्कार करना चाहिये। मैंने हर तरहके ब्रिटिश मालके बहिष्कारकी अशक्यता और अनौचित्यके बारेमें अपनी दलीलें पेश कीं। मैंने अपनी अहिंसावृत्तिका भी प्रतिपादन किया। मैं मौलानाका भाषण सुन रहा था। मुझे खयाल आया कि विदेशी वस्त्रके बहिष्कारके अलावा भी दूसरी कोअी नअी चीज़ सुझानी चाहिये। मैं सोचा करता था कि मौलाना खुद कअी मामलोंमें जिस सरकारका साथ दे रहे हैं, अुस सरकारके विरोधकी बात करना अुनके लिअे बेकार है। तलवारसे विरोध करना न था, अिसलिअे मुझे लगा कि साथ न देनेमें ही सच्चा विरोध है। और फलतः मैंने 'नॉन-को-ऑपरेशन' शब्दका अिस सभामें पहली बार अुपयोग किया। अिसके समर्थनमें मैंने अपनी दलीलें दीं। अुस समय मुझे कोअी खयाल ही न था कि अिस शब्दमें किन-किन बातोंका समावेश हो सकता है। अिसलिअे मैं तफ़सीलमें न जा सका। मैंने कहा — 'अगर कहीं सुलहकी शर्तें मुसलमान भाअियोंके खिलाफ़ गअीं, तो वे सरकारकी सहायता करना बन्द कर देंगे। खिलाफ़तका फ़ैसला हमारे खिलाफ़ हो, तो मदद न करनेका हमें हक़ है।'

कुछ महीनों तक यह शब्द अुस सभामें ही दबा रह गया। जब अमृतसरमें कांग्रेसका अधिवेशन हुआ और वहाँ मैंने सहयोगके प्रस्तावका समर्थन किया, तब मैंने तो यही आशा रखी थी कि हिन्दू-मुसलमानोंके लिअे असहयोगका अवसर नहीं आवेगा।

१३४

अमृतसर-कांग्रेस

अब तक कांग्रेसमें मेरा काम अितना ही रहता था कि हिन्दीमें अपना छोटा-सा भाषण करूँ, हिन्दीकी वकालत करूँ, और अुपनिवेशोंमें रहनेवाले हिन्दुस्तानियोंका मामला पेश करूँ। मुझे खयाल नहीं था कि अमृतसरमें मुझे अिससे अधिक कुछ करना पड़ेगा। लेकिन जैसा कि मेरे संबंधमें पहले भी हो चुका है, ज़िम्मेदारी अचानक आ पड़ी।

नये सुधारों-संबंधी सम्राट्का आदेश प्रकट हो चुका था। वह मुझे पूर्ण संतोष देनेवाला तो था ही नहीं; और किसीको तो वह बिलकुल पसंद ही न पड़ा। लेकिन अुस समय मैंने यह माना था कि अुक्त आदेशमें सूचित सुधार त्रुटिपूर्ण होते हुअे भी स्वीकार किये जा सकते हैं। किन्तु लोकमान्य, चित्तरंजन दास आदि अनुभवी योद्धा सिर हिला रहे थे।

मैंने देखा कि सुधारवाले प्रस्तावकी चर्चामें भाग लेना मेरा धर्म है। मैंने अनुभव किया कि सुधार स्वीकार करनेका प्रस्ताव मंजूर किया जाना चाहिये। चित्तरंजन दासकी दृढ़ सम्मति यह थी कि सुधारोंको बिलकुल असंतोषकारक और अधूरा मानकर अुनकी अवगणना करनी चाहिये।

परखे हुअे सर्वमान्य लोकनायकोंके साथ अपना मतभेद मुझे स्वयं असह्य मालम हुआ। दूसरी ओर मेरा अन्तर्नाद स्पष्ट था। मैंने कांग्रेसकी बैठकमें से भागनेका प्रयत्न किया। पं० मोतीलाल नेहरू और मालवीयजीको सुझाया कि वे मुझे ग़ैरहाज़िर रहने दें। लेकिन मेरा यह सुझाव दोनों बुज़ुर्गोंके गले न अुतरा। जब बात लाला हरकिसन-लालके कान तक पहुँची, तो अुन्होंने कहा — 'यह हरगिज़ न होगा।' अुन्होंने मत गिननेकी संतोषजनक व्यवस्था कर देनेका ज़िम्मा लिया।

आखिर मैं हारा। मैंने अपना प्रस्ताव तैयार किया। मि० जिन्ना और मालवीयजी समर्थन करनेवाले थे। भाषण हुअे। मैं देख रहा था

कि सभा किसी प्रकारके मतभेदको सह नहीं सकती थी, और नेताओंके मतभेदसे अुसे दु:ख हो रहा था।

जिस समय भाषण हो रहे थे, अुस समय भी मंच पर मतभेद मिटानेके प्रयत्न जारी थे। आखिर समझौता हुआ। तालियोंकी गड़गड़ाहटसे मंडप गूंज अुठा और लोगोंके चेहरों पर जो गंभीरता थी, अुसके बदले अब खुशी चमक अुठी।

समझौतेने मेरी ज़िम्मेदारी बढ़ा दी।

१३५
कांग्रेसमें प्रवेश

मुझे कांग्रेसमें सम्मिलित होना पड़ा, अिसे मैं कांग्रेसमें अपना प्रवेश नहीं मानता। अमृतसरके अनुभवने यह सिद्ध किया कि मेरी शक्ति कांग्रेसके लिअे अुपयोगी है। पंजाब-समितिके कामसे लोकमान्य, मालवीयजी, मोतीलालजी, देशबन्धु आदि खुश हुअे थे। अिसलिअे अुन्होंने मुझे अपनी बैठकों और चर्चाओंमें बुलाया। विषय-विचारिणी समितिका सच्चा काम अैसी बैठकोंमें होता था।

अगले साल करने योग्य कामोंमें से दो कामोंमें मुझे दिलचस्पी थी, क्योंकि अुनमें मैं कुछ दखल रखता था।

अेक था, जलियाँवाला बाग़के हत्याकांडका स्मारक। अुसके लिअे क़रीब पाँच लाख रुपयेकी रक़म अिकट्ठा करनी थी। अुसके रक्षकों (ट्रस्टियों) में मेरा नाम था। रक्षकका पद स्वीकार करते ही मैं समझ गया था कि अिस स्मारकके लिअे धन-संग्रह करनेका मुख्य बोझ मुझ पर पड़ेगा। बम्बअीके अुदार नागरिकोंने अिस स्मारकके लिअे दिल खोलकर धन दिया।

मेरी दूसरी शक्ति मुंशीका काम करनेकी थी। नेता लोग यह समझ चुके थे कि कहाँ क्या और कमसे कम शब्दोंमें अविनय-

रहित भाषामें किस तरह लिखना, सो मैं जानता था। सब किसीको यह अनुभव होने लगा था कि अुन दिनों कांग्रेसका जो विधान था, अुससे अब काम नहीं चल सकता। विधान तैयार करनेका भार मैंने अपने सिर लिया। मैंने लोकमान्यसे और देशवन्धुसे अुनके विश्वासके दो नाम माँगे। लोकमान्यने श्री केलकरका और देशवंधुने श्री आओ० बी० सेनका नाम दिया। यह विधान-समिति अेक दिन भी साथ मिलकर न बैठी। फिर भी हमने अपना काम अेकरायसे पूरा किया। हमने पत्र-व्यवहारसे अपना काम चला लिया। मुझे अिस विधानके बारेमें थोड़ा अभिमान है। मैं यह मानता हूँ कि अिस दायित्वको स्वीकार करके मैंने कांग्रेसमें सच्चा प्रवेश किया।

१३६

खादीका जन्म

मुझे याद नहीं पड़ता कि सन् १९०८ तक मैंने चरखा या करघा कहीं देखा हो। फिर भी, 'हिन्द स्वराज'में मैंने यह माना था कि चरखेके ज़रिये हिन्दुस्तानकी कंगालियत मिट सकती है। जब सन् १९१५ में दक्षिण अफ्रीकासे देश वापस आया, तब भी मैंने चरखेके दर्शन तो किये ही न थे। आश्रमके खुलने पर अुसमें करघा शुरू किया। करघा शुरू करनेमें भी मुझे बड़ी मुश्किलका सामना करना पड़ा। हम सब क़लम चलानेवाले या व्यापार करना जाननेवाले अिकट्ठा हुअे थे; हममें कोअी कारीगर न था। लेकिन मगनलाल गांधीके हाथमें कारीगरी तो थी ही। अिसलिअे अुन्होंने बुननेकी कलाको पूरी तरह समझ लिया और अेकके बाद अेक आश्रममें नये-नये बुननेवाले तैयार हुअे।

हमें तो अब अपने कपड़े खुद ही तैयार करके पहनने थे। अिसलिअे मिलके कपड़े पहनने बन्द किये, और आश्रम-वासियोंने निश्चय किया कि वे हाथ-करघे पर देशी मिलके सूतसे बुना हुआ

कपड़ा पहनेंगे। जुलाहोंके पाससे देशी मिलके सूतका हाथ-बुना कपड़ा आसानीसे मिलता न था। बड़ी कोशिशके बाद कुछ जुलाहे मिले, जिन्होंने देशी सूतका कपड़ा बुन देनेकी मेहरबानी की।

अब हम अपने हाथसे कातनेके लिअे अधीर हो अुठे। हमने देखा कि जब तक हाथसे कातेंगे नहीं, तब तक हमारी पराधीनता बनी रहेगी। मिलोंके अेजण्ट बनकर हम देश-सेवा करते हैं, अैसा हमें प्रतीत न हुआ।

लेकिन न कहीं चरखा था, और न कोअी चरखेका चलानेवाला।

सन् १९१७ में भड़ौच शिक्षा-परिषद्में महान् साहसी विधवा बहन गंगाबाअी अचानक मिलीं। मैंने अपना दुःख अुनके सामने रखा, और जिस तरह दमयन्ती नलके पीछे भटकी थी, अुस तरह चरखेकी खोजमें भटकनेकी प्रतिज्ञा करके अुन्होंने मेरा बोझ हलका किया।

१३७

मिला

गुजरातमें काफ़ी भटकनेके बाद गायकवाड़के बीजापुर गाँवमें गंगाबहनको चरखा मिला। मेरे हर्षका पार न रहा। भाअी अुमर सोबानीसे चर्चा करने पर अुन्होंने अपनी मिलसे पूनीकी गुछलियाँ भेजते रहनेका ज़िम्मा लिया। मैंने गुछलियाँ गंगाबहनके पास भेजीं, और सूत अितनी तेज़ीसे तैयार होने लगा कि मैं थक गया।

मुझे मिलकी पूनियोंसे सूत कतवाना बहुत दोषपूर्ण मालूम हुआ। मैंने गंगाबहनको लिखा कि वे पूनी बनानेवालेकी खोज करें। अुन्होंने अिसका ज़िम्मा लिया। पिंजारेको खोज निकाला। बच्चोंको पूनी बनाना सिखाया। गंगाबहनने काम अेकदम बढ़ा दिया। बुननेवालोंको बसाया और कता हुआ सूत बुनवाना शुरू किया। बीजापुरकी खादी मशहूर हो गअी।

अब आश्रममें चरखेको दाखिल होनेमें देर न लगी।

मैं केवल खादीमय बननेके लिअे अधीर हो अुठा। मेरी धोती देशी मिलके कपड़ेकी थी। मैंने गंगाबहनको चेतावनी दी, कि अगर वे अेक महीनेके अंदर ४५ अिंच अर्ज़की खादीकी धोती तैयार करके न देंगी, तो मुझे मोटी खादीका पंचा पहनकर अपना काम चलाना पड़ेगा। अुन्होंने अेक महीनेके अन्दर मेरे लिअे पचास अिंचका धोती जोड़ा मुहैया कर दिया, और मेरा दारिद्र्य मिटाया।

१३८

अेक संवाद

जिस समय 'स्वदेशी' के नामसे परिचित यह हलचल चलने लगी, अुस समय मिल-मालिकोंकी ओरसे मेरे पास काफी टीकायें आने लगीं। भाअी अुमर सोवानीने अेक मिल-मालिकके पास ले जानेकी बात कही। मैंने अुसका स्वागत किया। हम अुनके पास गये। अुन्होंने वंग-भंगके समय स्वदेशी आन्दोलनके चलनेसे स्वदेशी कपड़ेकी क़ीमत बढ़नेकी बात की और कहा — 'हिन्दुस्तानको जितने मालकी ज़रूरत है, अुतना माल हम अुत्पन्न नहीं करते हैं। अिसलिअे स्वदेशीका प्रश्न मुख्यतः अुत्पत्तिका प्रश्न है। जब हम आवश्यक मात्रामें कपड़ा पैदा कर सकेंगे और कपड़ेकी जातमें सुधार कर सकेंगे, तब विदेशी कपड़ा अपने आप आना बंद हो जायगा। अिसलिअे आपको मेरी सलाह तो यह है कि आप अपने स्वदेशी आन्दोलनको जिस तरह चला रहे हैं, अुस तरह न चलायें, और नअी मिलें खोलनेकी ओर ध्यान दें। अपने देशमें हमें स्वदेशी मालको बेचनेका आन्दोलन चलानेकी ज़रूरत नहीं है, बल्कि माल पैदा करनेकी ज़रूरत है।'

मैं बोला — 'अगर मैं यही काम करता होअूँ, तब तो आप मुझे आशीर्वाद देंगे न?'

'सो कैसे? अगर आप मिल खोलनेका प्रयत्न करते हों, तो आप धन्यवादके पात्र हैं।'

'सो तो मैं नहीं करता, बल्कि मैं तो चरखेकी हलचलमें पड़ा हूँ।'

'यह क्या चीज है?'

मैंने चरखेकी बात कह सुनाअी और कहा —

'मैं आपके विचारसे सहमत होता हूँ। मुझे मिलोंकी दलाली नहीं करनी चाहिये। मुझको तो अुत्पत्ति करनेमें और जो कपड़ा अुत्पन्न हो, अुसे बेचनेमें लग जाना चाहिये। मैं अिस प्रकारकी स्वदेशीमें विश्वास करता हूँ; क्योंकि अिसके द्वारा हिन्दुस्तानकी भूखों मरनेवाली और आधे समय बेकार रहनेवाली औरतोंको काम दिया जा सकता है। मैं नहीं जानता कि चरखेकी यह हलचल कितनी सफल होगी। यह तो अभी अुसका आरंभकाल ही है। लेकिन मुझे अुसमें पूरा विश्वास है। कुछ भी हो, लेकिन अुसमें नुक़सान तो हरगिज नहीं है। अिस हलचलसे हिन्दुस्तानमें पैदा होनेवाले कपड़ेमें जितनी वृद्धि होगी, अुतना लाभ ही है। अिसलिअे अिस प्रयत्नमें वह दोष तो है ही नहीं, जिसका अभी आपने ज़िक्र किया था।'

'अगर आप अिस तरह अिस हलचलको चलाना चाहते हैं, तो मुझे कुछ कहना नहीं है। यह अेक अलग बात है कि अिस युगमें यह चरखा चलेगा या नहीं। मैं तो आपकी सफलता ही चाहता हूँ।'

१३९

असहयोगका प्रवाह

खिलाफ़तके मामलेमें अलीभाअियोंका ज़बरदस्त आन्दोलन चल रहा था। मौलाना अब्दुल बारी वगैरा अुलेमाओंके साथ अिस विषयकी खूब चर्चायें हुअीं। अिस बारेमें खूब चर्चा और विवेचन हुआ कि मुसलमान शांतिको, अहिंसाको, कहाँ तक पाल सकते हैं, और आखिर यह तय हुआ कि अमुक हद तक युक्तिके रूपमें अुसका पालन करनेमें कोअी अेतराज़ नहीं हो सकता। और अगर किसीने अेक बार अहिंसाकी प्रतिज्ञा की है, तो वह अुसे पालनेके लिअे बँधा हुआ है। आखिर खिलाफ़त परिषदमें असहयोगका प्रस्ताव पेश हुआ और बड़ी चर्चाके बाद वह मंज़ूर हुआ।

कांग्रेसकी महासमितिने अिस प्रश्न पर विचार करनेके लिअे कांग्रेसका अेक विशेष अधिवेशन सन् १९२० के सितम्बर महीनेमें कलकत्तेमें करनेका निश्चय किया।

मेरे प्रस्तावमें खिलाफ़त और पंजाबके अन्यायको लेकर ही असहयोगकी बात कही गअी थी। श्री विजयराघवाचार्यको अिसमें कोअी दिलचस्पी न मालूम हुअी। अुन्होंने कहा — 'अगर असहयोग ही करना है, तो वह अमुक अन्यायके लिअे ही क्यों किया जाय? स्वराज्यका अभाव बड़े-से-बड़ा है। अतअेव अुसके लिअे असहयोग किया जा सकता है।' मोतीलालजी भी अिसे शामिल कराना चाहते थे। मैंने तुरंत ही अिस सूचनाको मान लिया, और प्रस्तावमें स्वराज्यकी माँग भी सम्मिलित कर दी। विस्तृत, गंभीर और कुछ तीखी चर्चाओंके बाद असहयोगका प्रस्ताव पास हुआ।

कांग्रेसके विशेष अधिवेशनमें स्वीकृत असहयोगके प्रस्तावको नागपुरमें होनेवाले कांग्रेसके वार्षिक अधिवेशनमें क़ायम रखना था। वहाँ भी असहयोगका प्रस्ताव पास हो गया।

अिसी बैठकमें कांग्रेसके विधानका प्रस्ताव भी पास करना था। विधानमें विषय-विचारिणी-सभाने अेक ही महत्त्वका परिवर्तन किया था। मैंने प्रतिनिधियोंकी संख्या पंद्रह सौकी मानी थी। विषय-विचारिणी-सभाने अिसे बदलकर छः हज़ार कर दिया। मैं मानता था कि यह क़दम बिना सोचे अुठाया गया है। मैं अिस कल्पनाको बिलकुल ग़लत मानता हूँ, कि बहुतसे प्रतिनिधियोंसे काम अधिक अच्छा होता है, अथवा जनतंत्रकी अधिक रक्षा होती है। प्रजातंत्रकी रक्षाके लिअे जनतामें स्वतंत्रताकी, स्वाभिमानकी और अेकताकी भावना होनी चाहिये, और अच्छे तथा सच्चे प्रतिनिधियोंको ही चुननेका आग्रह रखना चाहिये।

अिसी सभामें हिन्दू-मुस्लिम अेकताके बारेमें, अन्त्यजोंके बारेमें और खादीके बारेमें भी प्रस्ताव पास हुअे। अुस समयसे कांग्रेसके सदस्योंने अस्पृश्यताको मिटानेका भार अपने अूपर लिया है, और खादीके द्वारा कांग्रेसने अपना संबंध हिन्दुस्तानके नर-कंकालोंके साथ जोड़ा है। कांग्रेसने खिलाफ़तके सवालके सिलसिलेमें असहयोगका निश्चय करके हिन्दू-मुस्लिम अेकताको सिद्ध करनेके लिअे अेक महान् प्रयास किया था।

पूर्णाहुति

अब अिन अध्यायोंको समाप्त करनेका समय आ पहुँचा है। पाठकोंसे विदा लेते हुअे मुझे दु:ख होता है। मेरे निकट अपने अिन प्रयोगोंकी वहुत क़ीमत है। मैं नहीं जानता कि मैं अुनका यथार्थ वर्णन कर सका हूँ या नहीं? यथार्थ वर्णन करनेमें मैंने कोअी कसर नहीं रखी है। सत्यको मैंने जिस रूपसे देखा है, जिस मार्गसे देखा है, अुसे प्रकट करनेका मैंने सतत प्रयत्न किया है, और पाठकोंके लिअे अुसका वर्णन करके चित्तमें शांतिका अनुभव किया है। क्योंकि मैंने आशा यह रखी है कि अिससे पाठकोंके मनमें सत्य और अहिंसाके प्रति अधिक आस्था अुत्पन्न होगी।

मैंने सत्यसे भिन्न किसी परमेश्वरका कभी अनुभव नहीं किया। यदि अिन अध्यायोंके पन्ने-पन्नेसे यह प्रतीति न हुअी हो कि सत्यमय वननेके लिअे अहिंसा ही अेकमात्र मार्ग है, तो मैं अिस प्रयत्नको व्यर्थ समझता हूँ। प्रयत्न चाहे व्यर्थ हो, किन्तु वचन व्यर्थ नहीं है। मेरी अहिंसा सच्ची होने पर भी कच्ची है, अपूर्ण है। अतअेव हज़ारों सूर्योंको अेकत्र करनेसे भी जिस सत्यरूपी सूर्यके तेजका पूरा माप निकल नहीं सकता, सत्यकी मेरी झाँकी अैसे सूर्यकी अेक किरण-मात्रके दर्शनके समान ही है। अुसका संपूर्ण दर्शन संपूर्ण अहिंसाके विना असंभव है।

अैसे व्यापक सत्य-नारायणके प्रत्यक्ष दर्शनके लिअे जीवमात्रके प्रति आत्मवत् प्रेमकी परम आवश्यकता है। और जो मनुष्य अैसा करना चाहता है, वह जीवनके किसी भी क्षेत्रसे वाहर नहीं रह सकता। यही कारण है कि सत्यकी मेरी पूजा मुझे राजनीतिमें खींच ले गअी है। मुझे यह कहते हुअे संकोच नहीं होता, और न मैं अैसा कहनेमें कोअी अविनय देखता हूँ, कि जो मनुष्य यह कहता है कि धर्मका राजनीतिसे कोअी संबंध नहीं है, वह धर्मको नहीं जानता।

विना आत्मशुद्धिके जीवमात्रके साथ अैक्य सध ही नहीं सकता। आत्मशुद्धिके विना अहिंसा-धर्मका पालन सर्वथा असंभव है। अशुद्धात्मा परमात्माके दर्शन करनेमें असमर्थ है। अतअेव जीवन-मार्गके सभी क्षेत्रोंमें शुद्धिकी आवश्यकता है, और यह शुद्धि साध्य है। क्योंकि व्यक्ति और समष्टिके वीच अैसा निकटका संवंध है, कि अेककी शुद्धि अनेकोंकी शुद्धिके वरावर हो जाती है। और व्यक्तिगत प्रयत्न करनेकी शक्ति तो सत्य-नारायणने सवको जन्म ही से दी है।

लेकिन मैं तो प्रतिक्षण यह अनुभव करता हूँ, कि शुद्धिका यह मार्ग विकट है। शुद्ध वननेका अर्थ है, मनसे, वचनसे और कायासे निर्विकार वनना, राग-द्वेषादि रहित वनना। अिस निर्विकारता तक पहुँचनेके लिअे प्रतिक्षण प्रयत्न करते हुअे भी मैं पहुँच नहीं पाया। अिसलिअे लोगोंकी स्तुति मुझे भुलावेमें नहीं डाल सकती। यह स्तुति प्रायः खटकती है। मनके विकारोंको जीतना संसारको शस्त्र-युद्धसे जीतनेकी अपेक्षा भी मुझे कठिन मालूम होता है। हिन्दुस्तान आनेके वाद भी मैं अपने अंदर छिपे हुअे विकारोंको देख सका हूँ, शरमिन्दा हुआ हूँ, किन्तु हारा नहीं। सत्यके प्रयोग करते हुअे मैंने रस लूटा है, आज भी लूट रहा हूँ। लेकिन मैं जानता हूँ कि अभी मुझे विकट मार्ग पूरा करना है। अिसके लिअे मुझे शून्यवत् वनना है। जव तक मनुष्य स्वेच्छासे अपनेको सवसे नीचे नहीं रखता, तव तक अुसे मुक्ति नहीं मिलती। अहिंसा नम्रताकी पराकाष्ठा है। और यह अनुभवसिद्ध वात है कि अिस नम्रताके विना मुक्ति कभी मिलती नहीं। अैसी नम्रताके लिअे प्रार्थना करता हुआ, और अुसके लिअे संसारकी सहायताकी याचना करता हुआ अिस समय तो मैं अिन अध्यायोंको समाप्त करता हूँ।

सूची